पुतलीमहल
या
गुलाबकुँवरी
पहला भाग
बाबू रामलाल वर्म्मा द्वारा
रचित और प्रकाशित।

पहला बयान
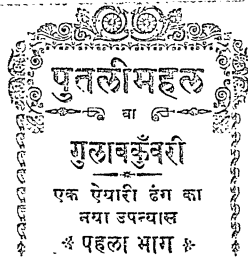
बरसातका मौसिम है ठण्ढी ठण्ढी हवा अपनी मस्तानी चालसे चलती हुई बड़ीही सुहावनी जान पड़ती है, अभी अभी कुछही घण्टो पहले मूसलधार पानी बरस चुका है, जिस्से उस सामने वाले बड़े पहाड़ी सिलसिलेसे सहस्रों झरने पानीके बह निकले हैं।

अहा! इस समय यह सामने वाला पहाड़ी सिलसिला कैसा सुन्दर दिखाई दे रहा है, आजके पानीने बरस कर इसे एक दम हरी पौशाक पहना डाली है। छोटे छोटे पहाड़ी पक्षी इस पेड़ से उस पेड़ पर जाते हुए कैसे सुन्दर जान पड़ते हैं, इनकी प्यारी प्यारी सुरीली बोलियां मन को खींचे लेती हैं, देखिये उस सामने वाले पेड़ पर बैठी हुई कोयल कैसी मस्त होकर कुहू कुहू की तान अलाप रही है। आस्मानमें अभी भी कुछ छोटे मोटे बादलोंके पानीमें भरे हुए टुकड़े इधरसे उधर दौड़ दौड़ कर इस सुहावने समयको और भी सुहावना बना रहे हैं। ठीक इसी समय हवाका एक कड़ा झोंका

आया, साथही उस डूबते हुये सूरज को छिपाने वाला बादल का टुकड़ा ऊपर से खिसक गया। अहा अब देखिये यह पहाड़ी मैदान कैसा खिलखिला कर हँस पड़ा है। अब तक तो यह अपने मनहीं मुस्करा रहा था, अब यका यक इसके खिलखिला कर हँसने का क्या कारण है? पाठक, इसका कारण वही डूबते हुए सूरज की सुनहरी किर्णें हैं! जरा ध्यान देकर देखिये कि उसने इस पहाड़ी के साथ इस समय कैसा काम किया है, अस्तु।

हमारा उपन्यास आज से ८३० आठ सौ तीस वर्ष पहले याने सन् १०७५ इस्वी के बरसाती मौसिमसे आरंभ होता है, वही ऊपर वाला समा बन्धा हुआ है, ठीक ऐसेही समयमें एक चोंटैला शेर बहुत ज़ोर से तड़पता हुआ एक तरफ से आया और उस सामने वाले पहाड़ की एक गुन्जान झाड़ी में घुस कर ग़ायब हो गया। वह देखिये इसके पीछे पीछे घोड़ा फेंकते हुए दो सवार भी बड़ी तेज़ी के साथ चले आ रहे हैं, दोनोही सवार अपने अपने धनुष पर चोखे चोखे तीर चढ़ाये हैं, इनकी पौशाकें पानी से तर हो रही हैं, मगर तिसपर भी माथे परसे टपाटप पसीना चू रहा है, इनकी भीगी हुई पौशाकें साफ कहे देती हैं कि हम मामूली नहीं हैं, अहा! साथही हम यह भी कहेंगे, कि इसके पहने वाले भी मामूली सवार नहीं हैं, अगर न विश्वास हो तो ज़रा ग़ौरसे इनकी पौशाकों, इनकी तलवारों, इनके चेहरों और इनके अर्बी घोड़ों पर नज़र दौड़ाइये–देखिये, वह देखिये, आगे वाले सवार की तरफ ग़ौर से देखिये। बनिस्बत पीछे वाले सवार के, इसकी अनबन सूरत शक्ल सबही कुछ और है, मगर उम्रमें पीछे वालेसे कुछ छोटा है। उस आगे वाले सवारकी उम्र लग भग १७ सत्रह वर्ष को लांघ कर अट्ठारहवें वर्षमें पैर रख चुकी है, इसकी चौड़ी छाती गोल चेहरा गुलाबी गालें बड़ी बड़ी रसीली आखें और चौड़ा मस्तक साफ कहे देता है, कि यह किसी

उच्च राज वंशके भूषण हैं, इनका सबही अंग गौर वर्ण सुडौल और सुन्दर सांचेमें ढला हुआ है, इनके अंग अंगसे फुर्तीला पन प्रतीत होता है, एक शब्दमें " यह एक बड़ेही वीर साहसी और खूब सूरत नौजवान मालूम होते हैं " इनका साथी भी यदि इनकी खूब सूरती तक नहीं पहुंच सका है, तौभी सौ दोसौ नौजवानोंमें वह एक कहा जासकता है, पोशाक दोनोंहीकी एक चाल सिपाहियाना ढंग-की है, मगर तौभी बेश कीमत है, हां अगर इन दोनोंको किसी खास " रुतबे " से अलग करने वाली कोई चीज़ है तो वह एक आगे वाले सवार के सिर की सुर्खाब के पंख वाली टोपी है !

आगे वाले सवार के हाथ में कमान पर खिंचा हुआ तीर है और पीठ पर चोखे चोखे तीरों से भरा हुआ एक खूबसूरत तरकस कसा है, कमर से जड़ाऊ कब्ज़े वाली एक लम्बी तलवार लटक रही है साथही छोटे छोटे म्यानोंमें कमरके दोनों तरफ दो खूबसूरत मूठ वाले खंजर खुसे हुए हैं, कमरके दोनो तरफ खंजरोंके बगलमें पिस्तौल की एक छोटी जोड़ी खुंसी है। साथ वाला सवार भी इन्हीं हर्वों से लैस है मगर उसकी दाहिनी बग़ल में एक रेशमी कपड़े का काला बटुआ लटक रहा है। अब देखिये उस सामने वाली झाड़ीके पास पहुंच-कर उन दोनो सवारोंने अपने अपने घोड़ों को एक दम रोक लिया, जिसमें कि अभी अभी वह शेर घुस कर ग़ायब हो गया है। दोनो सवारों ने अपने अपने जेबसे रेशमी रूमाल निकाल कर अपने अपने चेहरे परका पसीना साफ किया और आगे वाले नौजवान्ने अपने साथीकी तरफ पलट कर घबड़ाई हुई आवाज़में कहाः—

नौजवान्-" मगर, हीरासिंह सच मुच उस मूज़ी ने हमलोगों को गहरा धोखा दिया आज छः घण्टेसे हम लोग इसके पीछे हैरान होरहे हैं, लेकिन हमलोगोंके हाथोंसे वह साफ निकल जाता है। "

हीरासिंह-" कुंवर साहब ! मैंने आपसे वहीं कह दिया था; कि

यह हम लोगों के हाथ तब तक नहीं आसकता जब तक कि हम लोग पैदल उतर कर इसका मुकाबिला न करें ! ”

नौजवान्–“ हां हां ; मैंने मानाकि तुम सच कहते हो, मगर उस वख्त तो वह मेरा तीर लगतेही उछलकर,जामुनके पेड़को लांघता हुआ, दूर निकल गयाथा ? अगर हमलोग घोड़े छोड़ कर पैदल उसका पीछा करते,तो क्या सम्भव था कि अब तक यहां पहुंच सकते ? ”

हीरासिंह–“ खैर अबतो वह निकलही गया और आज किसी तरह हमलोगों के हाथ नहीं आ सकता, अब अपने डेरे पर लौट चलिये और वहां पहुंच कर बनरखोंको आज्ञा दीजिये कि कल हँकवा करके उस भग्गू शेरको रमनेके मैदानमें घेर लावें । आप आज्ञा देंगे तो मैं स्वयम मैदान में (तलवार की तरफ इशारा करके) उतर कर इस आबदार तलवारसे उसका काम तमाम करूंगा । ”

नौज़वान्–(चारो तरफ देखकर) “ सोतो ठीक है; मगर यह तो कहो कि हमलोग आ कहाँ गये हैं ? क्या तुम बता सकतेहो कि हमारा डेरा यहांसे कितनी दूर होगा (पहाड़ी की तरफ देखकर) हैं ! क्या सचमुच इन छ घन्टों में हम लोगों ने बीस कोस का रास्ता खत्म किया है ? ”

हीरासिंह–“ हां, सच मुच बीस कोस का कड़ा रास्ता खत्म किया है (पहाड़ीकी तरफ इशारा करके) यहींसे तो हीरक पहाड़ी का चक्करदार सिल सिला शुरू हुआ है, जिस्के बीचों बीच चारों तरफ पहाड़ों से घिरी हुई “ पुतलीमहल ” की तिलिस्मी इमारत खड़ी है और इस पहाड़ी सिल सिले के उसपार “ माया-पूर ” नामक एक सुन्दर शहर आबाद है ! ”

नौज़वान्–(हैरान होकर) “ हैं ! तो क्या यही हीरक पहाड़ी है जिस्के बीच में घिरा हुआ “ पुतली महल ” और उसपार वही मायापूर है, जिसके महाराज ने “ देवगढ़ ” की राजकुमारीसे

शादी करने का पैग़ाम महाराज " देवसिंह " को भेजा था ? "

हीरासिंह–" जीहां, वही मायापूर है; मगर क्या आपको नहीं मालूम कि महाराज देवसिंह ने मायापूर के महाराज अर्जुनसिंह-का पैग़ाम यह कहकर लौटा दिया कि " आपको इस साठ वर्षकी अवस्थामें एक छोटी कन्याके साथ विवाह करते शर्म नहीं आती ! जो आपकी बेटियों की बेटी के बराबर है ! फिर हम तो " गुलाब-कुंवरी "-की शादी " कृष्णगढ़ " के राजकुमार "कुंवर चन्द्रसिंह" से ठीकही कर चुके हैं और इसी वसन्तपञ्चमीको तिलक चढ़ेगा"

प्यारे पाठक ! कृष्णगढ़के राजकुमार और महाराज वीरेन्द्रसिंह के एकलौते पुत्र कुंवर चन्द्रसिंह यही नौजवान हैं, जिनको हम आगे-से कुंवर चन्द्रसिंह हीके नामसे लिखेंगे, हीरासिंह इनके लंगोटिया दोस्त और कृष्णगढ़के ऐयारी पेशेवालोंके सर्दार हैं और महाराज वीरेन्द्र-सिंह इन्हे अपने लड़केकी तरह प्यार करते हैं। कुंवरचन्द्रसिंहने कहाः–

चन्द्रसिंह–(मनही मन खुश होकर) "क्या सचमुच महाराज देवसिंहने उस चण्डूलको ऐसी कड़ी फटकार बताई, तो क्या फिर उसने देवसिंहको कोई पत्र लिखा या शर्मिन्दः होकर रहगया? " !

हीरासिंह,–" नहीं उसके दूसरे ही दिन उसने अपने ऐयार, जिसका नाम कमलसिंह है, एक कड़ी चिट्ठी देकर भेजा, जिसमें उसने महाराज देवसिंहको यहां तक धमकी दी थी कि "आपका पत्र पाकर मुझे यहां तक गुस्सा चढ़ आया था, कि अभी आपपर चढ़ाई करदूं और आपका राज पाट छीनकर गुलाबकुंवरीसे ज़बरदस्ती शादी करलूं ! मगर नहीं, यह आपको आखिरी पत्र भेजा जाता है, अगर आप अपनी कुशल चाहते हैं, तो अपनी राजकुमारीका विवाह शीघ्र ही मेरे साथ कर दीजिये, अगर इसमें कुछ भी आना कानीकी जावेगी तो मैं फौरन तुम्हारा राज्यछीन कर तुम्हे " पुतलीमहल " में कैद करदूंगा और गुलाबकुंवरीसे ज़बरदस्ती शादी करलूंगा । "

चन्द्रसिंह–" ओह बुड्ढा बड़ाही शैतान निकला! मगर यह ह तुम्हें मालूम कैसे हुये ? "

हीरासिंह–" राजकुमार, यह सब बातें कल मुझे देवि ऐय्यार गुलाबसिंह की ज़बानी मालूम हुई थीं ? "

चन्द्रसिंह–" अच्छा, तुमने उससे गुलाबकुंवरी के बारे ं कुछ बात चीत कीथी, वह क्या चाहती है ? "

हीरासिंह–" हां, उसने गुलाबकुंवरीकी प्यारी सखी मालती-से हाल चाल मालूम किया था वह कहती थी कि "गुलाबकुंवरी" ने जब से कुंवर चन्द्रसिंहकी तस्वीर देखी है, वह अपने आपेमें नहीं है! वह बहुतेरा चाहती है, कि किसी तरह आप से एक बार मुलक़ात हो जाय ? "

चन्द्रसिंह–" हां, उस्की उस हाथीदांत वाली तस्वीरने, जो तुमने उस दिन शामको मुझे दी थी; मेरे साथ भी वैसाही काम किया था, कि जैसे बने आजही चलकर अपनी प्यारीसे मिलूं, मगर तुमने न जाने मुझे ऐसा करने से क्यों मना किया । "

हीरासिंह–" उसमें एक भेद है, जिसे मैं अभी आपको न बतांऊगा, कुछ दिन बाद आपही आप पर वह भेद खुल जायगा।"

चन्द्रसिंह–" ख़ैर, जैसी तुम्हारी मर्ज़ी (अस्मानकी तरफ देखकर) ओह ! वह देखो सूरज अब बिलकुलही नहीं दिखाई देता और हम लोगोंको अभी बीस कोस का जङ्गली रास्ता खतम करना है, हम लोग रास्तेसे भी एक दम अनजान हैं ? अब जल्दी चलो।"

हीरासिंह–" रास्तेका तो कोई ऐसा फ़िक्र नहीं, क्योंकि इस पहाड़ी जङ्गलको पार करतेही हम लोगोंको एक छोटी पगडण्डी मिल जायगी, जो आगे जाकर सीधी "देवीपूर" की सड़क से मिलगई है, बस सड़क पर पहुंच कर हमलोग बहुत जल्द अपने डेरे पर पहुँच जायँगे। हां, मुझे बहुत ज़ोर की प्यास लगी है, अगर कहिये तो मैं उस साम-

पीले चश्मेमें जाकर जल पी आऊं ?"

चन्द्रसिंह—"हां, हां, खुशी से जल पी आओ और मेरे वास्ते एक लुटिया जल भर लाना । लाओ अपने घोड़की बाग र मुझे पकड़ा दो।"

हीरासिंह यह सुनतेही घोड़े से कूद पड़ा और राजकुमार को अपने घोड़ेकी बाग थमा बटुवे से एक चाँदी की लुटिया निकाल चश्मेकी ओर चला गया, चश्मा एक पहाड़ी टीलेके पिछले भागमें था। हीरासिंहके जानेके बादही दाहिनी तरफकी झाड़ीमें कुछ खड़खड़ाहट पैदा हुई और साथही किसीके चीखनेकी आवाज़ आई! चीख मर्दकी नहीं किसी औरतकी थी। सुनिये उसने फिर चीख मारी, अबकी चीखके साथही उसने कुछ टूटे फूटे शब्द भी कहे जिसे हम नीचे लिखे देते हैं:—

"हा नराधम, चाण्डाल, मुझे क्यों व्यर्थ मारता है....क्या.... तुझे....ईश्व....र....का....कुछ भी....डर....नहीं है....हाय....पापी अगर....राजकुमार....चन्द्र....सिंह....को....कुछ भी खबर...."

बस यह कहते कहते आवाज़ एक दम धीमी पड़ गई।

राजकुमार चन्द्रसिंहसे न रहा गया,वह धमसे अपने घोड़ेकी पीठ परसे कूद पड़े और दोनो घोड़ों की बागडोर एक पेड़की जड़से बांध तलवार खींचकर उसी झाड़ीकी तरफ झपटे जिसमेंसे चीखनेकी आवाज़ आई थी। पास जाकर देखा तो एक दम उनके मुंह से "आह" की आवाज़ निकल गई। उन्होंने देखा कि राजकुमारी गुलाबकुंवरीकी प्यारी सखी मालती हाथ पैरसे जकड़ी हुई एक तरफ बेहोश पड़ी है और उसके कपड़े खूनसे तराबोर हो रहे हैं। सामने ही अर्जुनसिंह का ऐय्यार कमलसिंह हाथमें खंजर लिये खड़ा है और अपना एक भरपूर हाथ मारा ही चाहता है, कि कुंवर चन्द्रसिंहने डपट कर उससे कहा—

" ओ शैतानके बच्चे सावधान हो जा ! क्या किसी का खून कर तू बच सकता है, अगर कुछ भी हिम्मत रखत आ, मेरे सामने आ, मैं तुझे अच्छी तरह इस ढिठाईका मजा चखा।

राजकुमारको देखतेही कमलासिंह यह कहकर एक त भागा कि " कुंवर चन्द्रसिंह ! इस समय तुमने मेरे काम में द देकर अच्छा नहीं किया, अगर हो सका तो मैं शीघ्रही तुमसे इस हरकत का बदला लेलूंगा—"

राजकुमार ने उसकी बातों पर कुछ भी ध्यान न दिया और वह सीधे मालतीकी तरफ पलटे । मालती इस समय अच्छी तरह होशमें आ चुकी थी । उसने कुमारसे चिल्ला कर कहा—

" राजकुमार ! वह पापी कहां गया । जल्द उसका पीछा कीजिये वह राजकुमारी गुलाबकुंवरीको भी उड़ा लाया है ! और न जाने, कहां छिपा...."

मालतीके मुँहसे अभी इतनाही निकला था कि कुंवर चन्द्रसिंह-का चेहरा गुस्से से लाल हो गया और वह यह कहते हुये उस तरफ़ झपटे कि " मालती अगर हीरासिंह आवें तो उनको यहीं ठहराना, मैं अभी राजकुमारीका पता लगा कर आता हूं । "

थोड़ीही दूर पर कुंवर चन्द्रसिंहने कमलासिंहको एक पेड़पर चढ़ते देख लिया और ललकार कर कहा " कमलसिंह अबतुम मेरे हाथसे किसी तरह अपनी जान नहीं बचा सकते, अगर तुम्हें अपनी जान कुछभी प्यारी है, तो तुम बता दो कि तुमने राजकुमारीको कहां छिपाया है ; तब मैं तुम्हे एक दम छोड़ दूंगा "

राजकुमार यह कहते हुए उस पेड़ के पास पहुँचे और ऊपर चढ़ने लगे । यह देख कमलासिंह कुछ मुस्कुराया और पेड़की एक लम्बी डाल पर चढ़ कर धमसे ज़मीन पर कूद एक तरफ़ को दौड़ा, राज-कुमार भी साथही पेड़से कूदे और उसके पीछे दौड़े । आगे आगे

कमलसिंह और पीछे पीछे राजकुमार उस पहाड़ी पथरीले रास्तेमें दौड़े जाते थे, कि कमलसिंह दौड़कर पास ही की एक गुफ़ामें घुस गया, राजकुमार भी उसके पीछे पीछे उसीमें घुस गये, अभी राज-कुमार गुफ़ा में कोई पचास कदम ही गये होंगे, कि कमलसिंहने ज़ोरसे ताली बजाई। साथही कुमारके पैर तलेकी ज़मीनका एक चौड़ा पत्थर एक तेज़ आवाज़के साथ ज़मीनमें धँसता हुआ नीचे चला गया और कुमारको गिरा कर फिर अपने ठिकाने आ लगा! इसी समय किसी के खिलखिला कर यह कहनेकी आवाज़ आई:—

"वह मारा! बड़ा भारी शिकार था, अब फँसा पुतलीमहलमें!"

पाठक यह आवाज़ देनेवाला महाराज अर्जुनसिंहका ऐय्यार कमलसिंह था। अब उसने गुफाके आखिरी कोनेमें एक खटका दबाया, साथही एक पत्थर खसक कर बगलमें हट गया और वहां एक छोटासा खूबसूरत दरवाज़ा निकल आया! कमलसिंह उसी दरवाज़े में घुस गया! उसके घुसतेही दरवाज़ा आपसे आप बन्द हो गया! और पहाड़ी पत्थर फिर अपने ठिकाने जाकर सट गया!

दूसरा बयान

रातके दो बजे हैं, बरसातका मौसिम होने पर भी आज आस्मान बादलोंसे बिलकुल साफ़ है। चन्द्रमा एक गोल आकारमें आस्मान के बीचों बीच स्थिर है। उसकी साफ़ तथा रुपहली रोशनी चारों तरफ़ छिटकी हुई है। चन्द्रमाकी रोशनीमें तारोंकी रोशनी एक दम फीकी पड़ गई है। इस तेज़ रोशनीमें मायापुर-का मज़बूत किला साफ दिखाई दे रहा है। इस समय इस किलेमें पूरा सन्नाटा छाया हुआ है, कहीं कहीं की बुर्जियों पर, सन्तरी टहल

टहल कर चुपचाप पहरा दे रहे हैं। मारकों पर बड़े बड़े मुँहवाली तोपें चढ़ी हुई हैं। किलेकी चारों तरफ वाली गहरी खाईके पुल अपनी कलों पर खिंचे हुए हैं। किलेके तीन तरफ़ कुछ दूर हटकर एक बड़ी बस्ती फ़ैली हुई है, जिसको बड़ी बड़ी खड़ी पहाड़ियें तीनों तरफ़से इस प्रकार घेरे खड़ी हैं, कि एक मज़बूत और कुदरती शहर पनाहका धोखा होता है। किलेके एक तरफ़ हरा साफ़ मैदान दूरतक चला गया है। सहसा उसी सामहने वाले मैदानसे एक नकाबपोश सवार बेतहाशा घोड़ा फेंकता हुआ किलेकी तरफ चला आरहा है। खाई के पास और किले के सदर फ़ाटक पर पहुँच कर नकाब-पोश सवारने अपना घोड़ा रोका और उसकी गर्दन पर हाथ रख धमसे ज़मीन पर कूदपड़ा। अब नकाबपोशने अपने जेबसे एक सीटी निकाल कर ज़ोरसे बजाई। सीटीकी आवाज़ ख़तम होते न होते किलेका फाटक एक हलकी आवाज़के साथ खुल गया! उसके बड़े बड़े मज़बूत दरवाज़े अपने चर्खीदार पहियों पर घुमा दिये गये और खाईका पुल खाई पर गिरा दियागया। तब किलेसे एक लम्बा आदमी हाथमें नंगी तलवार लिये हुए निकला और पुलपार करता हुआ नकाबपोश सवारके पास आ जंगी सलाम कर बोला-"इस समय हुजूरको शायद कोई ज़रूरी काम यहां तक खींच लाया होगा?

नकाब०—" हाँ, कुछ ऐसीही बात है। क्या महाराज महल-में चले गये?"

लम्बा०—" नहीं एक घण्टा हुआ कि महाराज टहलते हुए फ़ाटक पर आयेथे और यह कहकर चले गये कि यदि आप आवें तो सीधे ख़ास दीवानख़ानेमें भेज दिये जावें, महाराज आपके आसरे वहीं बैठे हैं।"

नकाब०—" अच्छा मैं दीवानख़ानेकी तरफ़ जाता हूं, तुम मेरा घोड़ा अस्तबलमें पहुंचा दो।"

म्बा आदमी एक सन्तरी था। उसने " जो आज्ञा " कह
ड़ा पकड़ लिया और नकाबपोशके पीछे पीछे किलेमें घुस
ाई परका पुल अपनी कल पर उठालिया गया और किले-
टक मज़बूतीके साथ बन्द कर दिया गया। नकाबपोश
के अन्दरूनी मकानोंको पीछे छोड़ता हुआ सीधा आगे
चलाजा रहा है। वह अपनी धुन में मस्त चला जाताथा, कि एक
भारी इमारतके दरवाज़े पर पहरा देते हुए सन्तरीने अपनी भरी
हुई बन्दूकको छतिया कर कहाः—

" कौन जा रहा है ? खड़ा रह "

नकाबपोश,—" भूत " " क्या महाराज महलमें हैं ? "

" भूत " का शब्द सुनतेही सन्तरी एकाएक चौंक पड़ा और
जंगी सलाम कर बोला " हां जाइये महाराज आपहीके इन्तज़ार-
में अबतक बैठे हैं, नकाबपोश दरवाज़ेको पार कर कई सजे सजाये
कमरोंसे होता हुआ एक भारी कमरेके पास पहुंचा। यह कमरा
" ख़ास दीवान खाना " के नामसे मशहूर था। कमरेके दरवाज़े पर
एक मख़मली कारचोबीके कामका पर्दा कड़ियों पर खिंचा हुआ
था और कमरेके अन्दरकी तेज़ रोशनी पर्देके दोनों तरफ़की दरारों
से बाहरके दालानमें पड़ रही थी, जिसमें दो जवान कमसिन और
मज़बूत औरतें हाथोंमें नंगी तलवारें लिये घूम घूम कर पहरा दे
रही थीं। नकाबपोशको अन्दर आते देख दोनों पहरे दारिनोंने
अपनी नंगी तलवारें ऊपर को तानीं और एक ने आगे बढ़-
कर भराई हुई आवाज़में डपट कर पूछा " कौन ? " नकाब-
पोशने यहां भी " भूत " कहकर अपना पिंड छुड़ाया और कमरे-
का कारचोबीका मखमली पर्दा हटाकर भीतर घुस गया।
पाठक ! आइये भीतर चले आइये, आपको ज़रा इस कमरेकी सैर
करावें। मगर सावधान ! भीतर ज़रा पैर पोछ कर रखियेगा। देखिये,

कमरेकी ज़मीन नीले कारचोबीके मोटे मखमली फर्शकी तोपे छिपी हुई है और दीवारे कैसी चमकदार पालिसकी हुई अपनी पर कैसे सुन्दर सुनहले बेल बूटे खींचे गये हैं, जा बजा एक गीरें लगी हैं। कमरे की छत पर कड़ियोंके साथ अनेकों रंग तीनों शीशेके खूबसूरत छोटे बड़े झाड़ लटक रहे हैं, किसी शहर काफूरी बत्तियां जल रही हैं। उस मखमली फ़र्श पर क़रीने से छोटे बड़े गोल टेबिल रखे हुए हैं। जिसके ऊपर वाले गोल तख्ते कारचोबी-के काम किये हुए लाल मखमली टुकड़ोंसे ढंके हैं, उनके किनारों पर सच्चे मोतियोंकी झालरें लगी हुई हैं। और उनके ऊपर एक एक सुन्दर जड़ाऊ गुलदस्ता ताज़े और रंग बिरंगे खुशबूदार फूलोंसे भरा रखा है, जिसकी महकसे कमरा बसा हुआ है। कमरे के ठीक सामने एक बड़ी ही खूबसूरत जड़ाऊ गंगा जमनी काम की कुरसी पर एक सांवले रंगका मोटा मनुष्य बैठा सामनेकी रक्खी मेज़परकी एक मोटी किताबको बग़ौर पढ़ रहा है। उसके बाल बड़ेही काले हैं, उस्का माथा चौड़ा और ऊंचा है, आखें मामूली और भौहें मोटी हैं। आंखों के कोनों पर कुछ कुछ सिकुड़न पड़ी हुई हैं, चेहरे पर कुछ कुछ सुर्खी है; मगर गालकी ठोकरें निकली हुई हैं। हाथ पैर मोटे और मज़बूत हैं, चेहरा रोबीला मगर भयङ्कर हैं, मूछें ऊपर की ओर चढ़ीं हुई हैं, मगर दाढ़ी ग़ायब है। वह मनुष्य और कोई नहीं खास महाराज अर्जुनसिंह हैं। उनका ध्यान उसी किताबकी तरफ लगा हुआ है जो सामने-की मेज़पर रक्खी है। नकाबपोशका पर्दा उठाकर अन्दर घुसना उनको बिलकुल नहीं मालूम है। ऐसेही समय नकाबपोशने तेज़ी के साथ आगे बढ़कर महाराजके चरण छू लिये और हाथ बांधकर सामने खड़ा होगया। महाराज एक दम चौंक पड़े और नकाबपोश को सिरसे पैर तक घूर कर बोलेः—

महाराज–" कौन ? "

नकावपोश,– (नकाव पीछे उलट कर) " मैं हूं महाराज " भूत । "

महाराज–" अहा ! दारोगा " पुतलीमहल ! " तुम आगये, कुशल तो है " चन्द्रसिंह " को ठिकाने पहुंचा दिया ? "

दारोगा–" महाराज के पुण्य प्रतापसे सब कुशल है, कुंवर चन्द्रसिंह आज शाम को नं० ७ वाली गुफासे " पुतलीमहल " में कैद कर लिये गये हैं और उनका ऐय्यार हीरासिंह भी " मायाकूप में " कूदकर स्वयं " पुतलीमहल " में आ फंसा है । मगर कुंवर-चन्द्रसिंह को नं० ११ की कोठरीमें वन्द करतेही मेरे कमरेमें एक धड़ाकेकी आवाज हुई. और साथही कमरा हिलने लगा कुछ देर वाद एकाएक उसकी पूरव ओर की दीवार एक गड़गड़ाहटकी आवाज़के साथ वीचसे फट गई ! उसके अन्दर एक वड़ी आल-मारी दिखाई दी, देखते देखते उस आलमारीके दोनो दरवाज़े धड़से खुल गये ! साथ ही उसमें से दो खूबसूरत पुतलियाँ निकल कर वड़ीही सुरीली आवाज़ में शोकजनक गीत गाने लगीं ! जिसे मैं विलकुल न समझ सका मगर उनकी आकृतिसे इतना मुझे ज़रूर मालूम हुआ, कि वह अपने गीतोंमें शोकप्रगट कर रही थीं। करीव १०मिनट तक वह गाती रहीं। फिर एकाएक उछल कर दोनो पुतलियाँ आलमारी में घुस गईं ! एकने अपने मुहसे एक भो-जपत्रका लिपटा हुआ टुकड़ा निकल कर वाहर फेंक दिया ! आल-मारीके दोनों दरवाज़े धड़ से वन्द हो गये फटी हुई दीवार ज्यों की त्यों जुट गई ! मैं एक दम स्वप्नावस्थाकी तरह भौंचकसा कुरसी पर वैठा रह गया । मेरी जिन्दगीमें ऐसा कभी नहीं हुआ था । करीव आध घण्टे तक मैं उसी अवस्थामें वैठा रहा । फिर क्रमशः

मेरी शक्तियां मुझमें आ मिलीं, तब मैंने उस भोजपत्रके टुकड़ेको, जो पुतली फेंक गई थी, उठाकर खोला, उसमें लिखाथा—

" अब " पुतलीमहल " किसी तरह बच नहीं सक्ता। "इतिहास पुतलीमहल " का ४१ वाँ वर्क (पन्ना) देखो "

" बस महाराज मैंने चट पट बक्स पर बक्स और ताले पर ताला खोलकर "इतिहास पुतलीमहल" निकाला और उसके पन्ने उलट कर ४१ इकतालीसवाँ पन्ना देखा, उसमें एक यन्त्र लिखाथा। जो मैं किसी तरह न समझ सका और उसकी नक़ल महाराजको दिखानेके वास्ते ले आया हूं, शायद महाराज कुछ मतलब निकाल सकें "

"महाराज अर्जुनसिंह दारोग़ाकी विचित्र बातें सुनकर एकाएक चिल्ला उठे और घबड़ाई हुई आवाज़ में दारोग़ा से बोले—

अर्जुन०—" दारोग़ा ! दारोग़ा !! यह तुम क्या कह रहे हो ! क्या तुम यह सब सच कहते हो ? लाओ पुतली वाला पुरजा और यन्त्रकी नक़ल कहां है जल्द निकालो। "

दारोग़ाने चट अपने जेबसे पुतली वाला पुरजा और यन्त्रकी नक़ल महाराजके सामने मेज़ पर रखदी, महाराज पुतली वाला पुरजा पढ़नेके बाद कांपते हुए हाथोंसे यन्त्रकी नक़ल उठाकर बग़ौर देखने लगे। हमारे प्यारे पाठकोंकी इच्छा भी उस यन्त्र की नक़ल देखने की तरफ झुकी हुई होगी। इसलिये हम उसकी नक़ल नीचे लिख देते हैं और आशा करते हैं कि इस यन्त्र का मतलब पाठक स्वयं समझनेकी कोशिश करेंगे और अपनी बुद्धि का थोड़ासा हिस्सा इसमेंभी खर्च करेंगे, यह यन्त्र एकदम बेनियम नहीं लिखा गया है, बल्कि इसे " पुतलीमहल " के बनाने वाले बुद्धिमान हकीमोंने किसी खास नियमसे अपनी रमल के ज़ोर से पता लगाकर लिखा है।

यन्त्र की नकल यह है

तो	पु	ल	में	त	द	म	स
ह	ल	ड़	त	ही	व	पु	हो
ह	को	म	ली	कै	वा	व	ड़ु
ह	म	र	ने	ली	ष्य	गा	ला
त	में	ह	टि	कि	हो	हो	न्द्र
सि	र	सी	के	न्म	के	र	गा
न्हा	का	कुं	च	जा	ह	सिं	गा
वे	न्द्र	व	ज	ह	औ	रा	व

" महाराज ! अर्जुनसिंह करीब दो घण्टे तक उस यन्त्र पर ग़ौर करते रहे, फिर वह दारोग़ा की तरफ देख कर बोले:—"

अर्जुन०—" दारोगा ! मैं आशा करता हूं, कि इस यन्त्रका मतलब शीघ्रही मुझे मालूम हो जायगा । तुम ज़रा उस मेज़ परसे कलम, दवात और काग़जका टुकड़ा ले लो, मैं अभी इस यन्त्रमें बैठाये हुए अक्षरों को सिलसिले वार लिख डालता हूं । "

दारोग़ाने कलम दवात और काग़ज लाकर महाराजकी सामने वाली मेज़ पर रख दिया और महाराज अर्जुनसिंह यन्त्रमें बैठाये हुए अक्षरों को क्रम से काग़ज पर लिखने लगे, कुछही देर बाद महाराज ने यन्त्रके सब अक्षरोंको काग़ज पर सिलसिलेवार बैठा कर चार लाईन का एक मज़मून तैय्यार कर लिया और तब वह रुंधे हुए गलेसे मज़मूनको पढ़ने लगे, मज़मून खतम होतेही महाराजने बड़े जोर

से चिल्ला कर एक दुहत्थड़ अपने सिर पर मारा और दारोग़ा के हाथ में काग़ज़ का टुकड़ा दे कर बोलेः—

अर्जुनसिंह—" दारोग़ा ! बस अब हमारे और तुम्हारे ऐशो आराम का खातमा हो गया ! हाय मैंने आपही अपने पैर में कुल्हाड़ी मारी, यह यन्त्र साफ २ बता रहा है कि अब "पुतलीमहल" किसी तरह नहीं बच सक्ता ! देखो तिलिस्म के बनाने वाले हकीमों ने सैकड़ों वर्ष पहलेही तिलिस्म को तोड़ने वाले का नाम पता " इतिहास पुतलीमहल " में लिख दिया है । अब तुमही बताओ कि अब हमें क्या करना चाहिये ? "

दरोग़ा—" (कुछ सिटपिटा कर) महाराज इस यन्त्र की लिखी इबारत का एक एक अक्षर साफ कहे देता है कि मैं सच्चा हूं ! मगर तौभी मुमकिन है कि हकीमों से कुछ भूल हुई हो । हम लोगों को ऐसे नाजुक वख्त में एकदम निराश होकर कर्तव्य शून्य नहीं हो जाना चाहिये, बल्कि ऐसे समय में उन तिलिस्मी तोहफ़ों से काम लेना चाहिये जिन्हें अनुभवी हकीमों ने खास इसी वख्त के लिये तैय्यार किये हैं ।

अर्जुन०—" दारोग़ा, तुम मुझे वृथा आशा दिलाते हो ? मेरा भविष्य साफ कहे देता है कि अब किसी प्रकार मेरी कुशल नहीं है ! क्या तुम बता सक्ते हो कि कुंवर चन्द्रसिंह से सुलह करके उन्हें मैं अपनी प्यारी पुत्री " मायादेवी " और पुतली महल दे दूं ।

दारोग़ा—" महाराज ! महाराज !! यह आप क्या कह रहे हैं; आप एक दम ऐसे निराश क्यों हुये जाते हैं; मेरे बैठे आप एक वीर और साहसी महाराज होकर ऐसा दिल छोटा किये देते हैं ! आप चुप चाप अपना राज्य कार्य कीजिये और फिर देखिये कि मैं किस ढंग से इन अड़चनो को दूर करता हूं ! "

अर्जुन०—" खैर तुम जैसा मुनासिब समझो करो "पुतलीमहल" संबन्धी सब कारवाईयें मैं तुम्हारे सपुर्द कर्ता हूं और आशा कर्ता हूं

कि तुम योग्यता के साथ उसे सम्पादन करोगे और समय २ पर मुझे उसके हालात से फाकिफ करते रहोगे।"

दारोग़ा–"महाराज! आप निसाखातिर रहिये और मुझपर विश्वास राखिये मैं आज ही जाकर अपने अनूठे तिलिस्मी तोहफों से काम लेकर "कुंवर चन्द्रसिंह" को जहन्नुम की हवा खिलाता हूं? क्या "पुतलीमहल" को तोड़ना सहज पड़ा है, ऐसे ऐसे हज़ारों भुनगे मेरी होश में "पुतलीमहल" के अन्दर घुसे और जहन्नुम रसीद हुए।"

अर्जुन०–"दारोग़ा! तुम सच कहते हो, मगर सब भुनगोंकी तरह इस भुनगे को न समझ लेना, भला तुम बता सक्ते हो कि इस भुनगे के "पुतलीमहल" में फंसने पर जो उपद्रव हुआ है वैसा और किसी भुनगे के फंसने पर हुआ था? मैं तुम्हे ज़ोर देकर कहता हूं कि अगर मेरी और अपनी कुशल चाहते हो तो अब ज़रा सावधानी से काम कर्नो और जहांतक जल्द हो सके कुंवर चन्द्रसिंहको दमन करने का प्रयत्न कर्नो, वह कोई साधारण मनुष्य नहीं है, अगर तुम उससे ज़रा भी ग़फलत खाओगे तो वह "पुतलीमहल" की नींव तक उखाड़ कर फेंकदेगा; क्या तुम गत९ वर्ष वाले उस भीषण युद्ध को भूल गये जिसमें मेरी फ़ौज के सौ जवानो को उस अकेले चन्द्रसिंह ने गाजर की तरह काटकर फेंक दिया था और अन्तमें मुझे हार मानकर राजा वीरेन्द्रसिंहसे सुलह(सन्धि)कर लेनी पड़ी थी?"

दारोग़ा–"जी हां मुझे खूब मालूम है? मगर जंग (लड़ाई) और तिलिस्म में जमीन आस्मान का अन्तर है। महाराज; अगर भीम ऐसे बलवान योधा भी एक बार तिलिस्मी फेर में फंसजाय तो उनका कलेज़ा मुह को आजाय। आप मुझे अपने चार ऐयार दीजिये जिन्से वख्त पर मैं अपने अनूठे काम ले सकूं। और अब मुझे शीघ्र ही जाने के लिये आज्ञा दीजिये।"

अर्जुन०—"(अपनी अँगूठी देकर) लो अब जै एयार को चाहो अपने साथ ले जाओ; और रातही रात यहां से चले जाओ।"

"जो आज्ञा" कहकर दारोगा कमरे से बाहर निकल गया और सीधा किले के फाटक पर पहुंचा वहां उसने फाटक के जमादार को महाराज की अँगूठी दिखाकर ऐयारी घण्टा बजाने की आज्ञादी जमादार उस अँगूठी का प्रभाव भली प्रकार जान्ताथा। उसने बे हिचकिचाए ऐयारी घण्टे पर चोटें देनी आरम्भ की। अभी ऐयारी घण्टे पर कुछही चोटें पड़ी होंगी कि चारो तरफ से धड़ाधड़ ऐयारी पटाकों की आवाज़ें होनें लगी और कुछही देर में बीस पचीस ऐयारों का एक छोटा झुन्ड किले के फाटक पर आजुटा। दारोगा ने अँगूठी दिखाकर सब ऐयारों को महाराज की आज्ञा सुनाई और उनमें से चार ऐयारों को अपने साथ चलने का अनुरोध किया। उन सब ऐयारों का सर्दार कमलसिंह झुण्ड से आगे निकल आया और दारोगा से बोला—

कमलसिंह—" हम लोग पंक्ति बद्ध खड़े हो जाते हैं आप उनमें से जिनजिन को चाहें पसन्द करलें।"

दारोगा—" (मुसकराकर) अच्छा एक तो मैं आपही को पसन्द कर्ता हूं और तीन ऐयार आप अपनी पसन्द के चुन लीजिये।"

कमलसिंह—" यह आप ने खूब कहा ? खैर हमारे सबही ऐयार चुस्त चालाक और फुर्तीले हैं ? उनमें से मैं (ऐयारोंकी तरफ घूमकर) विचित्रसिंह, भयंकरसिंह, और सोभासिंह को चुनता हूं तुम लोग जल्द तैयार होकर मेरे साथ चलो।"

विचित्रसिंह—" हम लोग चलने को तैयार हैं। बटुवे और खंजर हम लोगों के पास मौजूद ही हैं।"

कमलसिंह—" बस तो फिर मैं भी तैयारहूं। तुमलोग अस्तबल से अच्छे २ पांच घोड़े चुनलाओ (दारोगा से) बस यही न ?"

दारोगा-" हां बस यही । "

थोड़ी ही देर में ऐयार लोग कसे कसाये पांच घोड़े अस्तबलसे लाये । किले का फाटक खोल दिया गया और खाई परका पुल खाई पर छोड़ दिया गया । तब वह पांचो मनुष्य पुल को पारकर एक २ घोड़े पर सवार हो तेज़ी के साथ पूरब की तरफ चल पड़े । उस समय पौफट रही थी, और थोड़ी ही देर पहले किले का सन्तरी टना टन ४ बजा चुका था ।

तीसरा बयान

" राजकुमारी ! राजकुमारी ! ! बड़ा ग़ज़ब हो गया ! ! !

दोपहरका समय है, छोटी २ पानी की बून्दे गिररही हैं, परन्तु कुछही देर में मूसलधार पानी बरसने की उम्मीद है, क्योंकि काले काले बादल धीरे धीरे दल बांध कर जमते जा रहे हैं ! ठीक इसी समय " देवगढ़ " के राजसी महल में राजकुमारी " गुलाबकुंवरी " अपने खास कमरे में बैठी हुई अपनी प्यारी सखी मालती के साथ शतरंज खेल रही है और उसकी दो सखियें केसर तथा ललिता उनके खेल का तमाशा देख रही हैं; सहसा मालती ने गुलाबकुंवरी को फर्ज़ीं (वज़ीर) की किश्त देकर कहा:—

मालती-" प्यारी सखी बाज़ी मात होती है ? बचाने की कोशिश करो; देखो तीन चाल में मात रक्खी है ? "

गुलाब०-" क्या कहा मात ! यह देखो घोड़े का अरदब और तुम्हे किश्त ! वह ऊंठ से फर्ज़ीं मार लिया ! फिर खेलोगी ? "

मालती-(चौंक कर)" हैं ! कैसे ! ! भइ तुम बड़ी होशियार निकलीं ? बाज़ी मेरी लगी और फर्ज़ीं मारा तुमने ? क्या खूब (केसर से) क्यों सखी तुमने भी ज़रा न बताया ? "

केसर-" सखी मैं जान्ती तो थी । लेकिन राजकुमारी ने

इशारे से मुझे मना कर दिया था, फिर भला मैं कैसे बताती

गुलाब०—" मुझीसे न पूछलेती ? या हीरासिंह ही को मदद के लिये न बुला लेती ! चल खेल हारीतो कैसी छटपटाने "

मालती—" देखो सखी मुझे हर वक्त छेडोगी तो मैं कुंवर सिंह से तुम्हारी शिकायत करूंगी ! घबड़ाओ मत, देखूंगी न कैसे तुम उनको जीतती हो ? "

गुलाब—" मालती ? तू बहुत सिर चढ़ गई है, क्या तुझे उनके (हीरासिंह के) बिना रात को नींद नहीं आती जो तू इतनी उताव ली हो रही है, और बात बात में छेड़ छाड़ करती है । "

मालती—" (ललिता से) देखा सखी आपही तो छेड़ें और आपही बुरा मान जायें ! (गुलाबकुंवरी से) जाओ अब मैं तुमसे नहीं खेलती । "

गुलाब—" अच्छा न सही ! अब तू क्यों खेलेगी, हार न गई ! (केसर से) आ सखी अब तू खेल दूसरी बाज़ी बिछा । "

केसर—" मैं आपसे खेल कर क्या कभी जीती हूं ? अच्छा एक बाज़ी खेल लेती हूं (ललिता से) सखी तू मेरी तरफ रह । "

इतना कहकर केसर शतरंज बिछाने लगी थी, कि एका एक राजकुमारी की प्यारी सखी श्यामा सामने से रोती चिल्लाती और अपने सिर पर दुहत्थड़ मारती हुई सबके सामने आकर बोली:—

" राजकुमारी ! राजकुमारी ! ! बड़ा गज़ब हो गया ! ! ! "

श्यामा की बात सुन्तेही राजकुमारी सहित सबकी सब युवतियां घबडा गईं और मालती ने श्यामा को धीरज देते हुए कहा:—

मालती—" श्यामा ! श्यामा ? बात क्या है ? साफ साफ कह न ? इतनी घबडाई क्यों जाती है । "

श्यामा—" बात कहने को ज़बान नहीं हिलती । सच मुच बड़ा गज़ब हो गया है ! ! ?

०—" प्यारी सखी जल्द कह बात क्या है? मेरा कलेजा
नो आ रहा है साफ साफ कह ? "

श्यामा—" राजकुमारी ज़रा सावधान होकर सुनिये; समाचार
ा हृदय विदारक है ! अभी २ कृष्णगढ़ से महाराज श्रीवीरेन्द्र-
ंह जी का पत्र लेकर एक सवार दरबार में आया था
में लिखा था ।

प्रियमित्रवर !

आज ३ दिन हुए कुंवर चन्द्रसिंह और हीरासिंह पैं सौ सवारों के साथ ५ दिन की छुट्टी लेकर यहां से शिकार खेलने गये थे और उन्होंने देवीपूर के पासही एक साफ मैंदान में जहां हमारा रमना है, डेरा डाला था और उसी दिन शेर का सुराग पाकर कुमार मैं हीरासिंह के कुछ सवारों को साथ लेकर सिकार खेलने निकल गये थे । उनके साथ के सवार लोग कहते हैं कि "हमलोगों के साथही कुमार आगे बढ़े थे कि शेर की गुर्राहट सुन कर उन्होंने उसी तरफ अपना घोड़ा तेज़ी के साथ फेंका था, हीरासिंह भी उन्हीं के पीछे घोड़ा फेंकते हुए निकल गये, मगर हमलोग लाख सर पटकने पर भी उनके पास तक पहुंच न सके और रात के आठ बजे तक उसी जंगल में भटकते रहे, फिर डेरे पर आकर रात भर और दूसरे दिन तक हमलोगों ने डेरे के आस पास घूम घूम कर उनकी टोह लगाई, जब वह नहीं मिले तो लाचार हम लोग आज लौट आए हैं " हमे मालूम होता है कि कुमार हीरक पहाड़ी की तरफ निकल गये हैं और वहां किसी तरह " पुतलीमहल " मे फंस गये हैं अस्तु आज हमारे यहां से चार ऐयार, विश्वनाथसिंह, दमोदरसिंह, भूपसिंह, और लालसिंह, उनकी तलाश में भेजे गये हैं पता लगने पर आपको सूचित किया जायगा ।

आपका परम मित्र
श्रीवीरेन्द्रसिंह

पत्र का हाल सुनतेही सब की सब सुन्दरियां. उठीं । राजकुमारी एकदम कांपने लगी और देखते के मोटे मखमली फर्श पर गिर कर बेहोश होगई । माल पट राजकुमारी को गोदी में उठा कर उसी कमरे में बिछे सूरत पलंग पर लिटादिया और चारों सखियां उसके चारो खड़ी होकर पंखा झलनेलगीं, तब मालती ने अपनी कमर से लटके ते हुए तालियों के गुच्छेसे उसी कमरे में लगी एक शीशे की आलमारी खोली और उसमें से एक डिबिया लख लखा और एक जोड़ी गुलाब पास की निकाली तब वह राजकुमारी के पास आकर उसे लख लखा सुघाने लगी और केसर तथा श्यामा गुलाब पास लेकर राजकुमारी के मुंह पर गुलाबजल छिड़कने लगी और ललिता पंखाही झलती रही ।

मालती, श्यामा, केसर और ललिता के सिर तोड़ परिश्रम करने पर करीब एक घण्टे में गुलाबकुंवरी को होश आई । तब उसने श्यामा की तरफ देख कर धीमी आवाज़ में पूछा ।

गुलाब०–"श्यामा....क्या सचमुच तेरी सब बात सही है.... क्या वास्तव में "कृष्णगढ़" से ऐसाही हृदय विदारक पत्र आया है।"

श्यामा–" हां राजकुमारी पत्र तो ऐसाही करुणा जनक आया है, किन्तु आप ऐसी घबड़ाई क्यों जाती हैं ! क्या कुंवर साहब कोई ऐसे वैसे मनुष्य हैं जो सहज में दुश्मनों के हाथ लग जावेंगे ! फिर यदि वह " पुतलीमहल " ही में फंस गये होंगे तो क्या वह वहां देरतक फंसे रह सकते हैं ? "

मालती–"प्यारी ? तुम एक दम ऐसी निराश क्यों हुइ जाती हो ! क्या तुमने श्यामा के मुंह से नहीं सुना कि महाराज श्रीवीरेन्द्र सिंह ने अपने आकाश और पाताल एक कर देने वाले चार ऐयार भेजे हैं, जो शीघ्रही कुमार को ढूंढ़ निकालेंगे । फिर कुमारही कौन अकेले हैं उनके संग भी तो ऐयारों के सर्दार मौजूद हैं !"

ललिता,—क्यों नहीं आखिर तो उनके साथ मालती के शागिर्द हीरासिंह मौजूद ही न हैं।

ललिता की बात पर ऐसी हालत में भी सब सुन्दरियां खिलखिलाकर हँस पड़ी और मालती ने अपनी हँसी रोकते हुए झुककर ललिता की गुलाबी गालोंको चूमलिया और तब कुछ पीछे हटकर कहा:—

मालती—"क्यों इतना इतराती है, मौके मौकेकी हँसी अच्छी होती है। घबड़ा मत तेरी मस्ती उतारनेवाले " भूपसिंह " शीघ्रही तुझे आ मिलेंगे (गुलाबकुंवरी से) प्यारी! होश में आओ जी को सम्हालो उठो मूं हाथ धो डालो।"

गुलाब०—" सखी मैं लाख अपने जी को सम्हालती हूं मगर यह निगोड़ा मेरे बस में हो तब तो सम्हले।"

मालती--" प्यारी धीरज धरो! अपने जीको बस में करो। मैं अभी जाकर महाराज से आज्ञा लेकर " कुंवर चन्द्रसिंह की तलाश में जाती हूं और अगर ईश्वर चाहेगा तो शीघ्रही उनको खोज निकालूंगी।"

श्यामा--" (मालती से) सखी मैं भी तेरे संग चलूंगी तू मुझे भी महाराज से आज्ञा दिलादे।"

केसर--" मालती बहिन मुझे भी अपने साथ के चल दुश्मनों का सामना है कहीं ऐसा न हो.... ...."

मालती--(बात काटकर) " लो अब सभी चली चलो! दुश्मनों का साम्हना है तो क्या हम दोनों उनसे किसी बात में कम है? फिर देख तो रही हो वक्त कैसा नाजुक है ' राजकुमारी ' को भी तो अकेले छोड़ने का मौका नहीं है सिर पर तो दुश्मन फिर रहे हैं गो कि लाख घर में दास दासी हैं मगर बिना हममें से किसी के रहे राजकुमारी की कुछ भी हिफाजत नहीं हो सकती।"

गुलाब०--" तू ठीक कहती है सखी ! देख उस दिन उस मुये अर्जुनसिंह की कैसी कड़ी चीठी आई थी ! केसर और ललिता को मैं अपने ही पास रक्खूंगी तू पिता जी से आज्ञा लेकर श्यामा को साथ लेती जा तेरा भी अकेले जाना तो ठीक नहीं है । ",

मालती--" खैर जो तुम्हारी मर्जी । अब मैं जाती हूं --र महाराज की आज्ञा लेकर शीघ्रही आती हूं (श्यामा से) तैं से, सखी ! तू अपनी और मेरी सफर की तैय्यारी कर । "

इतना कहकर मालती कमरे से बाहर निकल गई और कई कमरों से होती कई बड़ी बड़ी सीढ़ियों को पार करती सीधी दर्बार में पहुंची मगर दर्बार बरखास्त होगया था मालती निराश होकर लौटी और फाटक पर जाकर दर्बान से पूछने लगी :--

मालती...." अभी २ मैंने खबर पाई थी कि दर्बार लगा हुआ है ! क्या दर्बार अभी बरखास्त हुआहै? महाराज कहां हैं ? "

१ दर्बान--" जी हां, अभी अभी दर्बार लगा हुआ था मगर न जाने कैसी चिट्ठी पढ़कर महाराज की तबीयत कुछ रंज में होगई और वह दर्बार बरखास्त होने की आज्ञा देकर महलों में आराम करने चले गये ! और मैं कुछ नहीं जानता ! "

मालती--" क्या महाराज ने उस चीठी का कुछ जवाब भी दिया था तुम कुछ जानते हो ? "

१ दर्बान--" भीतर से हमलोगों पर यह आज्ञा हुई थी कि पत्र बरदार को भीतर भेज दिया जावे और हम लोग कुछ न...."

२ दर्बान--" (बात काटकर) नहीं नहीं मैं जानता हूं; वह सवार भीतर से एक चिट्ठी लेकर निकला और अपने घोड़े पर सवार हो सीधा " कृष्णगढ़ " की ओर चला गया । "

मालती दर्बानों का उत्तर पाकर सीधी महलों में लौटी और फिर वहां से सीधी महाराज के " आरामगाह " की तरफ पलटी

और शीघ्रही "आरामगाह" के दर्वाज़े पर पहुंच गई। दर्वाजे पर एक रेशमी कारचोबी किया हुआ खूबसूरत पर्दा लटक रहा था और बाहर एक नौजवान औरत भड़कीली पौशाक पहने हाथ में नंगी तलवार लिये घूम घूम कर पहरा दे रही थी; मालती ने जातेही उस औरत से सवाल किया:—

मालती—"माधवी! क्या महाराज अन्दर आराम कर रहे हैं?"

माधवी—"जी हां, अभी तो दर्बार से आए हैं मगर न जाने क्यों आज तीनही बजे आराम करने चले गये! क्या तुम्हें कुछ मालूम है? महाराज की तबीयत तो अच्छी है न?"

"नहीं मुझे कुछ भी नहीं मालूम है" कहती हुई मालती दरवाजे का रेशमी पर्दा हटाकर भीतर चली गई।"

चौथा बयान

"बस खबरदार होजा, ओ बदनसीब कैदी! कल सुबह ठीक सात बजे किले के मैदान में तुम्हें फांसी दी जावेगी।"

रात के ठीक आठ बजे हैं विकट अन्धकार चारो तरफ छाया हुआ है, आँधी, पानी, का बड़ाही ज़ोर है। बादल बड़े जोर शोर से गरज रहे हैं, बिजली कड़ कड़ शब्द करती हुई इधर से उधर निकल जाती है, पानी की बड़ी २ बूंदें कभी टेढ़ी और कभी सीधी गिर कर पृथ्वी को जलामय किया चाहती हैं! ठीक ऐसेही भयानक समय में हम अपने प्यारे पाठकों को लिये बड़ी बड़ी भयंकर पहाड़ियों से घिरे एक ऐसे आलीशान संगीन मकान में प्रवेश करते हैं जो "पुतलीमहल" के नाम से मशहूर हो रहा है। पाठक डरिये मत, आइये मेरे पीछे पीछे चले आइये जब मैं ही आप के साथ हूं तो फिर आप को डर किसका है! लेकिन हां, इस बात का जरूर ख्याल रखियेगा कि यह है "तिलिस्मी इमारत" अगर ज़रा भी

चूकियेगा तो फिर पूरा धोखा खाइयेगा, क्योंकि यहां क़दम क़दम पर खतरा है तिल तिल पर मौत का सामना है, बस ठीक मेरे पीछे ही पीछे चले आइये।

एक बड़ीही गन्दी और बदबूदार कोठरी में एक छोटासा मिट्टी का चिराग़ टिमटिमा रहा है। कोठरी बड़ीही भयानक और डरावनी मालूम होती है। टिमटिमाते हुये गन्दे चिराग की धुन्धली रोशनी में हम एक सुफेद शक्ल को बड़ी बेसब्री के साथ कोठरी की फर्श पर इधर से उधर टहलती हुई पाते हैं; शक्ल के हाथों में हथकड़ी और पैरों में मजबूत बेड़ियां पड़ी हुई हैं जिनकी झनझनाहट से बार बार कोठरी गूंज उठती है। कोठरी के एक तरफ़ लोहे की बिनावट का मनहूस पलंग बिछा हुआ है और उसपर दो पुराने कम्बल, एक मैली तकिया और एक फटहा गमछा पड़ा है; पलंग के नीचे लोहे के तसले में कुछ सूखी रोटियां और बासी साग धरी है, पास ही एक पुरुवे में थोड़ासा जल भरा हुआ है। सफेद शक्ल अब टहलती २ थक कर पलंग पर बैठ गई, और उस ने एक ठण्ढी सांस खींचकर बड़ीही कमजोर आवाज में आपही आप कहा:—

"आह! अब जान गई!! क्या इससे भी बढ़कर नरक में दुःख मिलता है? नहीं कभी नहीं। ओफ! लोगों को मरने पर नरक मिलता है मैं जीताही नरक में सड़ रहा हूं। हा भगवान्! क्या मैंने कोई बड़ा भारी पाप किया है? नहीं इस जिन्दगी में तो नहीं। दयामय! इस जीने से तो मुझे मौत ही मिल जाती तभी अच्छा था, क्या मैं इसी..........?"

सुफेद शक्ल अभी इतनाही कहने पाईथी कि एकाएक कोठरी के बाहर से किसी के पैरों की चापें सुनाई दीं, मालूम हुआ कोई आरहा है, सुनिये! आनेवाले ने कोठरी के दरवाज़े पर पहुंच कर एक कल घुमाई, साथही लोहे के मोटे सिकड़ों की झनझनाहट

सुनाई दी और कोठरी का मजबूत दरवाज़ा गड़गड़ाहट की आवाज़ के साथ सरसराता हुआ जमीन में धंस गया।

आनेवाले दो व्यक्ति थे उनमें एक वही शैतान, दारोग़ा "पुतलीमहल" और दूसरा एक मजदूर। दारोगा इस वख्त बड़े शान के साथ लक दक जंगी पौशाक में था, उसके मजबूत बदन पर वह पोशाक बहुतही भली और रोबीली मालुम होती थी, उसके चौड़े चेहरे पर बड़ी २ कान तक मुड़ी हुई मोंछे बड़ीही डरावनी जान पड़ती थीं, उसकी कमर सें लटकती हुई लम्बी तलवार कोठरी की फर्श पर टकरा टकरा कर झनझनाहट की आवाज़ पैदा कर रही थी, इन सब बातों से वह दारोग़ा एक बड़ाही भयानक व्यक्ति जान पड़ता था।

साथ वाला मजदूर सिर पर एक थाली (जिसमें शायद कुछ खाने पीने का सामान हो) और हाथ में पानी का भरा एक लोटा लिये था, बदन उसका एकदम आबनूस के कुन्दे की तरह काला था और वह एक बलिष्ठ व्यक्ति जान पड़ता था। "दारोग़ा" ने आगे बढ़कर अपनी खूंखार तलवार के कब्जे पर हाथ रखते हुये बड़े तपाक से डपट कर शक्ल से कहाः—

दारोग़ा--"ओ बदनसीब कैदी। खबरदार हो जा कि कल ठीक सुबह सात बजे किले के मैदान में तुझे फांसी दीं जावेगी। यह ले तेरे लिये आखिरी खाना लाया गया है इसे तू इस वख्त खा और यह ठण्डा जल पीकर अपनी आत्मा को तृप्त कर। फिर यह भोजन और जल तुझे मिलना दुश्वार है। और अगर तू किसी बात की ख्वाहिश रखता हो तो बयान कर, अगर मुनासिब होगी तो पूरी की जावेगी।"

दारोग़ा की भयानक बातों ने कोठरी को एकदम कंपा दिया। गन्दी कोठरी में दारोगा की बातों से मानों बार बार प्रतिध्वनी

होने लगी। सुफेद शक्ल गुस्से के मारे एकदम आग हो गई और उसने गरज कर दारोग़ा से कहा:—

सुफेद शक्ल--"कमबख्त, ! नमक हराम !! दोज़खी कुत्ते !!! तुझे यह कहते शरम नहीं आती ? तेरे बत्तीसो दांत तेरे मुंह से टूट कर नहीं गिर पड़ते ? हरामजादे ! तू मुझे यह खुशखबरी सुनाने आया है कि "कल मुझे फांसी दी जावेगी" कुत्ते के बच्चे ! जा मेरे सामने से दूर हो जा वरना अभी तुझे इस ढिठाई का मज़ा चखा दूंगा।"

शक्ल की बातों ने दारोग़ा के बदन में मानो आग लगादी; वह मारे गुस्से के थर थर कांपने लगा। उसे ऐसी उम्मीद न थी कि शक्ल उसका मुकाबिला करने पर उतारू हो जावेगी। दारोगा ने काँपते हुये हाथों को फुर्ती के साथ तलवार के कब्जे पर डाला और एक शब्द में, तलवार म्यान के बाहर खींच ली और उपर उठाकर चाहता था कि एक भरपूर हाथ शक्ल पर मारे कि उसके दो टुकड़े सामने नजर आवें, तलवार अब शक्ल पर गिराही चाहती थी कि साथही बड़ी फुर्ती के साथ मजदूर ने थाली पटक कर दारोग़ा की कलाई थामली और ऐसा झटका दिया उसके हाथसे तलवार दूर जा गिरी और वह हक्का बक्का होकर मज़दूर की शक्ल देखने लगा।

मज़दूरने अब एकाएक दारोगा को ज़मीन पर पटक दिया और अपनी बगल से लटकते हुये बटुवे से बेहोशी की दवा निकाल कर ज़बरदस्ती उसके नाकमें ठूंसदी, साथही वह तड़ातड़ तीन छींके मार कर बेहोश होगया।

अब मज़दूर ने अपनी नकली मूछें अलग कर डाली और थोड़ा जल ले कुछ मसाला मिलाकर चेहरे पर का नकली रंगसाफ किया और दौड़कर शक्लके पैरोंपर गिरपड़ा ! शक्ल जो अबतक खड़ी चूपचाप यह सब तमाशा देख रही थी एकाएक मजदूर की असली

सूरत देखकर चौंक पड़ी और उसने बड़े प्यार से मज़दूर को उठा-कर गलेसे लगा लिया। दोनो बहुत देरतक आपस में लपटे रहे फिर एक दूसरे से अलग हुये और मज़दूर ने शक्स से कहाः—

मज़दूर-" प्यारे राजकुमार चन्द्रसिंह! आह ! ! बड़ी बड़ी मुसीवतों के बाद आज,आप के चन्द्रमुख का दर्शन हुआ ! !! हैं ! यह क्या आपकी शक्ल तो एकदम बदल गई है ? आप तो एकदम पहिचाने नहीं जाते ? यह क्या ? "

चन्द्रसिंह- (जो वास्तव में कुंवर चन्द्रसिंह ही थे) " आह, प्यारे दोस्त हीरासिंह ! तुम इस " नरक कुन्ड "में कहां और कैसे आ टपके ! मुझे ऐसी उम्मीद स्वप्न में भी न थी कि इस "नरकभवन" में पुनः मुझे जीते जी अपने किसी प्यारे मित्र के देखने का सौभाग्य प्राप्त होगा। सब हाल साफ साफ शुरू से बयान करो क्योंकि मुझे तुम्हारा हाल सुनने की बड़ी उत्कण्ठा होरही है। "

प्यारे पाठक ! आप समझे ? यह तो वही हमारे उपन्यास के प्रधान नायक, कृष्णगढ़ " के राजकुमार-कुंवर " चन्द्रसिंह " ही निकले और यह मज़दूर वेषधारी ऐयारों के गुरूघण्टाल राजकुमार के प्यारे दोस्त हीरासिंह ! अस्तु अब हम भी आगे से इन नवयुवकों को इनके अस्ली नामों ही से लिखेंगे। हीरासिंह ने कहाः—

हीरासिंह-" कुंवर साहब ! मैं अपना पूरा हाल कहने के लिये तैयार हूं। मगर बग़ैर आप का हाल सुने मेरे हाल का सिलसिला ठीक नहीं मिल सकता इससे यह अच्छा होगा कि आप जब कि मैं आप के लिये पानी लेने गया था उसके बाद से अपना पूरा २ हाल कह डालिये ! "

राजकुमार-"खैर, तो मैं अपना हाल बयान करता हूं, तुम ध्यान से सुनो (यह कह कर कुमार ने अपना कुल हाल जो मैं आगे बयान कर चुका हूं कह डाला और आगे यों बयान करना

शुरू किया) जब मेरा पैर एक मटमैले चौखूटे पत्थर पर पड़ा तो साथ ही कमलसिंह,ने ज़ोर से ताली बजाई उसके ताली बजातेही ज़मीन ने मेरे पैर पकड़ लिये और नीचे को धसने लगी ; अब मैं खड़ा न रह सका, मेरा सिर घूमने लगा और मैं बेहोश होकर उस धंसती हुई ज़मीन पर गिरपड़ा फिर मुझे कुछ भी होश न रही कि मैं कहां और किस हालत में हूं। जब होश में आया तो मैंने अपने को इसी गन्दी और बदबूदार कोठरी में हथकड़ी बेड़ी से जकड़ा हुआ कैद पाया। यही दारोग़ा दूसरे दिन मुझे देखने आता था और एक कालासा मज़दूर भोजन का सामान रख जाता था जो कि अब तक पड़ा सड़ रहा है, जब से मैं इस कैद में आया एकदम फाका कर रहा हूं। आज दारोग़ा मेरे पास तीसरी मर्तबे आया था। बस मैंने अपना जो कुछ हाल कहना था कह सुनाया अब तुम यह कहो कि तुम यहां कब और कैसे आये, मेरे यहां फसने का हाल तुम्हें कैसे मालूम हुआ ?"

हीरासिंह—"तो कुंवर साहब अब आप उठिये और मुंह हाथ धो डालिये। यह मेरे बटुवे में थोड़ा मेवा रक्खा है उसे खाइये और जल पीकर तब मेरा हाल सुनिये क्योंकि आप को आज फाका मस्ती करते पूरा अठवाड़ा गुज़र रहा है,न जाने आप कैसे इस तरह बात चीत कर रहे हैं ?"

चन्द्रसिंह--', अब तो सिर्फ एक ही सप्ताह फाका करने का मौका लगा है मगर अभी दो चार दिन तक मैं बिना जल पिये इसी हालत में रह सकता हूं जैसा कि तुम अब मुझे देख रहे हो। खैर तो मैं शेखी नहीं करता, लाओ जो कुछ तुम्हारे पास हो निकालो मगर इरादा तो यह था कि यहां से बाहर होकर स्नान पूजा के बाद भोजन करूं !"

यह कहकर कुमार ने अपना मुंह हाथ धो डाला। हीरासिंह

ने वटुवे से थोड़े अंगूर और बादाम निकाल कर दिये, कुमार ने उन्हें खुशी से खाया और ठंढा जल पीकर सन्तुष्ट हुये। तब हीरासिंह ने अपना हाल यों बयान करना शुरू किया—

हीरासिंह—" अच्छा सुनिये, जब मैं आपको अपने घोड़े की राम देकर टीले के पिछले भाग में गया तो मैंने क्या देखा कि एक खूब काला आदमी बड़ी बड़ी दाढ़ी मोछों वाला लंगोटा बांधे हाथ में तीर कमटा लिये बड़ी तेजी से मेरे सामने से निकल कर एक गुंजान झाड़ी में घुस गया, मैंने सोचा कि यह क्या वजह है जो यह मेरे सामने से भाग कर गायब होगया! ताज्जुब नहीं कि इसमें कुछ भेद हो? इसका पीछा करना चाहिये, देखूं क्या बात है। बस यह सोंच कर उसके पीछे २ दौड़ा मगर उसका कुछ भी पता न लगा। लाचार मैं लौटा और चश्मे के किनारे बैठ मुंह हाथ धो जल पी आपके लिये पानी लेकर लौटा, जब वहां आया जहां कि आपको छोड़ गया था तो वहां आपको न देख मैं बहुत ही घबड़ाया, इधर उधर देखने पर कुछ दूर मुझे दोनों घोड़े उछलते और हिनहिनाते हुये दिखाई दिये। पास जाकर देखा तो दोनों घोड़ों को पेड़ के साथ कसे पाया। अब तो मैं बहुतही घबड़ाया और जोर २ से आपका नाम ले ले कर पुकारने लगा जब आपका कुछ भी पता न लगा तो मैंने घोड़ों को वहीं बन्धा छोड़ दिया और आपका सुराग लगाने के लिये पहाड़ी पर चढ़ने लगा। अभी करीब ५० कदम ही के पहुंचा था कि सामने से एक बुड्ढा चीखता चिल्लाता मेरे सामने आ खड़ा हुआ और रो रो कर अपनी गंवारी भाषा में कहने लगा:—

" हुजूर बड़ा गजब होई गैल! अबही दुई घड़ी के करीब भैल होई कि एक बहुत सुन्दर तोहरेमतन् मनई ऐ पहाड़ी के एक कुइयां में कूद पड़ल बाटैं। अस सुन्दर गोर २ राजकुमारन् के मतन् मनई हम और कभई नाहीं देखलीं। हमरा के बड़ दया लागत बाय?

हुजूर उइठैयां चल कर कुछ बनोबस्त करतीं तो बड़ उपकार करतीं।"

मैं उस बुड्ढे गंवार की टेढ़ी मेढ़ी अजीब बातें सुनकर बहुत ही घबड़ाया और कुछ आना कानी के बाद मैंने उसके साथ चलना मंजूर किया। आगे २ वह गरीब बुड्ढा और पीछे २ मैं था। उसने मुझे कई पेंचीले रास्तों से घुमा फिराकर एक पुराने सूखे कुवें के पास जा खड़ा किया। मैं कुवें की जगत पर चढ़ गया और इधर उधर झांक २ कर चारों तरफ देखने लगा। खूब ग़ौर से देखने पर मुझे कुवें के अन्दर की तरफ एक चौखूटा पत्थर जड़ा दिखाई दिया जिसपर कुछ २ काई जम गई थी मैंने अपने बटुवे से सूक्ष्म दर्शक यंत्र निकालकर खूब ध्यान से देखा तो मुझे इतना पढ़ाई दिया जिसका नकशा मैं हूबहू नीचे लिखे देता हूं।

" खबरदार ? इस मुकाम पर गहरा खतरा है ! यह "पुतली-महल" का " मायाकूप " नामक गुप्त रास्ता है,इसमें जाकर लौटना ग़ैर मुमकिन है इससे इसके अन्दर जाने का इरादा कभी न करना। सावधान !! "

पत्थर पर का मज़मून पढ़कर मैं बहुत घबड़ाया और मुझे पूरा यकीन आ गया कि आप इसमें किसी तरह ज़रूर फंस गये हैं। खैर मैंने बुड्ढे की तरफ मुखातिब होकर पूछा:—" क्यों बुड्ढे ! क्या वह इसी में कूद पड़े हैं ? अच्छा कह तो, उनके सिर की टोपी में तैंने क्या लगा देखा था ?"

बुड्ढा—" हुजूर ! यही मा कूद पड़ल बाटैं, न जानैं काहे अपान जिउ देहलैं ! ओनकर टोपी बहुत नीक रहल और ओकरे ऊपर एक खूप उज्जर पर लगल रहल। बस हुजूर ! और हम कुछ नाहीं जानित--"

मैं--" अच्छा, तेरा घर कहां है और तू यहां क्या करने आया था ? सच सच बता (तलवार दिखाकर) अगर जरा झूठ बोला तो याद रखियो ! "

बुड्ढा—" हजूर, हमार गरीब मनई का घर कहां! यही धापभर पर एक " टिपरा " नामक गांव बाटै वहीं हमार झोपड़ी हौ। हम लकड़ी काटैं आयल रहली, हुजूर सच्च कहत हईं। रामदोहाई! जो नानिकौ झूठ बोलीं।"

मैं—बस, बस, बुड्ढे! कसम खानेकी कोई जरूरत नहीं अब तू यहां से सीधा अपने घर चला जा।"

बुड्ढा यह सुनतेही मेरे सामने से हवा हो गया और मैं वहीं खड़ा २ विचारता रहा कि " अब क्या करना चाहिये; अगर मैं आप के बगैर " कृष्णगढ़ " लौट जाता हूं तो महाराज मुझे क्या कहेंगे? और फिर अगर महाराज ने कुछ कहा या न कहा मैं ही आप के बगैर कै दिन जीता रह सकूंगा? फिर " कृष्णगढ़ " की रेयाया मुझ पर ही तरह २ के संदेह करने लगेगी " बस यही सब बातें निश्चय कर मैंने उस कुवें में कूदने का पक्का विचार कर लिया और झट अपनी कमर से रेशमी कमन्द खोल कर उसका एक सिरा खूब मजबूती के साथ कुवें पर लगे एक खम्भे से कस कर बांध दिया और झट नीचे उतर गया। पर कमन्द कुवें की सतह तक न पहुंची क्योंकि कुवां गहरा था; बस मैंने चट अपने बटुवे में से कपूर का एक टुकड़ा निकाल कर जलाया और नीचे फेंकदिया, कुवें में एकाएक रोशनी फल गई, उस रोशनी में मैंने देखा कि अब कुवें की सतह सिर्फ़ २० हाथ रह गई है; इतनी उंचाई हम लोगों के लिये कोई चीज न थी तिसपर कुवें में बड़ी २ घास जम गई थी। मैं वहीं से कमन्द छोड़कर धड़ से कूद पड़ा, मेरे जमीन पर गिरतेही एक धड़ाके की आवाज हुई और कुवें की ज़मीन नीचे को धसने लगी, साथही कुछ ऐसी बदबूदार सर्द हवा चली कि मैं चट बेहोश हो कर वहीं गिर पड़ा, फिर मुझे होश न रही कि क्या हुआ। जब मेरी आंख खुली तो मैंने अपने को एक सुन्दर सजे सजाये नजर

बाग़ में घास की फ़र्श पर पड़ा पाया, उसमें तरह तरह के खुशबुदार सुन्दर फूल फूले हुये थे जिनकी भीनी २ खुशबू से मेरा दिमाग तर हो गया और मैं उठकर पास ही के एक संगमरमर के बेंच पर बैठ गया और सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिये ? कैसे यहां की थाह लगे। बस यही सोच विचार कर मैंने बटुवे से सामान निकाला और एक घनी अंगूरी टट्टी के नीचे बैठकर अपनी शकल बदलने लगा और हूबहू एक निरे गंवार घनचक्कर की शक्ल में हो गया और बाग़ में टहलने लगा टहलते टहलते मैं एक छोटे से तिमज़िले खूबसुरत मकान के दरवाज़े पर पहुंचा जहां दो सन्तरी टहल टहल कर पहरा दे रहे थे, वह मुझे देखते ही बिगड़ कर बोले कि "अबेओ उल्लू के पट्ठे ! अन्धों की तरह इधर कहां चला आता है ? क्या तू जानता नहीं कि यह दारोगा पुतलीमहल की लड़की का आरामबाग है?

मैंने कहा--" हुजूर ! हम गंवार मनई ई कुछ का जानी कि ई " आराम फाग " केहकर हौ और दरोगा के लकड़ी कहां रहथीं। हम मंगन मनई मांगत मांगत इहां ले चल अईली। भगवान तो हैं राजा करैं कुछ खायके मिले। "

मेरी बातें सुनकर दोनों पहरेवाले बड़ा खिलखिला कर हंसे और मुझे बेवकूफ तथा घनचक्कर समझने लगे। फिर एक ने मेरी तरफ देखकर हंसते हुये कहा—" अबे उल्लू बसन्त! आरामफाग नहीं "आरामबाग" है। लकड़ी नहीं लड़की रहती हैं। तू यहां तक किस के हुक्म से चला आया, जल्द बता नहीं तो तुझे अभी दारोगा साहब के सामने ले जा कर सजा दिलावेंगे। "

मैंने कहा--" सरकार उल्लू बसन्त नाहीं आजकल बरसात के दिन हौ ! हुजूर दूनों सरकारन के लाल लाल बेटवा हौंय ! हमरा दारोगा साहब से जल्द मिलावा ऊ जरूर हमे खूब खावे के देई हैं। रामदोहाई ! पेट में तनिकौ अन्न नाहीं बाटै (पेट पिचका और हाथ

फेर कर) हुजूर, देखीं पेटवा कैसन सूख के एथुवा होय गैल हौ !"

मेरी बातें सुनकर उन लोगों ने मुझे निरा गंवार घुच्चू समझा और उन लोगों को मुझ पर बड़ी दया आई। दोनों ने सलाह कर मुझ से कहा—

पहरेवाला—" अबे तेरा घर कहां है और तू किस मुल्क का रहनेवाला है, सच सच बता ! "

मैंने कहा—" जमादार साहब ! मंगन ब्राह्मण का घर दुवार कहां ? जहां टांग पसार कर पड़रहली ऊहैं घर। जे मुकूल! में चल गइली ऊहैं मुकुल (मुल्क) "

राजकुमार से मारे हंसी के दम न लिया गया। हंसते २ उनका पेट फूल गया, हीरासिंह से हंसते हुये बोले—

राजकुमार—" वाह अच्छी गंवार की नकल लाये, भाई! यह ऐयारी तो तुम्हारी अजीब ढंग की हुई ! "

हीरासिंह—" कुंवर साहब ! अभी क्या जरा आगे का हाल सुनियेगा तो हंसते २ लोट जाइयेगा। ज़रा पूरा सुन तो लीजिये ! "

राजकुमार ने कहा—" अच्छा शुरू करो मगर ज्यादः देर यहां ठहरना अच्छा नहीं है, कहीं ऐसा न हो कि कोई दुश्मन आ जाय तो हम लोगों का बिलकुल भेद खुल जावे और तुम्हारी की कराई मेहनतों पर पानी फिर जांय—"

हीरासिंह—" कुछ परवाह नहीं, कुंवर साहब ! आप इस बातसे निसाखातिर रहिये; हम लोगों की ऐयारियें कच्ची नहीं होतीं। यह तो कुछ भी खतरे का मुकाम नहीं है। क्या आपने लोक विख्यात ऐयारों के गुरू घण्टाल " अमरूऐयार " * की ऐयारियें नहीं सुनी कि फ़ौज़ों से भरे हुये किलों में अकेले घुस कर किस चालाकी और बहादुरी से किला खाली करा लेता था ! "

* " अमरूऐयार " की ऐयारियें पढ़नी हों तो २) भेज कर जिल्द बन्धी पुस्तक मुझ से मंगाकर पढ़िये।

राजकुमार—" हां, अच्छी तरह सुनी वल्कि पढ़ी भी है। अब तुम अपने किस्से का सिलसिला शुरू करो, सुनने को जी उकता रहा है।"

हीरासिंह—" अच्छा सुनो ; जब मुझे दोनों पहरेवालों ने एकदम सीधा पाया और ब्राह्मण जाना तो उन लोगों को मुझपर बड़ी दया आई और मुझे प्रेम से अपने पास बैठाकर बोले " अच्छा महाराज! आप धीरज धरिये। अभी बहुत सवेरा है, जरा दिन चढ़े और हमलोगों का पहरा बदले तो आपको घर ले चल कर भोजन करावें और अपने मालिक से कहकर तुम्हें यहां नौकर करादें ! "

मैंने कहा—" परमेसुर आपको जीवित रक्खैं और लाख बरिस क उम्मर दें ! हम बहुत गरीब बम्हन हई। "

इतना कहकर मैं उन लोगों के पास बैठ गया और धीरे २ भैरवी अलापने लगा। कुछही देरमें वहां एक लम्बतड़ंग रोबीला मनुष्य आन उपस्थित हुआ। उसे देखते ही दोनों पहरेवालों ने झुक २ कर लगातार तीन सलामें कीं और सिर झुकाकर अदब से खड़े होगये ; उसने मेरी तरफ देख कर पहरेवालों से सवाल किया—

" सुदर्शनसिंह, भीमसिंह, यह आदमी कौन और क्यों यहां बैठा है ? साफ साफ बयान करो। "

उन दोनों सिपाहियों के नाम यही थे जो लांबे आदमी ने कहे। उसकी बातें सुनकर दोनों सिपाहियों ने मेरा सच्चा २ हाल जो उन्हें मालूम था कह सुनाया ; इसपर उन्हें बड़ा संदेह हुआ और एक सिपाही को मुझे साथ लेकर अपने पीछे २ आने का इशारा किया।

दिन के करीब आठ बजे थे, सूरजकी सुनहरी किरणें " पुतली-महल" के चारों तरफ वाली पहाड़ियों पर पड़कर बड़ी ही खूबसूरत दिखाई पड़ती थीं। अनुमान से मुझे मालूम हुआ कि यह दारोगा " पुतलीमहल " है। वह हम लोगों को साथ लिये कई पेंचीले रास्तों को छोड़ता हुआ एक आलीशान मकान में पहुंचा और एक

दके सजाये कमरे में जाकर एक मखमली कुर्सीपर बैठगया। हम लोग भी साथ ही थे, दारोगा ने हमसे इस प्रकार सवाल करना शुरू किया-

दारोगा-" ब्राह्मण देवता! आप चाहे कोई हों मगर मैं आपको पहचान गया कि आप कृष्णगढ़ के प्रधान ऐयार " हीरासिंह " हैं! आप लोगोंने हमारे महाराज से दुश्मनी कर अपने हाथों अपने पैरों में कुल्हाड़ी मारी है। खैर उसकी सजा बहुत जल्द सब को मिल जावेगी और एक एक कर सब ऐयार तथा राजा श्रीवीरेन्द्रसिंह और राजा देवसिंह को इसी पुतलीमहल में कैद होकर बड़ी दुर्गति से अपने अमूल्य प्राणों की भेट देनी होगी। "

दारोगा की बातोंपर मुझे क्रोध और ताज्जुब दोनोंही हुआ। क्रोध इन बातोंपर हुआ कि जिन वीर महाराजों का मैं ऐयार हूं और जिनका नमक खाकर मेरे पुरखे अपनी जिन्दगी ऐश के साथ काट गये उन्हीं महाराजों की निन्दा वह दुष्ट मेरेही सामने खुल्लमखुल्ला करे और ताज्जुब इस बात पर हुआ कि यह दुष्ट मुझे पहचान कैसे गया! अस्तु मैंने धीरज धर कर मनही मन लहू का घूंट पी लिया और एकदम बेवकूफ बनकर दारोगा से कहने लगा—

मैंने कहा-" हुजूर क जिनगी बहाल रहे, हुजूर जुग २ जीयें और हुजूर के हजारन पैसा क तरक्की ईसर दे। दोहाई हौ हुजूर खाय बिना मरत हई। कुछ खाय के मिलै, पेटवा जुड़ाय गैल है सरकार से जऊ निकल जाई। "

इतना कहकर मैं ढाड़ मार कर दारोगा के सामने रोने लगा; उस को मेरी बातें सुनकर बड़ाही ताज्जुब हुआ और लाल पीला होता हुआ कड़क कर बोला—

दारोगा-" बदमाश कहीं का! यहां भी ऐयारी का हाथ साफ किया चाहता है, हमारी आंखों में धूल झोंका चाहता है! देख तुझे मैं कैसा मज़ा चखाता हूं। कोई है? जल्द थोड़ा गरम पानी लाना,

यह बदमाश ऐसे नहीं काबू में आवेगा, शक्ल बदल कर मुझेही धोखा दिया चाहता है ! ”

दारोग़ा की आवाज़ के साथ ही एक खिदमतगार “जो हुक्म सरकार, अभी लाया” कहकर चला गया और कुछ ही देर में एक लोटा गरम पानी ले आया और दारोग़ा के कहने पर मेरा मुंह धोने लगा। कुंवर साहब ! सचमुच एक ऐसा रोगन मैंने खास अपने लिये बड़ी बड़ी मुशकिलों से तैयार किया है जो बगैर मेरेही बनाए मसालों के किसी तरह छूट नहीं सका। खिदमतगार खूब कस २ कर मेरा चेहरा साफ करने लगा मगर ज़रा भी रंग न साफ हुआ। तब तो वह बहुत घबड़ाया और आपही आप कहने लगा—

दारोग़ा-“ ओह अब समझ में आया। ज़रूर उस बज्जात ऐयार ने इस गरीब को धोखा देकर कुंवेंमें ढकेल दिया है! मुझे बड़ा ही धोखा हुआ। अगर मैं उस समय उसके कहने से भाग न जाता तो मुझे जरूर यह सब भेद मालूम हो जाते ! ओह अब महाराज को मैं क्या मुंह दिखाऊंगा ! उनसे तो मैं रातको कह आया हूं कि हीरासिंह फंस गये हैं। वास्तव में मुझे गहरा धोखा हुआ, खैर ! जाता कहां है चन्डूल ! ”

दारोग़ा जबतक अपनी बेवकूफी पर बड़बड़ाता रहा तब तक भौंचक सा मैं चारों तरफ देखता रहा मानों कुछ जानताही नहीं था। अब मैं बखूबी समझ गया कि मुझे धोखा देनेवाला यही बज्जात दारोग़ा ही था। मुझे मनही मन उस पर बड़ा गुस्सा आया लेकिन मैं उसे पी गया, थोड़ी देर बाद दारोग़ा ने मुझसे पूछा—

❋ पाँचवां बयान ❋

दारोग़ा-“ अच्छा तो तू अपना हाल सच२ बयान कर तब तुझे तेरी इच्छानुसार खूब भोजन कराया जायगा। ”

मैंने कहा-" अच्छा तो सूनी न सरकार लेकिन पेटवा कुड़-कुड़ बोलत बाटै एहकर कौन उपाय होई ? "

दारोग़ा-" अरे भाई ! कह तो दिया कि तेरे पेट पूजने का इन्तज़ाम बहुत जल्द हो जाता है, तू घबड़ा मत, अभी तो ज्यादः दिन भी नहीं चढ़ा ; जरा भोजन का वख्त तो होने दे ! तब से अपना हाल बयान कर जा ! "

मैंने कहा-" सरकार हम ' ऐंठगांव ' क परजा हुई, हमार बालबच्चा लुगाई सब सितला में बेराम होई के मर गैल ! हमहू मर जातिन, तब अच्छा होत, पर दयू क मर्जी हमें दुख देवे के रहल ! हम भटकत भटकत मांगत खात एक पहाड़ के कुइयां के पास पहुँच गइलीं, ऊहां एक सुन्नर मनई टहरत रहल, ऊ हम के देखतई बोलल " पण्डित जी ! आप के पास लोटा डोरी है. जरा इसमें से (कुंवेसे) जल निकाल कर पिलाई, आप को खुश कर दूंगों " बस सरकार उहिकर नीक नीक बतिया हमरे जिऊमां धस गइल और हमरे पास लोटा डोर रहल, चट कुंइया पर जाय हम पानी भरे वस्ते लोटा ढिल्ली एतने मों सरकार उई पापी मनई हम का कुईयां में ढकेल देइलस, कुइयां में पानी तनकौ नाहीं रहल, सरकार, लमा लमा घास जामल रहल, एहसे चोट बहुत कम लगल, बस हम गिरतेई बेहोस होई गैली; फिर हमें होस जब आयल तो हम अपना के एक सुन्नर बगईचा में पउली, बिनही होई गैल रहल, नीक नीक बतास (हवा) बहत रहल एहिसे जिऊ तनिक दुरस्त भैल और हम टहरत टहरत एक सुन्नर मकान के दुवारी के पास भिक्षा मांगें के पहुंचली, ऊहां ई (सिपाही की तरफ बताकर) दोई जन भले मनई पहरा देत रहलैं, बस सरकार और हम कुछ नाहीं जानित; सरकार ईसर उइ पापि क सत्यानास करैं हमार गठरी मोटरी लोटा थरिया कुल उई ले लेहले होई अब हमार तीर (पास) कुछ नाय रहल ! "

यह कहकर मैं जोर जोर से रोने लगा, तब तो इस रांठा जिल दारोग़ा को मुझ पर बड़ी दया आई और इसने अपने रसोइ खाने से खूब अच्छा २ भोजन मंगाकर मुझे खिलाया, मैं भी दो दिन का भूखा था आनन्द से भोजन कर मूछों पर ताव दिया और दारोग़ा को उसी गंवारू भाषा में धन्यवाद देने लगा। फिर इसने मुझे अपने पास रख लिया, मैं भी वहीं रहने लगा और गुप्त रीति से आप की थाह लगाने लगा। एक ब्राह्मण जो उसके यहां नौकर था कुछ बीमार हो गया तब दारोग़ा ने आज मुझे बुलाकर कहा कि "महाराज! आज एक कैदी के वास्ते आप को मेरे साथ भोजन लेकर चलना होगा सो वह बात आपको एकदम गुप्त रखनी होगी।"

मैंने कहा—" सरकार! जस हुकुम होई तस करिहौं और जिव जात जात उह बतिया मुहिते न कढ़िहौं!"

बस दारोग़ा मेरी बातों पर बहुत खुश हुआ और चिराग़ जलने के बाद मुझ से भोजन लेकर अपने साथ चलने को कहा। उस समय एकाएक बादल बड़े ज़ोर ज़ोर से गड़गड़ाने लगे और कड़ कड़ शब्द करती हुई बिजली अपना अद्भुत प्रकाश चारों तरफ़ फैलाने लगी। हवा का भी जोर बढ़ा और पानी भी जोर शोरसे गिरने लगा। ठीक ऐसाही भयानक समय था जब मैं भोजन की सामग्री लेकर दारोग़ा के साथ चला था।"

दारोग़ा मुझे साथ लिये दीवानखाने से निकला और मकान के चौक में आकर उसने एक साथ बनी हुई बारह कोठड़ियों में से एक का दरवाज़ा न मालूम किस तरकीब से खोल डाला और मुझे पीछे २ आने का इशारा किया और मेरे भीतर आने पर दरवाज़ा बन्द कर लिया। कोठड़ी बारह हाथ लम्बी और इतनीही चौड़ी थी, उसकी फर्श तथा दीवारें संगमरमर के चौखूटे पत्थरों से जड़ी थीं और कोठड़ी की दाहिनी दीवार पर एक तरफ बारह हैण्डिलों (मूठों) की कतार

बराबर से लगी थी और हरएक हैण्डिल के नीचे नम्बर पड़े हुए थे। इस जगह दारोग़ा ने मोमबत्ती जला ली थी, इसी से मैं सब कुछ देख सकता था। दारोग़ा ने सातवें नम्बर की हैण्डिल को पकड़ कर घुमाना शुरू किया, कुछही देर में कोठड़ी के बीचोंबीच वाला चौखूटा पत्थर एक धड़ाके की आवाज़ के साथ पहले की तरह खुल गया और नीचे घूमती हुई गोल सीढ़ियों का सिलसिला नज़र आया। आगे आगे दारोग़ा और पीछे पीछे मैं उस में उतरे। करीब ६० डण्डा सीढ़ी खतम करने पर फिर वैसीही एक चौखूटी कोठड़ी में हम लोग पहुंचे, उसकी दीवारें और फर्श वग़ैरह भी उसी प्रकार संगीन थे और उसमें सिर्फ दीवार पर दो हैण्डिल जड़े हुये थे। मगर एक बात ज्यादः यह थी कि उसकी छतके बीचोंबीच एक लोहे की जंजीर लटक रही थी। दारोग़ा ने उन हैण्डिलों में से एक को घुमाया, साथही ऊपर से धड़ाके की आवाज हुई, मालूम हुआ यह हैण्डिल ऊपर का दरवाज़ा बन्द करने के लियेही बना था। अब दारोग़ा ने छतसे लगी जंज़ीर को पकड़ कर खूब जोर से खींचा, साथही एक हलकी आवाज़ के साथ कोठड़ी की बाईं दीवार का एक पत्थर सरसराता हुआ ज़मीन में धंस गया और वहां एक छोटासा खूबसूरत बन्द दरवाज़ा नज़र पड़ा। दारोग़ा ने अपने जेब से चाभियों का गुच्छा निकाला और एक छोटी चाभी से वह दरवाज़ा खोल डाला, साथही उसमें खूब रोशनी मालूम हुई। मैं और दारोग़ा अन्दर घुसे, साथ ही आप से आप दरवाजा बन्द हो गया और उस का निशान भी न रहा। मैंने जो कुछ कोठड़ी में देखा उसी से अवाक हो गया। यह कोठड़ी क्या एक बीस हाथ लम्बा चौड़ा खूबसूरत कमरा था; कमरे की छत पर एक शीशा लगा था, उसीसे कमरे में रोशनी पहुंच रही थी। कमरे के चारों कोनों पर चार भिल्ल पैर के अंगूठों पर तीर कमान लगाये

बड़ी वीरता से बैठे थे मानों अभी अभी तीर मार कर हम दोनों को उड़ा देंगे ! उनकी आंखों में एक विचित्र प्रकार की चमक थी जिसे देखतेही मनुष्य डर के मारे वहीं प्राण छोड़ दे । हर एक भिल्ल के आगे तीरों से भरे तरकस भी पड़े थे । मैं डरा नहीं पर अपनी बेवकूफी दिखाने की नीयत से मैं झिझक कर पीछे हटा । दारोगा समझा मैं डर गया । इसने मुझे धीरज देतेहुये कहा "डरो मत मेरे साथ रहते तुम्हें किसी बातकी डर नहीं है । हां अगर मेरे बगैर तुम यहां किसी तरह आये होते तो अभी अभी यह मेरे चारों वीर तुम्हें तीरों से छेद डालते । मगर तुम इन से आंखें न मिलाना नहीं तो थोड़ीही देर में बेहोश होकर गिर पड़ोगे ।"

दारोगा की बातें खतम होतेही उन चारों भिल्ल वीरों ने आंखें मटकाई और सिर हिला दिया, मानों वह लोग भी दारोगा की बातों को पुष्ट करते हैं । भिल्लों की इन करतूतों से मैं हक्का बक्का हैरान सा रहगया और मुझे विश्वास होगया कि यहलोग सजीव हैं । उनकी बड़ी २ शरबती आंखें अब बराबर नाच रही थीं । दारोगा ने उनमें से एक भिल्ल के सिरपर जोर से चपत लगाकर कहा—

" तांतिया ! नम्बर सात के कैदखाने का दरवाज़ा खोल तो सही ! "

तांतिया मानो उसके हुक्म की इन्तज़ारी कर रहा था । उसने दक्षिण तरफ की दीवार पर ताक कर तीर का निशाना मारा । तीर एक काले निशान में धंस गई और साथही वहां का पत्थर ज़मीन में गायब होगया और वैसाही दरवाज़ा निकल आया जैसा पहली कोठरी में निकला था । दारोगा ने ताली लगाकर दरवाज़ा खोला, इसके अन्दर अन्धेरा था इसीसे इसने फिर मोमबत्ती जलाली क्योंकि वह पहले बुझा दी गई थी । हम लोग उसके अन्दर घुसे, साथही दर-वाज़ा आपसे आप बन्द होगया । यह कोठरी नहीं थी बल्कि कए

पतली सुरंग थी जिसमें एक आदमी बखूबी चल सकता था। मैं और दारोगा आगे पीछे चले, करीब दो सौ कदम चलने पर यह लोहेका मज़बूत फाटक मिला। सुरंग यहीं तक आकर खतम हो गई थी।

यहां दरवाज़े के दोनों बगल की दीवारों में लोहेके दो छोटे छोटे गोल पहिये लगेथे। दारोगा दोनों पहियों को ज़ोर २ से घुमाने लगा, साथही मोटे सिक्कड़ों की झनझनाहट सुनाई दी और गड़गड़ाहट की आवाज़ के साथ यह लोहेका पौलादी दरवाज़ा ज़मीन में धंस गया। उसके बाद ही आप से और हम लोगों से भेंट हुई। बस मेरा किस्सा खतम होगया और मेरी मनोकामना आपके दर्शनों की थी सो पूरी हुई।

राजकुमार चन्द्रसिंह बड़ी दिलचस्पी से हीरासिंह की कहानी सुन रहेथे और बीच बीच में तिलिस्मी कोठरियों का हाल सुन सुन कर उनको बड़ाही ताज्जुब होता था और दांतों उंगली काटते थे। राजकुमार बोलेः—

राजकुमार—"दोस्त हीरासिंह! अब तुमारी क्या राय है और तुमने इस नरककुण्ड से निकलने का क्या इरादा ठीक किया है?"

हीरासिंह—"कुंवर साहब! राय और दूसरी क्या? अब उठिये और जैसे बने वैसे इस "तिलिस्म" को तोड़िये। इसके अलावा यहां से निकलने का कोई तरीका नहीं है और इस तिलिस्म का बेशुमार खजाना आप के लिये है उसे स्वीकार कीजिये!"

चन्द्रसिंह—"बहुत ठीक बात है! सुपने की सी बातें कर रहे हो क्या? बेशुमार खजाना मानो फेंका पड़ा है! अच्छा तो यह बताओ कि बिना तिलिस्म तोड़े यहां से निकलने का और भी कोई तरीका है या नहीं? क्योंकि तिलिस्म तोड़ने में बहुत समय लगेगा और मैं सीधा यहां से निकलना चाहता हूं!"

हीरासिंह—"बस तब तो होचुका। अजी जनाब! यह घर नहीं

है जो इच्छा करते ही मनमुताबिक स्थान पर पहुंच जाइयेगा ! यह है " तिलिस्म " इसे बिना तोड़े निकलने का इरादा छोड़ दीजिये। अब देर न कीजिये, उठिये "जयदेवा" की कहकर इसमें हाथ लगा दीजिये। और खज़ाने की कही, सो बात कभी झूठ हो ही नहीं सकती। अगर खजाना न होता तो यहां तिलिस्म बांधने की ही क्या ज़रूरत थी? कुंवरसाहब! यह तिलिस्म खज़ानों की रक्षा के लिये ही बांधे जाते हैं। मेरे पिता " तिलिस्मी बाग " * की कहानी सुनाया करते थे कि उसमें से ४० करोड़ रुपयों की तो खाली अशरफियां ही निकली थीं और ज़वाहरात, हर्बे और चांदी सोने के बर्तनों का तो कुछ ठिकाना ही न था ! "

चन्द्रसिंह-" खैर तो मैं तैयार हूं। तुम भी चलने के लिये तैयार हो जाओ। "

हीरासिंह-" ईश्वर आपका कल्याण करे, मैं तैयारही हूं। "

इतना कहकर हीरासिंह ने बेहोश पड़ेहुये दारोग़ा की पोशाक उतार कर खुद पहिनली, उसकी कमर से तलवार खोलकर अपनी कमर में बांधली और उसके पास जो जो चीज़ें थी सब अपने कब्ज़े में करलीं और ऐयारी के बटुवे से सामान निकाल कर अपने चेहरे पर रंग भरने लगे। थोड़ीही देर में वह खास दारोग़ा की शकल बन गये। अगर अब दारोग़ा की जोरू भी इन्हें देखती तो अपना पति ही समझती। फिर हीरासिंह ने दारोग़ा के चेहरे पर रंग भरना शुरू किया और कुछही मिनट में उसे चन्द्रसिंह की शक्ल का बना डाला और राजकुमार की हथकडी बेड़ी खोलकर उसके हाथों व पैरों में भर दी व जबान ऐंठानेवाला अर्क उसकी जबान में पोतदिया। फिर राजकुमार को अपने पहले मजदूर की सी शक्ल का बनाडाला

* " तिलिस्मीबाग " नामक उपन्यास हमारे यहां छप रहा है, जिनकी इच्छा हो हमारे कार्यालय से मंगा ले। बहुतही दिलचस्प उपन्यास है। दाम ॥।)

और अपनी कमर में का छिपा हुआ खंजर निकाल कर कुंवर को दे दिया।

अब यह दोनों वीर "जयदेवाकी" कहकर कैदखाने के पौलादी दरवाज़े को पार कर गये। वहां हीरासिंह ने दीवार में लगे पहियों को उल्टा घुमाना शुरूकिया, साथ ही दरवाज़ा गड़गड़ाता हुआ ज्यों का त्यों आकर लग गया। चन्द्रसिंह ने अपने बटुवे से ऐयारी की लालटेन निकाल कर जलाई। सुरंग में एकाएक खूब रोशनी फैलगई। उस रोशनी में यह दोनों बातें करते हुये आगे बढ़े, कुछही दूर जाने पर सुरंग खतम हुई और वही बन्द दरवाज़ा मिला जिसमें से हीरासिंह और दारोग़ा गये थे। हीरासिंह दरवाज़े पर रोशनी डालकर ग़ौर से देखने लगे। थोड़ीही देरमें उन्हें एक गोल सूराख नज़र आया। हीरासिंह ने जेब से दारोगावाला चाभियों का गुच्छा निकाला और सूराख के नाप की एक चाभी निकाल कर उसमें लगाई, साथही खट से वह दरवाज़ा खुल गया मगर वह पत्थर की पटिया जो उसपार कमरे में दरवाज़े को छिपाये थी, किसी तरह नहीं हट सकी। बहुत देर ग़ौर करने पर राजकुमारको एक तरकीब सूझी। उन्होंने कमर से खंजर निकाल कर उसका कब्जा उस पत्थर पर ठोकना शुरू किया। राजकुमार ने आवाज़ से पहचान लिया कि यह पत्थर नहीं बल्कि पत्थर के रंग की लकड़ी है, यह जानकर राजकुमार खंजर की नोक से उसे छीलने लगे, देखा तो वह लकड़ी ही थी; अब हीरासिंहनें अपने बटुवे से " रूखानी " (बटाली) और हथौड़ी निकालकर राजकुमार से कहा " लाइये! कुंवर साहब, मैं अभी इसे काटे डालता हूं। आप कब तक खंजर से इसे छीलेंगे ? "

राजकुमार ने खंजर को म्यान में कर लिया और हीरासिंह ने अपने निकल जाने भरकी नाप का तख्ता काटना शुरू किया। लकड़ी मामूली नहीं थी, बहुत देर मेहनत करने पर हीरासिंह नें बीचों बीच

से चौखूटा तख्ता काट कर टुकड़ा अलग किया। अब इन लोगों के निकलने लायक एक खिड़की वहां बन गई। राजकुमार ने चाहा कि खिड़की पार कर कमरे में चले जावें मगर साथ ही हीरासिंह ने उन्हें रोक कर कहा—

हीरासिंह—" कुंवर साहब! ऐसी जल्दी न कीजिये, अभी जान खतरे में पड़ जाती और किया कराया खेल खड़मण्डल हो जाता! ज़रा अच्छी तरह झांक कर देखिये; ये जो चारों कोनों पर चार भिल्ल वीर तीर खींचे बैठे हैं कमरे में पैर रखते ही एक साथ हम लोगों का शिकार करेंगे!"

राजकुमार—" (कमरे में अच्छी तरह झांककर) इन लोगों की शक्लें बड़ी ही डरावनी जान पड़ती हैं, मगर जैसा तुम ने कहा था इन लोगों की आंखें तो वैसी नहीं नाचतीं, वह तो एक दम स्थिर हैं!"

हीरासिंह—" देखिये मैं वह भी आपको दिखलाता हूं। मेरे समझ में जब तक यह कमरा खाली रहेगा इनकी आंखें स्थिर रहेंगी और कमरे की फर्श पर बोझ पड़ते ही इन लोगों की आंखें भी चलने लगेंगी और तीरोंके बार भी साथही होने लगेंगे। अच्छा देखिये!"

यह कह कर हीरासिंह ने वही काठका टुकड़ा कमरे के बीचोंबीच फर्श पर फेंकदिया जो अभी अभी काटकर अलग किया था। हीरासिंह का अनुमान ठीक निकला। फ़र्शपर काठका टुकड़ा गिरने की देर थी कि साथ ही निशाना ताककर चारों भिल्लों ने एक साथ बार किया। चारों पक्के निशानेबाज़ थे, चारों तीर साथही आकर काठ में धंसगये, साथही भिल्लोंने अपने अपने तरकसों से तीर खैंचकर फिर कमानों पर चढ़ाये। अब भिल्लों की आंखें बराबर नाच रही थीं। भिल्लों ने निशाना ठीक कर तीरों की दूसरी बाढ़ मारी। तीर आकर फिर काठ में धंसगये। अब कमरे के बीचोंबीच फर्श का एक चौखूटा

पत्थर खट से सरक गया और वहां एक बड़ा मोखा बन गया और मोखे में से एक लोहे का हाथ निकलकर काठ के टुकड़े की तरफ बढ़ने लगा, मानों अभी काठ को पकड़कर मोखे में ले जायगा। लोहे का हाथ काठ को पकड़ाही चाहता था कि साथ ही हीरासिंह की फेंकी हुई कमंद ने काठ को फंसाकर खींच लिया। लोहे का हाथ मोखे में घुस गया और फ़र्श फिर बराबर हो गई। भिल्लों ने तीरें फिर कमानों पर चढ़ा ली थीं मगर उनका आँखें नचाना अब बन्द था। हीरासिंह ने कुंवर चन्द्रसिंह से कहाः—

हीरासिंह—"कुंवर साहब! देखी आपने भिल्ल वीरोंकी निशानेबाज़ी या तिलिस्मी खेलों का नमूना? अब आपही कहिये क्या करना चाहिये क्योंकि तिलिस्म के तोड़ने में ज्यादः हिस्सा आपही का है।"

चन्द्रसिंह—" भाई कुछ न पूछो। मैं तो तुम्हारी बातों को निरी कहानी ही समझता था मगर यह तो उससे कहीं बढ़कर निकली। सचमुच " तिलिस्म " तोड़ना आसान नहीं है, अभी ऐसी २ हम लोगों को न जाने कितनी मुसीबतें झेलनी पड़ेंगी। मेरी समझ में तो इन भिल्लों के पास तीरों का भरा हुआ तरकस रहना ही ठीक नहीं है।"

हीरासिंह—" आप का विचार ठीक है। मैंने भी यही सोचा है। अच्छा देखिये!"

यह कहकर हीरासिंह ने कमन्द फेंक २ कर चारों भिल्लों के तीरों से भरे तरकस एक एक कर खींच लिये और वही काठ का टुकड़ा जो कमन्द में फँसाकर खींचा था कमरे की फर्श पर फेंक दिया, साथ ही भिल्लों ने तीरों का वार किया, ज़मीन का पत्थर फिर खसक गया और लोहे के हाथ ने मोखे में से निकलकर काठ के टुकड़े को खींच लिया व फर्श बराबर हो गई। अब हीरासिंह और कुंवर चन्द्रसिंह खिड़की के रास्ते कमरे की फर्श पर उतर गये।

भिल्लों के पास अब तीर तो थे ही नहीं, खाली हाथ चलाना और आँखें नचाना भर बाकी रह गया था।

कुंवर चन्द्रसिंह की एक भिल्ल के साथ निगाह लड़गई। हमारे राजकुमार भी वीर थे, उससे कब के हटनेवाले थे। इसी आँख लड़ौ-वल में कुंवर की शक्ति कमजोर पड़ने लगी और उनके पैर लड़-खड़ाये कि साथही हीरासिंह की निगाह उनपर पड़ी, उन्होंने झट राजकुमार को सम्हाला और इस बेहोशी का मतलब समझ बटुवे में से लखलखे की डिबिया निकाल थोड़ा लखलखा सुंघा दिया। थोड़ी ही देर में चन्द्रसिंह के होश दुरुस्त हो गये, तब हीरासिंह ने राजकुमार से कहाः—

हीरासिंह—"कुंवर साहब! देखिये फिर आप चूके। मैं आप से पहले ही कह चुका था कि भिल्लों से आँखें मिलाने के लिये दारोग़ा ने मुझे मना किया था मगर आपने जान बूझ कर ऐसा किया! इनकी आँखों में जादू (मेसमेरिजम) है।"

राजकुमार—"भाई, जान बूझ कर मैंने ऐसा नहीं किया बल्कि यह बातही मेरे ख्याल से उतर गई और दूसरे इस बदमाश की ढिठाई मुझसे सही नहीं गई! भला यह अदना भिल्ल होकर हमें आँखे दिखावे। अब तुम इन दुष्टों की आँखे निकाल लो, इनकी यही सज़ा बहुत है!"

हीरासिंह—"वाह, अच्छी वीरता सूझी! अगर आप इसी तरह हर एक तिलिस्मी पुतलों से उलझा करेंगे तब तो हो चुका और तोड़ चुके तिलिस्म! इन्हें भी क्या आपने जानदार आदमी समझ रक्खा है जो आपकी बराबरी न करें! तिलिस्म के बनानेवाले हकीमों ने यही तो हिकमते इन में रक्खी हैं जिसमें आदमी गुस्से में आकर इनका मुकाबिला कर बैठे और पीछे बेमौत मारा जाय।"

राजकुमार—"प्यारे दोस्त! अब तानें मार कर लज्जित न

करो, आगे से ऐसा न होगा। मैं खुद अपनी भूल पर पछताता हूं। अब तुम इनकी आंखें किसी तरह निकाल डालो।"

हीरासिंह-"बहुत अच्छा, अगर आपकी मर्जी यही है तो कुछ परवाह नहीं। अभी लीजिये इन कम्बख्तों को अंधा बनाये डालता हूं।"

यह कहकर हीरासिंह एक भिल्ल की खोपड़ी पर चढ़ गये और "सोहन हतौड़ी" निकाल कर उसकी आंखें काटने लगे। थोड़ी ही देर में हीरासिंह ने एक भिल्ल की दोनों आंखें काट कर निकालीं, साथ ही उसमें से कुछ महीन महीन सुनहरे डोरे निकल कर हवा में गायब हो गये। हीरासिंह ने इसी प्रकार और तीनों भिल्लों की आंखें निकाल डालीं और आंखों के शीशों को अपने बटुवे के हवाले किया। अब उन भिल्लों की अंधी शक्लें बड़ी ही डरावनी जान पड़ती थीं।

अब यह लोग उस कमरे से निकलने का दूसरा दरवाज़ा खोजने लगे क्योंकि हीरासिंह और दारोगा जिस दरवाज़े से इस कमरे में आये थे उस का कहीं नामो निशान भी नहीं था। हीरा-सिंह और राजकुमार कमरे की चारों तरफवाली दिवारों को गौर से देखने लगे मगर कहीं भी दूसरे दरवाज़े का निशान नहीं मिला। तब परेशान होकर हीरासिंह ने कहाः--

हीरासिंह-"कुंवर साहब! दरवाज़े का तो कहीं भी पता नहीं है। अब क्या हम लोगों को यहीं सड़ना पड़ेगा?"

राजकुमार-"क्या कहें कुछ अक्ल काम नहीं करती! (कुछ ग़ौर करने के बाद) हां, हां, तुमने कहा था न कि दारोगा ने एक भिल्ल के सिर पर चपत लगाकर दरवाज़ा पैदा किया था। अगर यह बात ठीक है तो इन चारों भिल्लों में यही करामात होगी और यह चारों ही एक एक दरवाज़े की "कुंजी" होंगे।

हीरासिंह-"हां, हां, बेशक; कही तो पते की। उम्मीद है इस

तरकीब में हम लोग कामयाब होंगे। अच्छा तो मैं इसमें से किसी भिल्ल के हाथ में तीर देता हूं मगर आप कमरे से बाहर हो जाइये या किसी भिल्ल की खोपड़ी पर सवार हो लीजिये नहीं तो उसका पहला वार आप ही पर होगा क्योंकि बोझा ज़मीन पर है।"

राजकुमार यह सुन एक भिल्ल की खोपड़ी पर सवार होगये। तब हीरासिंह ने पूरब तरफ वाले भिल्ल के पास तीर रख दिया, उसने फौरन उठा कर कमान पर चढ़ा लिया क्योंकि उन लोगों के हाथ अब तक बराबर चल रहे थे। हीरासिंह ने उसके बगल में जाकर उसके सिर पर चपत लगा कर कहा "उल्लू के पट्ठे! बे नम्बर का दरवाज़ा खोल।"

बात के साथ ही भिल्ल का तीर छूटकर पश्चिम तरफ की दीवार में धंस गया, साथ ही एक धड़ाके की आवाज़ हुई और एक पत्थर सरसरा कर ज़मीन में धंस गया और उसके पीछे एक सुंदर खूब ही सजा हुआ कमरा नज़र पड़ा और देखते २ एक बड़ी ही खूबसूरत सोलह सालके सिन की औरत बेशकीमत पौशाकों और जवाहरात के जड़ाऊ ज़ेवरों में सिर से पैर तक सजी हुई उस कमरे के बीचों बीच आकर नाचने लगी और राजकुमार को अपने हाव भाव कटाक्ष से मोहने लगी। अब राजकुमार की अजीब हालत हो गई, वह अपने आपे में न रहे और हीरासिंह के मना करने पर भी दौड़ कर उस कमरे में घुस गये और सुन्दरी के गले में बाहें डाल कर नाचने लगे। ठीक उसी वख्त एकाएक कमरे के कोनों से दो पहलवानों ने पैदा होकर एक साथ राजकुमार पर खंजरों का वार किया और साथ ही धड़ से दरवाज़ा बन्द हो गया व हीरासिंह खड़े हाथ ही मलते रह गये।

छठवाँ बयान ।

" महाराज वीरेन्द्रसिंह का दर्बार "

आइये पाठक, आज आपको " कृष्णगढ़ " में राजा वीरेन्द्रसिंह के दर्बार की सैर करावें ।

दोपहर का समय है, गर्मी कुछ कड़ी पड़ रही है, बादलों के छिपाये रहने से सूर्य की किरणें पूरे तौर से ज़मीन पर पहुंच रही हैं । राजा वीरेन्द्रसिंह का दर्बार खूब रोब से लगा है । तीन फुट ऊंचे गंगाजमनी जड़ाऊ सिंहासन पर मखमली तकियों का सहारा लिये राजा साहब बड़े रोबसे बैठे हैं । राजा साहब की उम्र अभी ४० वर्ष से कुछ कम ही मालूम होती है । रंग गोरा शरीर गठीला और खूबसूरत है, मतलब यह कि राजा साहब एक बड़े ही बलिष्ट खूबसूरत और रोबीले जवान मालूम देते हैं ।

राजा साहब के सिंहासन क दाहिनी तरफ उनके दीवान राय विसुनसिंह वर्म्मा अपनी सुनहरी कुर्सी पर बैठे हैं, उनके बगल में तथा राजा साहब के बांई तरफ कतार बान्ध कर बड़े २ सर्दार जागीरदार, वीर और बहादुर योद्धा अपनी २ कुर्सियों पर अदब से बैठे हैं । दर्बार खूब सजा है, हरेक सामान करीने से रक्खा है । चोबदार भी अपनी २ जगह अदब से सिर झुकाये खड़े हैं ।

दीवान विसुनसिंह के सामने एक गोल टेबिल रक्खा है जिस पर बहुत से जरूरी कागज़ात पड़े हैं । दीवान साहब एक मुकद्दमे की मिसिल राजा साहब को सुना रहे हैं कि एकाएक एक चोबदार ने आकर कहा–"महाराज की जय हो, सर्दार अजीतसिंह आप के दर्शन किया चाहते हैं; आज्ञा हो तो भीतर बुला लाऊं । "

महाराज–" उनको खातिर से दर्बार में ले आओ । (दीवानसे) क्यों जी, अजीतसिंह तो कुंवर चन्द्रसिंह के साथ शिकार खेलने गये थे न ? "

दीवान–"जी हां। लेकिन कुंवर साहब के साथ से न मालूम क्यों ऐसी जल्दी चले आये! ईश्वर कुशल करे, इस में कुछ भेद अवश्य होगा!"

इतने में चोबदार सर्दार अजीतसिंह को लिये दर्बार में हाज़िर हो गया। अजीतसिंह ने राजा साहब को लम्बी सलाम कर कहा–"महाराज की गद्दी सलामत रहे और महाराज एकछत्र राज्य करें।"

महाराज–"अजीतसिंह, अच्छे तो हो? तुम तो कुमार के साथ शिकार को गये थे फिर अकेले इतनी जल्दी क्यों चले आये?"

अजीतसिंह–(आँखें नीची कर) "महाराज! बेशक मैं कुंवर साहब के साथ शिकार को गया था, लेकिन जल्दी फिर आने का मतलब कुछ अर्ज करने लायक नहीं है! उसके बयान करने में मेरी ज़बान कांपती है।"

महाराज–(चौंक कर) "हैं! क्या कहा? ज़बान कांपती है, इसका क्या मतलब? जल्द कहो कुछ समझ में नहीं आता! खैर तो है?"

अजीतसिंह–(जी कड़ा कर) "महाराज! सुनिये। परसों दोपहर के वख्त, आह! आगे नहीं कहा जा सकता, कुंवर चन्द्रसिंह तथा हीरासिंह हम लोगों के साथ २ शिकार खेल रहे थे, बनरखों ने सूराक़ लगाकर पता दिया था कि "यहां से बीस कोस पर हीरक पहाड़ी की झाड़ियों में शेर का पता लगा है, लेकिन रमनेके आस पास सिवाय दो तीन जंगली सूअर तथा कुछ बारहसिंघे व हिरन के और कोई जानवर शिकार के योग्य नहीं है, अगर हुक्म हो तो चार पांच दिन में हंकवाकर हम लोग रमने के मैदान में शेर को ले आवें।" इसपर कुंवर साहब ने बनरखों को शेर के घेर लाने की आज्ञा दी और रमने के आस पास वाले जंगलों में शिकार की तलाश में घुस पड़े। बहुत दूर तक हम लोग शिकार की तलाश

में चले गये मगर कोई शिकार हम लोगों के हाथ न आई अब करीब एक बज गया था, सुबह का पानी ने बरस कर जंगल में कीचड़ व चिकलाहट पैदा कर दी थी। हम लोगों ने कुमार को समझाया और कहा कि "आज हम लोगों को शिकार न मिलेगा क्योंकि पानी बूंदी के कारण सब जानवर अपने २ स्थानों में दबके पड़े होंगे तथा हम लोगों के घोड़े भी कीचड़ पानी में तकलीफ पाते हैं इस से आज लौट चलिये, कल सुबह से शिकार का बन्दोबस्त किया जावे।" इसपर कुंवर साहब ने कहा "नहीं, आज हम लोगों का पहला दिन है, आज बे शिकार मारे लौटना हम लोगों के लिये बड़े असगुन की बात है। चाहे रातभर क्यों न बीत जावे हम बे शिकार मारे नहीं लौट सकते। अभी तो बहुत दिन है।" इतना कह कुंवर साहब ने एक तरफ जंगल में बेतहाश घोड़ा फेंका। हम लोग भी चुपचाप उन्हीं के पीछे २ घोड़ा दौड़ाते चले। अब हम लोग करीब आठ कोस अपने रमने से निकल आये थे कि एकाएक बाईं तरफ वाले जंगल से करीब एक कोस के फासले पर से शेर के दहाड़ने की आवाज़ आई। अन्दाज से मालूम हुआ कि वही शेर जिसका पता बनरखों ने दिया था भूख की वजह शिकार की तलाश में यहां तक चला आया है।

हम लोगों ने आपस में राय मिलाकर कुंवर साहब से कहा कि "हम लोगों के घोड़े बहुत थक गये हैं और हम लोग भी पसीने पसीने हो गये हैं, इस वख्त लौट चलिये, कहीं शेर का मुकाबिला हो गया तो बड़ी तकलीफ होगी; कीचड़ पानी का दिन है और संध्या होने में सिर्फ ५–६ घण्टे की देर है, फिर जंगल भी जाना बूझा नहीं है।" हम लोगों ने बहुत समझाया पर कुंवर साहब ने एक न माना और अपना घोड़ा उसी तरफ मोड़ा जिधर से शेर के दहाड़ने की आवाज़ आई थी और हीरासिंह से यह कहते हुये तेज़ी से घोड़ा

फेंकते हुए आगे बढ़े कि "हीरासिंह! हमारे पीछे २ घोड़ा फेंकते चले आओ, इन लोगों के संग छूटने का ख्याल न करना। देखो उस मूजी शेर को आजही मैं अपना शिकार बनाता हूं।"

हीरासिंह भी उनके पीछे २ घोड़ा फेंकते हुये चले। लाचार हम लोग भी घोड़ा दौड़ाये उनके पीछे चले गये। हम लोगों के घोड़े बहुत थक गये थे इस से पिछड़ गये और कुमार तथा हीरासिंह का साथ न दे सके, न मालूम वह लोग किधर निकल गये। हम लोग रात के आठ नौ बजे तक उनको जंगल जंगल तलाश करते रहे पर उनका कहीं भी पता न लगा। आखिर हम लोग इस नीयत से डेरे की तरफ लौटे कि कहीं वे दूसरे रास्ते से डेरे पर न पहुंच गये हों। बड़ी मुशकिल के साथ हम लोग १२ बजे डेरे पर लौटे, वहां भी पता न लगा। रात ज्याद: जाने के सबब खुद खोज न लगा सके और वन-रखों को टोह लगाने की आज्ञा दी। रात भर रंज में कटी। दूसरे दिन सवेरे से हम लोग जी जान से कुंवर साहब की खोज में लगे, सारा जंगल रत्ती २ छान डाला, हीरक पहाड़ी तक खोजा किन्तु कुमार का चिन्ह तक न पाया। फिर दिन भर खोजते रहे, जब कोई फल न निकला तो लाचार डेरा वग़ैरह उखड़वा गाड़ियों पर लदवा संतरियों के सुपुर्द कर रातों रात हम लोग लौटे और अभी २ यहां पहुंच कर आपको खबर दी। संग के लोग अभी पीछे ही हैं।"

सर्दार अजीतसिंह की बातों से दर्बार में एकबारगी गहरा सन्नाटा छा गया। वीर महाराजा वीरेन्द्रसिंह के मस्तक पर पसीना आ गया, उनकी आँखें डबडबा आईं, मगर उन्होंने अपने जी को बहुत सम्हाला और गम्भीर आवाज़ में दीवान बिसुनसिंह से कहा:—

महाराज—"दीवान साहब! सर्दार अजीतसिंह की बातों पर आपने कुछ विचार किया? आप क्या समझते हैं कि कुंवर तथा हीरासिंह कहां चले गये?"

दीवान-(कुछ सोचकर) " महाराज! मेरा दिल तो गवाही देता है कि वे दोनों कुशल से हैं परन्तु किसी आफत में जरूर हैं। अन्दाज से मालूम होता है कि शेर उन लोगों के हाथ नहीं आया और वह लोग उसका पीछा किये हुये "हीरक पहाड़ी" तक निकल गये और वहां किसी तरह अर्जुनसिंह के ऐय्यारों द्वारा " पुतली-महल " में फंसा लिये गये! क्योंकि अर्जुनसिंह आज कल हम लोगों का पूरा दुश्मन हो रहा है। "

महाराज-(देर तक ग़ौर कर) "हां! यह बात कुछ २ मेरी समझ में भी आती है। लेकिन अर्जुनसिंह की इतनी बड़ी ताक़त कि वह खुल्लम खुल्ला हमलोगों से दुश्मनी करने लगा ? "

दीवान-" महाराज! जब से महाराज देवसिंह ने उसे गुलाब कुंवरी के बारे में कड़ी फटकार बताई है तब से वह इन दोनों राज्यों का पूरा दुश्मन बन बैठा है और उसके ऐयार छिपे २ दोनों राज्यों में घूमा करते हैं। उसको अपने " पुतलीमहल " का पूरा घमन्ड है। "

महाराज-" तो बस अब अर्जुनसिंह की मौत नज़दीक है, उसकी ज़िन्दगी के दिन अब पूरे हो गये। क्या तुम्हें नहीं मालूम कि गत ९ वर्ष वाले उस युद्ध में वह हमलोगों से कैसी आजजी के साथ पेश आया था और हमारी शर्तें मंजूर कर सन्धि (सुलह) कर ली थी। खैर तो सेनापति को आज्ञा दो कि शीघ्र फौज को दुरुस्त कर उसपर चढ़ाई करदे और उसका राज्य दखल कर उसे हमारे पास कैद कर लावे। "

दीवान-" महाराज! कसूर माफ हो। इतनी जल्दी उसपर चढ़ाई कर देना सरासर भूल है क्योंकि उस सुलहनामे की शर्त के मुताबिक जो कि ९ वर्ष हुये लिखा गया था बिला कसूर पहले चढ़ाई करनेवाले को ५०००००) पांच लाख रुपया दण्ड स्वरूप

देना होगा क्योंकि आम तौर से उसने अभी कोई कार्रवाई नहीं की है।"

महाराज–"बिला कसूर तो हम उसपर चढ़ाई नहीं करते ! यह क्या कम कसूर है कि वह कुंवर चन्द्रसिंह के साथ ऐसा सुलूक करे ! पहले उसी की तरफ से ढेला फेंका गया है।"

दीवान–"क्या सबूत है कि राजकुमार को उसी ने फँसाया हो ? सम्भव है कि राजकुमार हीरासिंह के साथ "देवीपूर" या और कोई शहर में निकल गये हों और वहां किसी आफत में फँस जाने की वजह आने में रुकावट पड़ गई हो।"

महाराज–"तो अब क्या बन्दोबस्त किया जावे ?"

दीवान–"मेरी समझ में तो दो चार ऐयारों को कुमार का सूराग लगाने भेजा जावे। इससे दो फायदे होंगे, एक तो अगर हो सका तो पता लगाकर यह लोग कुमार को अपने साथ ही ले आवेंगे और दूसरे अगर न ला सके तो वहां का पूरा पता देंगे उस मौके पर चढ़ाई करने में पूरी सुविधा होगी। आगे जो आपकी आज्ञा।"

यह राय दर्बार भर के सर्दारों तथा और लोगों ने भी पसन्द की और महाराज को यही सलाह दी। महाराज ने ऐयारी घण्टा बजाने की आज्ञा दी, साथ ही ऐयारी घण्टे पर चोटें पड़ने लगीं और देखते २ सब सामानों से लैस ऐयार कूदते फाँदते दर्बार में आ महाराज को प्रणाम कर एक तरफ अदब से खड़े हो गये।

महाराज वीरेन्द्रसिंह ने दीवान राय बिसुनसिंह को आज्ञा दी कि कुंवर चन्द्रसिंह के ग़ायब होने का पूरा २ हाल ऐयारों को कह सुनावें।

दीवान बिसुनसिंह ने सर्दार अजीतसिंह वाली कुल बातें ऐयारों के सामने दोहरा दीं जिसे सुन सब ऐयार मारे गुस्से के कांपने लगे और राजा साहब से हाथ जोड़कर बोले:—

सब ऐयार-" महाराज! अगर सचमुच यह कर्रवाई खास राजा अर्जुनसिंह की तरफ से की गई है तो बेशक उनकी ज्यादती है। और आप से हमलोग प्रार्थना करते हैं कि राजा अर्जुनसिंह की किस्मत का फैसला आप हम लोगों के ऊपर छोड़ दें और फिर देखें कि हम लोग उनका फैसला किस खूबी के साथ करते हैं और राजकुमार को किस सफाई से आपके सामने पेश करते हैं।"

महाराज-" अच्छा, तुम लोगों की प्रार्थना स्वीकार की जाती है मगर एक शर्त पर! वह यह है कि तुममें से कुछ ऐयार राजकुमार की खोज में जावें, अगर सचमुच राजकुमार अर्जुनसिंह ही की कैद में हों तो तुम लोग जैसा जी चाहे उसको दण्ड दे सकते हो मगर वगैर पूरा सबूत पाये नहीं।"

राजा साहब की यह बात सब ऐयारों ने पसन्द की और सल्लाह कर अपनी मण्डली से चार ऐयारों के ऊपर राजकुमार की खोज का भार दिया जिनके नाम यह हैं-विश्वनाथसिंह, दमोदरसिंह भपसिंह और लालसिंह; यह चारोंही ऐयार खास हीरासिंह के शागिर्द और ऐयारी के फन में बड़ेही चुस्त चालाक और फुर्तीले थे।

राजा वीरेन्द्रसिंह ने भी इन चारों ऐयारों को पसन्द किया। चारों ऐयार महाराज को प्रणाम कर उसी वख्त दर्वार से निकल गये और शहरपनाह के बाहर हो कुछ सल्लाह कर अलग २ अपने रास्तों पर चले गये।

राजा साहब की आज्ञानुसार राजकुमार का पूरा हाल लिख कर एक खत " देवगढ़ " को उसी वख्त भेज दिया गया और दर्वार बरखास्त किया गया।

सातवां बयान

"अजीब दिल्लगी"

तीसरे बयान के अन्त में हम लिख आये हैं कि मालती महाराज "देवसिंह" के शयनागार का रेशमी पर्दा हटाकर अन्दर चली गई तो उसने अन्दर जाकर क्या देखा कि महाराज देवसिंह पलंग पर मखमली तकियों का ढासना लगाये बड़े सोच में डूबे हुये हैं और कुंवर चन्द्रसिंह की एक छोटी तस्वीर हाथ में लिये बग़ौर देख रहे हैं।

महाराज अपने ख्यालों में ऐसे मस्त हैं कि उनको पर्दे का हटना और मालती का अन्दर आना अब तक मालूम न हुआ। मालती धीरे २ आगे बढ़ी और अदब के साथ महाराज के पैर पकड़ घुटने टेक कर बोली:-

मालती:-"महाराज! अभी २ दर्बार में किसकी चिट्ठी आई थी? सुना है "कृष्णगढ़" से कुंवर साहब का कुछ समाचार आया है।"

महाराज-(चौंककर) "हैं, मालती? तू यहां एकाएक कैसे आ गई? चिट्ठी का हाल तुम्हें कैसे मालूम हुआ? क्या तैंने भी कुमार का हाल कुछ सुना है?"

मालती-"महाराज! आप तस्वीर देखने में मशगूल थे तब मैं अन्दर आई। चिट्ठी का हाल सखी श्यामा से मालूम हुआ। सिवाय उस चिट्ठी के और कुछ हाल कुमार का मुझे नहीं मालूम।"

महाराज-"खैर तो श्यामा की जबानी तुझे उस चिट्ठी का सब हाल मालूम ही होगया होगा। अब मैं उसी पर विचार कर रहा हूं कि मुझे अब क्या करना चाहिये।"

मालती-"महाराज! अगर आज्ञा हो तो मैं और श्यामा

जाकर जहां राजकुमार हों खोज निकालें। आखिर हम लोगों की ऐयारी और किस दिन काम आवेगी ! ऐसा तो कभी भी मौक़ा नहीं पड़ा कि हम लोग आपको अपनी बरसों की मेहनत का इम्तेहान दें। "

महाराज-(मुस्कुराकर) "मालती, मैं, खूब जानता हूं कि तुम-लोग अब ऐयारी के फन में पूरी उस्ताद हो गई हो मगर हमारे यहां बहुत ऐयार हैं, उनके रहते तुम लोगों का परेशान होना उचित नहीं है, फिर "गुलाबकुंवरी" की हिफाज़त तुम्हारे बग़ैर कौन करेगा ? क्योंकि आज कल हमारे राज्य में दुश्मनों के ऐयार शकल बदले घात में लगे हुये चारों तरफ घूम रहे हैं। "

मालती-" महाराज, राजकुमारी की तरफ से आप एक दम बेफिक्र रहें, उनकी हिफाज़त के लिये ललिता तथा केसर काफी हैं।"

महाराज-"खैर तो तुम्हारी ऐसी ही मर्ज़ी है तो अपने उस्ताद गुलाबसिंह के साथ चली जाओ क्योंकि मैंने गुलाबसिंह ही को इस काम के लिये भेजने का विचार किया है।

मालती-" महाराज की आज्ञा शिरोधार्य है ! लेकिन उस्ताद म और मुझमें ऐयारियों का मतभेद है। जो सूत पकड़कर मैं काम करना चाहती हूं उस्ताद ठीक उसके विपरीत दूसरा सूत पकड़कर काम करते हैं। इस हालत में दोनों का एक साथ रहना उस्ताद भी नहीं मंजूर करेंगे। अगर हम लोगों की ऐयारियें देखनी हों तो अलग२ भेजिये। "

महाराज-" तो मुझे यही मंजूर है ! तुम और श्यामा यहां से आज ही कूच करो मगर देखो " गुलाबकुंवरी " की हिफाज़त में कसर न हो ! "

" महाराज के अकबाल से सब फतह होगा। "

यह कहती हुई मालती खुशी २ राजकुमारी के पास आई और उनसे सब हाल कह राजकुमार से जल्द मिलाने का वादा कर तथा

केसर और ललिता को कुछ समझा श्यामा को साथ के राजकुमारी से विदा हो सीधी अपने शक्ल बदलनेवाले कमरे में आई। श्यामा सफर ऐयारी का पूरा सामान दो बटुवों में ठीक करके रख गई थी।

मालती का शक्ल बदलनेवाला कमरा ऐयारी के सब सामानों से दुरुस्त था। मतलब की कोई ऐसी चीज न होगी जो उस कमरे में करीनेसे न रक्खी हो। चारों तरफ दीवारों पर खंजर, नेज़े, बरछे, ढाल, तलवार, पिस्तौल, तीर, कमान, किरिच, कमंद, इत्यादि लटक रहे थे, उसी के नीचे दाढ़ी, मोछें, गलमुच्छे, सिर के पटे, सिरके पूरे, जनाने बाल, मर्दाने बाल, घुंघराले बाल, जटा, सफेद दाढ़ी, मूछें, सुफेद बाल इत्यादि लटक रहे थे। एक तरफ दीवार में हर एक किस्म की ज़नानी व मर्दानी घटिया बढ़िया पोशाकें करीने से टंगी हुई थीं, गरज़ यह कि कमरा सब सामानों से लैस था।

मालती और श्यामा ने चटपट अपने २ कपड़े उतार मुंह हाथ धो चेहरों पर सुफेद मसाला मला और जल्दी २ अपने लम्बे २ घुंघरवाले बालों का जूड़ा सिरके ऊपर बांधा और उसपर से नकली जुल्फें लगा अंगा पैजामा पहिन सिरपर ग्वालियर की चाल का मुरेठा बांधा और कमरबन्द लगा एक २ खंजर उसमें खोंस लिया और पान खा जूता पहन बगल में बटुवे लटका खासे एक बहादुर सिपाहियों का भेष बना लिया और दोनों अपना २ मुंह शीशे में देखने लगीं, मालती एकाएक श्यामा से बोल उठी—

मालती-" दोस्त श्यामलाल ! अब तो तुम मुझे बड़े ही प्यारे मालूम होते हो ! जी चाहता है कि तुम्हारी गुलाबी गालों का एक बोसा ले लूं। "

श्यामा-(खिलखिलाकर) "सचमुच, दोस्त ! अब तो हमलोग अपने को आपही पहिचान नहीं सकते ! मुझको एक दिल्लगी सूझी है अगर करो तो बड़ा मज़ा आवे। "

मालती—" वह क्या प्यारे ? तुम्हारे लिये तो जान हाजिर है, जो कहोगे सो मैं करने के लिये तैयार हूं ? "

श्यामा—" तुम तो दिल्लगी करते हो । खैर सुनो (मालतीके कान में कहकर) क्यों ठीक है न ? बड़ा मज़ा आवेगा । "

मालती—(खुश होकर) " हां, मज़ा तो बड़ा आवेगा और हम-लोगों की परीक्षा भी होजायगी। खैर तो चलो, देरी करना फजूल है।"

इस वख्त शामके करीब ७ बज चुके हैं, चारों तरफ याने राज-महल के सब कमरों में चिराग़ की रोशनी बखूबी हो रही है। मालती कमरे का ताला लगा श्यामा को साथ ले उसी मर्दाने भेष में राज-कुमारी के कमरे में पहुंची और खंजर निकाल आवाज बदल केसर तथा ललिता को डपट कर बोली " बस, खबरदार, अगर जानकी खैर चाहो तो जहां की तहां बैठी रहो; अगर जरा भी हाथ पैर फैला-ये या गुल शोर मचाया कि साथही हम दोनों के खंजर तुम दोनों के पेट में बैठ जायेंगे ! "

एकाएक इस घटना के हो जाने से ललिता तथा केसर घबड़ा गईं और राजकुमारी भौंचक्क सी उन दोनों जवानों का मुंह ग़ौर से देखने लगीं और फुर्ती से अपनी कमर का खंजर निकाल तेज़ी से दौड़कर मालती पर खंजर का भरपूर वार किया । अगर मालती ज़रा भी चूकती तो राजकुमीरा का खंजर उसके कलेजे को पारकर जाता, मगर वाह रे मालती ! आखिर तो ऐयार बच्ची न, उसने चट पैंतरा बदल वार खाली दिया और राजकुमारी का हाथ पकड़ ऐसा झटका दिया कि खंजर दूर जा गिरा । साथ ही ललिता और केसर की फेंकी हुई कमन्दें अचानक मालती और श्यामा पर पड़ीं और दम के दम दोनों ज़मीन पर आ रहीं । ललिता तथा केसर ने चटपट दोनों की मुस्कें बांध लीं । गुलाबकुंवरी ने दौड़कर अपना खंजर ज़मीन से उठा लिया और मालती की छातीपर चढ खंजर तानकर कहा:—

गुलाब०–" मुवे, हरामज़ादे ! सच कह तू कौन है और किस नीयत से इस महलमें घुसा ? और यह निगोड़ा तेरे संग कौन है ? अगर ज़रा भी झूठ बोला तो यह खंजर तेरी छाती में घोप दूंगी।"

उधर केसर ने श्यामा की छाती पर सवार होकर उससे भी वही सवाल किया जो राजकुमारी ने मालती से किया था। श्यामा तो चुप्पी साध गई मगर मालती ने हंसकर कहा–

मालती–" प्यारी, तुम चाहे मुआ कहो चाहे निगोड़ा, हम दोनों तुम्हारे गुलाम हैं मगर (ललिता और केसर की तरफ इशारा कर) यह हरामजादियां मेरे भाई को क्यों गाली दे रही हैं ?"

ललिता–" मुवे, कुत्ते के बच्चे ! मुंह सम्हाल कर बोल वर्ना अभी तेरी जबान को खींच लूंगी। क्या तू जानता नहीं कि हम लोग कौन हैं ?"

मालती–" हां, हां, मैं जानता हूं कि तुम दोनों राजकुमारी की अदनी लौंडियां केसर और ललिता हो ! बस आगे न बोलना वर्ना अभी–"

केसर–"हरामजादे ! वर्ना अभी तू क्या कर डालेगा ? क्या फूंक से पहाड़ उड़ा देगा ? मुंवे की मुश्कें तो बंधी है फिर किस बात पर इतनी हिमाकत दिखलाता है ?"

मालती–"हिमाकत दिखलाता हूं अपनी प्यारी गुलाबकुंवरी की बदौलत।"

इसपर गुलाबकुंवरी उसपर बहुत बिगड़ी और उसने अपने नाजुक हाथों पैरों को मालती पर बेतौर झाड़ना शुरू किया। उधर ललिता और केसर भी श्यामापर सफाई का हाथ दिखाने लगीं। अब तो मालती और श्यामा अपने मनमें बहुत घबड़ाई और 'गुलाबकुंवरी मे चिल्लाकर बोली:–"प्यारी गुलाबकुंवरी ! बस अब रहने दे। हम दोनों तेरी प्यारी सखियें, मालती और श्यामा हैं, अगर न एतबार होतो

हमारी पगड़ियां उतारकर पहचान लो।"

मालती की असली आवाज सुनकर गुलाबकुंवरी और उसकी दोनों सखियां चौंक पड़ीं क्योंकि अब तक वह बनावटी आवाज़ में बातचीत कर रही थी। गुलाबकुंवरी ने अपने हाथ से मालती तथा श्यामा के मुरेठे खोल डाले, नकली ज़ुल्फें और नकली गलमुच्छे उतार कर दूर फेंक दिये और अब जो गौर से देखा तो सचमुच मालती और श्यामा खिलखिला कर हंस रही थीं। गुलाबकुंवरी ने चट दोनों की मुश्कें खोल दीं और शर्माकर कहाः-

गुलाब०-" भला तुम दोनों को यह क्या दिल्लगी सूझी थी जो नाहक इतनी मार खाई? क्या बदन में कुछ दर्द हो रहा था या मार खाने का शौक लगा था? आह, यह कैसी हंसी!"

मालती-" मार खाने का ख्याल छोड़ दो, इसकी हम लोगों को कुछ परवाह नहीं रहती। इस दिल्लगी से आपलोगों का पूरे तौर से इम्तेहान हो गया कि तुम्हारी हिफाज़त पूरे तौर से हो सकती है और हम लोगों को भी विश्वास हो गया कि जब तुम्हीं लोग हम-दोनों को न पहचान सकीं तो और कौन पहचानेगा।"

गुलाबकुंवरी तथा ललिता और केसर ने मालती और श्यामा को उठाकर छाती से लगा लिया और उनके अनूठे भेष की बड़ी प्रशंसा की तथा अपने को धिक्कारा कि हमने बे जाने बूझे उन्हें क्यों मारा।

मालती और श्यामा ने उन सब को दिलासा दिया और अपनी २ पोशाकें दुरुस्त कर सब से विदा हो जल्द लौटने का वादा कर राजमहल से निकल एक तरफ को चल दीं। इस वक्त रातके करीब नौ बज चुके थे और नाके २ पर पहरेदार घूम २ कर "होशियार" "खबरदार" की आवाजें दे रहे थे।

आठवां बयान

"पुतलीमहल में हलचल"

आज पुतलीमहल में एक प्रकार की घबराहट और परेशानी फैली हुई है। हर एक आदमियों के मुंह पर हवाइयां उड़ रही हैं और हर एक आदमी किसी गहरी चिन्ता में डूबा मालूम होता है। पाठक! इसका कारण यही है कि आज दारोग़ा को गायब हुये पूरे तीन दिन हुये और उसके साथ ही वह नया आदमी भी गायब है जो उस दिन किसी प्रकार "पुतलीमहल" में आ फंसा था और करीब तीन ही दिन से पुतलीमहल में धड़धड़, भड़भड़, तड़ाक, फड़ाक की भयंकर आवाजें आ रही हैं जिनसे पूरा शक पैदा होता है कि दारोग़ा किसी आफत में फंस गया है और यह आवाज़ें "पुतली महल" के टूटने की हैं।

दिन के १० बजे हैं, दारोग़ा के खास कमरे में इस वख्त चार आदमी बैठे आपुस में कुछ सलाह कर रहे हैं। इनको हमारे पाठक शायद पहचानते हों! यह वही राजा अर्जुनसिंह के चार ऐयार, कमलसिंह, विचित्रसिंह, भयंकरसिंह और सोभासिंह हैं जो उस दिन दारोग़ा के साथ उसकी मदद के लिये पुतलीमहल में आये थे। सुनिये कमलसिंह ने कहा:—

कमलसिंह-"मैं समझता हूं कि वह नया आदमी जो उस दिन कैदी के लिये खाना लेकर दारोग़ा के साथ तिलिस्मी कैद-खाने में गया है हीरासिंह ही है। मैंने दारोग़ा को अच्छी तरह समझा दिया था कि आज कल आदमी जांचकर काम लिया करो, लेकिन"

सोभासिंह-(बात काटकर) "सुना है गरम पानी से मुंह धोकर उस मजदूर की अच्छी तरह जांच कर ली गई थी फिर कैसे कहा जाय कि वह हीरासिंह है?"

कमलसिंह-"अजी होस की दवा करो ! गरम पानी से मुंह धोने पर कहीं ऐयार पहिचाने जाते हैं ? और फिर हीरासिंह ऐसे ऐयार ! उसके पास ऐसे २ रोगन हैं कि पानी नहीं तेज़ाब से भी साफ करो मगर नहीं साफ होगा। वह तो मेरे ही ऐसा आदमी था कि उसके साथ से राजकुमार को फंसा सका।"

विचित्रसिंह-" लेकिन उस दिन मालती बनकर मैंने भी कैसी ऐयारी खेली, नहीं तो क्या चन्द्रसिंह कभी फंसनेवाला था; मैंने कै .... "

भयंकरसिंह-" खैर अब अपनी तारीफें फिर करना । पहले दारोगा की खबर लो, न जाने वह बेचारा कहां पड़ा सड़ता होगा। फिर " पुतलीमहल " के बचाने की फिक्र करो।"

कमलसिंह-"खैर तो अब तुम लोगों की क्या राय है ? मेरी समझमें तो पहले दारोग़ा ही की खोज करनी चाहिये । इसलिये हम सब एक साथ तिलिस्मी कैदखाने में चलें। मैं सब के आगे २ रहूंगा क्योंकि मैं तिलिस्मी हालात से कुछ २ वाकिफ़ हूं।"

कमलसिंह की बातें सबको पसन्द आई। वास्तवमें कमलसिंह " पुतलीमहल " की बहुत सी बातें जान गया था। दारोग़ाने इसे बहुत सी तिलिस्मी कोठरियां दिखाई थीं और उनकी कुंजियां तथा दरवाजों का पूरा २ हाल बता दिया था। कमलसिंह कई मर्तबः तिलिस्मी कैदखाने में भी दारोग़ा के संग गया था।

आगे २ कमलसिंह और पीछे २ वे तीनों ऐयार हो लिये। कमलसिंह उन्हीं दरवाजों को खोलता और बन्द करता हुआ तिलिस्म के अंदर जाने लगा जिनमेंसे होकर दारोग़ा कैदखाने में गया था। जब वह उस कोठरी में पहुंचा जिसमें से भिल्लोंवाली कोठरी का दरवाजा है तो उसने छत वाली जंजीर को पकड़कर जोर से खींचा मगर भिल्लोंवाली कोठरी का दरवाजा न खुला, खूब इधर

उधर घुमाया मगर कुछ नतीजा न निकला, लाचार कमलसिंह ने उन दो हैण्डिलों में से एक को घुमाया, साथ ही पूरब तरफ वाली दीवार में की एक पटिया पहले की तरह नीचे लटक गई और एक छोटा सा दरवाजा निकल आया और यह लोग उसमें घुस गये। वह बीस हाथ लम्बी एक बड़ी कोठरी थी और उसकी फर्श संगमर-मर के सुफेद तथा काले पत्थरों की बनी हुई थी। कोठरी के बीचों बीच एक आठ फीट लम्बा सुफेद खंभा खड़ा था जिसके ऊपर एक हंस गर्दन ऊँची किये बड़े शान से बैठा था। कमलसिंह ने कोठरी में पैर रखते ही सबको समझा दिया कि "देखो, खबरदार! इन काले पत्थरों पर भूलकर भी पैर न रखना क्योंकि काले पत्थर पर पैर रखने के साथ ही यह हंस उड़कर सिर पर बैठ जाता है और साथही वह आदमी जलकर राख होजाता है।"

कमलसिंह की बातों से सब को बड़ा ही डर और ताज्जुब होने लगा और वह लोग पैर बचा बचा कर सुफेद पत्थरों पर चलने फिरने लगे। कमलसिंह ने खंजर निकाल कर खम्भे के बीचों-बीच एक सुराख में उसकी नोक गड़ा दी, साथ ही एक बालिश्त चौड़ा मोखा खम्भे में दिखाई देने लगा। मोखे के अन्दर एक जह-रीला नाग फन उठाये बैठा था जिसकी दोनों आँखें अंगारे के समान चमक रही थीं। कमलसिंह ने मोखे में हाथ डालकर नाग का फन ऐंठ दिया, साथही एक धड़ाके की आवाज़ होकर पश्चिम वाली दीवाल में एक छोटी सी खिड़की पैदा होगई। कमलसिंह तथा और ऐयार बारी २ से उसके पार हो गये और खिड़की एक धड़ाके की आवाज के साथ आपसे आप बन्द हो गई। तब कमल सिंह ने अपने बटुवे से एक छोटी सी लालटेन निकालकर उसका खटका दबाया जिससे वहां खूब रोशनी फैल गई और वह जगह एक लम्बी सकरी सुरंग मालूम होने लगी। कमलसिंह ने अपने

साथी ऐयारों से कहा " यह कैदखाने में जाने की वही सुरंग है जिसका असली रास्ता भिल्लोंवाली कोठरी में है । वह दरवाजा न खुलने की वजह लाचार मुझे इस रास्ते से आना पड़ा मगर ताज्जुब है कि वह रास्ता क्यों न खुला ! "

सोभासिंह-" मुमकिन है कि कैदी ने किसी प्रकार उस कोठरी में पहुंचकर वह दरवाजा बन्द कर दिया हो ।"

विचित्रसिंह-" भला कैदी इन दरवाजों का हाल क्या जाने ? क्या वह यहां आगे भी कभी आया था ?"

भयंकरसिंह-"कैसी सिड़ियों सी बातें करते हो? अगर और कभी आया होता तो क्या फिर यहां से जीता बचकर जा सकता था, यहां से बचकर जाना गोया मौत के मुंह में से निकल भागना है । "

इसी तरह बातचीत करते हुये यह लोग बहुत जल्द कैदखाने के दरवाजे पर पहुंच गये । कमलसिंह ने उन्हीं हिकमतों से दरवाजा खोला जिनसे दारोग़ा खोला करता था । दरवाजा खोलते ही कैदखाने से एक ऐसी बदबूदार हवा का कड़ा झोंका आया कि सब के सब ऐयार घबड़ा गये और थू थू करने लगे । नाक मुंह बन्द कर कमलसिंह ने कैदखाने में रोशनी डाली और उसने वहां जो कुछ देखा उसी से उसका माथा घूम गया । आंखों के सामने अन्धेरा छा गया और उसने अपने को मुश्किल से सम्हालते हुये कहा-" आह ! जिस कैदी के ऊपर हम लोगों के लाखों सन्देह हो रहे थे उसकी यह बुरी हालत ! क्या सचमुच कुंवर चन्द्रसिंह के प्राण निकल गये ? "

इतना कहते हुये कमलसिंह मय अपने साथियों के बेहोश नकली चन्द्रसिंह के पास पहुंच गये जो वास्तव में दारोग़ा था । सब ऐयार ग़ौर से उसके चेहरेकी तरफ देखने लगे । सोभासिंह ने नब्ज़ पर हाथ रखकर देखा और साथ ही चिल्ला उठा " घबड़ाओ नहीं कैदी मरा नहीं, मारे कमज़ोरी के बेहोश हो गया है । देखो मैं इसे अभी

अच्छा तो अब हम राजकुमार को उसी हालत में छोड़ कर पेश्तर हीरासिंह ही का हाल शुरू करते हैं जिससे हमारे क़िस्से का सिलसिला एक प्रकार से उलझन में न फँसकर सीधे रास्ते पर जारी रहे।

राजकुमार को आफ़त में फंसा देखकर भी एकाएक दरवाज़ा बन्द हो जाने के सबब हीरासिंह उनकी मदद न कर सके इससे उन को बड़ा रंज हुआ और वह हाथ मलने तथा छटपटाने लगे। इतने ही में उनको न जाने क्या सूझी कि बटुवे से एक बम का गोला निकाल उसी दरवाजे पर दे मारा, साथ ही बड़े ज़ोर की आवाज़ हुई और दरवाजे के टुकड़े २ उड़ गये, कमरा धूयें से भर गया और साथ ही धम्म, धम्म, की दो आवाजें हुईं और किसी ने चिल्लाकर कहा "वह मारा ! ! !"

थोड़ी ही देर में जब धूवां बिलकुल साफ हो गया तो हीरासिंह ने देखा कि सामने ही दूसरे कमरे में राजकुमार खड़े झूम रहे हैं। उनके बदन से कहीं २ खून बह रहा है और सामने ही वे दोनों पहलवान जखमी होकर जमीन पर पड़े हैं और एक तरफ वह सुन्दरी जो राज कुमार से लपटकर नाच रही थी बेहोश पड़ी है। राजकुमार को देखते ही हीरासिंह ने ललकार कर कहा "शाबास खूब किया !!!"

इसपर राजकुमार ने जोश में आकर कहा "यह सब करामात तुम्हारी ही थी वर्ना आज मैं मर ही चुका था ? इस वख्त तुमने गोला फेंककर बड़ा काम किया।"

हीरासिंह—"आह प्यारे राजकुमार ! तुम ऐसा कहते हो! जहां आपका पसीना गिरे वहां मैं अपना खून बहाने को तैयार रहता हूं। अच्छा यह तो कहो यह दोनों कम्बख्त कैसे जखमी हुये और इस 'भूतनी' डाइन की नानी से कैसे पीछा छूटा ?"

राजकुमार—"भाई ! सच तो यों है कि जब एकाएक इन दोनों बदमाशों ने निकलकर एक साथ मेरे ऊपर खंजरों का वार किया

और दर्वाज़ा धड़ से बन्द हो गया तो मैं सन्न हो गया मगर साथ ही मैंने औरत को ढकेल पैंतरा बदलकर उनके वार खाली दिये और फुर्ती से अपना खंजर निकाल उन दोनों का सामना करने लगा। इतने ही में (सुन्दरी की तरफ इशारा कर) इस हरामज़ादी ने पीछे से आकर मेरे दोनों हाथ पकड़ लिये और दोनों पहलवान मेरे ऊपर खंजर तानकर टूटे कि एकाएक तुम्हारे गोले की भयानक अवाज़ हुई जिससे यह चुड़ैल तो बेहोश होकर गिर पड़ी और यह दोनों झिझककर जो पीछे हटे तो मैंने खंजर का एक २ भरपूर हाथ दोनों को मारा जिससे इनकी यह हालत हुई और मुझे उम्मीद है कि अब इन दोनों ही का बचना मुश्किल है क्योंकि जख्म गहरे बैठे हैं।"

हीरासिंह—(दोनों पहलवानों की नब्ज़ पर हाथ रखकर) "बेशक अब यह दोनों ही अपनी मौत की घड़ी गिन रहे हैं! यह देखो, इनकी आंखों का रंग बदल चला और चेहरे पर मुर्दनी भी छा गई!"

राजकुमार—"अच्छा हुआ, अब इन दोनों को अपनी करनी का फल भोगने दो क्योंकि यह पूरे पापी और दोज़खी कुत्ते हैं। दो दो आदमी को मिलकर एक साथ एक अकेले पर वार करना भला कहां लिखा है?"

हीरासिंह—"अन्याय करने का यही नतीज़ा है, जैसा किया वैसा भुगतें। (सुन्दरी की नाक पर हाथ रखकर) अभी यह ज्यादः देर तक बेहोश रहेगी क्योंकि इसके दिल में दहशत सी समा गई है। अगर आज्ञा हो तो इसे होश में लाऊं।"

राजकुमार—"हां, होश में लाना जरूरी है। क्योंकि शायद इसका उसी दहशत में कहीं दम न निकल जाय। फिर एक बात यह भी है कि शायद इसे डरा धमकाकर हम लोग अपना कुछ

मतलब इससे निकाल सकें क्योंकि यह औरत तिलिस्म के पूरे हालतों से वाकिफ मालूम होती है।"

हीरासिंह–"बेशक, ऐसी कही कि बावन तोले और पाव रत्ती! अच्छा इसे उठाकर बैठाओ, मैं होश में लाता हूं।"

राजकुमार ने सुन्दरी को उठाकर बैठा दिया और हीरासिंह ने अपने बटुवे से एक छोटी सी दवा की शीशी निकालकर उसे सुंघाई जिससे थोड़ी ही देर में सुन्दरी होश में आकर जम्हाई लेने लगी और राजकुमार तथा हीरासिंह को एक टक आंखें फाड़ २ देखने लगी। पाठक! वास्तव में यह औरत बड़ी ही हसीन, नाजुक और कमसिन थी। उसकी बड़ी २ रसीली आंखें, चौड़ा मस्तक, गोल २ गुलाबी गाल, लाल २ पतले होंठ, सुडौल नाक, गोल चेहरा और पतली गर्दन रह २कर राजकुमार के मन में मुहब्बत पैदा कर रही थीं मगर साथ ही राजकुमार उसकी करतूतों पर गौर कर उसकी अद्वितीय खूबसूरती पर घृणा करते थे लेकिन फिर भी उसकी खूबसूरती के रोब में कुछ कहने का साहस उनको नहीं था। राजकुमार की यह हालत देखकर हीरासिंह ने सुन्दरी से सवाल किया:–

"सुन्दरी! क्योंकि तुम वास्तव में सुन्दरी ही के नाम से पुकारी जा सकती हो, चाहे तुम्हारा नाम जो कुछ भी हो–हां तो तुम्हारा नाम क्या है और तुम किस वंश की भूषण या किस वृक्ष की कली हो? यहां कब से रहती हो और यह दोनों जखमी मनुष्य कौन हैं?"

हीरासिंह की इन मुलायम बातों को सुनकर जिसकी कि उसे स्वप्न में भी उम्मीद न थी सुन्दरी ने अपनी आँखे नीची कर लीं और अपनी सुरीली आवाज़ में कहा:–

मैं आपलोगों को बखूबी जानती हूं चाहे आप लोग अपनी शक्लें कितनी ही क्यों न बदल लें। अगर मेरी निगाह ने धोखा नहीं

खाया है तो मैं जोर देकर कह सकती हूं कि आपका नाम हीरासिंह तथा आपके साथी खास कुंवर चन्द्रसिंह हैं। और मेरा नाम पूछ कर क्या कीजियेगा? मैं बड़ी ही बदकिस्मत हूं! और (राजकुमार की तरफ इशारा कर) मैं इन से बड़ीही शर्मिंदः हूं। मैं परमेश्वर से प्रार्थना करती हूं कि यह ज़मीन फट जाय और मैं इसमें समा जाऊं।"

"नहीं नहीं, सुन्दरी! तुम उन सब बातों का ख्याल एक बारगी ही अपने दिल से निकाल दो! मुझे उसका बिलकुल रंज नहीं है! तुम खुशी से अपना नाम कहो, मुझे तुम्हारे ऊपर बड़ी ही दया आती है।" राजकुमार ने गम्भीर आवाज़ में कहा और उसके अक्ल की मनही मन तारीफ करने लगे।

"और राजकुमारकी तरफ से मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूं कि उन्होंने अपने सच्चे दिल से तुम्हारा कुसूर माफ किया।" हीरा-सिंह ने सुन्दरी को दिलासा देतेहुए कहा।

सुन्दरी-"अच्छा तो सुनिये, मेरा नाम किशोरी है और मैं अभागी सर्दार किसुनासिंह की लड़की तथा इस "पुतलीमहल" के दारोगा हनुमानसिंह की भांजी हूं। दारोगा हनुमानसिंह मेरे सगे मामा हैं। किसी कारण वश मेरे पिता को मायापूर के मृत महाराज ने प्राणदण्ड की आज्ञा दी थी परन्तु मेरे पिता किसी कौशल से निकल भागे तब से उनका कहीं पता नहीं है। महाराज ने मेरे पिता की कुल सम्पत्ति जप्त कर ली थी इससे मेरे मामा मुझे तथा मेरी मां को अपने घर इसी "पुतलीमहल" में ले आये थे। मेरी उम्र उस समय करीब तीन वर्ष के थी और अब मैं पूरे पन्द्रह वर्ष की हो चुकी हूं। मेरे मामा ने मुझे संस्कृत तथा फारसी पढ़ाया और बड़ी होने पर इन तिलिस्मी हालातों से खूब वाकिफ कराया क्योंकि उनको कोई औलाद नहीं है, वह चाहते हैं कि उनके उपरान्त मैं ही इस पुतलीमहल का काम सम्हालूं। दो वर्ष गुजरे कि मेरी मां भी मुझे अकेली छोड़

इस संसार से सिधार चुकी है । अब मैं अकेली ही अपने वंश में रह गई हूं। बस मैंने आपलोगों से जो कुछ कहा उसका एक २ अक्षर सत्य है इसमें कोई सन्देह नहीं । "

बातें कहते २ सुन्दरी के दोनों नेत्र आंसुओं से भींग गये क्योंकि मृत माता तथा लापता बाप की याद रह २ कर उसे सताने लगी ।

राजकुमार तथा हीरासिंह को सुन्दरी पर बड़ी ही दया आई और राजकुमार ने उसे दिलासा देते हुये कहा:—

" सुन्दरी ! सब के ही साथ ऐसा हो आया है । अब इस ख्याल को छोड़ो, ईश्वर तुम्हारे पिता की सहायता करेगा । रंज न करो । मुमकिन है कि तुम्हारे पिता शीघ्र ही तुम से आ मिलें । "

सुन्दरी-"असम्भव, राजकुमार ! असम्भव। जो मनुष्य आज बारह वर्ष से गायब है उसका मिलना असम्भव है । "

राजकुमार-" अच्छा, क्यों सुन्दरी ! तुम्हारा विवाह अभी हुआ है या नहीं ? "

इसपर सुन्दरी ने शर्माकर अपनी बड़ी २ रसीली आंखें नीचे को झुका लीं और धीमी, मीठी तथा सुरीली आवाज़ में कहा-"नहीं।"

राजकुमार-" सुन्दरी ! यह तो कहो कि तुम्हारे मामा ने अभी तुम्हारे लिये कोई वर भी तलाश किया है या नहीं ? किस किस्मत-वर को इस अमूल्य रत्न का लाभ होगा ? क्या तुम उसका नाम बता सकती हो ? "

सुन्दरी ने शर्माकर गर्दन झुका ली । हीरासिंह ने देखा कि अब सुन्दरी पूरे रास्ते पर आ चली है और कुमार को दिल से चाहती है तथा कुमार के दिल में भी एकाएक उसकी मुहब्बत पैदा हो चली है तो सुन्दरी से बोले:-" क्यों सुन्दरी ! क्या तुम यह बता सकती हो कि हमारे राजकुमार इस अमूल्य रत्न के पाने की आशा कर

सकते हैं ? यह भी उच्च राजवंश के भूषण हैं और तुम्हें दिल से प्यार करते हैं । "

सुन्दरी-(शर्माई हुई आवाज़ में) " मेरे मामा अभी मेरा विवाह करने पर राज़ी नहीं हैं इसी से उनको अबतक वर तलाश करने की कुछ जरूरत ही नहीं थी । और उन्होंने मेरा व्याह मेरीही मर्ज़ी पर छोड़ रक्खा है । "

हीरासिंह--" तो क्या तुम राजकुमार को अपने हृदय में स्थान दे सकती हो ? क्या राजकुमार को तुम इस योग्य समझती हो ? "

सुन्दरी--(नीची नज़र किये हुये) " मेरे ऐसे भाग्य कहां जो राजकुमार मुझे अपनी दासियों में जगह दें ? और फिर वह स्थान तो अब श्रीमती राजकुमारी गुलाबकुंवरी ने अधिकृत ही कर लिया है ।"

राजकुमार--" मैं सच कहता हूं सुन्दरी ! अगर तुम मुझे उस योग्य समझती हो तो मैं भी कसम खाकर कह सकता हूं कि तुम्हारे लिये मैं अपने हृदय में आधा स्थान दे सकता हूं क्योंकि आधा तो अब प्यारी गुलाबकुंवरी का हो ही चुका है । "

सुन्दरीः--" मैं तो इसे अपना परम भाग्य समझूंगी क्योंकि मैं एक अदने सर्दार की लड़की हूं । मगर राजकुमारी इस बात को मंजूर कब करने लगीं ? मैं तो उनकी बेदाम की लौंडी बनने के लिये तैयार हूं । "

राजकुमार--" तो बस मुझे विश्वास है । फिर राजकुमारी भी तुम से किसी बात में बाहर न होगी । मगर तुम्हारे मामा यह सम्बन्ध मंजूर कब करेंगे क्योंकि वह तो मेरी जान के प्यासे हैं ? "

सुन्दरी--" राजकुमार ! उस बात को छोड़ दो, वह मेरीही मर्ज़ी पर है । और मेरे मामा आपका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते क्योंकि मैंने इतिहास " पुतलीमहल " में आपके विषय में जैसा पढ़ा था आपको सचमुच वैसा ही पाया और अगर सच पूछिये तो उस वक्त,

जो मैंने आप के ऊपर इतना जाल फैलाया वह असल में आपकी परीक्षा ली थी कि आप वही मनुष्य हैं जिनके विषय में ज्योतिषियों ने लिखा था या कोई दूसरे। सो मैंने आपमें रत्ती २ वही गुण पाये जैसे उसमें लिखे हैं।"

राजकुमार--" तो क्यों सुन्दरी! क्या तुम तिलिस्म तोड़ने में हमारी कुछ मदद कर सकती हो?"

सुन्दरी--(राजकुमार के ऊपर एक कटाक्ष मारकर) "हां, मैं इस में आपकी कुछ मदद जरूर कर सकती हूं, मगर एक शर्त पर! वह यह है कि तिलिस्म तोड़नेपर आप मुझे अपने साथ ले चलें और मुझे अपनी—"

इतना कहते २ सुन्दरी के दोनों नेत्र प्रेमाश्रुओं से भर आये राजकुमार ने एक मुहब्बत भरी निगाह सुन्दरी पर डाल कर कहा:--

" सुन्दरी! यह कहना तुम्हारा कैसा जब कि मैं तुम्हें अपने हृदय में स्थान दे चुका? अब तुम कोई ऐसा रास्ता बताओ जिसमें कि हमलोग तिलिस्म को जल्द फतह करलें क्योंकि हमारे पिता हमारे बग़ैर बड़े ही व्याकुल होंगे और ताज्जुब नहीं कि राजा अर्जुनसिंह और हमारे पिता में लड़ाई भी ठन गई हो।"

सुन्दरी--,, तो मैं तैयार हूं, ईश्वर आपकी सहायता करे। मेरे संग चलिये, मैं आपको वह पुस्तक बता दूं जिससे आप आसानी से तिलिस्म तोड़ सकेंगे।"

सुन्दरी की बात खतम होते ही हीरासिंह और राजकुमार उठ खड़े हुये। दोनों पहलवानों के प्राण अब इस दुनिया को हमेशः के लिये छोड़ चुके थे। उनकी बेजान की लाशें ज़मीन पर पड़ी थीं जो सुन्दरी के आदेशानुसार वहीं छोड़ दीं गईं।

किशोरी ने उस कमरे के बीचोंबीच ज़मीन पर एक लात जोर से मारी, साथही एक हलकी आवज़ होकर वहां का एक चौखूटा

पत्थर ज़मीन के अन्दर घूल गया और नीचे एक गोल सीढ़ियों का सिलसिला नज़र आया। किशोरी दोनों को अपने पीछे २ आने का इशारा कर नीचे उतरने लगी। नीचे अन्धकार ज्यादा था इससे सुन्दरी ने हीरासिंह को लालटेन जलाने का इशारा किया। हीरासिंह ने फौरन लालटेन का खटका दबाकर रोशनी पैदा की और रोशनी फैलते ही इन लोगों ने नीचे जो कुछ देखा उससे यह लोग जहांके तहां सीढ़ीही पर खड़े रह गये। इन लोगोंने देखाकि नीचे एक, पत्थरों की बनी १७ सतरह हाथ लम्बी चौड़ी एक संगीन कोठरी है और उसके बीचोंबीच फर्श पर एक बड़ा ही मोटा ताजा काला हबशी हाथ में एक बड़ी लम्बी नंगी तलवार लिये बड़ी फुर्ती के साथ चारों तरफ उसे घुमा रहा है जिसकी वजह से तहखाने की फर्श पर पैर रखना मानों अपनी जान को खतरे में डालना है।

दसवां बयान

"काबुली सौदागर"

सुबह का सुहावना समय है। मीठी२खुशबूदार हवा मायापुर की सुन्दर तथा साफ सड़कों पर अपनी मस्तानी चाल से बहती हुई बड़ा ही आनन्द दे रही है। सड़क के दोनों तरफवाले पेड़ों पर बैठी हुई सुन्दर चिड़ियां अपनी तरह २ की सुरीली बोलियों से मनको मोहित करती हैं। ठीक ऐसे ही समय हम उसी सड़क पर एक काबुली जवान को बड़ी तेज़ी के साथ मायापुर की तरफ जाते देख रहे हैं। काबुली जवान शरीर का मोटा ताजा चुस्त चालांक मालूम होता है। उसकी बड़ी बड़ी मोछें और लम्बे २ पटे उसके चेहरे पर बड़े ही अच्छे मालूम होते हैं।

काबुली जवान सीधा मायापुर की शहरपनाह के पास पहुंचा। शहरपनाह का सदर फाटक खुला हुआ था, फाटक की गारद के

सिपाही इधर उधर टहल रहे थे कि एकाएक एक काबुली जवान को भीतर घुसते देख गारद के जमादार ने चिल्ला कर कहा:--

"कहां जाते हो, आग़ा! तुम्हारे पास "हुकुमनामा" है?"

आग़ा ने चकपकाकर कहा "क्या बोलता है तुम? अम लोग सौदागर आदमी हैं, अमलोग हुकुमनामा नहीं रखता। राजा का अमलोग के वास्ते माफी है।"

जमादार:--"क्या तुम्हारे पास सौदागरी की चीज़ है? हम तो कुछ नहीं देखते!"

आगा--"भाई! सब माल पीछे कच्चर पर आता है। हम आगे सरां में जाके घर ठीक करेगा।"

जमादार--"क्या माल है बोलके जाओ। महसूल लगेगा सो कौन देगा?"

आग़ा--"किचमिच है, बादाम है, पिश्ता है, अंगूर है, आनार है, हींग है, चूअर है, गदा हैं, सालममिश्री है।"

जमादार--"आग़ा! चूअर गदा कौन मेवा होता है? हम लोग कभी नहीं देखा।"

आग़ा--"अच्छा, तुमलोग चूअर (सूअर) गदा (गधा) नहीं देखा तो हम दिखायेगा, माल आनेदो।" यह कहकर आग़ाराम लम्बे२ कदम बढ़ाकर फाटक के अन्दर घुस गये और सीधे चौककी सड़क पर जाने लगे। जमादार ने भी कुछ मेवे के लालच से उसे न रोका। आग़ा सीधा चौक बाज़ार से होता हुआ जौहरी बाज़ार में पहुंचा और एक जौहरी की दुकान पर जाकर खड़ा होगया। जौहरी की दुकान बड़े रोब से लगी थी। हीरा, मोती, पन्ना, पुखराज, मानिक, चुन्नी, मूंगा इत्यादि के छोटे २ डब्बे खोलकर करीने से सजाये हुये थे। जवाहरात के बेशकीमत जड़ाऊ जेवर भी कायदे से लगे हुये थे। गद्दी पर एक मोटे सेठजी केसर का लम्बा तिलक लगाये तोंद फुलाये तकिये

के सहारे बैठे थे और पासही दो मुनीम बही खाता लिख रहे थे ।

आग़ा को देखते ही सेठजी सम्हलकर गद्दी पर बैठ गये और बड़ी मुलायमियत से आग़ा को बैठने के लिये कहा । उस जमाने में काबुलियों की बड़ी इज्जतें होती थीं क्योंकि कोई बिरलाही काबुली सौदागर कभी २ मारा पीटा काबुल से निकलता था । काबुलियों के पास बड़े २ बेशकीमत जवाहरात रहते थे और इसीलिये उनकी बड़ी इज्जत की जाती थी !

काबुली के बैठ जानेपर सेठजीने बड़ी मुलायमियत से कहा-" आग़ा साहेब ! क्या लाया है ? "

आग़ा-" सेठजी ! मोती लाया है खूब आचा २ मोती लाया है मूंगा लाया है हीरा लाया है.... "

सेठ-" कहां है दिखाओ आग़ा ! "

आग़ा ने अपने झोले में से एक चांदी की डिबिया निकाली और उसे खूब आस्ते से खोलकर सेठजी के हाथ में रख दी । डिबिया बड़ी ही खूबसूरत थी और उसके अन्दर सुलतानी लाल मखमल मढ़ा था । मखमल के परों में एक जोड़ी बड़े ही आबदार बेदाग नफीस मोती छोटी सुपारी के बराबर रक्खे थे ।

सेठजी मोती देखते ही लहालोट हो गये क्योंकि उन्होंने अपनी जिन्दगी भर में ऐसे सुडौल और आबदार इतने बड़े मोतियों की जोड़ी कभी नहीं देखी थी । सेठजी ने अपने हाथों को खूब पोंछ कर चश्मा आंख पर चढ़ाया और मोतियों को हाथ पर रख उलट पलट कर खूब गौर से परखने लगे मगर मोतियों को कहीं से भी ऐबदार न पाया तो आग़ा से बोले—

" आग़ा साहब ! मोती तो बहुत अच्छा है, इसका दाम क्या लेगा ? "

आग़ा-" एक लाख रूपी का हमारा खरीद है; अगर कुछ

जादा मिलेगा तो वेचेगा । अभी हमारे डेरेपर इसी मेल के ५ जोड़ी मोती और हैं ! ”

सेठ ने उसे ढाई लाख रुपये का अपने मन में आंका था। वह इतना कम दाम सुनकर बड़ा ही खुश हुआ मगर अपनी धूर्तता में वह बड़ाही तेज था। उसने आग़ा से कहाः—

“ आग़ा साहब ! इतना दाम तो बहुत ज्याद: है। अगर पचास हजार रुपया फी जोड़ी का दाम लो तो हम पांचों जोड़ी मोती खरीद लेंगे ! और भी जो जवाहरात तुम्हारे पास होगा सब खरीद लेंगे। बोलो है मर्जी ? ”

आग़ा-“ नहीं सेठजी ! हम घाटा देने नहीं आया, चोरी का माल नहीं है; लाओ हम दूसरी दुकान पर दिखायेगा इसका खरीददार बहोत है ! ”

सेठजी-“ अच्छा, हम पचहत्तर हजार देता है; अगर खुशी पड़े तो दे दो। ”

आग़ा उतने पर भी राज़ी न हुआ; आखिर सेठजी ने लाख ही रुपया मंजूर किया और आग़ा से कहा-“ अच्छा आग़ा ! तुम पांच जोड़ी वह भी ले आओ, हम तुम को छः लाख रुपया का वन्दोवस्त कर देता है। ”

आग़ा-“ ओ ! रुपी का कोई वात नहीं। तुम जो रुपी तैयार हो दे दो, वाक़ी दो रोज़ बाद दे देना; पर तुमको हमारे डेरे पर चलना होगा क्योंकि हम यहां सब माल नहीं ला सकता। ”

सेठजी ने उसके साथ जाना मंजूर किया और दुकान में तीन लाख रुपये की अशरफियां तैयार थीं सो अपनी कमर में वांधीं और आग़ा के साथ चलने को तैयार हो गये। आग़ा सेठजी को साथ लिये एक उजाड़ जगह में पहुंचा जहां आदमियों का नामोनिशान भी न था। सेठजी ऐसा भयानक जगह को देख बड़ा ही डरे और

आग़ा से कहने लगे-" आग़ा साहब ! अब आगे कहां लिये चलते हो ? यहां तो कहीं भी मकान दिखलाई नहीं देता, हम आगे नहीं जावेंगे । "

आग़ा " सेठ ! तुम डरता है ? (एक पेड़ को दिखाकर) वह देखो, उसी पेड़ के पास हमारा डेरा है । बस वहीं चलना होगा, अब पहुंच गये हैं । "

सेट और आग़ा बातें करते २ पेड़ के पास पहुंच गये और वहां एक पुराना सूखा भयानक नाला दिखलाई पड़ा। सेठ ऐसी भयानक जगह को देख बड़ाही डरा; आग़ा ने सेठ के मन की बात ताड़ ली और डपट कर कहा:-

" क्यों सेठ ! डरते क्या हो ? वह देखो क्या है । "

सेठ का उधर देखना था कि साथ ही काबुली का फेंका हुआ बेहोशी का कुमकुमा सेठ की नाकपर तड़ से बैठा, साथ ही बेहोशी की दवा कुमकुमे से निकलकर सेठ के नाक में घुस गई और वह तड़ातड़ तीन छींकें मार बेहोश हो जमीन पर गिर पड़ा ।

तब तो आग़ा बड़ा खिलखिला कर हँसा और आपही आप बोला " अहा हा हा !!! बचा जी बड़े ही चालाक थे, खूब छके!" कहकर आग़ा ने अपनी नकली दाढ़ी मूछें अलग कर दीं, सिरके पटे उतार कर जमीन पर रख दिये और अपने चेहरे का नकली रंग साफ कर डाला । अहा पाठक, यह क्या ! जिसे हम अब तक काबुली समझे हुये थे वह तो राजा वीरेन्द्रसिंह के बहादुर ऐयार " भूपसिंह " निकल आये ! भई वाह, खूब ऐयारी की !

अब तो भूपसिंह ने चट अपने कपड़े उतारकर अलग रख दिये और सेठ की कमर से अशर्फियों की पोटली खोलकर अपने बटुवे के हवाले की तथा सेठजी के सब कपड़े उतारकर खुद पहन लिये और सेठजी को एक लंगोटी पहना दी । इन सब कामों से

फारिग होकर भूपसिंह ने अपने बटुवे से ऐयारी का आईना निकाला और सेठजी के सामने रख बटुवे से रंग भरने का सामान निकाल अपने चेहरे पर रंग भरना शुरू किया और थोड़ी ही देर में अपने को हूबहू सेठ की शक्ल का बना डाला तथा अपने बटुवे से एक झिल्ली निकालकर अपने चेहरे पर चढ़ा ली और अपना चेहरा आईने में देखकर आपही आप कहने लगे–

" बस, अब ठीक हो गया । अगर उस सेठ की अम्मा भी आकर देखेगी तो मुझे खासा अपना लड़काही समझेगी और सेठ के लड़के तो बाबा २ पुकारेंगे और अगर गरम पानी से भी चेहरा साफ किया जावेगा तो भी शक्ल में फरक न आवेगा । "

भूपसिंह की बात के खतम होते न होते एक झाड़ी में से किसी आदमी की आवाज़ आई–

" उसकी अम्मा पहिचाने न पहिचाने मगर मैं डंके की चोट पुकारकर कहूंगा कि तुम राजा वीरेन्द्रसिंह के ऐयार भूपसिंह हो ! "

आवाज़ के सुनतेही " भूपसिंह " बड़ा घबड़ाये और खंजर तानकर उसी झाड़ी की तरफ दौड़े जिधर से आवाज़ आई थी । मगर वहां किसी का नामोनिशान भी न था । भूपसिंह चारों तरफ उस आदमी को तलाश करने लगे मगर कहीं भी पता न लगा, लाचार पीछे लौटे और साथ ही एक तरफ से फिर आवाज आई–

" अजी, उसे छोड़ दो । मैं भी तुम्हें खूब पहचानता हूं । तुम्हारी चालाकी हम लोगों से छिपी नहीं है। आओ, इधर आओ, मुझे पकड़ो, मैं यहां हूं ! "

यह आवाज़ दूसरे आदमी की मालूम हुई । अब की बार भूपसिंह बड़ा ही छके और खंजर खींचे उसी तरफ दौड़े मगर यह क्या ! यहां तो कोई भी नहीं है। लाचार भूपसिंह बेहोश सेठ की तरफ लौटे और जहां वह बेहोश पड़ा था वहां आकर देखा तो सेठजी

का कहीं भी पता नहीं है । यह क्या ! अब तो बड़ा ही गज़ब होगया ! हाथ का शिकार निकल गया । यह सोचकर भूपसिंह अपने मनही मन बड़ा ही किटकिटाये, सब से ज्यादः रंज उनको इस बात का था कि कहीं किया कराया खेल मिट्टी में न मिल जाय । आखिर वह जोश में आकर इधर उधर झाड़ियों में सेठ तथा उन आदमियों की तलाश करने लगे जिनकी आवाजें आई थीं मगर देरतक खोज करने पर भी उनका कुछ पता न लगा । अब क्या करना चाहिये यही भूपसिंह सोचने लगे ।

भूपसिंह बड़े गुस्से में भरे कुछ सोच रहे थे कि सहसा एक झाड़ी में से कुछ खरखराहट की आवाज पैदा हुई और साथ ही खंजरों की झनझनाहट और मार मार धर धर की आवाजें सुनाई देने लगीं । भूपसिंह तेजी से झाड़ी की तरफ लपके और पास जा आड़में होकर देखा तो दो नौजवान अपने २ चेहरे पर नकाब डाले आपस में खंजरों का वार कर रहे हैं, पास ही जमीन पर एक भारी गट्ठर पड़ा है। दोनों ही जवान चुस्त चालाक और फुर्तीले मालूम होते हैं तथा दोनों ही खंजर की लड़ाई में खूब पक्के हैं क्यों कि अब तक एक को एक हटा नहीं सका है और दोनोंही पैतरा बदल कर दूसरे का वार बचाते और अपना वार करते हैं ।

भूपसिंह देरतक झाड़ी की आड़ में खड़े २ उन दोनों की बहादुरी देखते रहे मगर जब उन्होंने दोनोंही को बराबर का पाया तो चट झाड़ी से निकल खंजर तान डपटकर बोले—"तुम लोग कौन हो और क्यों आपुस में लड़ते हो ?"

भूपसिंह को देखते ही एक नकावपोश जोर से एक तरफ को भागा मगर ज्यादः दूर भाग न सका क्योंकि सामने की एक झाड़ी से निकलकर एक काले नकाबपोश ने उसपर खंजर का वार किया । खंजर उसके कलेजे में दस्ते तक धंसजाता अगर भूपसिंह

कमंद फेंककर उसे जल्द खींच न लेते । भूपसिंह की इस दस्तन्दाजी को देखकर दोनों नकाबपोश अपना अपना खंजर तान कर भूपसिंह पर झपटे और डपटकर बोले-"क्यों तुमने हमारे शिकार में दखल दिया ? खैर, इस हरामजादे को जल्द हम लोगों के हवाले करो और अपना रास्ता पकड़ो वर्ना अभी तुमको जहन्नुम रसीद करेंगे । "

भूपसिंह को दोनों नकाबपोशों की बातोंपर बड़ा ही गुस्सा आया और वह उस नकाबपोश को जिसे कमन्द में फंसाकर खींचा था उसी हालत में छोड़ चट अपना खंजर खींच दोनों नकाबपोशों का मुकाबिला करने लगे । इन लोगों को आपस में लड़ते देख मौका पा वह नकाबपोश कमंद खोल एक तरफ को भागने लगा कि उन दोनों नकाबपोशों में से एक नकाबपोश की निगाह उसपर पड़ गई और वह दूसरे नकाबपोश को भूपसिंह के साथ लड़ता छोड़ उसके पीछे दौड़ा और उसको पकड़कर उसी कमंद से कसकर उसकी मुश्कें बांध दीं और लड़ते हुये भूपसिंह के पास आकर बोला ।

काला न०-"क्यों जी ! तुम ने हमारे शिकार पर क्यों हाथ डाला ? तुम बड़े चोखे निकले ! एक तो आपही कसूर करो और फिर लड़ने को तैयार हो जाओ यह भी जबर्दस्ती कहीं देखी है ?"

भूपसिंह-"तुम्हारा शिकार कैसा ? क्या तुम्हारा नाम उसपर लिखा था ? फिर क्या वह जानवर है जो शिकार करते ! एक बेकसूर आदमी को कमजोर पाकर मारडालना तुम लोग बड़ी बहादुरी समझते हो । अच्छा सच कहो तुम लोग कौन हो; हम समझते हैं डाकू हो । "

काला न०-"हम कोई भी हों पर तुम पूछकर क्या करोगे ? हां हैं तुम्हारे एक दोस्त ही । यह हरामजादा बड़ा ही पाजी है जिसकी तुमने मदद की है । तुमको इसके लिये हम लोगों से माफी

मांगनी चाहिये ।"

भूपसिंह–"वाह, खूब कहा । किस बात की माफी मांगनी चाहिये? उल्टे चोर कोतवाल को डाटें! भला उसने क्या बदमाशी की कुछ मालूम भी तो हो । और दोस्त तो मैं जबतक किसीको पूरी तौर से पहचान न लूं कभी माना ही नहीं सकता । अगर दोस्त बनने का दावा रखते हो तो पूरी तौर से अपना परिचय दो ।"

काला न०–" परिचय देने की हमें क्या जरूरत है ? तुम चाहे दोस्त मानो या दुश्मन इसमें हमारा कुछ नुकसान नहीं है पर नुकसान है तुम्हारा ही ।"

भूपसिंह–" अच्छा, अगर ऐसाही है तो बताओ यह कौन है और इसने क्या बदमाशी की ।"

काला न०–" अब तक हमलोग भी नहीं जानते कि यह कौन है, मगर यह पूरा बदमाश है । देखो जिस सेठ को तुमने बेहोश किया है या जिसकी शक्ल में तुम इस वक्त नज़र आते हो उसी को यह लेकर भागा जाता था । देखो वह जो गठर पड़ा है उसमें वही सेठजी बंधे हैं और यही दुष्ट उन्हें लेकर भागा जाता था; अगर हमलोग इसे न रोकते तो फिर आपका किया कराया सब खेल मट्टी हो जाता ।

भूपसिंह ने काले नकाबपोश की सचाई जानने के लिये गठर के पास जा उसे खोला तो वास्तव में सेठजी ही थे । अब तो भूपसिंह को दोनों नकाबपोशों की बातों पर कुछ २ एतबार होने लगा और कमन्द से बंधे नकाबपोश के पास आकर उसके चेहरे पर से नकाब खींचली और उसकी नकली दाढ़ी मोछे अलग करदीं और साथ ही उसे पहिचान कर आपही आप बोले–" हां, मैं इसे पहिचान गया, खूब पहिचान गया । यह महाराज अर्जुनसिंह का ऐयार भैरोसिंह है ।"

काला न०—तो अब इसके लिये आपने क्या सजा निश्चय की है ? क्योंकि अब आप खूब जानगये हैं कि इसने आपके साथ पूरी दगाबाज़ी की है।”

“इसकी सज़ा मैंने ठीक कर ली है; इसको मैं सहजही में नहीं छोड़नेवाला हूं।” इतना कहते हुये भूपसिंह ने भैरोसिंह की नाक में जबर्दस्ती बेहोशी की दवा ठूंस दी और साथ ही वह बेचारा दो तीन छींकें मारकर बेहोश होगया। तब भूपसिंहने दोनों नकाबपोशों की तरफ घूमकर कहा—“ मेरे दोस्तों, क्योंकि अब मुझे पूरा विश्वास हो गया कि आपलोग मेरे सच्चे दोस्त और खैरख्वाह हैं, हां तो आप लोग कौन हैं ? किसने मुझे दो बार अवाज़े दी थीं और इस बज्जात भैरोसिंहने क्योंकर मेरे काम में दस्तंदाजी की ? आप लोगों ने कैसे ऐन मौके पर पहुंच कर हमारी मदद की ? सब खुलासा कह जाइये।”

काला न०—“ अच्छा तो सुनिये ! आप जब आग़ा बने हुये सेठ के साथ जा रहे थे तो हम लोगों ने आप को देखा। हम लोगों को आप पर पूरा शक हो गया कि आप जरूर कोई ऐयार हैं और हैं भी हमारे ही दल के क्योंकि इस राज्य का ऐयार यहां की रेयाया के साथ कभी किसी किस्म की ऐयारी नहीं कर सकता। यह सोच हम लोग आप लोगों का पीछा करते हुये यहांतक आये। यहां आकर आपने सेठ को बेहोश किया मगर हम लोगों ने आपके बीचमें किसी किस्म का दखल न दिया, एक झाड़ी की आड़ से आपकी कार्रवाई देखने लगे। जब आपने अपनी नकली दाढ़ी मोछें अलग कीं सिर के पट्टे उतारे और चेहरे का रंग साफ किया तो हम लोग आप को बखूबी पहिचान मन हीमन खुश हुये और आपसे दिल्लगी करने के ख्याल से हम दोनों ने दो झाड़ियों में घुस बारी २ से आप को उस समय आवाज़ें दीं जब आप सेठ की शक्ल बन आप ही आप

अपनी तारीफें कर रहे थे। मेरे इस साथी ने आपको पहले आवाज़ दी, आप खंजर तान उसी तरफ लपके मगर वह एक झाड़ी में छिप गया; साथ ही मैंने आपको आवाज़ दी, आप मेरी तरफ लपके, साथ ही मेरा साथी बेहोश सेठ को छिपाने के ख्याल से उसके पास पहुंचा मगर वहां उसने सेठ को न पाया, इधर उधर देखा तो इस पाजी (भैरोसिंह) को एक गट्ठर ले तेजी के साथ एक तरफ दौड़ते पाया; मेरे साथी ने उसका पीछा किया और एक झाड़ी में दोनों की मुठभेड़ होगई। मैं भी गायब होगया था इससे एक झाड़ी में लुक उन दोनों का तमाशा देखने लगा। आप मुझे न पाकर लौटे और सेठ को भी न देख घबड़ाये; साथही आपने खंजरों की झनझनाहट और इन लोगों की आवाज़ें सुनी। आप झाड़ी के पास जा आड़ में खड़े हो गये। मैं तब भी आप को बखूबी देखता रहा। इस के बाद और जो कुछ हुआ आप से छिपा नहीं है। अगर हम लोगों की निगाह इसपर न पड़ती तो यह भागही चुका था। खैर, इसके बाद अब आप से यही कहना है कि हम लोगों से जो कुछ क़सूर हुआ हो माफ कीजियेगा; हम लोगों ने जो कुछ किया सिर्फ मजाक के ख्याल से!"

भूपसिंह–"तो मेरे बहादुर दोस्तों! क्या मैं आप लोगों को अपना सच्चा साथी और राजा वीरेन्द्रसिंह के बहादुर ऐयार समझकर अपने गले लगा सकता हूं? मगर मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि आप लोगों की आवाज़ें हमारे साथियों में से किसी से नहीं मिलती; इसी से कुछ सन्देह है। क्या आप लोग मिहरबानी करके अपने नकाब हटा सकते हैं?"

काला नं०–"नहीं साहब! दोस्त बेशक हैं, मगर हम लोग राजा वीरेन्द्रसिंह के ऐयार नहीं बल्कि उनके दोस्त महाराजा देवसिंह के ऐयार हैं और यह लीजिये नकाबें उलट देते हैं!" अब

आप पहचान लीजिये कि असल में हम लोग कौन हैं।"

इतना कहते ही दोनों नकाबपोशों ने अपनी २ नकाबें पीछे को उलट दीं, साथही दो खूबसूरत जवान निकल पड़े। अहा, पाठक! यह तो मर्दाने भेष में वही हमारी दोनों ऐयारा मालती तथा श्यामा है। मालती ने आगे बढ़ते हुये भूपसिंह से कहा-

मालती-"क्यों? अब तो बखूबी पहिचान गये होगे या अब भी कुछ शक है?"

भूपसिंह-(जरा गौर कर) "बस, अब आप लोगों की कलई खुल गई! अब धीरे से अपने चेहरे पर की नकली दाढ़ी मोंछें अलग कर दो।"

मालती-"बस, खबरदार; अगर जबान से अब कोई शान के खिलाफ लब्ज़ निकाला होगा।"

श्यामा-(खंजर दिखाकर) अगर उस्ताद का हुक्म हो जावे तो अभी तेरी इस ढिठाई का मजा दिखादूं!"

मालती-(श्यामा से) "चुप रहो, बड़े बेअदब हो। तुम से क्या मतलब? खबरदार जो हम लोगों की बातों में बोले।"

भूपसिंह-"अजी जाने भी दो। ज्यादः सफाई न दिखाओ, अब मैं धोखे में नहीं आसकता। और लोग बेशक तुम्हें नहीं पहिचान सकते मगर मैं उस्ताद हीरासिंह का शागिर्द हूं!"

मालती-(मुस्कुराकर) "अभी तुम्हारे उस्ताद तो हमारे ही शागिर्द हैं; अभी उनको मालूम ही क्या है?"

भूपसिंह-"बस २, जबान सम्हाल कर बातें करो। अगर उनकी शान में फिर कुछ कहा होगा तो तुम्हारे हक़ में अच्छा न होगा।"

मालती-(अपनी नकली दाढ़ी मोंछें उतार और चेहरे का रंग साफ कर) "हां हां कहूंगी और लाख बार कहोंगी कि तुम्हारे उस्ताद को अभी तक कुछ नहीं आता; तुम जो कर सको करलो।"

भूपसिंह-(चौंककर) " ओ हां गुरुआनी जी ! माफ करना। भई वाह, खूब काम किया ! अस्तु हाथ जोड़ता हूं गुरूजी से शिकायत न की जावे। सचमुच आपने मेरी बड़ी मदद की। अच्छा यह दूसरी जनावा कौन हैं ?"

मालती-(मनही मन मुस्कराकर) "देखो भूपसिंह ! तुम अभी छोकड़े हो; तुम्हें इतनी बढ़ २ कर बातें करना नहीं लाजिम है। भला किस नाते तुमने मुझे गुरुआनी कहा ?"

भूपसिंह-" क्या हमारे उस्ताद हीरासिंह से तुम्हारी शादी नहीं होने वाली है ? क्या तुम इस बात से इन्कार कर सकती हो ?"

इतने में श्यामा ने अपनी नकली दाढ़ी मोछें अलग करदी, चेहरे पर का रंग साफ कर डाला और शर्माई हुई आवाज में भूपसिंह से कहा—

श्यामा-" तुम क्या सुबूत रखते हो कि तुम्हारे उस्ताद से हमारी उस्तादिन की शादी होनेवाली है ?"

भूपसिंह मालती से बातें कर रहे थे मगर श्यामा की बात सुनतेही जो उन्होंने उसपर निगाह डाली आंखें चार होतेही हजार जान से उसपर आशिक होगये; उनकी आंखें उधर ही को बेसब्री के साथ खुली रह गई, शरीर की सब शक्तियां सुस्त पड़ गई और जहां के तहां खड़े रह गये। उधर श्यामा की भी वही हालत हुई, इश्क का तीर कलेजे को पार कर गया, उसकी आंखें नीचे को झुक गई और साथही उसकी ज़बान से एक हलकी चीख निकल गई।

मालती दोनों प्रेमियों की यह हालत देख बड़ी ही घबड़ाई ! उसकी आंखों से भी हीरासिंह की याद में दो चार बूंद आंसू निकल पड़े जिसे उसने बड़ी सफ़ाई के साथ पोंछ लिया और जी को ठिकाने कर भूपसिंह से कहा-

मालती-" भई, वाह ! तुम बड़े रिन्दे हो; मेरी सखी पर क्या

ऐसा मन्तर फूंक दिया कि उसकी यह हालत होगई ?"

भूपसिंह–(जी को सम्हालते हुये) "जी हां, खूब कहा ! आखिर तो अपनी ही सखी की तरफदारी करोगी न ? संग में जादू लिये फिरती हो और ऊपर से बातें बनाती हो ! अच्छा अब यह तो कहो कि तुम्हारी सखी का नाम क्या है।"

मालती–"क्यों, नाम पूछकर क्या करोगे ? कुछ इनाम दोगे ? मैं ऐसे नाम नहीं बताती।"

भूपसिंह–"अब क्या मेरे पास खाक रक्खा है जो लोगी ? जो कुछ मेरे पास था वह तो तुम्हारी सखी ने चुराही लिया !"

मालती–"वाह, तुमने तो मेरा सवाल ही रद कर दिया। यही दावा तो मेरी सखी श्यामा भी तुमपर कर रही है !"

श्यामा–(शर्माई हुई आवाज में) "अच्छा, सखी ! बहुत हुआ। अब रहने दे, ज्याद: मत झिपा (शर्मा)। फजूल वख्त जा रहा है। इतने वख्त में बहुत कुछ काम हो सकता था; दिन भी ढलने लगा है।"

श्यामा की बातों पर दोनों चौंक पड़े। अब तक इन लोगों का इधर बिलकुल ही ख्याल न था। अब एकाएक अपने काम की तरफ ख्याल जातेही भूपसिंह, मालती और श्यामा एक जगह बैठकर आपस में कुछ सलाह करने लगे। सलाह ठीक होतेही भूपसिंह ने सेठ-जीकी और मालती ने भैरोसिंह की गठरी बांधी और पासही के नाले में जाकर दोनों गट्ठर छिपा आये। इसके बाद मालती और श्यामा बटुवे से सामान निकाल अपनी २ शक्लें बदलने लगी और थोड़ीही देर में श्यामा ने अपने को भैरोसिंह और मालती ने ठीक भूपसिंह वाली आग़ाकी शक्ल बना डाली।

पाठक ! अब अगर ग़ौर कर के देखा जावे तो असली भैरोसिंह और नकली भैरोसिंह में कुछ भी फरक नहीं मालूम देगा और मालती तो हूबहू वही आग़ा मालूम देने लगी जैसे पहले भूपसिंह मालू-

म देते थे । भूपसिंह इन दोनों औरतों की होशियारी और सफाई देखकर बड़े ही खुशी हुए और उन दोनों की खूब तारीफें करनेलगे ।

थोड़ी देर में सब मामूली कामों से निपटकर यह तीनों आदमी शहर की तरफ चल पड़े और कुछ दूर जाकर पेड़ों की आड़ में नजरों से गायब हो गये ।

ग्यारहवां बयान

" गुलाबकुंवरी गायब "

रातके करीब बारह बजे हैं । रात बड़ीही अंधेरी और भयानक है हाथको हाथ नहीं सूझता । चारों तरफ गहरा सन्नाटा छाया हुआ है । आस्मान काले २ बादलों से ढका है जिससे और भी अंधेरा होरहा है । एक तो कृष्णपक्ष दूसरे बादलों का घिराव, भला जिसको कभी ऐसा मौका पड़ा होगा वही उस समय की सीनरी बखूबी बयान कर सकता है ।

सहसा ऐसेही भयानक सुनसान और डरावने समय में हम अपने प्यारे पाठकों का ध्यान देवगढ़ के मजबूत और सुदृढ़ किलेकी पिछली ओर दिलाते हैं । जरा गौर से आंखें गड़ाकर देखिये ! वह देखिये, दो आदमी अपने को काले लबादे से छिपाये किस घात में लग रहे हैं । हां, मालूम होगया, उनका इरादा शायद खांई को पार कर किले में पहुंचने का है । सुनिये, सुनिये, वह लोग आपस में क्या फुसफुसा रहे हैं । क्यों कुछ सुनाई दिया ? उनमें इस प्रकार धीरे २ बातें हो रही है—

एक-" भाई, हरीसिंह ! खांई में उतरकर उस पार होना बड़ी मुश्किल है । अगर खांई पार करने के लिये कोई दूसरा तरीका सोचा जावे तो बेहतर होगा । "

दूसरा-(जरा ठहरकर) " हां, एक तरकीब है और उससे

हम लोग मजे में उसपार पहुंच सकते हैं। देखो, वह बांस के पेड़ लगे हैं उसमें से एक लम्बा बांस काटना चाहिये। हां, ठीक है; अच्छा चलो रतनसिंह चटपट बांस काट लावें, अब देरी करना फजूल है।"

हरीसिंह की बात रतनसिंह को पसन्द आई और दोनों बांसों के पेड़ों के पास जा बटुवे से आरी निकाल एक लम्बा बांस चुन कर काटने लगे। थोड़ी ही देर में बांस कट गया तो दोनों आदमी जल्दी से उसे खाईपर उठा लाये और उस को लम्बा कर खाई के उस पार पहुंचा दिया। इस कार्य से छुट्टी पाने के बाद बारी २ से हरीसिंह और रतनसिंह बांसको पकड़ लटककर खाई को पार कर गये। वहां पहुंच हरीसिंह और रतनसिंह ने अपनी अपनी कमन्दे-किले की दीवार पर फेंकीं और चट उसीके जरिये से ऊपर चढ़ गये। वहां पहुंच चारों तरफ आहट लेने लगे, जब कहीं कुछ भी खटका न पाया तो कमन्द लटका किले के अन्दर उतर गये और एक कोने में खड़े हो आपस में कुछ सलाह करने लगे।

ठीक इसी समय किले के फाटक से एक का घण्टा बजा और साथ ही दो संत्री और एक जमादार हाथ में लालटेन लिये गश्त करते उन्हीं दोनों (हरीसिंह और रतनसिंह) की तरफ आते हुये दिखाई दिये। अब तो यह लोग बड़ाही घबड़ाये और पकड़े जाने के डर से अपने बदन को खूब सिकोड़ दीवारसे सटकर लेट गये। सौभाग्य से गश्तवालों की नजर इधर न पड़ी और वह लोग दूस-री तरफ को लौट गये। इतनेही में एक तरफसे सीटी की आवाज आई, इधर से गश्तवाले जमादार ने भी सीटी बजाकर उस का जबाब दिया, साथ ही एक मोटा ताजा लम्बा आदमी एक तरफ से निकलकर बोला-" सब ठीक है ? "

" हां, दारोग़ा साहब ! सब ठीक है। "

दारोग़ा साहब ने चट अपने जेब से एक छोटी सी किताब

निकालकर लालटेन की रोशनी में पेन्सिल से कुछ लिख लिया और साथ ही हमने भी उन्हे पहिचान लिया कि यह किलेकी गारद के बूढ़े दारोगा शिवसिंह हैं।

दारोगा शिवसिंह गारद की तरफ लौट गये और दोनों संत्री तथा जमादार गश्त करते हुये दूसरी तरफ चले गये। उनके जाने-पर हरीसिंह और रतनसिंह की जानमें जान आई; वह दोनों उठ खड़े हुये और जनाने महलों की तरफ चलपड़े। रास्ते में नाके नाके पर संत्री टहल रहेथे। यह लोग उनकी निगाह बचाते हुये गुलावकुंवरी के महल के पिछवाड़े पहुंचे। वहां पूरा सन्नाटा था जिससे इन लोगों को अपनी घात का अच्छा मौका मिला, मुंह मांगी मुराद हासिल हुई। अब क्या था, हरीसिंह ने रतनसिंह के कान में धीरे से कुछ कहा और गुलावकुंवरी के मकान की छतपर कमन्द फेंक चट ऊपर चढ़ गये और रतनसिंह खंजर लेकर इधर उधर टहलने लगे। इतने ही में एक तरफ से सरकने की आवाज आई। रतनसिंह ने आंखें फाड़ २ चारों तरफ देखा मगर गहरे अन्धेरे के सबब कुछ भी दिखाई न पड़ा। रतनसिंह अपना भ्रम समझकर फिर उसी तरह टहलने लगे। अभी पांच मिनट भी न बीता होगा कि एक कोने से एक सुफेद शक्ल ने निकलकर एकाएक पीछे से रतनसिंह के कंधे पर हाथ रख दिया सहसा इस घटना के हो जाने से रतन-सिंह चौंक पड़े और तेजी से पीछे घूमकर बोले—

"कौन! तुम कौन? जल्द बोलो नहीं तो अभी मेरे हाथ का खंजर तुम्हारे कलेजे के पार हो जायगा।"

शक्ल-(बहुत धीरेसे आवाज में) "शोर मत करो वर्ना पकड़े जाओगे। घबराओ नहीं मैं तुम्हारा दोस्त हूं।"

रतनसिंह-"अच्छा अगर दोस्त हो तो जल्द बोलो तुम्हारा परवर (संकेत) क्या है?"

शक्ल–" परवर 'पीला अज़दहा' और नाम है बांकेलाल !"

रतनसिंह–(खुश होकर) " अच्छा दोस्त बांकेलाल ! तुम यहां कहां ? भई वाह ! खूब आ टपके । कहो कैसे आना हुआ ? "

बांकेलाल–" अरे यार ! कुछ न पूछो; हमारे राजा साहब तो आज कल " गुलाबकुंवरी " के नशे में मतवाले हो रहे हैं ! इधर तुम दोनोंको भेजा और उधर मुझे तथा श्यामलाल को रवाना किया । अच्छा कहो तुमने क्या किया ? "

रतनसिंह–" किया क्या, अभीतक तो कुछ भी नहीं किया; मगर देखो बांकेलाल ! हमारे राजासाहब यह काम अच्छा नहीं करते, इतनी जल्दी अच्छी नहीं होती क्योंकि इसमें एक तो ऐयारों की वेइज्जती होती है दूसरे काममें खलल पहुंचता है । क्यों, तुमही कहो मैं झूठ कहता हूं ? जरासे काम के लिये चार चार ऐयार ! अच्छा यह तो तुमने कहा ही नहीं कि श्यामलाल कहां है ? "

बांकेलाल–"श्यामलाल तो शामही से महाराज की प्रधान दासी माधवी की शक्ल में महल के अन्दर घुसा हुआ है और मुझे इस वख्त किले में घुसने का मौका हाथ लगा सो भी तुम्हारी बदौलत!"

रतनसिंह–(चौंककर) " हैं ! श्यामलाल शाम ही से महल में घुसे हुये हैं ? अच्छा माधवी क्या किले में नहीं है ? और तुम हमारी बदौलत कैसे घुसे ? "

बांकेलाल–"असल बात यह है कि माधवी आज शामको चार बजे हमलोगों को यहीं पासही के जंगल में घोड़े पर चढ़ी हुई शिकार की तलाश में इधर उधर घूमती नज़र आई । हम लोगों को यह मौका अच्छा मिला । श्यामलाल ने चट एक घनी झाड़ी में घुस जोरसे पत्ते खड़खड़ाये । माधवी शिकार के ख्याल से घोड़ा दौड़ाती वहीं पहुंची और जोर से झाड़ी में बरछा चलाया । मैं घातमें लगाही था, झट मौका देख कुमकुमा नाक पर मारा कि माधवी तड़ातड़ तीन चार छींकें

मारकर घोड़े के नीचे आ रही। बस हमलोगों ने चट उसे एक झाड़ी में छिपा दिया और श्यामलाल उसकी शक्ल बन और उसी क घोड़े पर सवार हो किलेमें दाखिल हो गया और अब महल में अपनी घात में लगा होगा और मैं तुम लोगों के रक्खे बांस पर से खाई पार कर तुम्हारे पीछे ही पीछे चला आ रहा हूं।"

इसी तरह दोनों ऐयार आपुस में इधर उधर की बातें करते हुये वहीं टहलने लगे। उन बातों की जिक्र यहां करना फजूल है क्योंकि उनसे हमारा उपन्यास कुछ भी ताल्लुक नहीं रखता, अस्तु।

अच्छा, पाठक! अब इन दोनों को यहीं टक्करें मारने दीजिये और आप हमारे साथ जरा उड़कर ऊपर चलिये, देखें हरीसिंह ने वहां जाकर क्या किया। अगर आप से उड़ा न जाय तो लाइयें अपना हाथ मुझे दीजिये, मैं अभी आपको उड़ाये ले चलता हूं। मगर डरियेगा मत, अगर हाथ भी छूट जायगा तो कुछ हर्ज नहीं, मैं बीच ही में मंतर मार कर रोक लूंगा। चोट चाहे आपको भले ही लगे मगर, रोने न दूंगा और न बदन में दर्द ही होने दूंगा।

हरीसिंह ने महल की छतपर पहुंचकर कमन्द खींच ली और छतपर बैठ लालटेन जला अपनी शक्ल बदलने लगे और थोड़ी ही देर में वह खासे राजा देवसिंह के ऐयार गुलाबसिंह की शक्ल बनकर ठीक हो गये और लालटेन बुझा सीढ़ियों की राह होते हुए नीचे उतरे और इधर उधर देखते भालते राजकुमारी के शयनागार के पास पहुंचे। दरवाज़े पर केसर खंजर खींचे टहल २ कर बड़ी होशियारी के साथ पहरा दे रही थी। हरीसिंह ने अपने मनही मन कुछ सोचा और दौड़कर घबड़ाई हुई आवाज़ में केसर से कहा—

"केसर! केसर!! बड़ा गज़ब हो गया!!! आज शामको शक्ल बदल २ कर बहुत से ऐयार किले में घुस आये हैं। सो महाराज ने मुझे भेजा कि सब को होशियार कर दो कि किसी

नौकर, लौन्डी का विश्वास न करें और यह लो (बटुवे से दो पेड़े निकालकर) मैंने आज ही यह बहुत बढ़िया पेड़े बनाये हैं; इसके खा लेने से किसी किस्म की बेहोशी असर न कर सकेगी। सो तुम चट पट मेरे सामने इसमें से एक खा लो और एक ललिता को खिला दो। बस देर न करो, मेरे सामने खा लो तो मैं जाऊं, कहीं तुमने न खाया तो फ़जूल आफत में पड़ जाओगी।"

केसर ने पेड़े ले लिये और अपने बटुवे से लालटेन निकाल खटका दबा चट रोशनी पैदा की और हरीसिंह या नकली गुलाबसिंह के चेहरे पर रोशनी डाल गौर से एक नज़र देख मीठी आवाज़ में अदब से बोली—

"उस्ताद! शामको भी तो आपने एक पुड़िया ललिता के हाथ भेजी थी उसमें भी तो यही गुण था; उसे तो मैं खा गई।"

हरीसिंह—(जरा घबड़ाकर लड़खड़ाई आवाज़ में) "हां, हां, मैंने भेजी थी लेकिन वह दवा पुरानी पड़ गई है यही सोचकर मैंने रातों रात यह नये पेड़े तैयार किये हैं; अब इसे जल्दी खा जा।"

केसर ने पुड़िया का चकमा दिया था, असल में कोई पुड़िया गुलाबसिंहने नहीं भेजी थी। एक तो केसर को पहले ही कुछ शक पैदा हो गया था अब चकमा देकर उसने अच्छी तरह ताड़ लिया कि यह जरूर कोई ऐयार है। मगर उसने हरीसिंह पर अपना शक जाहिर न होने दिया और महीन आवाज़ में कहा—

"उस्ताद! आज शामको मैं आप के पास खुद ही आनेवाली थी। एक खत सखी श्यामा ने भेजा है, उसमें आपके सम्बन्ध की भी बहुत सी बातें हैं। अब आप आ ही गये हैं, यह लीजिये; पढ़कर मेरे हवाले कीजिये।"

इतना कहकर केसरने अपने बटुवे से एक लिफाफा निकालकर नकली गुलाबसिंह के हाथ में रख दिया, गुलाबसिंह ने लिफाफ़े में

से चिट्ठी निकालकर ज्योंही खोली कि बेहोशी की दवा उसमें से उड़कर उसके नाक में घुस गई और वह तड़ातड़ कई छींकें मार बेहोश हो ज़मीन पर गिर पड़ा। साथ ही केसर ने सीटी बजाई, सीटी की आवाज़ खतम होने भी न पाई कि एक तरफ से माधवी खिलखिलाती हुई केसर के पास आकर बोली—

"वाह वहिन, खूब किया! बेशक यह ऐयारी काबिल तारीफ है। मैं सब छिपी हुई देख रही थी।"

केसर—"हैं! क्या तुमने सब कुछ देख लिया? मगर यह तो कहो कि तुम यहां किस लिये आई थीं? राजकुमारी के पहरेपर तो मैं थी ही और तुम नीचे दरवाज़े की रखवाली पर तैनात की गई थीं फिर ऊपर आने की तुम्हें क्या जरूरत थी? भला कहो तो इस वख्त दरवाज़े पर कौन है?"

माधवी—"सखी! सचमुच अभी थोड़ी ही देर पहले मुझे कुछ खटका मालूम हुआ, गौर से कान लगाकर सुना तो ऊपर ही से कुछ आवाजें सुनाई दीं। मुझसे न रहा गया, मैं चट दरवाज़े को देख भालकर ऊपर चढ़ आई। दूर से देखा कि उस्ताद गुलाबसिंह खड़े तुमसे कुछ बातें कर रहे हैं। मुझे उनपर पूरा शक हो गया क्योंकि अगर उस्ताद यहां आते तो सदर दरवाज़े ही से आते। दरवाज़ा बन्द था और मैं चौकसी से पहरा दे रही थी फिर वह बिना दरवाज़ा खुलवाये यहां कैसे आ गये? यही सोचकर मुझे पूरा शक हो गया और मैं अच्छी तरह समझ गई कि यह जरूर कोई ऐयार होगा जो कमन्द के जरिये किसी तरह यहां तक चला आया है। अस्तु, मैं इस ख्याल से एक कोने में छिपकर देखने लगी कि असल में इसकी नीयत क्या है और सखी केसर इसके साथ क्या सलूक करती है। मगर वाह, तुमने इस वख्त इस बदमाश को खूब फांसा। और तुम्हारी सीटी की आवाज़ के साथ ही मैं हाजिर हो गई; बोलो क्यों बुलाया था?'

केसर–"सखी ! मुझे भी इसपर पूरा शक पैदा हो गया था तभी मैंने पुड़ियावाला चकमा देकर इसे जांचा और इसके हिचकिचाते ही चिट्ठीवाला जाल फैलाकर फांस लिया । अब तुम जरा यहां होशियारी से पहरा दो, मैं अभी इसको महाराज के पास पहुंचा दूं क्योंकि महाराज का कड़ा हुक्म है कि अगर ऐसी कोई वारदात हो जावे तो फौरन मुझे इत्तला दी जाय।"

माधवी–"खैर तो मैं पहरा देती हूं, तुम जल्द महाराज को इत्तला दो। मगर जल्द लौटना क्योंकि मैं यहां अकेली घबरा जाऊंगी। लेकिन सुनो तो सही जरा इसका चेहरा तो धोकर देख लो कि यह मूआ है कौन।"

माधवी की राय केसर को पसन्द आई; उसने पास ही की कोठरी से पानी लाकर नकली गुलाबसिंह का चेहरा धो डाला और उसे गौर से देखने लगी। माधवी तो नज़र पड़ते ही पहचानकर मन ही मन मुस्कुराई मगर केसर बिलकुल ही न पहिचान सकी और माधवी से बोली–

"माधवी ! यह तो मैं जरूर कहूंगी कि यह राजा अर्जुनसिंह का कोई ऐयार है और गुलाबकुंवरी की घात में यहां आया है ! मगर मैं इसे मुतल्लक नहीं पहिचानती और न मैंने इसे पहिले कभी देखा ही है। क्या तुम इसे जानती हो ?"

माधवी–"नहीं, मैंने भी इसे कभी नहीं देखा है।"

लाचार केसर ने नकली गुलाबसिंह उर्फ हरीसिंह की गठरी बांधी और पीठपर लादकर सीढ़ियों से होती हुई दरवाज़ा खोल महल से बाहर निकल गई। वहां पहुंच उसने बटुवे से ताला निकाल दरवाज़े में बन्द कर दिया और महाराज के महल की तरफ चली गई।

केसर के चले जानेपर माधवी धीरे से राजकुमारी के कमरे का

दरवाज़ा खोलकर अन्दर घुस गई। कमरे में दो मोमी शमादान जल रहे थे जिससे वहां बखूबी रोशनी फैली हुई थी। कमरे के बीचोंबीच एक बहुत ही खूबसूरत चांदी के पायों की मसहरी बिछी हुई थी जिसपर रेशमी जालीदार कारचोबी के काम के बड़े ही नफीस पर्दे पड़े हुये थे। कमरे में जा बजा सुनहरे चौखटे में जड़ी हुई बड़ी २ खूबसूरत तसवीरें लगी थीं जिनसे उस जमाने के मुसव्वरोंकी अजीब कारीगरी देखकर दंग होना पड़ता था। मौके २ से दीवारों पर बिल्लौरी डारों के दोहरे कमल लगे थे। कमरे के बीचोंबीच छतपर एक सुन्दर सौ बत्ती का बड़ा झाड़ लटक रहा था। मसहरी के एक तरफ चांदी की बड़ी नाद में पानी भरा था जिसमें एक छोटा सा सोने का कटोरा पड़ा था जिससे जलघड़ी का काम लिया जाता था। कमरे के चारों कोनों पर चार खूबसूरत संगमरमर के जड़ाऊ गोल टेबिल रक्खे थे जिनमें ताज़े और खूशबूदार फूलों के गुच्छे बिल्लौरी फूलदानों में सजाये हुये थे जिससे कमरा मीठी २ महक से गमक रहा था।

माधवी ने जलघड़ी पर निगाह डाली तो उसने देखा कि तीन बजा ही चाहते हैं। वह धीरे २ पैर बढ़ाती हुई मसहरीके पास पहुंची और आस्ते से पर्दा हटाकर देखा तो मखमली रेशमी कसीदे के झालरदार खूबसूरत तकियों का सहारा लिये रेशमी साड़ी पहने राजकुमारी बेखौफ़ सो रही है। उसके खूबसूरत मुलायम और चिकने बदन से क़ीमती बढ़िया इत्र की दिल को मस्त करनेवाली खूशबू निकल रही है। माधवी यह सब सामान देखकर ताज्जुब करने लगी; ज्यादः ताज्जुब उसे राजकुमारी की हद्दसे ज्यादः दर्जे की खूबसूरती पर हो रहा था।

माधवी देरतक राजकुमारी की खूबसूरती और नज़ाकत की मन ही मन तारीफ़ करती रही फिर उसने अपने बगल के बटुवे से एक बनावटी नीबू निकालकर राजकुमारी के नाक के सामने किया।

नीबू की खूशबू दीमाग में पहुंचतेही राजकुमारी ने सोए ही सोए तड़ातड़ कई छींकें मारीं और गहरी बेहोशी में अचेत हो गई। माधवी ने खूंटी पर से एक कीमती दुशाला उतारकर फर्श पर बिछा दिया और राजकुमारी को उठाकर उसमें सुला दिया और उसकी गठरी बांध पीठ पर लाद कमरे के बाहर निकल गई। वहां उसने जरा ठहर कर इधर उधर कान लगाये मगर जब कुछ भी खटका सुनाई न दिया तो सीढ़ियों के रास्ते से ऊपर चढ़ गई और नीचे गली में झांककर देखने लगी मगर अंधेरे के सबब कुछ भी दिखाई न पड़ा। माधवी ने गट्ठर जमीन पर रख दिया और कमर से कमन्द खोलकर नीचे लटकाई और उसका आंकुड़ा मजबूती के साथ छत के मुंडेरे में फंसा दिया। इस काम से छुट्टी पाने के बाद उसने राजकुमारी का गट्ठर मजबूती के साथ अपनी पीठपर कसकर बांध लिया और कमन्द के जरिये नीचे उतर गई। वहां पहुंचकर उसने झटके के साथ कमन्द खींच ली और आंखें फाड़ २ इधर उधर देखने लगी। इतने ही में उसने देखा कि एक तरफ से दो काली शक्लें धीरे २ उसकी तरफ बढ़ रही हैं; यह देख माधवी बहुत डरी मगर जी कड़ा कर उसने गठरी ज़मीन पर रख दी और कमर से खंज़र खींच कर उस आने-वाली आफत का मुकाबिला करने के लिये तैयार हो गई।"

दोनों शक्लें धीरे २ बढ़ती हुई माधवी के पास आ गई और उनमें से एक ने आगे बढ़कर धीमी आवाज़ में उससे कहा—

शक्ल-"कौन? श्यामलाल! कहो काम पूरा हो गया? क्या इस गट्ठर में राजकुमारी है?"

माधवी जो असल में श्यामलाल ही थी बोली-

"अहा, बांकेलाल! खूब आये। भाई मैं तो डर गया था कि शायद इधर का कोई ऐयार न हो। यह तुम्हारे साथ दूसरे महात्मा कौन हैं?"

बांकेलाल-" यह रतनसिंह हैं और हरीसिंह ऊपर महल में गये हुये हैं। वहां क्या वे तुमसे मिले थे ? "

श्यामलाल-(धीरे से) " वह तो कैद हो गये। यह सब हाल फिर कहूंगा। अब जल्द यहां से निकल चलो क्योंकि अब यहां एक मिनट भी ठहरना गोया अपनी जान को खतरे में डालना है। हरीसिंह की फिक्र न करो; कल जैसे बनेगा हमलोग उनको छुड़ा ही लेंगे। बस अब जल्द चलो देरी न करो। "

श्यामलालकी बात के साथ ही तीनों ऐयार तेज़ी से संत्रियों का रुख बचाते किलेकी पिछली तरफ चल पड़े और दीवार के पास पहुंच श्यामलाल और रतनसिंह तो अपनी २ कमन्द फेंक ऊपर चढ़ कर उस पार उतर गये मगर बांकेलाल की कमन्द उलझ गई और ज्योंही उसने उसे ठीक कर दीवार पर फेंकी कि पीछे से दो संत्रियों ने चुपके से वहां पहुंचकर एकाएक उसे पकड़ लिया और जल्दी से उसकी मुश्कें पीछे की ओर चढ़ा दी और खूब ज़ोर से "चोर" "चोर" का शोर मचाया जिससे वहां बात की बात में पन्द्रह बीस संत्री इकट्ठे हो गये और लात घूंसों से उसकी पूजा करने लगे। अब तो बांकेलाल बहुत ही घबड़ाये और मौका समझ सब से हाथ पैर जोड़ने लगे; मगर संत्रियों ने उसकी एक भी न सुनी। इतने ही में एक तरफ से ऐयारों के सर्दार गुलाबसिंह आते दिखाई दिये। उन्हें देखते ही सब सिपाहियों ने अदब के साथ जंगी सलामें कीं जिसका जवाब देते हुए गुलाबसिंह ने उन लोगों से पूछा " क्या माजरा है जो इतना शोर गुल मचा रक्खा है ? यह आदमी कौन है और इसे क्यों मारते हो ? "

पहला संत्री-" सर्दार साहब ! यह चोर है; चोरी करने की घात में इधर उधर फिर रहा था। "

दूसरा संत्री-" हुजूर ! मालुम होता है कि इसके और भी

साथी थे क्योंकि मुझे कुछ २ झलक सी मालूम हुई थी कि दो तीन आदमी झटपट दीवार के उस पार उतर गए हैं क्योंकि यह भी कमन्द फेंक कर उस पार हुआ ही चाहता था कि हमने और रामचरन ने दौड़कर पीछे से इसे पकड़ लिया और मुश्कें चढ़ा दीं। देखिये, यह सामने वाली दीवार पर अब तक इसकी कमन्द लटकी हुई है।"

गुलाबसिंह ने चट दो सिपाहियों को कमन्द के जरिये ऊपर जाकर और लोगों के पता लगाने का हुक्म दिया और एक सिपाही की लालटेन ले बांकेलाल के चेहरे पर रोशनी डाली, मगर उसकी शक्ल बदली हुई थी इससे पहिचान न सके और सिपाहियों को यह हुक्म देकर एक तरफ चले गये कि "तुम लोग इस वख्त इसे सदर फाटक वाली गारद में चौकसी से बन्द कर दो; सबेरे महाराज के सामने पेश करना। एक ऐयार और भी अभी २ पकड़ा गया था; वह भी उसी गारद में भेज दिया गया है।"

गुलाबसिंह के चले जानेपर सिपाही लोग बांकेलाल को सदर फाटक की गारद में ले गये और दारोग़ा शिवसिंह के हवाले किया। दारोग़ा साहब ने खुद अपने हाथ से गारद का फाटक खोलकर बांकेलाल को उसके अन्दर ढकेल दिया और भारी तालों से फाटक को बन्द कर वहीं दो सिपाहियों का कड़ा पहरा तैनात कर दिया। बाकी दो सिपाही भी जो गुलाबसिंह के हुक्म से और ऐयारों की खोज में गये थे वापस लौट आये और दारोग़ा शिवसिंह से बोले "हम लोग किलेकी दीवार के चारों तरफ खोज आये मगर कहीं भी चोरों का पता न लगा।"

बारहवां बयान

"तिलिस्मी शैतान"

पाठक ! आपको याद होगा कि आठवें बयान के अन्त में हम लिख आये हैं कि दारोग़ा पर चारो ऐयारों ने यह कहते हुये एक साथ खंजरों का वार किया कि "ले, हरामज़ादे । हमारे अफसर पर हाथ छोड़ने की भरपूर सज़ा भोग ।"

तो जिस वख्त चारों ऐयार दारोग़ा पर खंजर खींचकर तेज़ी से झपटे और फुर्ती के साथ भरपूर हाथ मारने के लिये ऊपर उठाये थे और चारों ऐयारों के हाथ अब एक साथ ही दारोग़ा पर पड़ा चाहते थे कि अभी वह आधी दूर तक भी न पहुंचे थे कि साथ ही बड़े ज़ोर से एक धड़ाके की आवाज़ हुई मानों एक खूंखार तोप का बड़ा गोला कैदखाने की दीवारों से आकर टकराया हो ! आवाज़ के साथ ही कैदखाने की दीवारें और नीचे की ज़मीन बड़े जोर से कांपने लगी, ऐयारों के उठे हुये कातिल खंजरों के मज़बूत हाथ बीच ही में रुक गये और मारे डर के उन चारों पर एक प्रकार की बदहवासी छा गई और जब उनके होश ठिकाने हुये तो उन्होंने देखा कि दारोग़ा अपनी जगह से गायब है और उसकी जगह पर एक लम्बा चौड़ा और काला आदमी अपने बदन पर जिरह बख्तर पहिने हाथ में नंगी तलवार लिये अपने चेहरे पर लाल रेशमी नकाब डाले बड़े शान से खड़ा झूम रहा है।

दारोग़ा का एकाएक गायब हो जाना और उसकी जगह पर एक लम्बे चौड़े नकाबपोश का दिखलाई देना चारों ऐयारों को ताज्जुब में डाल रहा था। वह लोग बड़े ताज्जुब से नकाबपोश की तरफ घूर रहे थे मगर कुछ बोलने की हिम्मत न पड़ती थी कि एकाएक नकाबपोश अपनी रोबीली आवाज़ में बोला—

"तुम लोग बड़ी भूल में हो और नहीं जानते हो कि हम किस के साथ ऐसा सुलूक कर रहे हैं। जिस आदमी को तुम लोग कुंवर चन्द्रसिंह समझकर कत्ल करना चाहते थे वह खास हनुमानसिंह, दारोगा "पुतलीमहल" था!!!"

नकाबपोश की रोबीली बातों में न जाने क्या असर था कि सब ऐयार एकाएक घबड़ा उठे। नकाबपोश का रोब पूरे तौर से उनपर गालिब हो गया और उसकी आखिरी बात ने कि "वह खास दारोग़ा पुतलीमहल था" सब को एक बारगी चौंका दिया और वह लोग थर २ कांपने लगे मगर कमलसिंह ने कुछ हिम्मत बांधी और जरा आगे बढ़कर नकाबपोश से कहा—

"अच्छा, अगर मैं आपकी बात पर यकीन कर मान भी लूं कि वह दारोग़ा साहब थे तो वह उस वख्त बोले क्यों नहीं जिस वख्त हम लोग उन्हें होश में लाये थे?"

नकाबपोश—"कमलसिंह! तुम इतने बड़े ऐयार होकर भी पागलों की सी बातें करते हो! क्या जबान ऐंठानेवाले अर्क का ध्यान एक-दम तुम भूल गये? दारोग़ा के साथ ऐयारी खेली गई थी और उसे चन्द्रसिंह की शक्ल बनाकर उसकी जबान पर जबान ऐंठाने-वाला अर्क लगा दिया गया था और अब वह लोग दारोग़ा की शक्ल बने हुये धड़ाधड़ तिलिस्म को तोड़ रहे हैं और दारोग़ा की भान्जी किशोरी भी दुश्मनों के साथ मिलकर वहां का सारा भेद खोल रही है।"

कमलसिंह—"अच्छा तो पहले आप यह बताइये कि अब दारोग़ा साहब कहां हैं? आप कौन हैं और आपको कैसे मालूम हुआ कि यह दारोग़ा हैं और किशोरी दुश्मनों से मिलकर तिलिस्म का भेद बता रही है?"

नकाबपोश—"मैं तिलिस्म का "शैतान" हूं और यहां के

सब पेशीदः हालातों से वाकिफ हूं। यहां रोज बरोज कौन २ घटनायें होती हैं मैं सब जानता हूं और यहां के अफसरों पर जब कोई तकलीफ आ पड़ती है तो मैं उनकी मदद करता हूं। तुम लोग सच जानो कि जो कुछ मैं कहता हूं वह सब बाल २ सच है और मुझसे कुछ छिपा नहीं है। देखो मैं इसका सुबूत अभी देता हूं!"

यह कहकर नकाबपोश ने अपनी लम्बी तलवार का कब्जा दबा दिया जिससे एक कड़ी बिजली ने पैदा होकर चारों ऐयारों की आंखों में चकाचौंध पैदा कर दी और उन्होंने दोनों हाथों से अपनी आंखें बन्द कर लीं। इतने ही में नकाबपोश ने जोर से एक लात जमीन पर मारी जिसके साथ ही जमीन फट गई और उसी हालत में हथकड़ी बेड़ी से जकड़े चन्द्रसिंह की शक्ल में दारोग़ा साहब फटी हुई ज़मीन से बाहर निकल आये और ज़मीन फिर जुट गई।"

यह दहशतनाक अजीब तमाशा देखकर चारों ऐयार बड़ा घबड़ाये और ताज्जुब की निगाह से दारोग़ा तथा "नकाबपोश शैतान" की शक्ल को बार २ देखने लगे।

ऐयारों को ताज्जुब की निगाह से अपनी तरफ घूरमें देखकर शैतान ने अपने बदन के जिरह बख्तर को जोर से खड़खड़ा दिया जिसके साथ ही उसमें आग की सी चमक पैदा हो गई और ऐसा मालूम होने लगा कि नकाबपोश शैतान अपने बदन पर आग के अंगारों की जिरह बख्तर पहने है और हूबहू आग का बना शैतान मालूम देता है।

नकाबपोश की यह करामात देखकर ऐयार लोग और भी ताज्जुब करने लगे और उसे सचमुच शैतान ही समझने लगे। इन लोगों के मन की बात पूरी तौर से शैतान ने ताड़ ली और अपनी हुकूमताना आवाज़ में सब से कहा—

शैतान–" मैं समझता हूं कि तुम लोगों को अब मेरी बातों पर पूरा यकीन हो गया होगा। अच्छा, अब तुम लोग दारोग़ा साहब की जबान पर दवा लगाकर ठीक करो और उनके चेहरे का नकली रंग साफ कर उनसे अपने २ कुसूरों की माफी मांगो।"

इतना कहकर शैतान ने अपनी तलवार का कब्जा फिर दबाया। इस बार उसमें से तड़ातड़ कई आवाज़ें हुई और कोठरी में गहरा धूआं छा गया। जब धूआं कुछ कम हुआ तो ऐयारों ने देखा कि शैतान अपनी जगह से गायब है और वहां भोजपत्र का एक लिखा हुआ छोटा सा टुकड़ा पड़ा है। कमलसिंह ने झट उसे उठा लिया और जोर से पढ़कर सब को सुना दिया। पाठकों की दिलचस्पी के लिये हम उस पुर्जे की नकल हूबहू नीचे लिख देते हैं—

" मेरे बहादुर ऐयारों! सचमुच तुम लोगों ने दारोग़ा की निस्बत गहरा धोखा खाया और उसकी हद्दसे ज्याद: बेइज्जती की; पर मैं इसलिये तुम लोगों का कुसूर माफ करता हूं कि तुम लोग उस विषय से एकदम अनजान थे। अस्तु, अब तुम लोग दारोग़ा से माफी मांग लो और जहां तक हो सके जल्द चन्द्रसिंह को पकड़कर जहन्नुम रसीद करो वर्ना यह तिलिस्म बर्बाद हो जावेगा और इसी की वजह से तुम लोग मारे जाओगे और मायापुर का किला भी दुश्मनों के हाथ चला जायगा। घबड़ाना मत, मैं मौके २ पर पहुंचकर तुम लोगों की मदद करूंगा।" तिलिस्मी "शैतान"

पुर्जे को पढ़कर ऐयारों को कुछ तसल्ली हुई। उन लोगों ने चटपट दारोग़ा की हथकड़ी बेड़ी काटकर अलग करदीं। कमलसिंह ने अपने बटुवे में से एक पुड़िया निकालकर दारोग़ा की जबान पर मल दी जिसके साथ ही दारोग़ा के मुह से लार छूटने लगी और बहुतसा गन्दा पानी बाहर हो गया। थोड़ी ही देर बाद उसको एक और अर्क पिलाया गया जिससे दारोग़ा के होश कुछ २ दुरुस्त हुये

और उसने धीमी आवाज़ में कुछ खाने की इच्छा प्रगट की जिसके साथ ही सोभासिंह ने बटुवे में से थोड़ा मेवा निकालकर उसे दिया। दारोग़ा ने चटपट सब मेवा खा लिया और पास ही के रक्खे हुए लोटे से ठण्डा जल पीकर अपनी तबियत को दुरुस्त किया— इसके बाद सब ऐयारों ने अपने २ कुसूरों की माफी मांगी जिसपर दारोग़ा ने यह कहते हुये खुशी से सब का कुसूर माफ कर दिया।

दारोगा–" ऐ मेरे बहादुर ऐयारो! मैं तुम्हें खुशी से तुम्हारे उन कुसूरों की माफी देता हूं जो तुमसे भूल से इत्तिफाकन हो गये हैं। खैर, तुम लोग उन सब बातों का ख्याल छोड़कर अब "पुतलीमहल" के बचाने की कोशिश करो, दुश्मनों ने आधे से ज्यादः तिलिस्म को तहस नहस कर डाला होगा मगर कोई हर्ज़ नहीं, अभी वह लोग तिलिस्मी खज़ाने तक न पहुंचे होंगे; किसी तरह बीच ही में उन लोगों को गिरफ्तार कर लेना चाहिये।"

कमलसिंह–"मगर क्यों दारोग़ा साहब! मैंने आपको पेश्तर ही कहा था न कि आज कल आदमी जांच कर काम लिया करो; मगर आपने मेरी बातें एक दम हवा कर दीं जिसका नतीजा अब तक आप भोग रहे हैं।"

दारोग़ा––" मैंने बखूबी अपनी जांच पूरी कर ली थी मगर, खैर, अब इन बातों में क्या धरा है ? जो होना था सो हो गया अब आओ मेरा साथ दो।"

इतना कहकर दारोग़ा ने कैदखाने की पूरब तरफवाली दीवार के एक विशेष स्थान पर जोर से घूसा तानकर मारा जिसके साथही कैदखाने का फर्श चारों ऐयार तथा दारोग़ा को लिये धीरे २ नीचे उतरने लगा। यह तमाशा देखकर ऐयार लोग ताज्जुब तथा आपुस में काना फूसी करने लगे। धीरे २ कैदखाने का फर्श अपनी जगह से करीब बारह फुट नीचे उतरकर ठहर गया। चारों

तरफ साफ तथा चिकनी लकड़ी की वार्निशदार दीवारें बनी थीं और उन चारों दीवारों पर एक से चार तक मोटे मोटे अक्षरों में नम्बर लिखे हुये थे जैसे १-२-३-४ बस ठीक इसी किस्म के नम्बर हरएक दीवार पर बने थे और उन नम्बरों पर पीतल की एक २ कड़ी लगी थी। दारोगा ने सब ऐयारों को इशारे से दिखला कर कहा कि "देखो, यह जो चारों तरफ चार दीवारें हैं इन हर एक दीवारमें तिलस्मी कोठरियों के चार २ दर्वाजे हैं; इस हिसाब से सोलह कोठरियों के यहां सोलह दर्वाजे बने हैं। अस्तु, अब मैं यहीं से यह मालूम किया चाहता हूं कि इन सोलह कोठरियों में से दुश्मनोंने कौन २ सी कोठरी पर अपना कब्जा कर लिया है और कौन२ सी कोठरी अभी उनके हाथ से बची हुई हैं तथा अब वह लोग किस कोठरी में हैं।"

इतना कहकर दारोग़ा ने एक तरफ की दीवार के नम्बर ४ चार वाली कड़ी बड़े जोर से खींची, साथही वहां का एक दो फुट चौड़ा चिकना तख्ता सरसराता हुआ नीचे चला गया और वहां पर एक छोटासा खूबसूरत दरवाजा निकल आया जिसके ऊपर की तरफ एक छोटासा घड़ीनुमा यन्त्र लगा था और विचित्र प्रकार के नम्बर पड़े थे। उसकी दोनों सूई नीचेको झुककर एक इस (+) प्रकार के चिन्ह पर आपुस में एक दूसरे से मिल गई थीं। घड़ी पर नज़र पड़तेही दारोग़ा एक चीख मारकर पागलोंकी तरह जमीन पर गिर पड़ा और चट बेहोश होगया।

दारोग़ा की एकाएक यह हालत देखकर ऐयार लोग बड़ा घबड़ाये और चटपट लखलखा सुंघाकर दारोग़ा को होश में ले आये और उसकी इस तरह की घबराहट का सबब पूछने लगे। दारोग़ा ने अपनी तबियत को सम्हालकर ऐयारों से कहा कि-" इस दीवार में जो चार तिलिस्मी कोठरियां हैं उन सब को दुश्मनों ने तोड़ डाला

है और वह इस तरह दुश्मनों के कब्जे में है। दुश्मन इस वक्त इस वाली कोठरी में मौजूद हैं; अगर तुम लोग हिम्मत बांधो तो अभी चलकर बने वैसे उनको वहीं खपा डाला जावे।"

दारोगा की बात पर चारों ऐयारों ने हामी भरी। चारों ऐयारों के साथ दारोगा उस घड़ीवाले छोटे दरवाज़े में घुस गया और साथही दरवाज़े का तख्ता भी सरसराता हुआ ऊपर आकर बेमालूम अपनी जगह पर लगगया और कैदखाने की फर्श धीरे २ ऊंची होकर फिर अपने ठिकाने आकर ठहर गई।

—तेरहवाँ बयान—

"दो लाशें"

पाठकों को याद होगा जब कि किशोरी कुंवर चन्द्रसिंह और हीरासिंह को लिये उस तहखाने में पहुंची थी जिसमें एक लम्बतड़ंग काला हब्शी अपनी लम्बी और खूंखार तलवार को बड़ी तेज़ी से चारों तरफ घुमा रहा था।

उसी हब्शी की यह कार्रवाई देखकर कुंवर चन्द्रसिंह और हीरासिंह ताज्जुब और सोच में पड़ गये मगर उनको कोई तरकीब ऐसी न सूझी जिसके जरिये से वह उनकी तलवार घुमाना रोक सकते। उनको गौर में पड़े देखकर किशोरी ने कहा "कुंवर साहब! फिक्र और ताज्जुब को छोड़कर ज़रा मेरी बातें सुनिये। देखिये जिन सीढ़ियों पर आपलोग खड़े हैं, उन्हीं के दबने से यह हब्शी तलवार घुमाने लगता है। अब आप लोग कोई तरकीब से इसके हाथ की तलवार को या तो छीन लीजिये या तोड़ डालिये मगर खबरदार ज़मीन पर पैर रखने का हौसिला न कीजियेगा।"

किशोरी की बातें सुन कुमार को कुछ याद आ गया और उन्होंने चट हीरासिंह के कान में धीरे से कुछ कह दिया जिसे सुन

हीरासिंह ने कहा–" बस २ ठीक है, मैं बखूबी समझ गया; बेशक यह तरकीब अच्छी है। अच्छा, अब आप लोग कुछ देर के लिये ऊपर के कमरे में चले जावें।" हीरासिंह की बात सुन कुंवर चन्द्रसिंह और किशोरी ऊपर चले गये और वहां हाथ में हाथ मिला टहल २ कर इधर उधर की मीठी २ बातें करने लगे जिनका यहां पर जिक्र करना फजूल है।

राजकुमार और किशोरी के ऊपर जाते ही हीरासिंह तहखाने के छत की कड़ी पर कमन्द फेंककर झूल गये; साथ ही हब्शी ने भी तलवार को घुमाना बन्द कर दिया। हीरासिंह चट उस हब्शी की खोपड़ी पर सवार हो गए और हाथ बढ़ाकर उसके हाथ से तलवार निकाल ली और साथ ही जोर से आवाज़ दी–" कुंअर साहब! जल्द आप लोग नीचे आइये; देखिये इस हरामज़ादे को मैंने कैसा फांसा है।"

हीरासिंह की आवाज़ के साथ ही राजकुमार किशोरी का हाथ पकड़े चट तहखाने में उतर आये। सीढ़ियों पर बोझ पड़ते ही हब्शी अपने खाली हाथ को तलवार की तरह भांजने लगा। हीरासिंह यह तमाशा देख चट नीचे कूद पड़े कि कहीं एक आध हाथ मुझे न लग जावे। इसी बीच में किशोरी ने कहा कि " अगर आपको पूरा तिलिस्म तोड़ना हो तो यहीं से उसके तोड़ने की किताब भी हाथ लग सकती है और अगर आप लोगों का इरादा तिलिस्म से बाहर निकलने का हो तो यहीं से एक सुरंग गई है जो सीधी आपके राज्य कृष्णगढ़ में उस पुराने कबरिस्तान के बीच में निकली है जो आपके किलेसे एक कोस दाहिनी तरफ हटकर है। इसी तरह की इस कोठरी में कई एक सुरंग हैं जो और २ राज्यों में निकली हैं। किशोरी की बातों पर कुंवर चन्द्रसिंह और हीरासिंह को बड़ा ही ताज्जुब और खुशी हुई और वह तरह २ के ख्यालों में पड़ गये।

ताज्जुब इस बात पर हुआ कि यहां से पहाड़ काटकर २५ कोस लम्बी सुरंग बनाने में न जाने कारीगरों को कितनी मेहनत उठानी पड़ी होगी और बनवानेवाले ने न जाने कितने रुपये इसमें खर्च किये होंगे और खुशी इस बात पर हुई कि अब बहुत जल्द अपने राज्य में पहुंचकर माता पिता के दर्शन करेंगे और प्यारी गुलाब-कुंवरी का हाल भी मालूम होगा। राजकुमार ने हीरासिंह और किशोरी से कहा कि "मेरा इरादा जहां तक हो जल्द अपने राज्य में पहुंचने का है क्योंकि मेरी गैरहाज़री में मेरे माता पिता को न जाने कितना रंज उठाना पड़ता होगा और उनके दुःख में राज्य का न जाने क्या हाल होगा। मुझे तिलिस्म तोड़ने की कुछ भी लालसा नहीं है, हां यह हो सकता है कि एक बार प्यारे पिताजी से और माताजी से मिलकर उनसे इजाज़त ले आऊं तब मैं तिलिस्म तोड़ने में हाथ लगाऊं।"

किशोरी-" तो फिर इस बात का ख्याल राखिये कि यहां से निकलकर फिर आप किसी हालत से इस सुरंग के जरिये यहां नहीं पहुंच सकते और न फिर तिलिस्म ही आपके हाथ से टूट सकता है! क्योंकि मैंने " इतिहास पुतलीमहल " में पढ़ा है कि हब्शी-वाली कोठरी की सुरंगों से जो आदमी तिलिस्म के बाहर हो जायगा वह फिर किसी तरह उन सुरंगों से तिलिस्म में नहीं घुस सकता है जब तक कि पूरा तिलिस्म टूट न ले, क्योंकि इन सुरंगों के दरवाज़े किसी खास हिकमत से बनाये गये हैं कि वह यहां से आदमी को निकाल देंगे मगर भीतर न आने देंगे और उन सुरंगों का पहरे-दार यह मुआ हब्शी ही है। इस कोठरी के सब दरवाज़ों की तालियां इसी हरामजादे के कब्जे में हैं।"

चन्द्रसिंह-" तो मैं बाज़ आया तिलिस्म तोड़ने से। अब किसी तरह जल्द सुरंग का दरवाज़ा पैदा करो और तुम भी हम

लोगों के साथ तिलिस्म से निकल चलो। हमारे राज्य में तुमको किसी किस्म की तकलीफ न होगी और वहां पहुंचकर मैं अपने माता पिता और प्यारी गुलाबकुंवरी को किसी तरह राजीकर तुमसे शादी कर अपना क़ौल पूरा करूंगा।"

किशोरी-(मन ही मन खुश होकर मुस्कुराती हुई) "राजकुमार! आप ठीक कहते हैं। मैं तैयार हूं मुझे कुछ उज्र नहीं है मगर अब आधा तिलिस्म तोड़कर नाहक आप इस बेशुमार खजाने को लात मारते हैं। मेरा कहा मानिये और तिलिस्म तोड़ने से मुंह न मोड़िये इसमें एक तो आपका दूर २ तक नाम होगा दूसरे बेशुमार खजाना हाथ लगेगा जिनसे आप सैकड़ों राज्य बात की बात में खरीद लेवेंगे तीसरे आपकी फौज़ तथा आपके ऐयारों के लिये वे नफीस बेशुमार तिलिस्मी हर्बे निकलेंगे जिनकी बदौलत आप जबर्दस्त राज्य और सुदृढ़ किलोंको जरा सी मेहनत में दखल कर लेंगे, लाखों लड़ाके सिपाहियों को लड़ाई में दंग कर देंगे और जिनकी बजह से दूर २ के बड़े २ राजे आपको अपना महाराजा मानकर नजरें भेजेंगे। कहिये अब आप मुझे क्या हुक्म देते हैं। सुरंग का दरवाज़ा पैदा करने की कोशिश करूं या इस अजीब तिलिस्म के तोड़ने की किताब?"

किशोरी की इस बातूनी तस्वीर में राजकुमार और हीरासिंह के दिल पर अजीब असर पैदा कर दिया और वह नक्शा जो उसने अभी २ अपनी जबान से खींच कर बताया था कुंवर चन्द्रसिंह और हीरासिंह के जिगर पर नक्श होगया। हीरासिंह ने राजकुमार को ऊंच नीच समझाकर तिलिस्म तोड़नेही पर राजी किया क्योंकि उसे अपने ऐयारी के सामानों का बड़ा लालच पैदा हुआ जो तिलिस्म से निकलनेवाले थे। खूब सोचकर राजकुमार तिलिस्म तोड़ने पर तैयार होगये जिससे हीरासिंह और किशोरी को बड़ी खुशी हुई। राजकुमार ने किशोरी से कहा "अब तिलिस्मी किताब पैदा करो, मैं

तैयार हूं"। यह सुन किशोरी ने हब्शी की तरफ इशारा कर उनसे कहा कि "आप जोर से इसका दाहिना कान बांई तरफ ऐंठ दीजिये फिर देखिये यह कैसी जल्दी अपना काम पूरा करता है।"

राजकुमार ने वैसाही किया और एक धड़ाके की आवाज़ के साथ कोठरी की उत्तर वाली दीवार में एक छोटा मोखा निकल आया जिसमें एक ताज़ी कुत्ते का सिर रक्खा हुआ था और उसकी जीभ बाहर निकली हुई थी। किशोरी ने कहा "देखते क्या हैं? अभी इसकी जीभ पकड़कर जोरसे खींच लीजिये, यही दरवाजा है"। राजकुमार ने कुत्ते की जीभ जोर से पकड़कर खींची जिसके साथही उस के मुंह से जीते कुत्ते की तरह भों भों की आवाज निकलने लगी और देखते २ उस मोखे के नीचेवाली दीवार का एक चौड़ा पत्थर सरसराता हुआ जमीन में घुसगया और वहां एक छोटा खूबसूरत दरवाज़ा निकल आया। किशोरी के इशारे से सब लोग अन्दर घुसगये और साथही दरवाज़ा धड़से बन्द होगया।

यह एक छोटीसी सुरंग थी जिसके थोड़ीही दूर जाने पर इनको एक गोल सीढ़ियों का सिलसिला मिला। करीब ३० डण्डा सीढ़ी खतम करने पर एक पत्थरों की संगीन दीवार मिली जिसमें छोटी २ बहुतसी पीतल की कीलें गड़ी हुई थीं। यहां पर किशोरी ने आगे बढ़कर उनमें से एक कील जोर से दबा दिया, साथही वहां की दीवार के दो पत्थर दोनों तरफ खसक गये और एक काठका वार्निशदार खूबसूरत दरवाज़ा निकल आया जिसके दोनों पल्लों पर दो खूबसूरत बिल्लौरी हैण्डिल लगे हुये थे। हीरासिंह ने दोनों को पकड़कर जोर से अपनी तरफ खींच लिया और दोनों पल्ले खुलगये साथही उसके पीछे से एक लोहे की चद्दर सरसराती हुई जमीन में घुस गई और एक खूबसूरत कमरा निकल आया। अहा पाठक! यह तो वही हंसवाला कमरा है जिसमें एक बार कमलासिंह वगैरह

के साथ आप सैर करचुके हैं। खैर, तो अब उस कमरे के बारे में मैं ज्यादः कुछ न कहूंगा।

किशोरी ने काले पत्थरों पर पैर रखने के लिये मना कर कुंवर चन्द्रसिंह और हीरासिंह को अपने पीछे २ आने का इशारा किया और सुफेद पत्थरों पर पैर रखती हुई कमरे में घुसगई। यह लोग भी उसके पीछे २ सुफेद पत्थरों पर पैर रखते हुये कमरे में घुसगये। यहां पर किशोरी ने राजकुमार और हीरासिंह को काले पत्थरों और हंस के बारे में समझा दिया जिसमे यह लोग बड़ा ताज्जुब करनेलगे और इधर उधर बड़े शौक से देखने लगे।

अभी इन लोगों को हंसवाले कमरे में पहुंचे एक घंटा भी न गुजरा होगा कि एक बड़े जोर के धड़ाके की आवाज़ हुई और पूरब की दीवार में एक छोटा सा दरवाज़ा पैदा होगया और साथही उस में से दारोग़ा, कमलसिंह, सोभासिंह, विचित्रसिंह और भयंकरसिंह ने निकलकर एक साथ राजकुमार और हीरासिंह पर खंजरों का वार किया।

दारोग़ा को देखतेही किशोरी तो मारे डर के बेहोश हो जमीन पर गिर पड़ी और राजकुमार तथा हीरासिंह चट पैंतरा बदल अपना२ खंजर निकाल उनसे लड़ने लगे। इतने में फिर धड़ाके की आवाज़ हुई और एक तरफ की दीवार में दरवाज़ा पैदा होगया और तीन आदमियों ने जो लाल नकाब मे अपना २ चेहरा छिपाये और हाथों में लम्बी २ नंगी तलवारें लिये थे, एक साथ झपट कर लड़ते हुये झुण्ड पर बड़े जोर से तलवारों का वार किया जिसके साथही उस लड़ते हुए झुण्ड में से दो आदमी सख्त जखमी होगये और धम्म २ दो लाशें जमीन पर गिरपड़ीं !!!

पहला भाग समाप्त।

इसके आगे का हाल जानने के लिये दूसरा भाग देखिए

मूल्य ॥) आ०

॥ श्रीः ॥

या

गुलाव कुँवरि ।

दूसरा भाग

एक ऐयारी और तिलिस्मी ढंग का नया उपन्यास

बाबू रामलाल वर्म्मा प्रोप्राइटर
"उपन्यास-सागर" "दारोगादफ्तर" तथा
"वड़ावाजार गजट" द्वारा लिखित
और प्रकाशित

प्रिण्टर श्रीमिहिरचन्द्र घोष—
नं० २५।ए शम्भु चटर्जी ष्ट्रीट, "निउ-सरस्वती प्रेस,"
कलकत्ता ।

द्वितीयवार १०००] सं० १९६८ वि० [मूल्य ॥)

॥ श्रीः ॥

या

गुलाब कुँवरि।

दूसरा भाग।

एक ऐयारी ढंग का नया उपन्यास

———:०:———

पहला बयान

हार किसकी हुई राजकुमार की या दारोगा की? वह तीनों लाल नकाबपोश कौन और कहां से आये थे तथा राजकुमारके दलके थे या दारोगा के? उनलोगोंने जिन दो आदमियों को जख्मी किया वह कौन थे और किस दल के थे? यह सब बताने के पहले मैं यहांपर कुछ हाल उन ऐयारों का लिखता हूं, जो गुलाबकुंवरि को देवगढ़के किलेसे निकालकर ले भागे हैं।

सुबह के करीब आठ बजे हैं। आसमान साफ-सुथरा नजर आता है। सूर्यदेव तेजीसे चारों तरफ अपना प्रकाश फैलाते हुए ऊपर चढ़े आ रहे हैं। नगरवासीगण नित्यकृत्य (मामूली

वालों) से छुट्टी पा शीघ्रतासे अपने अपने काम में लग रहे हैं।
ठीक इसी समय श्यामलाल और रत्नसिंह, गुलाबकुंवरिको गठरी
लिये मायापुरके किलेमें दाखिल हुए और सीधे महाराजके खास
कमरे में पहुंचे। महाराज अर्जुनसिंह पूजापर अभी बैठे ही थे, कि
ऐयारोंको गठरी लिये हुए आते देख मन ही मन बहुत खुश हुए
और उनको बैठनेका इशाराकर चटपट पूजा खतम की। पीछे
ऐयारोंके पास आ गठरीकी तरफ इशाराकर बोले,—"क्या इसमें
प्यारी गुलाबकुंवरि है? अगर मकसूद यही है, तो जल्द गठरी
खोलो! बेशक तुम लोगोंने तारीफका काम किया है और इसके
लिये तुम लोगों को मुंहमांगा इनाम मिलेगा। बांकेलाल और
हरीसिंहको कहां छोड़ा? क्या वह लोग बाहर हैं?"

श्यामलालने बांकेलाल और हरीसिंहके गिरिफतार होनेका पूरा
हाल महाराजसे कह सुनाया। साथ ही अपनी ऐयारीकी भी बहुत
तारीफ की। बांकेलाल और हरीसिंहके गिरिफ्तार होजानेकी
बात सुन महाराजको बड़ा रंज हुआ। उन्होंने श्यामलाल की भी
बड़ी तारीफ की। श्यामलाल महाराजके मुंहसे अपनी तारीफ सुनकर
फूल गये और चटपट गठरी खोल महाराजके सामने गुलाबकुंवरि
को लिटा दिया। महाराज गुलाबकुंवरिकी खूबसूरती और नज़ाकत-
पर फिदा थे। गुलाबकुंवरिकी तारीफें तो वह पहिले सैकड़ों
आदमियोंसे सुन चुके थे, मगर अब उसको अपने सामने—
अपनी आंखोंसे देख उन तारीफोंसे कहीं चढ़-बढ़कर उसे पाया;
गोया चांद हाथ आगया। ऐयारोंको कमरेसे बाहर जानेका इशारा
किया; साथ ही दोनों ऐयार मुस्कराते हुए लखलखेकी डिबिया
वहीं छोड़ कमरे के बाहर हो गये। ऐयारोंके चले जानेपर
महाराजने गुलाबकुंवरिको गोदीमें उठाकर एक जड़ाऊ मखमली
कोचपर लिटा दिया और बड़े प्यारसे खुद लखलखा लेकर

कुमारी को संवारने लगे। थोड़ी ही देर बाद वह होशमें आकर उठबैठी और भौचक सी इधर उधर देखकर आपही आप रोने और चिल्लाने लगी। महाराज अर्जुनसिंह, उसकी यह कैफियत देख समझाने और दिलासा देने लगे। बोले,—"प्यारी! क्यों रोती हो? यहां तुम्हें किसी बात की तकलीफ न होगी। अब तुम एक बड़े भारी राज्यकी महारानी बनोगी। लाखों रुपयेकी कीमत के हीरों और तरह-तरहके कीमती जवाहरातोंके जेवर पहनोगी। सैकड़ों दास दासी हरवक्त तुम्हारे सामने हाथ बांधे खड़े रहेंगे। इस राजमहलकी रानियां तुम्हारे इशारों की भूखी रहेंगी और इतने बड़े राज्यका अधीश्वर हरवक्त तुम्हारा जरखरीद गुलाम बना रहेगा। बोलो, बोलो; तुम्हें किस बातकी तकलीफ है, जो इतना रो रही हो?"

गुलाबकुंवरि महाराजकी बातें सुन और भी घबड़ाई। चट कौंचसे कूदकर अलग खड़ी हो गई और ताज्जुब भरी आवाज़में बोली;—"हैं! मैं कहां हूं मेरा झोपड़ा कहां है? यह राजप्रासाद जैसा महल किसका है? मेरी टूटही चार पाई और मैला बिछावन कहां गया? मेरी प्यारी अम्मा और मुझे प्यार करने वाले मेरे प्यारे बाप कहां गये? हैं! मैं कहां आ गई! यह महल किसका है? तुम कौन हो? हाय! मैं लुट गई! रात को तो मैं अपनी झोपड़ी में सोई थी! यहां कैसे आ गई? क्या मैं स्वप्न देख रही हूं? नहीं-नहीं स्वप्नतो नहीं है; क्योंकि मैं तो चलफिर रही हूं, और मेरे सामने लाखों रुपयेका कीमती सामान नजर आ रहा है। (अपने बदनमें चिकोटी काटकर) नहीं-नहीं, मैं सोई नहीं जागती हूं और यह कभी स्वप्न नहीं हो सकता है! तुम सच कहो मैं कहा हूं?"

महाराज समझे "अभी यह कमउम्र और भोलीभाली है;

यकायक यहां आनेसे घबड़ा गई है। राजाकी लड़की है; कभी अपने मा बापसे अलग नहीं हुई! यह कमरा लाखों रुपयेके सामानसे सजाया गया है, इसके आगे यह अपने कमरे को झोपड़ी समझती है और इस बेशकीमत जड़ाऊ कोंच को बनिस्बत अपने पलंगको चारपाई कह रही है।" महाराज इसे अपनी तारीफ समझने लगे और गुलाबकुंवरिका हाथ प्यारसे अपने हाथमें लेकर बोले—"प्यारी! घबड़ाओ नहीं; अभी तुमने देखा ही क्या है! तुम्हारे रहनेके लिये जो महल सजाया गया है वह इससे कहीं आला दरजेका है और लाखों रुपयेके बेशकीमती सामानोंसे सजा हुआ है; उसे देखकर तुम बहुत खुश होगी। अपने सोनेका जड़ाऊ गंगाजमनी पलंग और उसके ऊपरके बेशकीमत मुलायम, मखमली बिछौना देखकर लोट-पोट हो जाओगी। हजारों रुपये लागतकी पोशाकें पहन कर अपने आपेसे बाहर हो जाओगी! प्यारी गुलाब-कुंवरि! वह दिन बहुत जल्द आवेगा, जब कि हम तुम आपसमें शादीकर जोरूखसमकी भांति एक साथ पलंग पर मजे उड़ावेंगे!"

"गुलाबकुंवरि" का नाम सुनकर गुलाबकुंवरि चौंक पड़ी और लड़खड़ाती हुई आवाज़से बोली—"हैं आप 'गुलाबकुंवरि' का नाम क्यों लेते हैं? वह तो हमारे राजाकी प्यारी लड़की है, जो अपने परिस्तान जैसे आलीशान महल में अपनी प्यारी सखियोंके साथ अठखेलियां कर रही होगी! कहीं आप पागल तो नहीं हो गये, जो मुझे प्यारसे गुलाबकुंवरि बनाये जा रहे हैं! कहीं गुलाब-कुंवरि की किसी लौंडीको ख़ाब में देखकर उसे ही गुलाबकुंवरि तो नहीं समझ बैठे। हैं आप कह क्या रहे हैं!

महाराजने चौंककर उसका हाथ छोड़ते हुए कहा,—"हैं! तो क्या तुम गुलाबकुंवरि नहीं हो? तो फिर तुम कौन हो? नहीं नहीं तुम जरूर गुलाबकुंवरि हो और मुझसे दिल्लगी करती हो! कुछ

हर्ज नहीं ; प्यारी ! मैं तो तुम्हारी दिल्लगियोंका भूखाहूं । तुम मुझे अपना गुलाम समझो और जो चाहो मज़ाक करो, मैं तुमसे बहुत खुशहूं । अब मैं तुम्हारी लौंडियोंको बुलाता हूं, वह तुम्हें हम्माममें लेजाकर नहला-धुलाकर अच्छी अच्छी पोशाकें, पहनावेंगी और इसके बाद गरमागरम स्वादिष्ट भोजन तुम......"

गुलाब०—(बात काटकर) नहीं नहीं ; मैं सच कहती हूं । आप सच मानिये, कि मैं गुलाबकुँवरि नहीं हूं मैं तो महाराज देवसिंहके कोचवान कल्लूमियां की लड़की हूं । आप खुद ही मुझे गुलाबकुंवरि बनाकर मज़ाक कर रहे हैं ; आपको एक अदने कोचवानकी लड़की से हंसी ठट्ठा करते लज्जा नहीं आती ? बस बहुत हुआ ; अब माफ कीजिये ।"

महाराज बेचैन हो गये और गुलाबकुंवरिका हाथ पकड़कर एक कदआदम हलब्बी आईनेके पास ले जाकर बोले,—"बस अब दिल्लगी रहने दो ; फिर कर लेना ; दिन बहुत आगया है । अब इस आईने में अपना खुबसूरत चाँदसा चेहरा देखकर उस ख्वाबको भूल जाओ जो तुमने रातको कोचवानकी लड़कीका देखा है । मेरे ऐयार लोग तुम्हें तुम्हारे खास कमरेसे रातको उठा लाये हैं तुम अपना जी ठीक करो, अबतक तुम्हारे ख्यालात वैसे ही हैं ।"

गुलाबकुंवरि अपना चेहरा आईनेमें देखकर दंग रहगई और अपने बदन की पोशाकें और बेशकीमत, हीरोंके जड़ाऊ गहने देख कर ताज्जुब करने लगी ! उसके चेहरेपर मारे घबड़ाहटके पसीना आगया । जिसे उसने अपने हाथोंसे पोंछ लिया । मगर यह क्या ! पसीना पोंछते ही हाथकी रगड़से उसके चेहरेपरसे कहीं कहीं का रंग छूट गया और उसका चेहरा कहीं-कहीं से काला ! दिखलाई देने लगा । यह हालत देखकर गुलाबकुंवरि आपेसे बाहर हो गई और महाराजकी तरफ घूमकर बोली,—"तोबह !

तौबह! आपलोगोंको एक अदने कोचवानकी लड़कीके साथ इस किस्मका बर्ताव करते शर्म नहीं आती? लानत है आपकी नीयत पर और······"

महाराज उसकी अजीब शकल देखकर बड़ेही शर्मिन्दा हुए और अपने दिलमें खूब समझ गये, कि हमारे साथ बहुत ही बुरी ऐयारी खेली गई है। यह कारवाई जरूर राजा देवसिंहके ऐयारोंकी है कोचवानकी लड़कीको गुलाबकुंवरिकी शकल बनाकर गुलाब-कुंवरिकी जगह इसे सुला दिया, और असली गुलाबकुंवरिको कहीं दूसरी जगह छिपा दिया! खैर, कोई चिन्ता नहीं; देखा जायगा। अब तो खुल्लमखुल्ला, हमारी उनकी होगी और मैं उन्हें इस दिल्लगी-का बखूबी सजा चखा दूंगा!" यह कहते-कहते राजा अर्जुनसिंह मारे गुस्से के लाल होगये और उस लड़की की तरफ देखकर क्रोध-भरी आवाजमें बोले—"बस-बस हरामजादी! अब जुबानसे यदि कोई खराब शब्द निकाला कि अभी तेरी जुबान खींच लूंगा!" यह कहकर उन्होंने पासके टेबुलपर रखी हुई एक चांदीकी घण्टी जोरसे बजा दी। साथ ही एक चोबदारने कमरेमें दाखिल होकर कहा—"क्या हुक्म है महाराज! गुलाम हाजिर है।"

महाराज—"जल्द रतनसिंह और श्यामलालको हाजिर करो और एक लोटा गरम पानी लाओ।"

"जो हुक्म" कहकर चोबदार चला गया और थोड़ी देरमें गरम पानी और दोनों ऐयारोंको ले हाजिर हुआ। ऐयारोंको देखतेही महाराज उनपर बहुत बिगड़े और नीच-ऊंच सुनाने लगे। ऐयार लोग बड़ी खुशीमें आये थे, कि महाराजने इनाम देनेके लिये बुलाया होगा; मगर यहांका रंग-ढंग कुछ और ही देख सन्न होगये। बदन का खून सूख गया और कांपते हुये हाथ जोड़कर महाराजसे बोले—"क्या हुक्म है?"

महाराज—" (कड़ककर) हुक्म खाक है । देखो यह, गुलाबकुंवरिकी जगह किस चुड़ैलको उठा लाये हो ? इसी तरह ऐयारी करोगे । जरासा काम करने गये और धोखा खा आये ! काम भी न हुआ और दो ऐयारोंको भी कैद करा आये ! उलटे दुश्मनोंके ऐयारोंसे आप भी शर्मिंदा हुए और मुझे भी मुंह दिखाने लायक न रखा ! वाह, जन्मभर तो घर बैठे मुंहमांगी तनखाह पाते और मजा उड़ाते रहे, एक जरासेके काम को भेजा ; सो भी पूरा कर न सके ! बस अब कभी ऐयारीका दम न भरना ; ऐयारीका बाना उतारकर रख दो और खुरपी खंचिया ले जंगलमें जाकर घास काटो !"

महाराजकी कड़ी बातें सुनकर दोनों ऐयार अपने जीमें बड़े शर्माये और मारे गुस्सेके कांपने लगे । उनको अपनी बेइज्जती होनेका बड़ा रंज हुआ, मगर क्या करते मालिकका नमक खाया था । ऐयार लोग नमकका बड़ा ख्याल रखते हैं । लाचार मन ही मन लहूका घूंट पी गये और श्यामलालने, हाथ जोड़ मुलायम आवाज़में कहा—"महाराज ! क्षमा कीजिये ; भूल आदमी हीसे होती है ; हैवानसे नहीं । डूबता वही है, जो पैरना जानता है । क्या हर्ज है । अगर तब नहीं तो अब सही ! अगर अबकी गुलाबकुंवरिको न लासके, तो आपको जन्मभर अपना मुंह न दिखावेंगे !"

श्यामलालकी आशाभरी मुलायम बातें सुन महाराज कुछ शान्त हुए और कोचवानकी लड़कीके मुंह धोनेका इशारा किया । इशारा पाते ही रत्नसिंहने पानी ले चट उसका मुंह धो डाला । चेहरेका रंग साफ होते ही वह एक काली कलूटी पन्द्रह सोलह वर्षकी बदसूरत लड़की मालुम हुई, जिसे देख महाराजको बड़ी घृणा हुई और चोबदारको इशारा किया, कि फौरन इसे किलेके बाहर निकालदे । चोबदार महाराजका इशारा पातेही उस लड़की को

खिड़केसे निकाल आया। वह बेचारी रोती-पीटती भूखीप्यासी एक तरफको चलती बनी।"

बाद महाराज अर्जुनसिंहने राजा देवसिंहसे इसका बदला लेने का कड़ा हुक्म दे ऐयारोंको जानेका इशारा किया। साथ ही लम्बी लम्बी सलामेंकर ऐयार लोग कमरेसे बाहर निकल गये।

दूसरा बयान।

ठीक दोपहर का समय है। महाराज अर्जुनसिंहका दरबार बड़े ठाठसे लगा हुआ है। महाराज अर्जुनसिंह एक बड़े ऊंचे जड़ाऊ सिंहासनपर सिर झुकाये उदास बैठे कुछ सोच रहे हैं। बांईं तरफ दीवान हरनामसिंह अपनी जड़ाऊ कुर्सीके सहारे महाराजकी तरफ बड़े अदब से देख रहे हैं। मीरमुन्शी, नायबदीवान, शहरकोतवाल और फौज के सिपहसालार खड्गबहादुरसिंह प्रभृति अपनी अपनी कुर्सियोंपर अदबसे सिर झुकाये बैठे हैं। सामने पन्द्रहबीस चोबदार कायदेसे खड़े हैं। दरबारमें पूरा सन्नाटा छाया हुआ है। सबकी निगाहें महाराजकी तरफ छिपी तौर से पड़ रही हैं। सहसा महाराजने अपनी आँखें शहर कोतवालकी तरफ घुमाईं, और एक कड़ी मगर गम्भीर आवाज में कहा—क्यों हैदरअली? क्या वह डाकू इसी तरह हमारी प्रजा को लूटा मारा करेगा और तुम लोग चुपचाप बैठे तमाशा देखोगे? आज कई दिनसे वह लोग मायापुर में उपद्रव मचा रहे हैं; मगर तुम्हारे किये कुछ भी नहीं होता! लानत है तुम पर! तुम शहरकोतवाल कहलाते हो और अदने डाकुओं को भी गिरिफ्तार नहीं कर सकते! क्या इसी हौसलेपर कोतवाली करते हो?

तुम्हें शर्म नहीं आती, कि तुम्हारे रहते शहरमें दिनदहाड़े डाका पड़ता है और तुम मुंह ताका करते हो ! अभी परसों ही तो डाकुओंने सेठ मिट्ठनलाल जौहरीको गायबकर उसके कई लाख रुपये लूट ले गये हैं ! कल खबर-लगी कि उन लोगोंने तीन-चार जौहरियोंपर और भी हाथ फेरा है ! यह बहुत बुरा है । हमारे ऐयार लोग भी न जाने कहां मर गये । मुझे तो यह सब तुम्हारे सिपाहियोंकी मिलावट मालूम होती है । जरूर वह लोग डाकुओं से रिशवत खाते हैं और इसीसे उनको नहीं पकड़ते !"

कोतवाल—(हाथ जोड़कर) हुजूर तावेदारने भरसक उनको पकड़ने की बहुत कोशिश की ; किन्तु जब वह चोर या डाकू हों, तब तो पकड़े जायें । वह तो कोई भारी ऐयार मालूम होते हैं । चोर या डाकुओंकी क्या मज़ाल जो इतना उपद्रव मचा सकें । मैंने मुहाने मुहाने पर डबल पहरे का इन्तज़ाम कर दिया है और उन लोगों को सख्त ताकीद कर दी है, कि जिसपर जरासा भी शक मालूम हो, फौरन पकड़कर मेरे सामने हाजिर करो ; बल्कि दिनमें मैं खुद भेष बदलकर शहरमें गश्त लगाता हूं ; मगर वह शैतानके बच्चे ऐसे आफत के परकाले हैं, कि हमलोगों की आँखोंमें धूल झोंककर अपना काम कर ही जाते हैं । मुझे पूरा शक हो गया है, कि वह लोग जरूर राजा वीरेन्द्रसिंह या देवसिंहके ऐया-रोंमें से हैं और बगैर हमारे ऐयारोंकी मददके न पकड़े जायेंगे ।"

महाराज—अगर ऐसा ही है, तो फौरन ऐयारोंको हुक्म दिया जावे, कि जल्द उन बदमाशोंको पकड़कर दरबारमें हाजिर करें । हमारे यहां सब मिलाकर १२ ऐयार हैं, जिनमें से चार तो दारोगाके साथ तिलिस्मकी हिफाजतके लिये गये हुए हैं, दो देवगढ़ में कैद हैं बाकी नौ ऐयार मौजूद हैं, तिसपर भी अबतक इन बदमाशोंके गिरिफ्तार करनेका बन्दोबस्त नहीं होता (दीवान

हरनामसिंहकी तरफ देखकर) क्यों जी, हमारे ऐयार लोग कहां हैं ? हमारे सामने जल्द हाजिर करो ।"

दीवान हरनामसिंहने नायब-दीवानकी तरफ देखा. नायब दीवानने उसी वक्त एक चोबदारको ऐयारी-घण्टा बजाने का हुक्म दिया । हुक्म पाते ही चोबदार दरबारके बाहर गया और फाटक-पर ऐयारी घण्टा जोर जोर से बजाने लगा । घण्टे की आवाज दूर दूर तक गूंज गई और साथ ही कूदते-फांदते चार ऐयार ऐयारीके पूरे ठाठसे दरबारमें आ मौजूद हुए, जिनके नाम यह थे. देवीसिंह, मुरारीलाल, बटुकनाथ और मोतीसिंह । यों तो यह सब ही ऐयार-ऐयारीके फनमें पूरे उस्ताद थे ; मगर बटुकनाथ इनमें बड़ा ही तेज, फुर्तीला, ताकतवर और मसखरा ऐयार था और रिश्तेमें कमलसिंहका साला लगता था । दीवान हरनाम-सिंह ऐयारोंको देखते ही बोल उठे,—"क्यों जी, तुम्हारे और साथी कहां हैं ? वक्तपर दरबारमें कोई भी नजर नहीं आता । महाराज तुम लोगोंपर सख्त नाराज हैं ! यह क्या मामला है ?"

चारों ऐयारोंके बीचसे निकलकर बटुकनाथ चट बोल उठा—"श्यामलाल और रत्नसिंह तो बांकेलाल और हरीसिंहको छुड़ानेके लिये देवगढ़की तरफ गये हुए हैं । भैरोसिंहका आज तीन दिनसे कहीं पता ही नहीं है । बाकी तीन ऐयार, गंगाप्रसाद, हरिकृष्ण और पण्डित हरदेव मिश्र उन डाकुओंकी फिक्रमें गये हुए हैं, जो कई दिनोंसे इस राज्यमें उपद्रव मचा रहे हैं ।"

दीवान्—"तुम लोगोंके लिये यह बड़े शर्मकी बात है, कि एक अदना डाकू यहां की रियायाको तंग करे और तुम लोगोंके किये अबतक कुछ भी न हो !"

बटुक०—"सच पूछिये, तो हमलोग अबतक कोतवाल साहब की कारवाई देख रहे थे, कि देखें यह क्या बन्दोबस्त करते हैं ।

हमलोग भैरोसिंह का खोज निकालेंगे। इनसे पता लगना मुश्किल है।"

यह सुन महाराजने उनको हिफाजतसे अपने खासमहलमें कैद करनेका हुक्म दिया ; ऐयारलोग दोनों को महल की तरफ लेगये। उनके जानेपर महाराज अर्जुनसिंहने दीवान हरनामसिंहसे कहा:—"मेरा इरादा इस वक्त देवगढ़ पर चढ़ाई करनेका है। देवसिंह बड़ा जिद्दी है, ऐसे वह न मानेगा हमारे दो ऐयारों को भी कैदकर लिया है और अपने ऐयार भी हमारे इलाकेमें छोड़े हैं। यह मौका अच्छा है, कुंवरचन्द्रसिंह भी तिलिस्ममें फंसे हुये हैं। राजा वीरेन्द्रसिंह उनके गममें आपही मरे जाते हैं। वह भी देवसिंहकी मदद न कर सकेंगे और बात की बातमें हमलोग देवगढ़को फतह करलेंगे।"

दीवान हरनामसिंह तथा और सरदारोंने भी यह राय पसन्द की। महाराजने, सिपहसालार खड्गबहादुरसिंहसे पूछा:—"इस वक्त हमारे यहां काबिल लड़ाईके कितनी फौज तैयार है?"

खड्ग०—"इस वक्त हमारे यहां चालीस हजार फौज तैयार है, बाकी चार पांच हजार छुट्टीपर गई है, अगर आप हुक्म दें तो मैं इससे आधी कुल २० हजार फौज लेकर देवगढ़को फतह कर सकता हूं। खाली बैठे-बैठे हमलोग भी उकता गये हैं। अब तो यही जी चाहता है कि कहीं मौका पड़े तो हमलोगोंकी तलवारोंके जौहर दिखाई दें!"

खड्गबहादुरसिंह*की बात सुनकर महाराजका दिलभी दूना होगया और हुक्म दिया कि "आठ दिनके अन्दर ही फौज को तैयार कर देवगढ़ पर चढ़ाई करदो और किला घेरकर लड़ाई छेड़ दो, मौका पड़ने पर और फौज भी भेज दी जायेगी। हमारे यहां ३० तोपखाने हैं उनमें से २० तोपखाने साथ लेते जाओ।"

"जो हुक्म" कह कर सिपहसालार दरबारसे निकल गया। महाराजने भी दरबार बरखास्त किया और खुशी-खुशी महलमें चले गये।

तीसरा बयान

शामके करीब ८ बजेका सुहावना वक्त है। सूर्य्य अस्त हो रहे हैं। डूबते हुए सूरज की सुनहरी रश्मियां, देवगढ़के जनाने नजर बागके ऊंचे २ खुशनुमा दरख्तों पर पड़कर अजीब कैफियत दिखा रही हैं। नजरबागके हर हिस्से में इसवक्त चहल पहल नज़र आती है क्योंकि रविशों और क्यारियोंपर अभी छिड़काव किया जा चुका है। जिससे छोटे-छोटे खूबसूरत पौधे, अपनी-अपनी थकावट दूर कर मस्त हो अखाड़े जाते हैं। उन खूबसूरत फूलों की खुशनुमा महक मीठी-मीठी हवामें मिलकर बागके चारों तरफ फैली हुई है। बागके पूरबतरफ एक आलीशान पंचमहला मकान अपनी खूबसूरती और निराली आनबानसे मतवाला हो अपनी पूरी ऊंचाईमें तनकर खड़ा है। बागके बीचोबीच सङ्गमरमरके सुफेद पत्थरों की बनी एक खूबसूरत बारहदरी है; जो खूबसूरती और नायाब कारीगरीमें अपनी शानी नहीं रखती।

ठीक इसी समय हम गुलाबकुंवरि, केसर और ललिताको उसी बारहदरीके बीच वाले सङ्गमरमरके जड़ाऊ कोचपर बैठे इधर उधरकी बातें करते देखरहे हैं। जिसपर सुर्ख मखमलका कामदार बालिश्त भर मोटा गद्दा बिछा है सचमुच इस बारहदरी

---

* खड़गबहादुरसिंह की उम्र करीब २५ वर्षकी थी।

की बनावट देखने ही लायक है, जिसको महाराज देव-सिंहने बेशुमार रुपया खर्च कर अच्छे अच्छे आलिम कारीगरोंसे बनवाया था। बारहदरीके चारों तरफ पतले पतले बलदार बारह बारह खूबसूरत खम्भे अपने नाजुक सिरों पर बारहदरी की हलकी छत को उठाये बड़ी शानसे खड़े हैं, जिनमें बड़ीही कारीगरीसे सुन्दर बेलबूटे काटे गये हैं। छतपर सुनहरी फूल पत्तियां बनी हुई हैं और बीच-बीच बिल्लौरी हांड़ियां और पचबत्तिये झाड़ लटक रहे हैं। बारहदरी की फर्श सङ्गमरमरके सुफेद और काले चौखूटे पत्थरों की बनाई गई है जिनमें जगह जगह रंगबिरंग खूबसूरत पत्थर तराश कर लगाये गये हैं जो असली फूलोंका धोखा दे रहे हैं। राजकुमारीके सामने एक सुफेद पत्थरका गोल टेबल रक्खा है और उसके ऊपर जड़ाऊ गुलदस्तोंमें ताज़े खुशबूदार और रंगबिरंगे फूल रखे हैं।

इस वक्त गुलाबकुंवरिकी खूबसूरती देखने ही काबिल है, जिसने आज कई दिनके बाद अपनी सखियोंके बहुत समझाने और दिलासा देने पर अपना हलका मगर खूबसूरत शृङ्गार कराया है और दो दिन हुए अपने पितासे आज्ञा लेकर दिल बहलानेके लिये अपने खास नज़रबागमें आई हुई है। गुलाबकुंवरि इस वक्त कुल पोशाक सुर्ख मखमलकी पहने है जिस पर बड़ीही खूबसूरतीसे सलमे सितारेका भारीकाम किया गया है। गोरे-गोरे नाजुक हाथों में हीरोंके जड़ाऊ कड़े क्याही शोभा दे रहे हैं। कानोंमें पन्नेकी जड़ाऊ मछलियां लटक रही हैं जो झूमझूम कर राजकुमारीके गुलाबी गालोंका बोसा ले लेती हैं, सुराहीदार गलेमें कीमती महीन मोतियों की गुंथी हुई लड़ियां शेष की तरह बन्धी हुई क्याही भली मालूम होती हैं। साथ ही बड़े बड़े सुडौल हीरोंका

खुशसूरत हार छाती तक झूल झूल कर देखने वालों की आँखोंमें चकाचौंध पैदा कर रहा है। सुडौल नाकमें बड़े-बड़े मोतियोंकी नथ लटक रही है जिनके बीचका सुराहीदार कीमती बुलाक मनचले दिलको रह-रह कर अपनी तरफ खींच लेता है। पैरोंमें सिर्फ दो चीजें—सोनेका सांकड़ा और पायजेब शोभा दे रही हैं। कमरके ऊपर सिर्फ सच्चे काम की हीरोंसे जड़ी पेटी कसी है, जिसमें एक छोटी सी जड़ाऊ कब्जे वाली खूबसूरत [illegible] खुंसी हुई है। राजकुमारीके लम्बे-लम्बे घूंघरवाले काले बालोंके गुच्छे दोनों सखियोंने गूंथकर एक खूबसूरत जूड़े की शकलमें बना दिये हैं और उस पर बेले की कलीका मोटा गजरा लपेट कर हीरेके जड़ाऊ कांटोंसे खोंस दिया है जिससे एक किस्मके फूलका शृङ्गार भी हो गया है। इन सब बातोंसे इस वक्त हमारी राजकुमारी, हूबहू राजा इन्द्रकी लालपरीसे भी चढ़ी बढ़ी मालुम दे रही है! फ़ अगर कुछ कसर है तो सिर्फ दो परों की। अगर दोनों बाजुओं पर दो पर लगादिये जाते तो लालपरी भी शर्मा कर अपना सिर झुका देती और जिन्दगी भर लौंडी बन हाथ बांधे खड़ी रहती। गुलाबकुंवरि की दोनों सखियां केसर तथा ललिता भी सब्ज और नीली पोशाकें पहने, चोटीसे पैर तक खूबसूरत मगर हलका शृङ्गार किये, अपनी-अपनी चपरासमें एक-एक खूबसूरत कातिल खंजर खोंसे, अनोखी आनबान और खूबसूरतीसे सैकड़ों सुन्दरियोंके मनमें डाह पैदा कर रही हैं। तीनो नवेलियोंके हाथमें ताज़े खुशबूदार फूल पत्तियोंके बने खूबसूरत गुच्छे शोभा दे रहे हैं जिन्हें वह लोग बातें करते-करते रह-रह कर सूंघ लिया करती हैं। इतनेहीमें बातें करते-करते गुलाबकुंवरिने अंगड़ाई ली और फिर अपनी बड़ी-बड़ी आखोंको केसरके चेहरे पर जमाकर कहने लगी "सखी, देख आज मालती और श्यामाको राजकु[illegible]की खोजमें गये पूरे

छ दिन गुजर चुके * मगर अबतक उनका कुछभी समाचार न मिला! गई थीं राजकुमार की खोज में मगर आप भी खोगई! हाय न जाने किस बुरी सायतमें राजकुमार की मोहब्बतने मेरे दिलपर कब्जा किया था, कि उस दिनसे सिवाय दुःखके स्वप्नमें भी आराम न मिला! हाय! प्यारे तुम किधर हो? कहां हो? और किस हालतमें हो? न जाने तुम्हारे ऐसे वीर और बहादुर नौजवानको किस सङ्गदिलने कैद कर रक्खा है। प्यारे! तुम्हें क्या मालुम, कि तुम्हारे वियोगमें गुलाबकुंवरिकी क्या हालत होती होगी और उसके दिन किस मुसीबतके साथ कटते होंगे! तुम तो यही सोचते होगे कि गुलाबकुंवरि अपने महलमें अपनी प्यारी सखियोंके साथ दिन रात मजे उड़ाती होगी, और उसे हमारी तकलीफों पर कब ख्याल आता होगा! मगर नहीं प्यारे ऐसा नहीं है! मुझे रात दिन सोते जागते हर वक्त तुम्हारा ही ख्याल बना रहता है और खाना-पीना पहनना ओढ़ना, सब जहर मालुम देता है।"

इतना कहते-कहते गुलाबकुंवरिका गला भर आया और दोनों आंखोंसे दुधारे आँसुओंकी मोतियों सी लड़ी गिरने लगी। किसी भारी सोचने उसके दिलपर हमला किया और साथही वह बेसुध होकर कोच पर गिर पड़ी। ललिता और केसरने उसे बहुत सम्हाला और चट अपने बटुएसे लखलखा निकालकर सुंघा दिया जिसके साथ ही तड़ातड़ दो तीन छींकें मारकर राजकुमारीने आंखें खोल दीं, और रो रो कर आंसुओंसे अपने कपड़े तर करने लगी। यह हालत देख केसरने बहुत दिलासा दिया और कहा कि,—"प्यारी! तुम क्यों इतना दिल छोटा किये देती हो! मालती और श्यामा गई ही हैं, जल्द ही वह पता लगा कर लौटेंगी। और अगर

* देखो पहला हिस्सा-सातवां बयान।

बन पड़ा तो राजकुमार को अपने साथ ही यहां लेती आ ंगी। अगर तुम ही इतनी अधीर हो जाओगी तो हम लोगोंकी क्या हालत होगी, और महाराज तथा महारानी अपने दिलमें क्या सोचेंगे ? तुम ऐसी पढ़ी लिखी और समझदार होकर ऐसी बेसमझी की बातें करती हो ; ताज्जुब की बात है ! अब अपना दिल सम्हालो और चलो टहल टहल कर बाग की सैर करें, देखो, यह कैसा सुहावना वक्त है और क्याही मन्द मन्द हवा के झपेटे पेड़ोंके साथ टकरा टकरा कर अठखेलियां कर रहे हैं ।"

इतना कहकर केसर और ललिताने राजकुमारीका हाथ बड़ी मुहब्बतसे पकड़ लिया और बारहदरी की खूबसुरत सीढ़ियोंसे उतर कर बागकी सैर करने लगीं। राजकुमारी को बागमें टहलते देखकर, इधर उधरसे तीन चार बड़ी ही हसीन, कमसिन, और खूबसूरत मालिनें निकल आईं, जो अपने सुडौल बदन पर जर्द (पीली) साटनकी खूबसूरत वर्दियां पहने और हाथोंमें तरह तरहके ताजे और खुशबूदार फूलोंसे भरे चंगेर लिये थीं। केसर और ललिताकी तरह इन मालिनोंकी चपरासोंमें भी एक एक खूबसूरत खंजर खुंसा हुआ था और वह आपसमें एकसे एक खूबसूरतीमें बढ़-चढ़ कर थीं।

मालिनोंने राजकुमारी को देखते ही झुक झुक कर अदबसे सलामें कीं और अपने अपने चंगेरोंसे उमदः उमदः खुसबूदार फूल चुन चुन कर राजकुमारी तथा उनकी दोनों सखियोंकी नजर किये। राजकुमारीने उनके हाथोंसे दो चार फूल चुनकर लेलिये और टहलती हुई सखियोंका हाथ पकड़े दूसरी तरफ निकल गईं जहां एक छोटा सा फौव्वारा बड़ी बहारसे छूट रहाथा। इसवक्त सूरज बिलकुल डूब गया था और बागमें एक तरह का हलका अन्धेरा फैल चला था कि साथ ही चारों तरफकी लालटेनें आपही आप

एक साथ जल उठीं और उनकी नीली तथा गुलाबी रोशनी बागके हर हिस्सोंमें फैल गई। अब राजकुमारी, केसर और ललितामें इस तरह बातें होने लगीं:—

गुलाब०—"क्यों केसर! तुमने यह तो बतायाही नहीं नहीं कि वह दोनों ऐयार जो उस दिन पकड़े गये कौन थे? और किस लिये आये थे?"

केसर—"वह दोनों राजा अर्जुनसिंहके ऐयार थे और तुम्हें चुरा ले जाने की फिक्रमें आये थे। एक का नाम तो बांकेलाल है और दूसरेका हरीसिंह। मगर वाह! ललिताने भी खूब ऐयारी खेली। असलमें हम लोगों को पहिले ही से इस बातका डर था, इसीसे उस्तादकी सलाहसे उस दिन तुम्हें दूसरे महलमें सुलाया गया, और तुम्हारी जगह पर कल्लूकोचवानकी लड़की को बेहोश-कर तुम्हारी शकल बना सुला दिया गया। मैं तो तुम्हारी हिफाजतमें थी और ललिता नकली गुलाबकुंवरिके पहरे पर तैनात हुई।"

ललिता—"और वह जो माधवी बनकर नकली गुलाबकुंवरि को उड़ा लेगया, बड़ा ही कच्चा होगा। मैं तो पहिले ही समझ गई थी कि यह असली माधवी नहीं है, मगर जान बूझकर उसे इस लिये छोड़ दिया था कि मुए को जरा ऐयारीका जायका तो मिले। आखिर वही हुआ जो मैंने सोचा था। कल कल्लूमियां की लड़की भी रोती पीटती अपने घर चली आई। उससे पूछने पर यह भी मालूम हो गया कि भेद खुलने पर अर्जुनसिंह ऐयारों पर बहुतही झुंझलाये और बिगड़े। जब फिर उन लोगोंने तुम्हें उड़ा लेजानेकी कसम खाई है। इसीसे तुम्हे हमलोग बागमें ले आई हैं और बागके चारों तरफ पहरा भी मुकर्रर कर दिया गया है।"

गुलाब०—"मगर तैने और केसरने बांकेलाल और हरीसिंह पर खूब मनमाने कोड़े फटकारे, जो वह जिन्दगी भर न भूलेंगे।"

केसर—"अजी कोड़े क्या उन लूओंको तो जूतियाँ लगाऊंगी, सुए जाते कहां हैं ? आखिर तो हमारी ही कैदमें न हैं। हां, अगर उस्तादका कहा मानकर हमारी तरफ हो जायेंगे तो सब बखेड़ा ही तय होजायेगा। मगर वह क्या माननेवाले हैं ?"

ललिता—"आखिर तो ऐयार बच्चे हैं न! नमकहरामी तो कर ही नहीं सकते। बिला-वजह भला किस तरह अपने राजा को छोड़ कर हमारे महाराजको ताबेदारी कबूल करें ?"

गुलाब०—यह तो क़ायदे की बात है। चाहे उनकी जान भी लेली जावे मगर ऐयार नमकहरामी कभी नहीं करेंगे।"

यह लोग आपुसमें इसी किस्म की बातें करती हुई, रविशों पर टहल टहल कर बाग की सैर तथा सुन्दर खुशबूसे बसी हुई हवाके झकोरे खा रही थीं कि एकाएक एक तरफसे सुरीले बाजों की आवाज सुनाई दी, जो बागके हरहिस्सोंमें गूँजती हुई हवामें मिलकर गायब होगयी। गुलाबकुंवरि उन बाजोंकी आवाज सुनतेही अपनी दोनों सखियोंके साथ तेज़ीसे कदम बढ़ाती हुई बारहदरीके पास पहुंची और वहां जाकर देखा तो दस बारह कमसिन तथा खूबसूरत छोकरियां बारहदरी की फर्श पर बैठी अपने अपने बाजों को आपसमें मिलाकर स्वर ठीक कर रही थीं। किसीके हाथमें तबला, किसीके पखावज, किसीके सितार, किसीके हाथमें तानपूरा था। एक औरत मंजीरा टुन-टुना रही थी और बाकी औरतें सिर्फ हाथहीसे ताल दे दे कर कुछ गुन-गुना रही थीं।

इस वक्त बारहदरीकी छटाही निराली थी। छतपर की बिल्लौरी हाँड़ियां और पचबतिये झाड़ खूब जगमगा रहेथे और बारहदरीकी जड़ाऊ फर्श पर एक लम्बा चौड़ा कीमती काश्मीरी गलीचा बिछा हुआ था। चारों तरफके खम्भों पर तरह तरहके ताजे फुलोंके मोटे मोटे गजरे लपेटे गये थे और बीच बीचमें

रंगीन फूलोंके गुच्छे लगे हुये थे। एक तरफ वही कोच रक्खा हुआ था जिसका जिक्र हम ऊपर कर चुके हैं, मगर इस वक्त उसके ऊपर सब्ज मखमलका कारचोपीके कामका मोटा गद्दा बिछा हुआ था। उसके इर्दगिर्द सच्चे मोतियोंकी झालरें लगी हुई थीं, कोचके दोनो तरफ दो गोल टेबल रखे थे जिन पर बिल्लौरी शीशोंके जड़ाऊ. गुलदस्तोंमें सुन्दर सुन्दर ताज़े फूल भरे गये थे। गाने वाली जितनी औरतें थी सब एक रंगकी सब्ज पोशाक पहने थीं और सबहीके बदन पर कीमती जड़ाऊ जेवर दिखाई देते थे। गर्ज़ यह कि इन सामानोंसे वह बारहदरी एक दूसरीही शक्लमें बदल गई थी जिसे लोग परिस्तान या परियोंका मजमा कह सकते हैं।

राजकुमारी को देखतेही सब औरतोंने उठ उठ कर अदबसे सलामें की और हाथ बांधकर एक तरफ खड़ी होगई। राजकुमारी सबकी सलामोंका जवाब देती हुई कोच पर जाकर बैठ गई। राजकुमारीके बैठतेही दस पन्द्रह खूबसूरत, नौजवान, लौंडियां पीलीवर्दी पहने हाथोंमें नंगी तलवारें लिये, एक तरफसे निकल आई और राजकुमारीको सलाम कर कोचके पीछे जाकर खड़ी होगई। केसर तथा ललिता भी कोचके अगल बगल एक एक हाथ टेबल पर रखकर अदबसे खड़ी होगई और गाना बजाना फिर शुरू हुआ। अहा! पाठक क्याही समा बंधा है! मिले हुये साजों की सुरीली आवाज और महीन गले की गिटकिरीदार तानें क्याही लुत्फ़ दे रही हैं! भई वाह! गाने बजाने वाली सबही औरतें अपने अपने फनमें उस्ताद मालूम होती हैं; क्योंकि मैंने हाथसे ताल देकर एक-एक को आज़माया, मगर किसीको भी बेसुरी या बेताली न पाया। आह! इनके गाने ने तो सितम कर कलेजा चाक कर डाला! भई वाह! यह छोकरियें तो गज़ब करती हैं अपने हुनरसे तानसेनको भी मात करती हैं! वह देखिये अब

गुलाबकुंवरि भी मस्त होकर धीरे-धीरे चुटकियों पर ताल देने-लगी। गाना खूब जमा और सबही औरतें मस्त हो-हो कर झूमने लगीं।

ठीक इसी समय एक मालिनने दौड़ते हुए बदहवास आकर अपनी भर्राई हुई आवाजमें हाथ जोड़कर राजकुमारीसे कहा:—
"सरकार महाराज बहादुरकी सवारी अभी फाटक पर आकर लगी है और श्रीमान् अपने साथ ऐयारोंके सिरताज गुलाबसिंहको लिये इसी तरफ आरहे हैं!"

इतना कहकर मालिन एक तरफ को तेजीसे चली गई और साथही मजलिसमें पूरा सन्नाटा छागया! गुलाबकुंवरि और उसकी दोनो ऐयार: तरह-तरहके सोचमें पड़गई कि आज क्या सबब है जो महाराज, राजकुमारीके बागमें पधारे! अस्तु यह सब अभी इसी तरह की बातें सोच रही थीं कि एक तरफसे महाराज देवसिंह और गुलाबसिंह आते दिखाई दिये, उन्हे देखतेही सब औरतें हाथ बान्ध कर खड़ी हो गईं और गुलाबकुंवरि, केसर तथा ललिताने बारहदरीके नीचे उतर कर अदबसे महाराजके सामने अपना-अपना सिर झुका दिया। महाराजने गुलाबकुंवरि पर मुहब्बत की निगाह डालते हुये कहा:—

"बेटी! तुम इस वक्त एकाएक हमारे यहां आनेसे घबड़ा गई होगी मगर घबड़ाने की कोई बात नहीं है। दो दिनसे तुम्हें देखा नहीं था, इस वक्त एकाएक तुम्हारे देखने का ख्याल पैदा हुआ, खूनने जोश किया लाचार गुलाबसिंहको साथ ले घोड़े पर सवारहो इस तरफ चला आया। तुम्हारी मा भी तुम्हे देखे वगैर बेचैन होरही है। जलसा खतम करो और मेरे साथ किलेमें चलो, अपने साथ केसर और ललिताको भी लेती चलो मैंने पालकी तैयार करनेके लिये हुक्म दे दिया है।

इरादा तो नहीं था मगर महाराज की आज्ञा ऐसोही थी फिर किसकी मजाल थी जो कुछ उज्र करे। लाचार गुलाबकुंवरि, केसर और ललिता "जो आज्ञा" कहकर चलनेके लिये तैयार होगईं। महाराजाने गुलाबकुंवरिका हाथ पकड़ लिया और गुलाबसिंहने केसर और ललिताको दाये बायें कर लिया। तब यह लोग बागके दर्वाजे की तरफ बढ़े। बारहदरी दूर छूट गई थी और बाग का सदर फाटक करीब पचास गजके बाकी था। यहां अंगूर का घनी टट्टियां लगी हुई थीं और कुछ अन्धेरा भी था। महाराजने वहां पहुंचतेही अपने जेबसे एक रेशमी रूमाल निकालकर हवामें जोरसे हिला दिया जिसके साथ ही गुलाब-कुंवरि, केसर और ललिता तड़ातड़ कई छींकें मार कर जमीन पर आ रहीं। महाराजने चट गुलाकुंवरिको सहारा देकर गोदमें कर लिया और अपनी कमरसे चादर खोल फुर्तीसे गुलाबकुंवरिको उसमें बांध लिया। इतने ही में गुलाबसिंहने भी केसर और ललिताका एक भारी गट्ठर तैयार कर लिया और अपनी-अपनी पीठ पर लाद,बागके पिछवाड़े पहुंचे, वहां दोनोंने रस्सी की सीढ़ियां (कमन्द) दीवार पर फेंकी और चटपट बागके बाहर हो तेज़ीसे एक तरफका रास्ता लिया।

चौथा बयान।

जब तीन नकाबपोशोंने एक तरफसे एकाएक निकलकर हंसवाली तिलिस्मी कोठरीमें, लड़ते हुये झुण्ड पर एक साथ तलवारों का वार किया और साथ ही दो आदमी जख़मी होकर जमीन पर गिर पड़े * तो एकाएक लड़ाई बन्द

---

* देखो पहिला हिस्सा नौवां बयान:—

होगई और सब लोग ताज्जुबके साथ लाल नकाबपोशों की शकलें देखने लगे।

जख़मी होने वाले, दारोगाके दलके दो ऐयार विचित्रसिंह और भयंकरसिंह थे। उन दोनों ही के कन्धोंपर तलवारके भरपूर हाथ बैठे थे, जिससे गहरे जख़म हो गये थे और ताजा खून बड़ी तेज़ीके साथ निकलकर कमरेकी फर्शपर फैल रहा था। दोनों ऐयार गिरनेके बादही कुछ देरतक छटपटा कर बेहोश हो गयेथे और अब कमरेमें पूरे तौरसे मौतकासा सन्नाटा छाया हुआ था। ठीक इसी समय तीन नकाबपोशोंमें से एक नकाबपोशने कुछ आगे बढ़कर उस गहरे सन्नाटे को तोड़ते हुये कड़ी आवाजमें दारोगासे कहा:—

नकाबपोश—"बस अब तुमलोग अपनेको हमारा कैदी समझो और अपने अपने हथियार ज़मीन पर रख दो!"

दारोगा कुछ बोलाही चाहता था कि कमलसिंहने नकाबपोशके मुकाबिलेमें पहुंचकर जवाब दिया:—

कमल॰—"बस-बस जवांदराज़ी मत करो; यह तिलिस्म तुम्हारे बापका बनवाया नहीं है। इस तिलिस्ममें दखल देनेवाला अपने को खुद हमारा कैदी समझ सकता है और अब सचमुच तुम लोग हमारे कब्जेमें हो। अपने चेहरे परकी नकाब दूर करो और अपने साथियों सहित जो हम कहें हमारे हुक्म की तामील करो"

नकाब॰—"चुप बे छोकरे। होश की दवा कर वर्ना अभी जबान पकड़ कर खींच लूंगा। तू है किस मर्जकी दवा? और तेरे तिलिस्म ही को क्या बुनियाद है? जरा होशमें आ और देख बदमाश तेरे पीछे तेरा बाप खड़ा क्या किया चाहता है!"

नकाबपोश की रोबीली आवाजने सबको घबरा दिया और साथही जो सबकी निगाहें पीछे की तरफ फिरीं तो उन्हें वहां एक

विचित्र तमाशा दिखाई दिया! सबने देखा कि एक बड़ा भयानक कालादेव लाल लाल आँखें निकाले मुंह बाये बड़े-बड़े दांतो को पीसता हाथमें एक आगसे तपा लाल-लाल मोटा सिक्कड़ लिये, दारोगा कमलसिंह और शोभासिंह की तरफ बड़ी तेजीसे बढ़ रहा है और हाथ बढ़ाकर तीनोंके गलेमें जलता बलता सिक्कड़ डाला ही चाहता है! वह खौफ नाक तमाशा देखकर, दारोगा, कमल-सिंह तथा शोभासिंहके होश हवास हवा हो गये, बोलने की ताक़त जाती रही और तीनोंही आदमी डरके मारे एक-एक चीख मारकर जमीन पर गिर पड़े और देखते देखते बेहोश हो गये।

कुछ डर तो राजकुमार और हीरासिंह को भी बेशक मालूम हुआ मगर यह लोग वीर और साहसी थे जमकर अपनी अपनी जगह पर खड़े रहे और दारोगा इत्यादिके बेहोश हो जाने पर जो उन्होंने देव पर निगाह डाली तो वहां कुछ न पाया! हक्के बक्के होकर चारों तरफ देखने लगे कि साथही तीनों नकाबपोशों को खिलखिला कर हंसते पाया। अब तो राजकुमार और हीरासिंह को और भी ताज्जुब हुआ और वह लोग आश्चर्य से नकाबपोशों की तरफ घुड़-कर बड़े गौर से उनकी ओर ताकने लगे।

राजकुमार तथा हीरासिंह को अपनी ओर ताकते देखकर नकाबपोशोंने आपुसमें निगाहें मिलाई और अपनी अपनी नकाब पीछे को उलट कर बड़े प्रेम से राजकुमार तथा हीरासिंहके पैर बारी बारीसे छू लिये और बड़े अदबसे एक ओर सिर झुकाकर खड़े होगये।

आह! पाठक अब तो हम इन्हें अच्छी तरह पहिचान गये! यह तो तीनों नकाबपोश हमारे महाराजा वीरेन्द्रसिंहके बहादुर ऐयार और हीरासिंह के प्यारे शागिर्द, विश्वनाथसिंह, दामो-

दरसिंह और लालसिंह हैं! वाह खूब मौके पर पहुंचे शाबाश!

राजकुमार और हीरासिंह नकाबपोशों की शकलें देखकर एक दफे तो चौंक पड़े मगर साथही लड़कपन की दिली मुहब्बत ने जोश खाया और उन्होंने बारी से तीनों ऐयारों को बड़ी मुहब्बतके साथ गले से लग लिया।

कुछ देर तक तो यही हाल रहा, किसी के मुंहसे बात तक न निकली मगर अब उनलोगों में इस प्रकार बातें होने लगीं:—

राजकुमार०—"कहो तुम लोग यहाँ तक कैसे पहुंचे? ठीक वक्तपर इस कोठरी में पहुंचकर तुमने किस प्रकार हमारी मदद की? और पिताजी तथा राज्य का क्या हाल है?"

विश्वनाथ०—"हमलोग यहां तक कैसे पहुंचे, और ठीक समय पर इस कोठरी में किस तरकीब से दाखिल होकर आपकी सेवा में उपस्थित हो सके, यह एक बड़ी लम्बी चौड़ी विचित्र कहानी है। इसके लिये कमसे कम एक घण्टे का समय चाहिये। मगर हां, यह हम थोड़ेही में कह सकते हैं कि आप लोगों के एकाएक गायब होने का हाल सरदार अजीतसिंह ने दूसरे दिन दरबार में उपस्थित हो कर खुलासा तौर पर महाराज के सामने बयान किया। महाराज यह हाल सुन कर एकाएक घबरा उठे मगर साथही उन्होंने अपने दिल को सम्हाला और हम लोगों को आपकी तलाश में रवानः किया। हमलोगों के साथ भूपसिंह भी थे। दरबार से निकल कर हमलोगोंने आपुस में कुछ राय पक्की की, और उसीके मुताबिक भूपसिंह तो आपकी तलाश में मायापुर की ओर चले गये और हमलोगों ने हीरकपहाड़ीकी तरफका रास्ता लिया।"

लालसिंह—(जल्दी से बात काटकर) "और बड़ी बड़ी मुसी-

वतें झेलते अपनी अनूठी ऐयारियोंको काममें लाते ईश्वरकी छाया से ठीक मौके पर आपकी सेवामें उपस्थित हो सके।"

हीरासिंह—(तीनों की पीठ ठोंककर) "शाबाश; बड़ा काम किया। मगर यह तो कहो कि वह देव कौन था जिसके डर से दारोगा और उसके साथी बेहोश होकर अवतक जमीन सूंघ रहे हैं?"

दामोदर—"उस्ताद विश्वनाथसिंहने ऐयारी का यह एक नया ढंग ईजाद किया है। अगर आप सुनेंगे तो बड़ेही खुश होंगे।"

राजकुमार—(बड़े शौक से) "क्योंजी विश्वनाथसिंह! कहते क्यों नहीं? यह क्या नया ढङ्ग निकाला?"

विश्वनाथ०—"ठीक है, क्या फोकटही में कह दूं? मैं तो बड़े२ मन्सूबे बांध रहा था कि आपसे इस नई ऐयारीके बदले यह लूंगा, वह लूंगा, मगर वाह! आपने तो मेरी आशाओं पर पानीही फेर दिया। कुछ बोहनी कराइये तो अभी बता दूं।"

राजकुमार—(मुसकुरा कर) "ऐयारों में हद दर्जे की लालच भरी रहती है। (उंगलीसे हीरेकी अंगूठी उतारकर) लो इनाम, कहो और कुछ चाहिये? अब तो कहो।"

विश्वनाथ०—(खुश होकर अंगूठी लेते हुए) "अच्छा, यह तो हुआ इनाम, अब मेहनताना चाहिये; क्योंकि इस ऐयारी में बड़ी मगजपच्ची की गई है। खैर, वह तिलिस्म टूटने पर लूंगा, क्योंकि तब दोहरी रकम वसूल होगी! एक तो मेहनताना दूसरे तिलिस्म की मुबारकबादी का इनाम! अच्छा अब सुनिये..."

हीरासिंह—(बात काटकर मुसकुराते हुए) "बच्चा! उस्ताद की रकम पर नीयत न बिगाड़ना। इनाम का माल उस्तादों का हक है; लाओ, अंगूठी दाहिने हाथ से उस्ताद की नजर करो वर्ना सब ऐयारी भूल जायगी।"

विश्वनाथ०—(अंगूठी देकर) "उस्ताद का माल भला हजम हो सकता है? मैं तो पहिले ही देने का इरादा कर चुका था। अच्छा अब सुनिये, लेकिन पूरा हाल वगैर कहे मजा न आवेगा। पहिले शुरूसे कहता हूं क्योंकि कुंवरसाहब पहिले ही सवाल कर चुके हैं कि "तुम लोग यहां तक कैसे पहुंचे?" तो जब हमलोग भूपसिंह का साथ छोड़ होरक.."

राजकुमार—"ठहरो, (हीरासिंह से) पहिले किशोरी को होश में लाओ, कहीं मारे डर के उसकी हालत बिगड़ न जाय। (ऐयारों से) इस बेचारी ने तिलिस्म में हमलोगों की बड़ी मदद की है यह सुन्दरी (दारोगा की तरफ इशारा कर) इस नालायक दरोगा की लगी भाञ्जी है।"

राजकुमार की बात सुनकर तीनों ऐयार बहुत ही खुश हुये * और सुन्दरी को होश में लाने के लिये हीरासिंह की मदद करने लगे। तेज लखलखे की खुशबू नाक में पहुंचते ही किशोरी ने आंखें खोल दी मगर साथही फिर उसके दिलपर डर ने दखल जमाया। यह हालत देखकर हीरासिंह ने जोर से उसके कान में कहा "सुन्दरी डरो मत, होश में आओ वह सब कम्बख्त बेहोश पड़े हैं।"

किशोरी होश में आकर एकाएक उठ बैठी और आंखें फाड़ फाड़ चारों तरफ देखने लगी। जब उसकी निगाह नवे आये हुये तीनो ऐयारों की तरफ झुकी तो वह चौंक पड़ी मगर साथही हीरासिंह ने उसे समझा दिया कि यह तीनो ऐयार राजकुमार की खोज में आये हैं, तो वह बहुतही खुश हुई। जब किशोरी पूरे तौर से होश में आ चुकी तो राजकुमार ने कहा:—

"सुन्दरी यह लोग हमारे बहादुर ऐयार हैं। जिस तरकीब से

* इन तीनोंही ऐयारों की उम्र लगभग १६ से १७ वर्षतक थी।

यह लोग यहांतक पहुंचे और दारोगा इत्यादि को बेहोश किया—वह हाल अब यह लोग कहने के लिये तैयार हैं। क्या तुम सुनने को प्रस्तुत हो?"

सुन्दरी—"खुशीसे! (ऐयारों की तरफ देखकर) हां, आप लोग अपनी दास्तान शुरू करें।"

पांचवां बयान।

"ऐयारों की कहानी"

विश्वनाथसिंह ने अपनी तथा अपने साथियों की कहानी यों कहनी प्रारम्भ की कि "जब हमलोग भूपसिंह का साथ छोड़ हीरक पहाड़ी के पास पहुंचे तो उस वक्त शामके करीब चार बजे थे। बादल आकाशमें इधर उधर छाये हुये थे मगर पानी का कुछ लक्षण दिखाई न देता था। हम लोगोंने यह मौका पहाड़ी पर चढ़नेके लिये अच्छा पाया और करीब पांच बजते-बजते पहाड़ीकी कमरपर आ पहुंचे। लेकिन अब ऊपर चढ़नेमें बड़ी मुश्किल पड़ी, क्योंकि यहांसे खड़ी पहाड़ीका सिलसिला, दीवार की तरह चारों तरफ घूम गया था और किसी प्रकार ऊपर चढ़नेका रास्ता न था। हम लोगोंने बड़ी बड़ी कोशिसें उपर पहुंचनेकी कीं, मगर कामयाब न हुये। लाचार हम लोगोंने ऊपर चढ़नेका इरादा छोड़ दिया और इस ख्यालसे पहाड़ीके चारों तरफ घूमने लगे कि कोई दर्रा खोह या रास्ता उस पार पहुंचनेका मिल जाये। मगर सिवाय खुंखार भयानक खड़ी पहाड़ियोंके और कुछ भी न सूझता था। लाचार पहाड़ी की कमरपर हमलोग करीब तीन मीलके चले गये। अब कुछ-कुछ रात हो चुकी थी मगर चन्द्रमा की धुंधली रोशनीने जो बादलोंके बिखरे रहनेसे छन छन कर पहाड़ी पर

पड़ रही थी हमलोगोंकी खूब मदद की। रातके साथही साथ खौफ-नाक जंगली जानवरों की दिलको दहला देनेवाली आवाजें पहाड़ी के साथ टकरा टकरा कर हमलोगों के कानों में गूंजने लगीं! मगर इसको हमलोगों ने कुछ भी परवाह न की। लालटेनें जला ली गईं और अपने अपने तमञ्चे निकाल कर गोली बारूद से ठीक कर लिये गये। अब हमलोगों का डर किस बात का था? दाहिने हाथ में भरे हुये तमञ्चे और बांये हाथ में तेज रोशनीवाली लाल-टेनें लिये जंगली पौधों को रौंदते दृढ़ता से हमलोग आगे बढ़े। अभी कोई पचास कदमही गये होंगे कि दाहिनी झाड़ी से निकल कर एक जंगली सूअर हमलोगों का रास्ता काटता बांई ओर की झाड़ी में बड़ी तेजी से घुस गया! हमलोगों को उससे क्या वास्ता? भाग गया भाग जाने दो अगर सामना करता? हम-लोगों के हाथों बेमौत मारा जाता। मगर कुछ दूर आगे बढ़ते ही एक भयानक खतरा मालूम दिया। करीब ६० कदम के फासले से गुर्राहट की आवाज और दो अंगारे की तरह चमकने वाली लाल आंखें दिखाई दीं! साथही हमलोगों की लालटेनें ऊंची हुईं और उसकी तेज रोशनी में हमलोगों ने बखूबी देख लिया कि एक लम्बा चौड़ा जबर्दस्त शेर हमलोगों का रास्ता छेंके खड़ा है और बड़े गुस्से से हमलोगों की तरफ घूर घूर कर गुर्रा रहा है! अब तो बड़ी मुश्किल का सामना पड़ा। अगर जरा झिझके और पीछे पैर पड़ा कि साथही दुश्मन सिर पर! खैर हम-लोगोंने आपुस में कुछ इशारा किया और साथही दाँय, दाँय! तीनों तमञ्चे एकसाथ दाग दिये गये। जिसका भयानक शब्द बार बार पहाड़ियों से टकरा टकरा कर सूनसान जङ्गल में फैलता हुआ हवा में मिलकर गायब हो गया। दामोदरसिंह की गोली तो कुछ तिरछी हो जाने के कारण एक झाड़ी में जाकर ठण्ढी हो

गयो मगर सौभाग्यसे मेरी और लालसिंहको गोली उसके ललाट तथा दाहिनी रानमें लगी। गोली लगतेही वह बड़ी जोरसे तड़पा मगर ईश्वरकी कृपासे जखम गहरे लगे थे। लड़खड़ाकर पहाड़ीके नीचे जा रहा और नुकीले पत्थरोंकी कड़ी चोटसे उसी वक़्त मर गया। अब आगे रास्ता बड़ाही भयानक ऊबड़ खाबड़ और खौफ़नाक था! इसका अनुमान इसीसे कर लीजिये कि इतनीही दूरमें दो भयानक जानवरोंसे सामना हुआ। रातका समय और पहाड़ोंका रास्ता! हम लोगोंने आगे बढ़ना उचित न समझा और रात काटने योग्य किसी निरापद स्थानकी तलाश करने लगे। बहुत खोज ढूंढ करनेपर एक बड़ी डरावनी खोहका मोहाना मिला। हमलोगोंने उस समय उसीको गनीमत समझा। मगर अब अन्दर कौन घुसे? लाचार कड़ा जी कर हम तीनों आदमी एक साथ खोहमें घुसे! कहना नहीं होगा कि तीनो रोशनियें सामने कर ली गयी थीं। खोह बाहरसे तो बड़ी भयानक मालूम देती थी मगर अन्दर जानेपर साफ और चौड़ी मालूम हुई। वहां आदमियोंकी आमदरफ़्त न होनेके कारण जमीन पर पत्थरोंके ढोंके और मिट्टीने गिरकर उसे खराब कर दिया था, और जमीन तथा खोहकी दीवारोंपर, पथरीली जमीनमें उगने वाले पौधे पत्थरोंको फोड़कर बेतौर निकल आये थे। खोह बहुत लम्बी थी। हमलोग और आगे बढ़े मगर साथही दामोदरसिंहकी आवाजने हमलोगोंको चौंका दिया! दामोदरसिंहने एकाएक भिभककर कहा:—"देखो वह कोई डाइन या चुड़ैल मुंह बाये खड़ी है!"

आह! सचमुच हमलोगोंको अपनेसे करीब तीस कदमकी दूरी पर एक १५ फुट ऊंची भयङ्कर डाइन, दांत निकाले मुंह बाये बड़ी डरावनी चालसे खड़ी दिखायी दी। उसकी दोनों आँखें

उस अन्धेरी गुफामें जुगनूके समान चमक रही थीं। आप लोग सच मानिये कि उसवक्त अगर हमलोगोंकी जगह दूसरेही कोई आदमी होते तो ईश्वरकी सौगन्ध, जरूर वहीं उनके प्राण निकल जाते और या वह लोग हमेशःके लिये पागल हो जाते। मगर हमलोगोंका तो पेशाही यही है और सच पूछिये तो हमलोग इसी बातकी रोटीही खाते हैं। ऐसे डरने लगें तो भूखों मर जायें।

हमलोगोंने अपने दिलको खूब मजबूत किया और तमञ्चोंमें गोली भरकर रोशनी ऊंची किये डाइनकी तरफ आगे बढ़े और डाइनसे करीब दस कदमके फासले पर खड़े हो गये। अब जो हम लोगोंने डाइनपर पूरी तौरसे रोशनी डाली तो मालूम हुआ कि वह सजीव नहीं किन्तु निर्जीव किसी धातुकी बनी है। मुक्त मिटानेके लिये उसपर पत्थरके टुकड़े फेंके मगर वह उसी तरह मुंह बाये खड़ी रही। शोर मचाया, डराया, धमकाया, मगर कुछ नतीजा न निकला, वह कुसकी तक नहीं। हमलोगोंको पूरा विश्वास होगया कि यह सचमुच निर्जीव पुतली है। निडर होकर और आगे बढ़े। अभी डाइनसे तीन कदमके फासले पर भी न पहुंचे होंगे कि एक बड़े धड़ाकेकी आवाज आयी। चौंककर जो पीछे देखा तो खोहका दरवाजा बन्द! बीचमें एक लम्बी चौड़ी दीवार खड़ी थी! आह! अब क्या करें? अब तो बेमौत फंसे। जिस प्रकार रोटीका लालच पातेही चूहे चूहेदानीमें घुसते हैं और दरवाजा खटसे गिर पड़ता है, वही हाल हमलोगों-का भी हुआ। दीवारके पास जाकर जांच करनेसे मालूम हुआ कि फौलादकी यह एक लम्बी चौड़ी मोटी चद्दर थी। दरवाजा खोलनेकी बहुत कोशिश की गई मगर सब निष्फल हुई। अब जः पीछे फिरे तो हमलोगोंके ताज्जुब डर और घबराहटका ठिकाना

न रहा! डाइनका मुंह आगेकी बनिस्बत बहुत ज्यादः खुल गया था और उसके लम्बे लम्बे हाथ अब बखूबी हिलने लगे थे! देखते देखते डाइनने अपने हाथको हम लोगोंकी तरफ बढ़ाया! हा ईश्वर! अब तो हमलोगोंके डरका ठिकाना न रहा! साहस कर धाँय, धाँय, धाँय तीनो फैर एक साथ किये गये, मगर गोलियां उसके मजबूत बदनसे टकरा कर वहीं ठंढी होगयीं! डाइनके हाथ अब हमलोगोंके पकड़नेकी कोशिश करने लगे! जीवनकी आशा जाती रही। अब क्या होसकता था? ऐयारोंकी हम समझे तड़ातड़ बेहोशीकी बुकनी उसके मुंह पर फेंके गये मगर सब बेकार। जानवर मनुष्य हो तो ऐयारी भी काममें आवे, भूत, पिशाच, डाइन चुड़ैलको इससे क्या वास्ता। झाड़ झाड़ हाथ जोड़े, कसमें खाईं, उछले, कूदे मगर कुछ न हुआ। एकाएक डाइनने अपने मजबूत हाथोंसे दामोदरसिंहको पकड़ लिया। अब वह बेचारे बहुत छटपटाये। छूटनेकी कोशिश करने लगे, रोये चिल्लाये मगर डाइन कब माननेवाली थी। हमलोगोंने खंजर निकाल कर उसके हाथों पर जोर जोरसे भरपूर वार किये मगर जैसे पत्थर पर टांकी पड़नेसे उचट जाती है वैसेही खंजर भी उसके मजबूत हाथोंसे टकरा टकरा कर उचट गये। आखिर डाइनने दामोदरसिंहको उठाकर अपने मुंहमें डाल लिया और देखते-देखते समूचा निगल गयी! दामोदरसिंहको जाने दो अब तो हमलोगोंको अपनीही जानके लाले पड़ गये! ज्योंही डाइनने हमलोगोंकी तरफ फिर हाथ बढ़ाये! हमलोग दोनों ओर गालियां देने लगे मगर उसके कानमें जूं तक न रेंगी। उसने इसबार लालसिंहको पकड़ लिया और देखते-देखते वही बेरहमीसे उसे भी निगल गयी! अब मेरी पारी थी! जान बचानेके लिये इधर उधर भागनेकी कोशिश करने लगा। मगर

वहां कोई रास्ताही न था। जो रास्ता था वह तो पहिलेही बन्द हो गया था। खूब उछला कूदा, गोली चलायी, खंजरका वार किया, चीखा, चिल्लाया, मगर कौन सुनता था! उस हरामजादीने बड़ी फुर्त्तीसे मुझे भी पकड़ लिया! हा ईश्वर! उसके हाथ क्या थे मानों फौलादके सिकंजे! मेरी हड्डियां टूटने लगीं और मैं मारे दर्दके चिल्लाने लगा। मेरा दम घुटने लगा और मेरी आँखे निकलने लगीं? बातकी बातमें उसने मुझे भी दामोदरसिंह और लालसिंहकी तरह अपने मुंहमें रखलिया! मैं बेहोश होगया और मुझे तनोबदनकी सुध न रही!

जब मैं होशमें आया तो अपनेको बड़ीही अंधेरी कोठरीमें सर्द फर्श पर पड़ा पाया। मुझे एक एक कर सब पिछली बातें याद आने लगीं और उस डाइनकी शकल आँखोंके सामने नाचने लगी। मैंने समझा कि मैं डाइनके पेटमें हूं और समूचा निगल जानेकी वजह मुझमें अभी कुछ-कुछ जान बाकी है। मैंने अपनी आँखें फिर बन्द करलीं मगर चैन कहां, चञ्चलता और स्वाभाविक फुर्त्तीलापन भला कब मानता था। सोचेही सोचे अपनी बगलमें जो हाथ डाला तो ऐयारीके बटुवेको मुस्तैद पाया। इधर उधर फर्शपर हाथ बढ़ाये तो पासही खंजर, तमञ्चा और लालटेन भी हाथ लगी। हौसलाकर उठ बैठा और खटका दबाकर जो रोशनी पैदा की तो सारा डर हवा होगया! अपनेसे कुछ दूरके फासले पर लालसिंह और दामोदरसिंहको भी अंगड़ाई लेते तथा आँखे मलते पाया।

मैंने कहा—"दामोदरसिंह? लालसिंह? कहो कुशल तो है? किस धुन में हो?"

दामोदरसिंह—(चौंक कर) "अरे और कुछ न पूछो कुशल कोसों दूर है। मौतकी घड़ियें गिन रहा हूं?"

लालसिंह—"क्या तुम लोग भी अभी र डरावने यमदूत समझता था मर खप गये ! भई वाह ! पेट न उनका विचारकर हुई हरामजादी अबतक हमलोगोंको हजम न कर सीने चोरी को

मैं—"कैसी वहकी वहकी पागलोंकी सी बातें लता था और ज़रा आँखें खोलो होश सम्हालो। वह डाइन नहीं वड़े तेलके तिलिस्मी रास्ता था !" भी डाले

मेरी बात सुनकर दोनों उठ बैठे और आँखें फाड़-फाड़ चलती तरफ देखने लगे ! यह एक बहुत लम्बी चोड़ी संगीन कोठरी जा जिसमें मेरी लालटेनकी रोशनी बहुत कम प्रकाश फैला सकी थी। मेरे कहनेपर लालसिंह और दामोदरसिंहने भी अपनी-अपनी लालटेनें जला लीं। अब कोठरीके हर हिस्से में खूब रोशनी फैल गयी थी। कोठरीकी छत पत्थरके मोटे-मोटे बीस खम्भोंपर रक्खी हुई थी। कोठरीकी दीवारों पर हमलोगोंको कुछ भयानक शकलें चलती फिरती दिखायी दीं! हमलोग यह दृश्य देखकर एकाएक घबरा गये एक आफतसे बचे थे कि दूसरी बला गले पड़ी ! मगर साथही साहसने जोर दिया और अपनी अपनी लालटेन उठाकर दीवार की तरफ बढ़े। अब जो पास जाकर अच्छी तरह देखा तो अपनी मूर्खता पर धिक्कार देने लगे। सचमुच हमलोगोंका भ्रम था। जिन शकलोंको चलती फिरती देखकर हमलोग डरे थे असलमें वह दीवारपर लिखी रंगदार बड़ी-बड़ी तस्वीरें थीं जिन्हें होशियार मुसौव्वरोंने बड़ी कारीगरी तथा दीदारेजीसे खींची थीं। तस्वीरें बहुतही साफ तरह-तरहके चटकीले रंगोंसे बनायी गयी थीं जिन्हें देखनेसे यही मालूम होता था कि अभीही चित्रकार इन्हें तैय्यारकर यहांसे हटा है। तस्वीरें राजा, महाराजा, या स्त्री पुरुष की न थीं बल्कि देव, परी, जिन्न, राक्षस, भूत, पिशाच, डाइन, चुड़ैल, इत्यादि की थीं। किसी

वहां कोई राक्षसीकी भयानक थीं कि अच्छे से अच्छा हौसले-बन्द हो गया था। बार देखकर डर जाय। हां! दो तीन तस्वीरें बार किया, मैं जिनका जिक्र मैं आगे चलकर करूंगा।

हरामजादोंने कोठरीकी चारोंतरफ वाली दीवारें देख डालीं उसके साथ खूंखार दहशतनाक तस्वीरोंके और कुछ भी नजर लगीं और न किसी दरवाजे या खिड़कीयोंका चिह्न पाया। मेरी ओर कुल तस्वीरोंमें मैंने चार तस्वीरें पसन्द कीं। याने चारों दवारों परकी एक एक तस्वीरको मैंने चुन लिया। अब एकाएक रे दिलमें कुछ ख्याल पैदा हुआ। मैंने लालसिंह और दामोदर-सिंहसे कह दिया कि "तुम लोग कोठरीमें खूब जांचकर दरवाजे का पता लगाओ मैं कुछ और ही धुनमें लगता हूं जिससे हमलोगों की ऐयारीमें बड़ी मदद मिलेगी" इन्होंने खुशी-खुशी मेरी बातें मंजूर करलीं और दरवाजेको खोजमें लगे। मैंने अपने बटुवेसे ऐयारीकी लालटेन तथा चार सादे आईने निकाले और एक आईनेको लालटेनमें चढ़ाकर एक तस्वीरके पास बैठ गया और नाप ठीक कर जो खटका दबाया तो लालटेनमें रोशनी पैदा होगयी और उस तस्वीरका अक्स सादे शीशेपर आ गया! यह तस्वीर राजा इन्द्रके अखाड़ेकी थी। राजा इन्द्र तख्त पर बड़े रोबसे बैठे थे और परियां अठखा-अठखा कर नाच रहीं थीं। ज्ञानदेव और कालादेव तख्तके अगल बगल खड़े थे और बहुतसे सिर सिर झुकाये तख्तके दाहिने बांये जड़ाऊ कुरसियों पर बैठे थे। मैंने शीशेके अक्स पर झटपट वही रंग भरे, जो जो उस तस्वीरमें थे। अब जो देखा तो ठीक उसकी नकल आईने पर बनगयी थी। मैं यह देख अपनी कामयाबी पर बड़ाही खुश हुआ और उस्तादको लाखों दुआयें देने लगा। अब मैं दूसरी दीवार पर गया और वहां की जो तस्वीर नकल की वह नरकका दरबार था। यमराज

अपने सिंहासन पर बैठे थे भयङ्कर-भयङ्कर डरावने यमदूत अपराधियोंके झुण्डके झुण्ड ला रहे थे और उनका विचारकर दण्ड दे रहे थे। किसीने ब्रह्महत्या की थी, किसीने चोरी की थी, कोई शराब पीकर दिन रात वेश्याके घर पड़ा रहता था और किसीसे संग विश्वासघात किया था! एक तरफ बड़े बड़े तेलके कढ़ाये आग पर चढ़े थे और खौलते हुये तेलमें अपराधी डाले जाते थे! एक तरफ लोहेकी लाल लाल तपी हुई जलती बलती शूली खड़ी थी जिसपर पापी मनुष्य बड़ी निर्दयतासे चढ़ाये जा रहे थे। एक तरफ आगके समान लोहेका लम्बा मोटा खम्भा गड़ा था जिसके साथ वेश्यागामी मनुष्य चिपटाये जाते थे और गरम गरम लोहेकी सलाखें उनके बदनमें कोंच रहे थे! जिससे पापीके बदनसे खूनकी धारें वह रही थीं। एक तरफ लहू, पीब और मलमूत्रके भरे हुये छोटे छोटे तालाब बने थे जिन में सैकड़ों पापी अपने अपने पापका दण्ड भोग रहे थे!

तीसरी दीवारके पास गया और वहांसे जो तस्वीर उतारी वह महाभारतका युद्ध था। सप्त महारथियोंने एक बड़ेही बीहड़ व्यूहका निर्माण किया था और सोलह वर्षीय वीर, कुमार अभिमन्यू उसे अपने अमानुसिक पराक्रमसे भेदकर रहे थे! कोटि कोटि असंख्य सेना उस वीर-बालक पर अपने अपने अस्त्र-सस्त्रका प्रहार कर रही थी मगर वह चत्रिय कुमार बड़े पराक्रम से उनके व्यूहमें घुसा जाता था!

चौथी दीवार परकी तस्वीर एक देवकी थी जो बड़े बड़े दांत निकाले मुंहबाये लोहेका जलता बलता लाल लाल सोंटा सिकड़ लिये खड़ा था और जिसकी तस्वीर आपलोग अभी देख चुके हैं या जिसके डरसे दारोगा इत्यादि बेहोश होगये हैं।

विश्वनाथसिंहकी विचित्र बातें राजकुमार, हीरासिंह, और

किशोरी बड़ी दिलचस्पीके साथ सुनते रहे। अब जो विश्वनाथ-सिंह जरा ठहरे कि सायही किशोरी बोल उठी :—

किशोरी—"हां हां आप कहते जाइये आपकी कहानी बड़ी ही दिल-चस्प मालूम होती है। मैं (राजकुमार से) उस कोठरी का हाल बखूबी जानती हूं। जानतीही नहीं बल्कि उसमें मामा के साथ कई बार हो भी आई हूं। वह कोठरी तिलिस्म के निर्माण करता "राजा चित्रपाल" की चित्रशाला है और उसमेंकी कुल तस्वीरें बखूबी चलती फिरती और अपना काम मजेमें करती हैं। वह कोठरी तिलिस्मके तीसरे हिस्से में है और उन तस्वीरोंके चलानेकी चाभी उन्हीं खम्भोंमें है जो कोठरी की छतको अपने सिर पर उठाये हैं। पहिले उस कोठरीमें बड़ी तैयारी रहती थी मगर अब वहां के कुल सामान हटा लिये गये हैं और उससे कैदियों को डराने और धमकाने का काम लिया जाता है।"

राजकुमार (खुशहोकर) "क्यों सुन्दरी! तुम उस कोठरी की तस्वीरोंका तमाशा हमें दिखा सक्ती हो?"

सुन्दरी—"खुशीसे! मगर तिलिस्म तोड़ लीजिये तब।"

राजकुमार—(विश्वनाथसिंहसे) "हां, तो अब तुम अपने क़िस्से का जल्द पूरा करो। तुम्हारा किस्सा बड़ाही दिलचस्प है मगर तुम जानतेही हो कि अभी हमलोगोंको बड़े बड़े काम करने हैं।"

विश्वनाथ०—"हां तो सुनिये! इधर मैंने उन चारों तस्वीरों को अपने पासके चार आईनोंपर उतार बटुवेके हवाले किया और उधर दोनों ऐयारोंने आवाज दी "विश्वनाथसिंह हमलोगोंने दरवाजा खोज लिया यह देखो!" मैं चट उठकर इनलोगोंके पास गया तो इन्होंने दीवारको लिखी एक तस्वीर पर इशारा किया जो

एक परीकी थी। परी नंगी मादरजात खड़ी थी और उसके पेटमें ठीक नाभीकी जगह एक पीतलकी फुलिया लगी थी। मैंने कहा "यह क्या, कुछ दिल्लगी सूझी थी? नाहक परेशान करते हो, वाह अच्छा दरवाजा दिखाया!"

मेरी बात सुनकर यह दोनों खिलखिला कर हंस पड़े और लालसिंहने आगे बढ़कर उस फुलियाको अपनी तरफ खींच लिया। फुलियाके खींचतेही एक धड़ाकेकी आवाज हुई और वहांकी दीवार बीचसे फटकर एक दरवाजेकी शक्लमें बदल गयी। हम-लोगोंने रोशनी सीधी की और दरवाजेके अन्दर घुस पड़े। यहां कोई कोठरी कमरा या मैदान न था, बल्कि एक लम्बी और तंग सुरंग थी जिसमें एक साथ दो आदमी सटकर मजेमें चल सकते थे। सुरङ्गमें कुछ दूर आगे बढ़नेपर पीछेसे एक आवाज हुई और तस्वीरोंवाली कोठरीका दरवाजा बन्द होगया। हमलोगोंने इसकी कुछ परवाह न की और सुरङ्गमें बराबर आगे बढ़ने लगे। सुरङ्गकी दीवारें पालिश की हुई थीं और उनपर भी अनूठी-अनूठी तस्वीरें देव, परी या जिन्नोंकी न थीं बल्कि जंगलों और पहाड़ोंके नक्शे तथा बड़े-बड़े शहरों और किलोंके दृश्य थे। जो बड़ेही भले मालूम होते थे।

हमलोग सुरङ्गमें अनूठी तथा नायाब तस्वीरें देखते बनवाने तथा बनाने वालेकी तारीफें करते आगे बढ़े जाते थे। करीब आध मील लगातार चलनेपर सुरङ्ग एक सीढ़ियोंके सिलसिले पर खतम हुई जो गोलाकार घूमती हुई ऊपरकी तरफ चली गयी थी। हमलोग धड़धड़ाते हुए एक एक कर ऊपर चढ़ने लगे। करीब चालीस डण्डे सीढ़ी खतम करनेपर एक बन्द दरवाजा मिला जिसमें एक मजबूत ताला लगा हुआ था। हमलोगोंने बटुवेसे अंकुड़ा निकाल बातकी बातमें तालेको अलग कर दिया और दरवाजेपर

जो जोर दिया तो वह चट खुल गया। अब हमलोग एक बीस हाथकी लम्बी चौड़ी सङ्गीन कोठरीमें थे। कोठरीकी छतके बीचो-बीच लोहेकी एक लम्बी जंजीर लटक रही थी, मैंने उसे पकड़कर अपनी भरपूर ताकतसे नीचेकी ओर खींचा। साथही एक तरफकी दीवारका पत्थर सरसराता हुआ जमीनमें घुस गया और वहां एक छोटासा दरवाजा निकल आया! हम लोग बेखौफ उसके अन्दर घुस पड़े और साथही जो रोशनी ऊंची की तो एक दुबले पतले एके रंगके आदमीको हाथमें एक चमचमाता हुआ खंजर लिये बड़ी बेसब्रीके साथ कोठरीकी फर्सपर टहलते पाया! यह कोठरी भी पहलीही कोठरीके बराबर लम्बी चौड़ी और सङ्गीन थी मगर इसमें चार दरवाजे थे और चारोंही इस वक्त खुले हुए थे।

हमलोगोंको कोठरीमें दाखिल होते देख वह आदमी एकाएक चौंक पड़ा और साथही झिझककर पीछे हटा मगर फिर कुछ सोचकर ठहर गया और हमलोगोंकी तरफ आँखें फाड़-फाड़ देखने लगा! सचमुच इस वक्त उसके चेहरेसे बड़ीही बेचैनी और घबराहटके चिह्न पाये जाते थे।

उसके चेहरेकी तरफ देखकर हमलोगोंको बड़ी दया मालूम हुई और मैंने कहा:—

मैं—"महाशय आप किसकी तलाशमें हैं?"

दुबला०—"आप लोग तिलिस्मके रहने वाले नहीं मालूम होते! क्यों है न ठीक? तो क्या कृपाकर बता सकते हैं कि यहां क्यों आना हुआ और आप लोग किस राज्यके बाशिन्दे हैं? मुझसे कोई बात पोशीदः रखनेकी कोशिश न कीजियेगा, क्योंकि मेरी तरफसे आपको सिवाय फायदेके नुकसान कभी न होगा।"

मैं—"हां, बेशक हमलोग तिलिस्मके रहने वाले नहीं हैं मगर

जब तक आप अपना खास मतलब न कहेंगे, हमलोग अपने बारेमें एक लफ़्ज़ भी नहीं बता सकते ?"

दुबला०—(इधर उधर देखकर धीरे से) "तो सुनिये, मैं आपलोगोंसे कुछ मदद लिया चाहता हूं ? इस तिलिस्ममें कल्याणगढ़के राजकुमार कुंवर चन्द्रसिंह आ फंसे हैं और अपने ऐयार सहित तिलिस्म तोड़ रहे हैं ! इस तिलिस्मके दारोगा हनुमानसिंहकी भान्जी उनकी तरफ़दार होगई है और यही ख़बर सुनकर दारोगा, अब अपने चार ऐयारोंके उनको मारनेकी फ़िक्रमें अभी उस कोठरीमें घुसा है ! अगर आपलोग मेरी मदद करें तो मैं उनको साफ़ बचा सकता हूं और............

मैं—(बात काटकर) "महाशय हमलोग उन्हीं राजकुमारके ऐयार हैं और उन्हींकी तलाशमें तिलिस्मके अन्दर घुसे हैं। आप जल्द बताइये राजकुमार कहां हैं ? हमलोग इस कृपाके लिये जन्म भर आपका अहसान न भूलेंगे।"

वह आदमी मेरी बात सुन बड़ाही खुश हुआ और हमलोगोंको अपने पीछे आनेका इशाराकर एक दरवाजेमें घुस गया। वह एक बहुत छोटी कोठरी थी जिसकी दीवारें काठके वार्निशदार तख़्तोंकी बनी थी। कोठरीमें बेशक़ीमत हरबे जगह जगह टंगे थे और एक तरफ़ पीतलका एक छोटासा ख़ूबसूरत पुतला दीवारके सहारे खड़ा था। उस आदमीने पुतलेके पास जाकर उसके दाहिने हाथमें एक झटका दिया साथही उसके बगलवाली दीवारका एक तख़्ता पल्लेकी तरह अलग होगया और वहां एक ख़ूबसूरत दरवाजा निकल आया ! अब दुबले आदमीने हमलोगोंकी तरफ़ देखकर कहा :—

"आप लोग अपने चेहरों पर नकाबें डाल लीजिये और यहांसे अपनी-अपनी पसन्दकी तलवार उतारकर इस दरवाजेमें सब

आइये। थोड़ीही दूर जाने पर आप लोगोंको एक दीवार मिलेगी जिसमें शीशेका एक हैण्डिल लगा होगा, बस उसे घुमातेही आपलोग राजकुमारके पास पहुंच जायँगे! मैं यहीं आप लोगोंकी प्रतीक्षा करता हूं।"

हमलोगों ने अपने-अपने बटुवेसे लाल रंगकी नकाबें निकाल कर चेहरों पर डाल लीं और एक एक तलवार उतार कर दरवाजेमें घुस गये। करीब बीस कदम जाने पर दीवार मिली जिसमें शीशे का हैण्डिल लगा था। मैंने चटपट हैण्डिल घुमा दिया, साथही धड़ाकेकी आवाज हुई, दरवाजा खुल गया और हमलोग एक साथ दारोगा और उसके साथियों पर टूट पड़े! फिर इसके बाद जो कुछ हुआ, वह आपको मालूम ही है!"

राजकुमार—"हां मालूम है। मगर देव दिखाकर दारोगा को किस तरह बेहोश किया? नहीं मालूम।"

विश्वनाथसिंह—"जब मुझसे और कमलसिंहसे कहा-सुनी हो रही थी तो मैंने उसे पीछे देखनेका चकमा दिया और साथही लालटेन निकाल कर खटका दबाया जिससे दीवारपर देवका बहुत बड़ा चक्र पड़ा और साथही जो लालटेन दाहिनी तरफ खींची तो देव इन लोगोंकी ओर तेजीसे बढ़ता दिखायी दिया। बस इनलोगोंने मारे डरके चीखें मारी और साथही बेहोश होगये। यहांपर मैं इतनी बात भूल गया, कि मैंने पहिलेहीसे ऐयारीकी लालटेनमें देव वाला आइना चढ़ाकर वक्तपर काम लेनेके लिये रख छोड़ा था।"

विश्वनाथसिंहकी विचित्र कहानी सुनकर कुमार, हीरासिंह और किशोरी बड़ाही ताज्जुब करने लगे और ऐयारोंकी बड़ीही तारीफें कीं। मगर उन लोगोंकी समझमें यह न आया कि दुबला पतला आदमी कौन था और क्यों उसने हमलोगोंकी इतनी मदद की।

कुछ देर तक तो इधर उधरकी बहुत सी बातें होती रहीं मगर अब कुमारने एकाएक ऐयारोंकी तरफ देखकर कहा:—

कुमार०—"खैर तो अब हमलोगोंको क्या करना चाहिये? यांनि पहिले तो दारोगा और उसके ऐयारोंको कुछ सजा देना और फिर अपने उस मददगारसे मिलना, जिसने हमारे ऐयारोंको यहां तक भेजा है या जो हमलोगोंकी प्रतीचा इस कोठरीके बाहर खड़ा कर रहा है।"

हीरासिंह—"मेरी समझमें तो यह आता है कि दारोगाका सिरही उतार लिया जावे ताकि सब टण्टाही मिट जाय! जब तक यह बज्जात जीता रहेगा एक न एक उत्पात मचायाही करेगा!"

कुमार—"(किशोरीसे) क्यों सुन्दरी! तुम्हारी क्या राय है?"

सुन्दरी—"(हाथ जोड़ कर) मैं आपकी दासी हूं, मेरी क्या राय? लेकिन मेरी प्रार्थना है कि जान मारनेके अलावे इसके लिये कोई औरही सजा तजवीज की जाय जिसमें यह जन्मभर अपने पापोंके लिये पश्चात्ताप करे!"

विश्वनाथ०—"अगर मेरी राय लीजिये तो ऐयारोंकी एक तरफकी मोंछ दाढ़ी साफ कर मुंह काला कीजिये और मुश्कें बांधकर एक कोनेमें डाल दीजिये। तिलिस्म तोड़ने बाद इन सबको अपने राज्यमें ले चल कैद कर देंगे। और दारोगाकी थोड़ी नाक उड़ा लीजिये जिसमें वह जन्मभर नकटा होकर अपने किये का फल भोगे!"

विश्वनाथसिंहकी राय सबने बहुत पसन्द की और हीरासिंह चट खंजर निकालकर दारोगाकी नाक कान काटनेके लिये आगे बढ़े। अभी वह दारोगाके पास तक भी न पहुंचे होंगे कि एक बड़े धड़ाकेकी आवाज हुई मानो कोई बड़ी भारी तोप दगी हो और साथही कमरेमें एक गहरा काला धुवां फैलगया। जब धुवां कम

हुआ तो लोगोंकी निगाह एक बड़ेही भयंकर मोटे-ताजे आदमी पर पड़ी जो अपने बदनपर जालीदार फौलादी जिरह-बख्तर पहने और हाथमें एक नंगी तलवार लिये बड़ी शानसे खड़ा झूम रहा था।

उस आदमीपर निगाह पड़तेही सब लोग चौंक पड़े और बड़े गौरसे उसकी शक्ल देखने लगे। वह आदमी अपनी तरफ सबको आश्चर्यकी निगाहसे घूरते देख बड़ी जोरसे डपटकर बोला—

"मेरा नाम है 'तिलिस्मी शैतान' तुम लोगोंने आज कल मेरे तिलिस्ममें घुसकर बड़ाही उत्पात मचा रक्खा है और मेरे नौकरोंकी जानके दुश्मन होरहे हो! रहो, तुम्हें इस ढिठाई का मजा अभी चखाता हूं! देखो तुम्हारी जानें किस दुर्दशाके साथ ली जाती हैं!"

यह कहकर शैतानने अपने जिरह-बख्तरको जोरसे हिला दिया। साथही उसमेंसे आगकी चिनगारियां निकलने लगीं। यह देखकर सब लोग बड़ाही ताज्जुब करने लगे मगर राजकुमार से उसकी कड़वी बातें बर्दाश्त न हो सकीं और वह खंजर लेकर उसकी तरफ झपटे मगर साथही उसने अपनी नंगी तलवारका कब्जा जोरसे दबा दिया जिसके साथही बड़ी कड़ी चमक पैदाहुई और एक सुनहली बिजली कमरे भरमें फैल गयी और सबकी आंखें एक क्षणके लिये बन्द होगयीं और उनके बदनमें सनसनाहट पैदा होगयी जिसने उनकी शक्तियोंको शिथिल कर दिया और सब बेहोशीकी हालतमें जहांके तहां खड़े रह गये। अब जो सबकी आंखें खुलीं तो उन्होंने देखा कि शैतान बड़े गुस्से में भरा लाल-लाल आंखें किये खड़ा दांत पीस रहा है! शैतानने इन लोगोंकी तरफ आँखें गुरेर कर अपनी कड़ी आवाजमें फिर कहा:—

शैतान—"कम्बख्तो! बदमाशो! अपनी नीचतासे फिर नहीं बाज आते! ठहरो हरामजादो मैं तुम लोगोंकी दवा करताहूं!"

यह कहकर शैतानने अपने फौलादी लबादे (जिरह-बख़्तर) के अन्दरसे एक छोटासा बिगुल निकाल कर जोरसे फूंक दिया जिसकी तेज आवाज़ कमरेमें गूंज उठी और साथही एक धड़ाकेकी आवाजके साथ कमरेकी पूर्ववाली दीवारमें एक दरवाजा पैदा होगया और छ नकाबपोश घुटने तकका जांघिया कसे बड़ी तेजी से बाहर निकलकर अपनी डरावनी आवाजमें बोले "क्या हुक्म है ?"

शैतान—" (राजकुमार तथा किशोरीकी तरफ उंगली दिखाकर) इन दोनो हरामजादोंको ले जाकर" "तिलिस्म जालन्धर" में कैद करो। मगर खबरदार, गफलत मत करना वरना तुम लोगोंके सर बड़ी दुर्दशाके साथ काट कर फेंक दिये जावेंगे।

आजके सातवें दिन मैं अपने हाथसे इन दोनोंके सिर काटकर पुतलीमहलके सदर फाटक पर लटकाऊंगा !"

"जो हुक्म" कहकर नक़ाबपोशोंने तलवारें म्यानमें कर लीं और बड़ी निर्दयतासे राजकुमार और किशोरीको उठाकर देखते देखते जिस रास्तेसे आये थे उसमें घुस गये और दरवाजा फिर ज्योंका त्यों बन्द हो गया।

किसी ऐयारके करते धरते कुछ न बन पड़ा क्योंकि उनमें हिलने और बोलने तककी शक्ति न थी। राजकुमार और किशोरी की यह दुर्दशा देख सबकी आँखोंमें खून उतर आया मगर क्या हो सकता था !

अब कमरेमें फिर एक धड़ाकेकी आवाज हुई और साथही एक गहरा धुवां छागया। जब धुवां कुछ कम हुआ तो ऐयारोंने देखा कि शैतान मय दारोगा और उसके चारों ऐयारोंके गायब है !

यहां पर पाठकोंके मनमें यह प्रश्न उठेगा कि हंसवाली कोठरी में तो पैर रखतेही हंस उड़कर आदमीके सिर पर बैठ जाता था

और वह आदमी जलकर भस्म हो जाता था फिर इतना उपद्रव उससे हुआ और हंस क्यों न उड़कर किसीके सिर पर बैठा? तो इसके जवाबमें हम यही कह देना उचित समझते हैं कि दारोगाने अन्दर आती दफे वह कल बन्द करदी थी जिसके जरिये हंस अपना काम पूरा करता था।

छठां बयान।

रातके आठ बजेका समय है। कृष्णगढ़के किलेमें एक प्रकारका हलका सन्नाटा छाया हुआ है। ठीक इसी समय महाराज वीरेन्द्रसिंहके खास दीवानखानेमें एक छोटासा दरबार लगा है। इस दरबारमें सिवाय खास खास अफसरों और सरदारोंके किसीको बुलाया नहीं गया, सिर्फ मुख्य मुख्य अफसर ही इसमें शामिल हो सके हैं। दीवानखानेके फाटक पर भी पहरेका पूरा इन्तजाम किया गया है जिससे मामूली आदमी किसी प्रकार अन्दर न घुस सकें। दरबारमें शामिल होनेवाले सरदारोंको एक प्रकारका प्रवेश-चिह्न भेजा गया था उसीको दिखाकर दरबारी लोग अन्दर आ सकते थे।

दरबारमें इस वख्त महाराजके अलावे, दीवान बिसुनसिंह, सरदार अजीतसिंह, प्रधान सेनापति सरदार निहालसिंह, सहकारी सेनापति विजयसिंह, ऐयार लक्ष्मणसिंह तथा और बड़े-बड़े सरदार उपस्थित हैं जिनकी गिनती २५ से अधिक न होगी। मतलब यह कि दरबार बहुतही गुप्त रीतिसे लगा है।

अभी दरबारमें पूरे तौरका सन्नाटा छाया हुआ था कि दरवाजे पर कुछ खड़खड़ाहट सुनायी दी और साथही एक लम्बे कदका

आदमी जंगी पोशाक पहने अपने बदनपर बेश-कीमत हर्बे लगाये चेहरेपर सब्ज़ नक़ाब डाले अकड़ता हुआ अन्दर घुस आया और महाराजको जंगी सलामकर पासहीकी रखी एक खाली कुरसी पर अदबसे बैठ गया।

इस नक़ाबधारी अजनबीको देखतेही सब दरबारी चौंक पड़े और एक दूसरेका मुंह ताकने लगे मगर साथही महाराजको बोलते देख चुप हो रहे। महाराज ने कहा:—

"खूब वक्तपर पहुंचे! कहो कुशल तो है? मेरा पत्र और प्रवेश-चिह्न ठीक वक्तपर मिल तो गया था न?

अजनबी—"श्रीमानके पुण्यप्रतापसे सब कुशल है। श्रीमान का पत्र और प्रवेश-चिह्न भी ठीक समयपर मिला था मगर मुझे आनेमें तनिक विलम्ब हुआ, आशा है कि श्रीमान क्षमा करेंगे।"

महाराज—"हां, कुछ देर तो जरूर हुई मगर क्या हर्ज है? अब दरबारका कार्य आरम्भ ही होनेवाला है, सिर्फ तुम्हारी देर थी। मेरे पत्रसे तुम्हें आजके विशेष दरबारका हाल समाचार मालूम ही होगया होगा?"

अजनबी—हां श्रीमान्, सब!"

महाराज—"(दरबारियोंकी तरफ देखकर) आप लोग इन अजनबी महाशयको एकाएक इस गुप्त-दरबारमें देखकर आश्चर्य में होंगे मगर आश्चर्यकी कोई बात नहीं है! यह अजनबी महाशय कुंवर चन्द्रसिंहके एक खास मित्र हैं। (दीवान बिसुनसिंह से) हां, अब आप दरबारका कार्य आरम्भ करें।"

महाराजकी आज्ञा पातेही दीवान साहब एक लम्बा-चौड़ा कागज़ निकालकर अपनी जगहपर खड़े होगये और कागज़को गम्भीर आवाज़में पढ़ने लगे।

"महाशयगण !

आजका गुप्त-दरबार एक खास विषयपर विचार करनेके लिये लगाया गया है। असलमें इस दरबारका उद्देश्य यह है कि कुंवर चन्द्रसिंह आज करीब एक महीनेसे गायब हैं! हम लोगों को अपने जासूसों द्वारा पूरी तौरसे पता लगा है कि मायापूरके राजा अर्जुनसिंहने कुंवर साहबको अपने "पुतलीमहल" नामक तिलिस्ममें कैदकर रखा है, हीरासिंह भी उन्हींके साथ हैं। अर्जुनसिंहका पूरा विचार कुंवरसाहबको शारीरिक कष्ट पहुंचानेका है और वह उसी फिक्रमें लग रहा है। देवगढ़में भी उसने पूरी तौरसे उपद्रव मचा रक्खा है जिसका सुबूत यह है कि आज सवेरे हमें जासूसों द्वारा यह पता लगा है कि उसके ऐयार दो दिन हुए राजकुमारी गुलाबकुंवरिको उनके खास बागसे मय उनकी दो सखियांके उड़ा लेगये हैं! विक्रमीय संवत ११२६ के अनुसार हमारे और अर्जुनसिंहके बीच जो सन्धि हुई थी उसके मुताबिक दोनों राज्योंमें बेकुसुर अगर कोई एक राज्य दूसरे राज्य-पर एकाएक चढ़ाई कर दे तो उसे ५००००० पांच लाख रुपया दूसरे राज्यको दण्ड स्वरूप देना होगा।

लेकिन यह छेड़-छाड़ पहले पहल अर्जुनसिंहकी तरफसे जारी हुई है और उसके कुसूरवार होनेके हमारे पास इसवक्त काई सुबूत भी हैं। अब हमलोगोंका चढ़ाई करना अनुचित न होगा क्योंकि हमलोग अपने महाराजके हृदयमणि कलेजेके टुकड़े कुंवर चन्द्रसिंहके उद्धारके लिये चढ़ाई किया चाहते हैं और हमलोगोंको पक्की खबर यह भी मिली है कि अर्जुनसिंहकी फौज बहुत जल्द देवगढ़पर चढ़ा आने वाली है। अब आपही लोग विचार कीजिये कि यह मौका हमलोगोंके चढ़ाई करने योग्य है या नहीं? अगर है तो अपनी अपनी राय दीजिये।"

दीवान विसुनसिंह अपना अभिप्राय प्रगटकर कुरसीपर बैठ गये। उनके बैठतेही दरबारमें जोश फैल गया और साथही अजनबी नकाबपोश अपनी पूरी उंचाईमें तनकर खड़ा होगया और गम्भीर आवाजमें कहने लगा:—

"मैं दीवान साहबके प्रस्तावका अनुमोदन करते हुए कहताहूं कि सचमुच आजकल अर्जुनसिंहका दिमाग सातवें आस्मानपर चढ़ गया है और अपने राज्यके सामने दूसरे राज्योंको कोई चीज नहीं समझता है। उसने अब खुल्लमखुल्ला एकसाथ दो मित्र राज्योंसे छेड़-छाड़ करनी शुरू कर दी है और उसे अपनी बड़ी फौज तथा "पुतलीमहल" का बड़ा घमण्ड होगया है। अबतक तो जो था वह था ही, किन्तु अब उसने हमलोगोंके कलेजेमें हाथ डाला है यानि हमलोगोंके एकमात्र जीवनाधार कुंवर चन्द्रसिंह को कैदकर लेगया है और साथही राजकुमारी गुलाबकुँवरिको कैदकर लेजानेकी भी खबर मिली है। अब बरदाश्त नहीं होता। मेरे विचारसे जहांतक शीघ्र होसके मायापूरपर चढ़ाई कर देनी ही चाहिये; विलम्ब करनेमें हानि है।"

नकाबपोश अपनी बात खतम कर बैठगया; उसके बैठतेही प्रधान सेनापति निहालसिंह खड़े होकर अपनी जोशीली आवाजमें बोले:—

"मैं अपने अजनबी दोस्तकी बातोंको पुष्ट करता हुआ महाराजसे प्रार्थना करताहूं कि वह मुझे शीघ्रही आज्ञा दें कि मैं मायापूरपर चढ़ाई करदूं। मेरी फौज लड़नेके लिये प्रस्तुत है और इसी ख्यालसे मैंने छुट्टी देना बन्द कर दिया है बल्कि छुट्टी पर गये हुए सिपाहियोंको बुलवा लिया है। मेरे पास इसवक्त १४ हजार लड़ाकी फौज और २० घोड़चढ़े तोपखाने तैयार हैं जो महाराजकी आज्ञा पातेही बहुत जल्द मायापूरको तहस-नहस कर मिट्टीमें मिलादेंगे।"

निहालसिंहकी बातके खतम होते ही और दरबारियोंने भी यही राय दी कि हां, अब लड़ाई छेड़ देनीही ठीक है और उसकी लिये हमलोगोंको बहुत जल्द तैयार होजाना चाहिये।

सर्वसम्मतिसे निश्चय हुआ कि १० हजार फौज और पंद्रह तोपखाने लेकर कलही निहालसिंह मायापूरकी ओर कूच करदें। रसद और गोलाबारूदकी कुछ गाड़ियां तो यह अपने साथ लेते जावें और बाकी सामान लेकर एक हजार फौजके साथ परसों सरदार अजीतसिंह यहांसे कूच करें और सरहदपर निहालसिंह से जा मिलें। दो हजार फौजके साथ सहकारी सेनापति विजयसिंह लालगढ़के किलेकी देखरेख करें और जरूरत पड़नेपर बाकी एक हजार फौज और ५ तोपखाने मदद के लिये लेकर सरदार रामसिंह सरहदपर मायापूरकी तरफ कूच करनेके लिये तैयार रहें और समय पड़नेपर शीघ्रही कुमक (मदद) लेकर पहुंच जावें।

सब बातें तय हो जानेपर ऐयार लक्ष्मणसिंहने महाराजसे हाथ जोड़कर निवेदन किया:—

"महाराज अगर आज्ञा दें तो मैं तथा वीरसिंह ऐयारीके सामानोंसे लैस होकर फौजके साथ जायें क्योंकि मायापूरके ऐयारों की संख्या अधिक है और वह लोग बड़ेही बज्जात हैं! इस हालतमें हम दोनों ऐयारोंका भेष बदलकर फौजके साथ रहना बहुत जरूरी है।"

महाराज—"लेकिन तुम दोनों ऐयारोंका एक संग फौजके साथ रहना ठीक न होगा। ऐसा करनेसे राज्यमें कोई ऐयार न रहेगा और पीछे दुश्मनोंके ऐयारोंको मनमानी कारंरवाई करनेका मौका मिल जायगा। इस समय हमारे सात ऐयारोंमें सिर्फ

राज्यमें हाज़िर रहना बहुत ज़रूरी है इसलिये तुम यहीं रहो और वीरसिंहको फौजके साथ भेजदो फिर जैसा समय होगा देखा जायगा।"

महाराजकी आज्ञानुसार वीरसिंहका फौजके साथ जाना निश्चित हुआ और उसी समय वीरसिंहको बुलवाकर महाराजका हुक्म सुना दिया गया। यह सब बातें ठीक हो जानेपर दरबार बरखास्त किया गया और सब लोगोंने अपने-अपने घरका रास्ता लिया। सेनापति निहालसिंहने रातहीको फौजमें पहुंचकर बिगुल दिया और सब मुख्य ओहदेदारोंके उपस्थित हो जानेपर महाराजका हुक्म सुना दिया। ओहदेदार लोग बहुत खुश हुए और अपनी-अपनी मातहत फौजोंमें पहुंचकर चढ़ाई करनेका समाचार सुना दिया।

थोड़ीही देरमें कुल फौजमें एक प्रकारकी घबराहट और जोशीलापन छागया और सब फौजी सिपाही अपनी-अपनी तैयारी करने लगे। रातभर फौजमें तैयारियां होती रहीं। तोपखाने साफ किये गये और सुबह चार बजते-बजते रसदकी गाड़ियां और तम्बू, कनात, खेमा तथा रावटी इत्यादि पांचसौ सिपाहियों सहित सरहदकी तरफ रवानः कर दी गयीं।

सवेरे ६ बजे ९५०० साढ़े नौ हजार फौज लड़ाईके कुल सामानोंसे लैस होकर किलेके सामने वाले हरे-हरे साफ मैदानमें आकर कायदेके साथ खड़ी हो गयी, चार-चार जंगी घोड़ोंसे जुती हुई १५ घोड़चढ़ी तोपें एक लाईनमें खड़ी कर दीगयीं। अभी फौजको कतार बांध कर खड़े हुए पूरे ५ मिनिट भी न बीते होंगे कि प्रधान सेनापति सरदार निहालसिंह और मातहत सेनापति विजयसिंह घोड़ा दौड़ाते हुए फौजमें आ धमके। दोनों सेनापतियोंको देखतेही फौजने सलामी उतारी और अदबसे

खड़ी होगयी साथही निहालसिंहने अपने जेबसे लाल और हरे रङ्गकी दो भंडियाँ निकालीं और उन्हें मिलाकर कुछ संकेत (इशारा) किया। इशारा पातेही पैदल और घुड़चढ़ी फौज आमने सामने पंक्ति बांधकर खड़ी होगयी और कवायद करने लगी। पूरी कवायद हो जानेके बाद किलेकी बुर्जपरसे बिगुल बजाया गया जिसका मतलब यह था कि महाराज किलेसे निकला चाहते हैं। बिगुलकी आवाज सुनकर सब फौजमें सन्नाटा छागया और सब सिपाही अदबसे सिर भुकाकर खड़े होगये, साथही दूसरा बिगुल बजा और दनादन तोपें छूटने लगीं। एक दो करके २१ तोपोंकी सलामी उतारी गयी और साथही महाराज जंगी पोशाक पहने घोड़ेपर सवार दस सरदारों और सौ शरीर रक्षकोंके साथ फौजके बीचमें आ पहुंचे। महाराजको देखतेही फौजने जंगी सलामें कीं और कवायद दिखलायी। महाराज अपनी फौजकी अनूठी कवायद देखकर बहुत खुश हुए और कुछ देरतक निहाल-सिंहको न जाने क्या क्या समझाते रहे। बाद कूच करनेकी आज्ञा दी गयी साथही बिगुल बजाया गया और ७ बजते-बजते फौजने बड़ी धूमधामके साथ कूच किया। महाराज किलेमें चले गये और मुंशीको आज्ञा दी गयी कि इस चढ़ाईका पूरा पूरा हाल लिखकर इसोवक्त देवगढ़ भेज दे। आज्ञानुसार मुंशीने पूरा हाल लिखकर एक खत तैयार किया और खलीतेमें बंदकर उसोवक्त एक सवारके हाथ देवगढ़की ओर भेज दिया।

सातवां बयान।

रात के नौ बजेका समय है; रात अन्धेरी और भयानक है; चारोंतरफ गहरा सन्नाटा छाया हुआ है। मगर हमें इससे क्या? हम तो अपने पाठकोंको ऐसी जगह लेकर पहुंचते हैं जहां खूब रोशनी हो रही है, खूब सजावट की गयी है और खूब चहल-पहल मची हुई है।

पाठकगण! क्या आपने गुलाबकुंवरिको एकदम भुला दिया? सचमुच आप लोग बड़े बेरहम हैं! आपलोगोंको क्या? चाहे कोई दुःख भोगे या मजे उड़ावे मगर आप तो दिलचस्पीके भूखे हैं; जिधर जरा लसी पाई उधरही चिपक गये! लेकिन याद रखिये यह खुदगर्जी अच्छी नहीं होती। भला कभी आपने अपने दोस्तोंमें ही जिक्र किया होता कि "यार! गुलाबकुंवरिका कुछ पता नहीं लगा; न जाने वह बेचारी किस आफतमें फंसी होगी!" क्यों पाठक महाशय! इसमें आपकी सरासर खुदगर्जी झलकती है या नहीं? पर मैं भी बड़ा बेहया हूं, मुझे भी कम न समझियेगा! मैं हाथ धोकर आपके पीछे पड़ा हूं, जल्दी पिण्ड छोड़नेवाला नहीं! आप राजी हों या नाराज मगर मैं तो जबर-दस्ती आपको अपने साथ ले ही चलूंगा। न चलेंगे तो खुशामद करूंगा, आर्जू करूंगा, मिन्नत करूंगा, कसमें धराऊंगा पर किसी न किसी तरह जरूर ले चलूंगा। मगर मेरी हिम्मतको देखिये और मेरी तारीफ कीजिये, कि मैं अकेला हूं और आपलोग हजारों हैं तिसपर भी हिम्मत नहीं हारता, अगर अब भी मिजाज किया तो वह दिल्लगी लूंगा कि जिन्दगीभर याद करोगे!

इस समयकी भयानक अन्धेरी रात और सूनसान चुटैल मैदान

तथा भयानक सन्नाटेका कुछ भी ख्याल न कर हम आपको लिये हुये मायापूरके किलेमें प्रवेशकर एक आलीशान मकानके अन्दर पहुंचते हैं जिसमें इस वक्त खूब रोशनी हो रही है और गाने बजानेकी आवाजोंसे मकान गूंज रहा है। आइये पाठक! जरा ऊपर चलकर देखें कि यहां आज क्या है और गाना बजाना क्यों हो रहा है। अच्छा, अब हम ऊपर पहुंच गये और एक बड़े कमरेकी तरफ बढ़े जिसमेंसे गाने बजानेकी सुरीली तानें आ आ कर मेरा दिल अपनी ओर खींच रही थीं।

जिस कमरेके सामने हमलोग पहुंचते हैं वह एक ३० गज लम्बा चौड़ा खूबही सजा हुआ आलीशान कमरा है, जगह जगह पर बेश-कीमत सामान करीनेसे सजाये गये हैं, मौके मौकेपर खूबसूरत और नायाब तस्वीरें लगी हैं, छत और दीवारोंपर सुनहले बेल बूटे बड़ीही कारीगरीसे बनाये गये हैं। छतपर बड़े बड़े कीमती बिल्लौरी झाड़ और दीवारोंपर बिल्लौरी डालोंके दुहरे कमल लगे हैं जिनमें इसवक्त काफूरी बत्तियां जल रही हैं। कमरेकी चारों तरफ वाली दीवारोंपर बड़े बड़े क़द-आदम आइने लगे हैं जिनसे चारों तरफ यही जान पड़ता है कि इसी किस्मके कमरोंका सिलसिला लगातार एकसे एक मिलता हुआ दूरतक चला गया है।

कमरेकी फर्शपर बहुत मोटा बेशकीमत काश्मीरी गलीचा बिछा हुआ है जिसपर २०—२५ खूबसूरत कमसिन नाज़नियां जड़ाऊ जेवरोंसे लदी हुई बेश-कीमत रेशमी पोशाकें पहने सुरीले बाजोंको बजाती हुई अपने महीन गलेसे कुछ गुनगुना रही हैं। उन कामिनियोंके बीचोबीच एक कारचोबीके कामका मखमली मोटा गद्दा बिछा है जिसपर करीनेसे बड़े छोटे कई खूबसूरत तकिये सजाये गये हैं। इन सब सामानोंसे यह कमरा एक बड़ी ही खूबसूरतीकी शक्लमें बदल गया है।

हुई और हाथमें एक चमचमाता हुआ खंजर लिये महाराज अर्जुन-सिंह मुसकुराते हुये कमरेमें घुस आये।

सबसे पहले अर्जुनसिंह जिस औरतके पास जाकर खड़े हुए वह हमारी राजकुमारी गुलाबकुंवरि थी। महाराज बहुत देरतक बेसुध पड़ी हुई राजकुमारीकी शकलको बड़ी मुहब्बतके साथ बग़ौर देखते रहे फिर वह राजकुमारीके और नजदीक बढ़े, महाराज़ चाहते थे कि राजकुमारीको गोदीमें उठाकर छातीसे लगालें कि सायही कुछ सोचकर पीछे हट गये और आपही आप इस कार्रवाईपर अपनेको धिक्कारने लगे मगर फिर राजकुमारीकी प्यारी सूरत रसीली आंखों और घूंघरवाली लटोंके ख्यालने पैदा होकर उन्हें उसकी तरफ बढ़ाया और इस बार महाराजने आगे बढ़कर राजकुमारीकी दोनों नाजुक कलाइयां पकड़ लीं और चाहा कि गोदीमें उठाकर गलेसे लगालें मगर फिर किसी ख्यालने एकाएक उनके दिलपर कब्जाकर लिया और उनके हाथ कांपने लगे। राजकुमारीकी कलाइयाँ उनके हाथोंसे निकल गयीं। महाराज पीछे हटे और बड़ी बेचैनीके साथ इधर उधर टहलने लगे। कहना नहीं होगा कि महाराजने खंजरको इसके बहुत पहिले म्यानमें कर लिया था।

अब एकाएक महाराजने कुछ सोचकर अपने जेबसे एक रेशमी रूमाल निकाला और आगे बढ़कर मालती, केसर ललिता और श्यामाको सुंघा दिया। साथही चारों ऐयार: आंखें मलती हुई उठ बैठीं और महाराजको अपने सामने खड़ा देखकर अदबसे झुक पड़ीं। महाराजने उनसे कुछ इशारा किया जिसके साथही उन चारोंने राजकुमारीको बड़ी सावधानीसे हाथों हाथ उठा लिया और महाराजका इशारा पा उनके पीछे पीछे कमरेके बाहर निकल गयीं। महाराज सबको लिये दिये कई आंगन बरन्दे कई बड़े

बड़े कमरे और दरवाजोंको पार करते हुए अपने खास कमरेमें पहुंचे जिसमें हम एक बार पाठकोंको नकली गुलाबकुंवरि और राजा अर्जुनसिंहकी दिल्लगी दिखा चुके हैं। कमरेमें इस वक्त बखूबी रोशनी हो रही थी और जगह जगह दीवारोंपरकी लगी खूबसूरत खूंटियोंपर खुशबूदार और रंग बिरंगे ताजे फूलोंके मोटे मोटे गजरे लटका रहे थे जिससे कमरा तेज़ खुशबूसे बसा हुआ था।

चारों ऐयारोंने कमरेमें पहुंचकर राजकुमारीको एक बड़े ही सजे सजाये मखमली पलंगपर लिटा दिया और महाराजका इशारा पाकर कारचोबीदार बेशकीमत पर्देको हटाती हुई कमरेके बाहर निकल गयीं। मालती वगैरहके कमरेसे बाहर होतेही महाराजने अन्दरसे कमरेका दरवाजा बन्दकर लिया और राजकुमारीके पलंगके पासकी रक्खी एक स्प्रिंगदार जड़ाऊ कुरसीपर बैठकर राजकुमारीको अपने पासका रेशमी रूमाल सुंघाना शुरू किया। रूमालमें लगे तेज लखलखेकी खुशबूके नाकमें पहुंचते ही राजकुमारीने चट आंखें खोल दीं मगर जैसेही उसकी निगाह अर्जुनसिंहपर पड़ी और साथही भय, घबराहट और बेचैनीने उसके दिलपर कब्जा कर लिया वैसेही उसने पुनः आंखें बन्द करलीं।

राजा अर्जुनसिंह पहलेही राजकुमारीकी मुहब्बतमें दीवाना हो चुका था इसबार राजकुमारीके नयन-वाणसे घायल हो गया और मतवालोंकी तरह एकाएक बड़बड़ा उठा:—

"राजकुमारी! प्यारी गुलाबकुंवरि! तुम इतनी संगदिल हो? हाय, हाय! तुमने मुझे देखतेही आंखें बन्द कर लीं। प्यारी! अपने आशिकको तुम ऐसी तुच्छ निगाहोंसे देखती हो? हाय! सचमुच तुम्हें ईश्वरने बड़ाही निठुर बनाया है। प्यारी गुलाबकुंवरि! क्या तुम्हें ईश्वरने दिल दियाही नहीं या तुम्हारे दिलमें उसने बजाय दिलके कोई फौलादका टुकड़ा रख दिया है? अगर

फौलाद भी होता तो भी ज़रा नरम पड़ जाता लेकिन तुम्हारा दिल न जाने किस चीजका है जो अपने बेकरार आशिकोंपर रहम खाना जानताही नहीं! आह! उतनी ताकत नहीं! अगर मैं अपने बेकरार दिलको चीरकर दिखलाऊं तो तुम्हें मालूम हो कि वह तुम्हारे इश्कमें किस कदर जल भुनकर ख़ाक हो रहा है!"

गुलाबकुंवरि आंखें बन्दकर उसकी सब बातें बड़े ध्यानसे सुन रही थी मगर अब उससे न रहा गया, वह आपेसे बाहर हो गयी और बड़ी तेजीसे पलंगपरसे उछलकर जमीनपर खड़ी होगयी और कड़ी आवाजमें डपटकर बोली:—

"चुप रह पापिष्ठी! इन बातोंसे मुझे ज्याद: मत जला। देख कम्बख्त! तूनेही मुझे मेरे माता पितासे छुड़ाया, घर बारसे बदनाम कराया, न जाने किस बुरी सायतमें तेरे नालायक ऐयार मुझे मेरे बागसे चुरा लाये। ईश्वर मेरे उन बिछुड़े हुओंसे फिर मुझे मिलावेगा या नहीं इसमें भी अभी मुझे सन्देह है फिर जब इतनी दुर्गति तू मेरी कर चुका तो अब क्यों कुत्तोंकी तरह मेरे पीछे पड़ा है? मैं की सीधी एक मैं तुझसे उसी दिन कह चुकी हूं जिस दिन तेरे सत्यानाशी ऐयारोंने मुझे तेरे सुपुर्द किया था। अगर आगमें जलना पड़े तो अच्छा, जलते हुए तेलके कड़ाहेमें कूदना पड़े तो बेहतर, तलवारकी धार उतार दी जाऊं तो कबूल, मगर, दुष्ट! तेरा साथ, (ज़ोर देकर) तेरा साथ मरकर भी नहीं मंजूर करूंगी।"

अर्जुन०—"गुलाब! बस करो, जलेपर नमक न डालो। मेरा कुछ कुसूर नहीं। मैंने तुम्हे ऐयारोंसे नहीं चुरा मंगवाया। मैंने तुम्हे तुम्हारे माता पितासे नहीं अलग कराया, मैंने तुम्हे तुम्हारे खानदानसे बदनाम नहीं कराया बल्कि यह जो कुछ किया महात्मा मदन और हमारे मनचले दिल दोनोंने किया; इसको तुम सजा

दे सकती हो! और है भी वह इसी लायक। मेरा सिर हाजिर है, लो, अभी अपने नाजुक हाथोंसे तलवारका एक ऐसा झटका लगाओ कि वह खटसे अलग होजाय और तुम्हारे बीचका एक नुकीला कांटा निकल जाय! अरे नादान! तू क्या, मैं तो खुदही उस बुरी सायतको कोसा करता हूं जिसमें तेरी तस्वीरने मेरे दिलमें अपना जाल फैला दिया था और मैंने तेरे बाप राजा देव-सिंहको शादीका पयगाम लिख भेजा था। मगर अब क्या? गयी बातका अफसोस कैसा? देखो गुलाब! मुझपर रहम खाओ; तुम्हारा जानसे आशिक जो तुम्हें पटरानी बनाकर रखनेका इरादा कर चुका है फिर तुमसे मिन्नत करता है और गिड़गिड़ाकर कहता है कि इसकी मनोकामना पूरी की जावे।"

यह कहकर राजा अर्जुनसिंहने अपनेको गुलाबकुंवरिके पैरों पर डाल दिया लेकिन गुलाबकुंवरिने इसपर तनिक भी ध्यान न दिया। एक ठोकर ऐसी लगायी कि अर्जुनसिंहका सिर भन्ना गया और आप कूदकर अलग खड़ी होगयी। इसपर अर्जुनसिंह—वह बुड्ढा चण्डूल अर्जुनसिंह—बड़ाही चिढ़ा हुआ और ताव पेंच खाता बड़ी तेजीसे उठा मगर फिर कुछ सोचकर अपने दिलको समझाता हुआ राजकुमारीसे धीरे-धीरे कहने लगा:—

अर्जुन०—"प्यारी गुलाब! क्या आशिकोंपर योंही दुलतियें झाड़नी होती हैं? मरेको मारना क्या! मैं तो पहलेही तुम्हारे ऊपर जान न्योछावर करचुका हूं फिर इस तरह मारनेसे क्या लाभ?"

गुलाब०—"तू बड़ाही बेहया बेगैरत है, इतनेपर भी तुझे शर्म नहीं आती! बदनसीब जान न्योछावरकर कालीजीके मन्दिरमें, जिससे तेरा लोक परलोक दोनों बने। मेरे ऊपर जान न्योछावर करनेसे तुझे क्या लाभ? जितना तूने इन बुरे कामोंमें मन

लगाया है अगर उतनाही तू ईश्वरके स्मरणमें ध्यान लगाता तो निश्चय तेरी मुक्ति हो जाती और तू आवागमनसे रहित होकर परमपदको प्राप्त करता। कमीने! उलटे तूने पतिव्रता और सीधी साधी स्त्रियोंपर अत्याचारकर पाप बटोरना शुरू किया है? याद रख बुड्ढे! वह दिन बहुत नजदीक है जिस दिन तुझे यमराजके आगे इस अत्याचारका जवाब देना होगा।"

अर्जुन०—(गुस्सेमें भरकर) "अच्छा अब ज्ञान बघारना दूसरोंके आगे, यहां सब शास्त्र देखे पड़े हैं। मुझे जान पड़ता है, ऐसे तुम न मानोगी। सचमुच तुमपर अब जब्रसे काम लिया जायगा, यों तुम काबूमें नहीं आती मालूम देती। अच्छा तो सुनो गुलाब! अब मैं तुमसे साफ साफ कहे देता हूं कि आज मैं तुमसे जरूर विवाहकर अपनी इच्छा पूर्ण करूंगा। सब सामान ठीक है सिर्फ इशारा करतेही तुम्हें तुम्हारी सखियां विवाह वाले घरमें पहुंचा देगीं। वह इसी कमरेके बाहर मौजूद हैं और मेरी बातपर राजी हैं। विवाह वाले घरमें पुरोहितजी बैठे हमलोगोंका आसरा देख रहे हैं।"

राजा अर्जुनसिंहकी बातें सुनतेही गुलाबकुंवरि पर मानों वज्र गिरा। ताज्जुब डर और घबराहटने उसे डांवाडोल कर डाला। एक क्षणके लिये वह तस्वीर की सी हालतमें होगयी मगर साथही उसने अपने दिलको मजबूत किया और गरजकर बोली:—

गुलाब०—"क्या कहा? विवाह करेगा, किससे? मुझसे या मेरी आत्मासे! आत्माको भी तू हत्यारा नहीं पासकता हां, मेरे शरीरसे भलेही विवाहकर सकता है, मुझसे तू बेचारा क्या विवाह करेगा! तेरी ताकतही कितनी है जो मुझे छू भी सके। मुझे अपनी जानपर तो अख्तियार है न? फिर उसके दे देने में क्या हानि है? मैंने निश्चय कर लिया है कि उधर तूने अपनी ताकत

से काम लेनेका मनसूबा किया और इधर मैंने अपनी जान देने का बन्दोबस्त किया ।"

अर्जुन०—(गुलाबकुंवरिकी इस क्रोधमय मूरतको देखकर जिससे उसकी खूबसूरती बेतौर बढ़ गयी थी दिलोजानसे मोहित होकर आगे बढ़ता हुआ) "लेकिन प्यारी! तुम्हारे पास कोई ऐसा कातिल हथियारभी तो दिखायी नहीं देता जो तुम्हारी बेश-कीमत जान को खरीद सके।"

"नादान! यह जहरीली कटार!" यह कहकर गुलाबकुंवरि ने अपने कपड़ोंके अन्दरसे तेजीके साथ चमचमाती हुई एक जड़ाऊ कब्जे वाली कटार निकालकर अपने हाथमें मजबूतीके साथ थामली। इधर अर्जुनसिंह तेजीके साथ उसकी तरफ झप-टना चाहता है कि जिसमें कटार उसके हाथसे छीन लूं, उधर गुलाबकुंवरि इस घातमें खड़ी है कि उसके पहुंचते पहुंचते मैं कटार अपने कलेजेमें भोंक लूं कि सहसा एक रेशमी परदेके पीछेसे एक सुरीली आवाज सुनायी दी—"पिता! बस, अब तुम अपना जुल्म यहीं तक रखो और इस बेचारीपर रहम खाओ।" अर्जुनसिंह और गुलाबकुंवरिने परदेकी तरफ देखा तो उन्हें एक स्वर्ग सुन्दरी बड़ीही मन्द गतिसे परदेके बाहर निकलती दिखायी दी। वही ललकारकर यह बात कह रही थी जिससे दोनों ओरके उद्योगमें कुछ देरके लिये रुकावट पड़ी। लेकिन अर्जुनसिंह यह देखकर बड़ेही गुस्सेमें आया और आग-बबूला होता हुआ सुन्दरीसे बोला:—

अर्जुन०—(दांत पीसकर) "कौन? कम्बख्त मायादेवी! मेरी ढीठ लड़की मायादेवी! अच्छा सच बता तू यहां कब और किस लिये आयी थी?"

जिस सुन्दरीने अर्जुनसिंहके काममें बाधा डाली थी वह उसकी

प्यारी पुत्री निरुपमासुन्दरी कुमारी मायादेवी ही थी। पाठकोंको आगे चलकर स्थान स्थानपर इस लावण्यवती का परिचय आपही मिल जायगा, इस समय विशेष कहनेकी कोई आवश्यकता नहीं। मायादेवी हाथ जोड़कर किन्तु दृढ़तासे बोली:—

माया०—"पिता! अपराध क्षमा हो। मैं उस पर्देकी आड़में आपके आनेसे बहुत देर पहलेकी छिपी हुई थी। मैंने सुना था कि आप एक निरपराध अबलापर आज एक बड़ाही भीषण अत्याचार किया चाहते हैं जिसको लोग जबरदस्तीका विवाह कहते हैं। मैंने इसे सच नहीं जाना था, पर अपना सन्देह मिटानेके लिये यहां छिपी खड़ी थी कि यदि आप सचमुच उस सुन्दरीको जबरन अपने अधिकारमें लाना चाहेंगे तो मैं जी-जानसे उसमें बाधा डालूंगी। मैंने सब कुछ देखा, जो सुना था वही ठीक निकला। अब मैं इस सुन्दरीके साथ कदापि आपको विवाह करने न दूंगी।"

अर्जुन०—(तलवारके कब्जेपर हाथ डालते हुए) "ढीठ लड़की, बज्जात लड़की! पिताके काममें बाधा देनेका तुझे कौनसा अधिकार है? खैर जा, इस वक्त् तू यहांसे चली जा। इस ढिठाईकी सजा तुझे अवश्य दूंगा। जा शीघ्र यहांसे चली जा वर्ना (तलवार दिखाकर) अभी तेरा सर उतार लूंगा।"

माया०—(उसी दृढ़तासे) "मंजूर है, मंजूर है पिताजी! आप खुशीसे मेरा सर उतार सकते हैं किन्तु मैं जीते जी इस भोली-भाली अबलाको आपके अत्याचारोंके लिये छोड़ नहीं सकती।"

"अच्छा तो ले कम्बख्त्! पिताके साथ ढिठाई करनेका नतीजा भोग" कहते हुए अर्जुनसिंह तलवार खींचकर मायादेवी-की तरफ झपटे। मायादेवीने साथही घुटने टेक दिये और गर्दन झुकादी; मानों उसने अपने अत्याचारी पिताकी तलवारका

सन्मान किया। अर्जुनसिंह पलक झपकते मायादेवीके सिरपर थे। उनकी लपलपाती हुई तलवार एक असामान्य रूप लावण्यकी खान स्वर्ग-सुन्दरीकी गर्दनका खून चाटनेके लिये हवामें तन चुकी थी और चाहती थी, कि हवाको चीरती हुई गले और गर्दनके दो टुकड़े कर दें कि साथही एक धड़ाकेकी आवाज हुई, दरवाजा टूटा और "दांय" करती हुई एक गोली तमञ्चेमेंसे निकलकर सनसनाती हुई अर्जुनसिंहके दांये कान्धेमें घुस गयी। गोलीकी कड़ी चोट खाकर भी एकबार अर्जुनसिंह दरवाजेकी तरफ दौड़ा मगर साथही पैर लड़खड़ाये और वह वहीं फर्शपर लम्बा चौड़ा होगया।

आठवां बयान।

सुनसान अन्धेरी रात है, चारों तरफ घोर गहरा सन्नाटा छाया हुआ है, पानी बड़े जोरसे बरस रहा है, रह-रहकर बिजली बड़ी गड़गड़ाहटकी आवाजके साथ चमक जाती है जिससे दूर दूरतक बड़ाही चमकीला प्रकाश फैल जाता है और साथ ही फिर घोर अन्धकारमें पृथ्वी छिप जाती है, कहीं कहीं बिजलीकी टंकारके साथही साथ जंगली कुत्ते भूं भूं कर भौंक उठते हैं जिससे दूर दूरतक जंगल गूंज उठता है और साथही ग्रामीण लोगोंका खों खोंकर खांसना मानों जता देता है कि हम भी अभी सोये नहीं हैं बल्कि तुम्हारीही तरह बेचैनीसे करवटें बदल रहे हैं। ठीक इसी समय हम अपने निडर और साहसी पाठकोंका ध्यान देवगढ़की ओर दिलाते हैं।

देवगढ़के किलेमें इस वखत् बड़ी धूम मची हुई है चारों तरफ बड़ा ही शोरगुल हो रहा है, पानीकी मोटी धारों और बिजलीके

भयंकर-नादका कुछ भी ख्याल न कर हाथोंमें बड़ी बड़ी मशालें और लालटेनें लिये संतरी इधरसे उधर दौड़ रहे हैं किलेकी बुर्जों और फसीलोंपर सिपाहियोंके दलके दल बड़ी बड़ी तोपोंको मोके मोकेपर चढ़ा रहे हैं, बड़े बड़े अफसर और सरदार इधरसे उधर घोड़ा दौड़ा दौड़ाकर बड़ी मुस्तैदीके साथ इन्तजामकर रहे हैं, सेनापति जंगबहादुरसिंहको साथ लिये स्वयम् महाराज देवसिंह बड़ी फुर्तीके साथ चारों तरफ घोड़ा दौड़ाते हुए अफसरोंके इन्तजामकी देखभाल कर रहे हैं। किलेके फाटकपर बड़ी बड़ी भयानक तोपें चढ़ायी गयीं हैं और उनके पासही गोले तथा बारूदके भरे बड़े बड़े सन्दूक मेगज़ीनसे ला-लाकर सजाये जा रहे हैं। किलेके बड़े बड़े दालानोंमें दलके दल सिपाही अपनी अपनी बन्दूकें तथा हर हरबे-हथियार साफ कर रहे हैं। सहकारी सेनापति सरदार रणजीतसिंह कुछ सिपाहियोंको लेकर किलेकी दीवारोंको बड़ी सावधानीसे देख रहे हैं और जहां दुरुस्त करनेकी जरूरत समझते हैं वहां दुरुस्त भी कराते जाते हैं। मतलब यह कि देवगढ़के किलेमें इस वख्त् बड़ी ही मुस्तैदीके साथ बहुत जल्द होनेवाली किसी भारी लड़ाईकी तैयारी हो रही है।

पाठक! कुछ समझे? आज शामको महाराज देवसिंहको जासूसोंने खबर दी है कि महाराज अर्जुनसिंहकी २० हजार फौज सरदार खड्गबहादुरसिंहकी मातहतीमें देवगढ़पर चढ़ाई करनेके लिये चल चुकी है और उसने सरहदको पारकर देवगढ़के नजदीक तीन कोसपर "चाँदनी झील"के किनारे डेरा डाल दिया है, उम्मीद है कि रातों रात कूचकर एकाएक किलेपर धावा बोलदे। बस, इसी खबरको जासूसों द्वारा सुनकर महाराज देवसिंहने रातों-रात किलेपर लड़ाईका पूरा पूरा इन्तजाम करना शुरूकर दिया है जिसमें कि दुश्मनोंकी पहिली चाल एकबारही खाली जावे।

अब किलेकी घड़ीने टनाटन दोका घण्टा बजाया। साथही पानीका बरसना, बादलोंका गरजना और बिजलीका चमकना भी एकाएक बंद होगया। पुरवा हवाकी तेज थपेड़ोंने काली काली डरावनी घटाओंके पुरजे पुरजे उड़ा डाले, आस्मान बिलकुल साफ आईने सा निकल आया और चम-चम चमकाते हुए सुनहले तारोंने अपनी अपनी जगहपर पूरे तौरसे कब्जाकर लिया। चन्द्रदेव भला तारोंकी आज़ादी कब देख सकते थे, उन्होंने भी दौड़ा-दौड़ अपना रास्ता खतम किया और आस्मानके बीचोंबीच अपने सिंहासनपर अधिकार जमा लिया जिसके साथही तारोंने अदबसे अपना अपना सिर झुका दिया और समस्त पृथ्वी प्रकाशमय होकर खिलखिलाने लगी !

अभी दोका घण्टा बजे पूरे २० मिनिट भी न हुए होंगे कि किलेसे एक मीलकी दूरीपर कुछ रोशनी दिखायी दी और घोड़ोंकी टापोंके हलके शब्द सुन पड़े जो बहुत धीरे धीरे इसी तरफ बढ़ रहे थे। किलेवालोंकी निगाहें साथही उधर झुक गयीं और सबने जान लिया कि अब बहुत जल्द भयानक संग्राम आरम्भ होनेवाला है। किलेपर इस वक़्त पूरी मुस्तैदी पायी जाती थी, मौके मौकेपर तोपें चढ़ा दी गयीं थीं, गोलन्दाज पूरे सामानोंसे तैयार खड़े थे और जगह जगहपर वीर-सिपाहियोंकी लम्बी लम्बी कतारें अपने अपने अफसरोंकी मातहतीमें डटी हुई थीं।

महाराज देवसिंह और प्रधान सेनापति जंगबहादुरसिंह उसी बुर्जी पर खड़े थे जो आती हुई फौजके ठीक सामनेकी ओर थी। सेनापतिने गोलन्दाजोंको आज्ञा देदी थी कि दुश्मनकी फौजके मारपर पहुंचते ही एक बाढ़ ऐसी मारो कि उनके छक्के छूट जांय। गोलन्दाज भी इसी ताकमें खड़े थे कि कब फौज हमारी तोपोंकी मारपर आवे और कब हम अपनी मुस्तैदीका नमूना दिखावें।

मनचले पाठक! आप तो किसीके पाबन्द नहीं हैं! मजा लेना हो तो आइये, किलेसे निकलकर इस सामनेवाले सुनसान मैदानको पारकर जरा उस भारीशाली फौजका हाल-चाल दरियाफ्त करें जो बड़ी फुर्तीके साथ इसी ओर बढ़ती चली आरही है। मगर सावधान, दूरही दूरसे कैफियत देखियेगा, कहीं ऐसा न हो कि कोई फौजी सिपाही आपको देखले वर्ना जरूर आपपर जासूस होनेका शक करेगा और ताज्जुब नहीं जो आपको फौजी कानूनके मुताबिक कैदकर अपने अफसरके हवाले करदे।

ओह ओह! यह तो बहुत बड़ी फौज मालूम देरही है। खैर जरा और आगे चलिये, देखें इसकी तायदाद कितनी है और इसका अफसर कौन है? बस, अब यहीं ठहर जाइये, देखिये फौजका बड़ा अफसर सवारोंके आगे आगे बड़ी सावधानीसे बढ़ रहा है। बस बस, हम इसे पहचान गये, यह तो खास खड्गबहादुरसिंह ही हैं जो पांच हजार सवारोंका रिसाला लिये धीरे धीरे आगे बढ़ रहे हैं। सवारोंकी वरदी नीली और चमकदार है, हथियार चाँदनीमें चमक रहे हैं, घोड़े बार बार हिनहिना उठते हैं जिससे जन-शून्य जंगल रह रहकर गूंज उठता है। सवारोंके चमकते हुये जिरह-बख्तर और लम्बी लटकती हुई तलवारें चित्तपर एक प्रकारका विशेष असर डाल रही हैं। इसके पीछे दो पहाड़ी तोपखाने भी बड़े बड़े जंगी घोड़ोंसे खिंचते धीरे धीरे आगे बढ़ रहे हैं। तोप-खानेके पीछे पांच हजार पैदल फौजकी कतारें भी आ रही हैं। अच्छा, अब फौज जंगलसे निकलकर एक बड़े ही लम्बे चौड़े मैदानमें आगयी; फौजका बड़ा अफसर यहां आते ही घोड़ेको रोककर ठहर गया। यह एक विशेष इशारा था। साथही सब फौज पूरे जंगी कायदेसे खड़ी हो गयी। पैदल और सवार अलग अलग अपने कालमोंमें जा मिले। बन्दूकें सबके कन्धोंपर गयीं

और फिर कूच हुआ। थोड़ी दूर इस चालसे गये होंगे कि दाहिनी ओरसे एक सीटीकी आवाज आयी जिसे सुनते ही फौज ठहर गयी अफसरोंने परेसे कुछ आगे घोड़े निकाले और बड़ी सुस्तैदीके साथ एक ओर देखने लगे।

यह लोग अभी इसी तरह खड़े हुए थे कि दाहिनी ओर से टापोंका शब्द सुनायी दिया और साथ ही एक नकावपोश सवार बेश-कीमत जिरहबख्तर पहने एक झाड़ीसे निकल आया और खड्गबहादुरसिंहको जंगी सलामकर अदबसे खड़ा होगया। सलामका जवाब देकर खड्गबहादुरसिंहने एक कड़ी निगाह नकावपोश सवारपर डाली और यों सवाल शुरू किया।

खड्ग०—"कहां खून हुआ *?"

नकाब०—"नदी में"

खड्ग०—"अच्छा आप हैं! खूब मौकेपर मिले। कहो सब ठीक है?"

नकाब०—"हां साहब सब ठीक है" और यह कहते हुए सवारने अपनी जेबसे एक लम्बा चौड़ा कागज निकालकर खड्गबहादुरके हाथमें रख दिया। मशालें पासको गयीं और अफसरने कागज रोशनीके सामने किया। यह एक तीन हाथ लम्बा चौड़ा पेन्सिलका खींचा हुआ किसी मैदानका मानचित्र (नकशा) था।

नकाब०—"सरदार साहब! इसपर जरा गौर कीजिये। किलेके दाहिने और पीछे तो जमीन बड़ी ऊबड़-खाबड़ और ढालुवीं है। हां वायें और सामने जमीन कुछ ऊंची है और इसमें सामनेकी ओर दस पांच टीले भी ऐसे पड़ते हैं जिसपर हम मजेमें तोपखाना लगा सकते हैं और वहांसे बखूबी किलेका सामना लिये हुये फाटकके इर्द-गिर्दकी दीवारोंपर गोले उतार सकते हैं।"

* यह एक इशारा था।

दूसरा अफसर—(जरा गौरसे नक़्शेको देख कर) "हां, यह तो ठीक है। लेकिन किले परसे गोले बरसने लगेंगेतो कैसी होगी; क्योंकि यह टीले तो बिलकुल तोपकी मारपर नजर आते हैं।"

नकाब०—नहीं नहीं। अव्वल तो यह टीले किलेसे ढाई सौ कदमके फासलेपर हैं। दूसरे यह इतने ऊंचे हैं कि हम इसकी आड़ पकड़कर मजेमें अपना काम निकाल सकते हैं।

खड्गबहादुरसिंहने नक़्शेको ख़ूब गौरसे देखकर कहा— "हमें भी टीलोंपर तोपखाना लगाना मुनासिब जान पड़ता है। और फिर जैसा उचित होगा किया जायेगा। ईश्वरका भरोसा करना चाहिये। फौज भी हमलोगोंके पास काफी है। कुमक (मदद) की फौज भी तैयार है, इशारा पातेही दो घण्टेमें मौकेपर पहुंच सकती है।"

कुछ देरतक इसी बातपर विचार होता रहा बाद खड्गबहादुरसिंहने अपने जेबसे मोहर किया हुआ एक लिफाफा निकाला और नकाबपोशके हाथमें रख दिया। नकाबपोशने अदबसे जंगी सलामकी और घोड़ा उड़ाता हुआ जिधरसे आया था उधर ही चला गया और पेड़ोंकी आड़में जाकर नजरोंसे गायब हो गया। फिर फौज पूरे जंगी क़ायदेसे मार्च (कूच) करने लगी। नक़्शेवाला मैदान बहुत दूर न था। बहुत जल्द फौज वहाँ पहुंच गयीं, तोपखाने आगे बढ़ाये गये, घोड़े खोलकर अलग किये गये, तोपें भी खींचकर टीलोंपर सजा दी गयीं और गोलन्दाज सब सामानोंसे लैस होकर अफसरके हुक्मकी प्रतीक्षा करने लगे।

तोपखानेके बड़े अफसरने नीली रोशनीकी लालटेनसे सेनापतिको इशारा किया कि हम तैयार हैं, हुक्मकी देर है; साथही सेनापतिकी ओरसे लाल रोशनीवाली लालटेन दिखायी गयी कि बस तोपपर बत्ती रख दो।

हुक्मकी देर थी। हमारा पातेही नं० १ के तोपखानेवाले गोलन्दाजोंने बत्ती रख दी और "धनानाना" करता हुआ पहला गोला तोपसे निकलकर किलेकी बुर्जसे टकराता हुआ खाईमें गिरकर ठढा हो गया। पर अभी दूसरे गोलेकी पारी न आयी थी कि देवगढ़के किलेसे एक भयानक गोला दुश्मनोंके पहले गोले-के जवाबमें आकर टीलेसे टकराया जिसके साथही किलेमें हलचल पड़ गयी और दुश्मन भी आश्चर्यमें आगये कि "यह सुस्तैदी!" साथही एक गोला इधरसे फिर छोड़ा गया और उसके जवाबमें उधरसे एक और आया। दो आये गये तीसरेकी पारी आयी फिर क्या था गोलोंकी भरमार होनेलगी। एकसाथ इधर उधरकी मुकाबलेवाली तोपोंपर बत्तियां पड़ने लगीं और दोनों तरफसे आग बरसना शुरू हुआ, दिशाएं गूंज उठीं और पृथ्वी कांपने लगी।

नौवां बयान।

सन्ध्या हुआ चाहती है, सूर्यदेवका शीघ्रगामी रथ अपना रास्ता तयकर बहुत तेजीके साथ अस्ताचलकी तरफ बढ़ा जारहा है। ठीक इसी समय हम "पुतलीमहलके" उस हिस्सेमें जिसे वहां वाले "तिलिस्म-जालन्धर" के नामसे पुकारते हैं एक बड़ी ही मजबूत कोठरीमें जो चारोंतरफ संगीन दीवारोंसे घिरी है कुंवर चन्द्रसिंहको एक पलंगपर बड़ी बेचैनीसे करवटें बदलते पाते हैं। आज कुंवरको इस कैदखानेमें आये पूरे पांच दिन हो चुके हैं।

कोठरीके बीचोंबीच छतमें एक छोटीसी खिड़की दिखायी दे रही है। शायद इसी खिड़कीके जरिये इनको दोनों वख्त खाना पहुंचाया जाता है।

कोठरी साफ और स्वच्छ है। चारों कोनोंपर सङ्गमरमरकी चार सुफेद पुतलियां हाथोंमें चोखे फलदार भाले लिये सर झुकाये खड़ी हैं। छतसे एक लालटेन लटक रही है जिससे वखूबी रोशनी होरही है। ऐसेही समय छतपर कुछ खड़खड़ाहटका शब्द और जञ्जीरोंकी झनकार सुनायी दी। राजकुमारने आंखें खोल दीं और लड़खड़ाते हुए पलङ्गसे उठ बैठे। राजकुमारके उठतेही पुतलियोंने झुके हुए सिर ऊंचे किये और अपनी जगह-पर तनकर खड़ी होगयीं। साथ ही खिड़की खुली और उसमेंसे तेजीके साथ एक लोहेका छिका सरसराता हुआ नीचेकी फर्शपर आकर ठहर गया। छिकेमें एक सोनेकी थाली रखी हुई थी और उसमें सोनेहीके बरतनोंमें तरह तरहके स्वादिष्ट भोजन सजे हुए थे और एक जलका पात्र भी रखा था। छिकेके जमीनमें ठहरतेही ऊपरसे एक आवाज आयी "राजकुमार! भोजन तैयार रखा है।"

आवाज सुनते ही राजकुमारने कूदकर छिका पकड़ लिया और बड़ी धीमी आवाजमें कहा:—

राजकुमार—"महाशय! आपकी इन कृपाओंके लिये मैं आपको धन्यवाद देता हूं। मगर आज आपसे दो चार प्रश्नोंका पूरा उत्तर पाये बिना किसी प्रकार भोजन न करूंगा।"

आवाज—" यह तो बिलकुल असम्भव है। 'तिलिस्म-जालन्धर'के कैदीसे बातें करना मानो जान बूझकर अपनेको मौतके पंजेमें डाल देना है।"

राजकुमार—(नम्रतासे) "चाहे कुछ भी हो मगर जबतक

आप मेरी कुल बातोंका जवाब न देंगे मैं भोजन कभी न करूंगा और इसी तरह बगैर अन्न जल किये अपने प्राण त्याग दूंगा और इसका पाप जन्मभर आपके सरपर रहेगा।"

आवाज—"तुम बड़ी नादानी करते हो! मैं तुम्हें बार बार समझा चुका कि मुझे तुमसे बातें करनेका कुछभी अधिकार नहीं है और मैं इच्छा रहनेपर भी लाचार हूं।"

राजकुमार—"किन्तु ईश्वरके आगे आपको इसका अवश्य जवाब देना होगा कि आपने एक बदनसीब कैदीको सिर्फ उसकी बातोंका जवाब न देकर मरनेपर बाध्य किया।"

आवाज—(ठहर कर) "खैर, मुझे तुमपर दया आती है यद्यपि तुम दो एक दिनके मेहमान हो लेकिन मैं तुम्हारे खूनका बोझ अपने सरपर नहीं लिया चाहता। अच्छा कहो वे कौन-से सवालात हैं?"

राजकुमार—(खुश होकर) "एक तो यही कि यह कौन जगह है? 'तिलिस्म-जालन्धर' क्या 'पुतलीमहल'से अलग है?"

आवाज—"नहीं, यह 'पुतलीमहल' ही का एक हिस्सा है मगर एक प्रकारसे इसके सबही कारोबार अलग हैं, यानि यह एक छोटासा स्वतन्त्र तिलिस्म है और इसका दारोगा मैं हूं।"

राजकुमार—"ईश्वर आपका मङ्गल करे। अच्छा क्या आप यह भी बता सकते हैं, कि किशोरीकी क्या हालत हुई और वह बेचारी किस आफतमें गिरफ्तार है तथा हमारे ऐयार कहां और किस हालतमें हैं?"

आवाज—"बस क्षमा कीजिये, यह मैं आपको नहीं बता सकता हूं।"

आवाजके खतम होते न होते ऊपरसे जंजीरोंकी खड़खड़ाहट और खिड़कीके बन्द होनेका शब्द सुन पड़ा। साथ ही एक मोहर

किया हुआ बन्द लिफाफा कोठरीकी फर्शपर टपसे गिर पड़ा। राजकुमारने लपककर लिफाफा उठा लिया और उसपर जो नजर दौड़ायी तो यह लिखा पाया—

" श्रीमान् १०८ कुंवर श्री चन्द्रसिंह जू
युवराज "कृष्णगढ़"

सिरनामेपर अपनाही नाम देखकर राजकुमारको बड़ी ही उत्सुकता हुई और उन्होंने झट मोहर तोड़कर उसमेंसे एक सुनहला पत्र निकाला और बड़े ध्यानसे पढ़ने लगे। पाठकोंके मनोरञ्जनार्थ हम उस पत्रकी नकल यहां लिख देना मुनासिब समझते हैं। पत्रका मजमून इस प्रकार था:—

" श्रावण कृष्ण ८ गुरुवार सं० ११३१ वि०

श्रीमान् १०८ कुंवर श्री चन्द्रसिंह जू युवराज "कृष्णगढ़"
श्रीमान् कुंवर साहब!

मैं किसी घटना-चक्रसे आपकी सेवा करनेपर बाध्य हुआ हूं और खास इसी वजहसे आज १५ दिनोंसे "पुतलीमहल"में आया हुआ हूं। उस दिन आपके ऐयारोंको मैंनेही आपकी मददके लिये हंसवाली कोठरीमें भेजा था परन्तु किसी तरह दुश्मनोंको खबर होगयी और तिलिस्मी शैताननें प्रकट होकर हम लोगोंकी चालको धूलमें मिला दिया। मैं भी मौका देखकर खिसक गया और आपकी मदद करनेका दूसरा मौका तजवीजता रहा। ईश्वरकी कृपासे परसों मैंने "तिलिस्म-जालन्धर" के दारोगाको कैदकर लिया और तभीसे उसकी शक्लमें यहांकी दारोगा-गीरी कर रहा हूं। आज मौका पा आपका भोजन लेकर मैं खुद इसी नीयतसे आया हूं कि अपने दिली मन्सूबोंको आपपर जाहिर करूं और अगर बन पड़े तो आपकी मदद करूं। खुलकर बातें

करनेका मौका नहीं है क्योंकि इस दरवाजे पर २५ सिपाहियोंकी एक जबरदस्त गारद हरवख़्त मौजूद रहती है इसीसे चिट्ठीके जरिये आपको अपना परिचय दिया है। खैर, अब मतलबकी बातोंपर ध्यान दीजिये क्योंकि वक़्त कम है। खुलासा हाल आपसे मुलाकात होनेपर कहूंगा।

आज आपको इस कोठरीमें कैद हुए पूरे ५ दिन हो चुके हैं। यहांके नियमानुसार सातवें दिन इस कोठरीके कैदीकी गर्दन तिलिस्मके बाहर निकालकर मारी जाती है, उसमें अब सिर्फ दोही दिन बाकी हैं इस लिये आपको जल्द इस कोठरीसे निकल भागना चाहिये और उसकी तरकीब मैं नीचे लिखता हूं।

जिस कोठरीमें आप कैद हैं उसमें हाथोंमें भाले लिये सङ्ग-मरमरकी चार पुतलियां चार कोनोंपर खड़ी हैं। आपने देखा होगा कि उनकी तरफ पैर बढ़ानेहीसे वह भाला तानकर आगे बढ़नेवालेको निशाना बनाती हैं। वास्तवमें वह सङ्गमरमरकी नहीं बल्कि उसी रङ्गके किसी मसालेसे रँगी हैं। अस्तु उनकी तरफ बढ़ना मानो अपनेको खुद उनका शिकार बनना है। जहां आपने फर्शके उस हिस्सेमें पैर रखा जो जरा खुरखुरा है कि साथ ही वह आपको घायल करेंगी। ईश्वरकी बड़ीही कृपा आपपर थी कि आपने बुद्धिमानीसे काम लिया और फर्शके उस हिस्सेमें पैर रखनेका साहस न किया। अच्छा तो अब आप पुत-लियोंकी तरफ बढ़नेका इरादा छोड़ दीजिये और फर्शके बीचों-बीच ध्यान दीजिये। वहां आपको पैसे बराबर एक काला निशान दिखायी देगा आप उस निशानको अपने दाहिने हाथके अङ्गूठेसे खूब जोर लगाकर दबाइयेगा साथही उत्तरके कोने वाली पुतली अपना नुकीला भाला अपने दाहिने पैरमें भोंक देगी और उसका (पुतलीका) मुंह खुल जायगा। आप निडर आगे बढ़िये और

उसकी जीभ पकड़कर जोरसे खींच लीजिये। करीब पांच मिनटतक आपको जीभ पकड़े रहना चाहिये। इसके बाद एक हलकी आवाजके साथ काले निशानके थोड़ी ही दूरपर फर्शका एक चौखूटा पत्थर पल्लेकी तरह खुल जायगा और वहां एक तहखाना दिखायी देगा। आप पुतलीके हाथसे भाला लेकर बेखौफ तहखानेमें उतर पड़िये। तहखानेका गोल चक्करदार सीढ़ियोंका सिलसिला आपको नीचेकी फर्शपर पहुंचा देगा। तहखानेमें खौफनाक अन्धेरा है। बेसोचे समझे आगे न बढ़ियेगा क्योंकि फर्शके बीचोंबीच एक मुरदेका पिंजर (ठठड़ी) हाथ फैलाये खड़ा है, आगे बढ़ते ही चिपट जायगा और जबतक अपनी ही तरह पकड़े हुए आदमीको न कर डालेगा कभी न छोड़ेगा। आप अन्दाजसे बीचोंबीच निशाना ताककर एक ऐसा भाला मारिये कि उसकी छातीमें घुस जाय। मगर सावधान! अगर पहला भाला कामयाब न हुआ तो फिर खैर नहीं! पिंजर वारके खाली जातेही उछलकर पकड़ेगा और फिर जानही लेकर छोड़ेगा। पिंजरकी छातीमें भाला धंसतेही उसकी सारी हड्डियोंमें आपसे आप आग लग जायगी और वह देखते देखते जल भुन कर खाक हो जायगा। उसके जलतेही तहखानेके चारों कोनोंसे चार सांप फुफकार मारते हुए आपकी तरफ बढ़ेंगे। मगर आप उनका कुछभी ख्याल न कर शीघ्रतासे पिंजरके जले हुए राखके ढेरपर हाथ डालियेगा। उसमें आपको एक चमकीली सोनेकी अङ्गूठी और एक ताम्रपत्र मिलेगा। आप पहले अंगूठीको पहनकर ताम्र-पत्रपर अधिकारकर लीजियेगा। बस आगेकी कार्रवाई आपको उसी ताम्र पत्रसे मालूम होगी मगर अंगूठी और ताम्र-पत्रपर अधिकार करनेके लिये आपको बहुत फुर्तीसे काम ले‍ा चाहिये अगर जरा भी ढील हुई कि साथही चारों सांप राख-परघेरा बान्धकर बैठ जायगे और आप जन्मभरके लिये उस तह-

खानेमें अपनेको कैद पायेंगे, फिर किसी प्रकार भी आपका छुट कारा तिलिस्मसे न होगा ।

बस मैं अपने पत्रको यहीं समाप्त करता हूं । "तिलिस्म-जलन्धर"के बाहर होतेही आप मुझे अपनी सेवामें उपस्थित पायेंगे इति ।

"तिलिस्म-जालन्धर" } आपका सेवक—
सरदार कि० सिंह, वर्त्तमान दारोगा ।"

राजकुमार पत्र पढ़कर बड़ेही प्रसन्न हुए और उन्होंने एक बार पत्रको फिर पढ़ा । इसके बाद पत्रको अपने जेबके हवाले किया और फर्शके बीचोंबीच काले निशानको खोजने लगे । उन्हें अपने पैरके पासही पैसे बराबर गोल एक काला निशान दिखायी दिया । राजकुमारने दाहने हाथके अंगूठेसे काले निशानको जोरसे दबा दिया ; साथही उत्तर तरफ वाली पुतलीने अपने हाथका भाला जोरसे अपने पैरमें धंसा लिया और अपना मुंह खोल दिया । राजकुमारने आगे बढ़कर पुतलीके खुले हुए मुंहमें हाथ डाला और उसकी जीभको जोरसे पकड़कर बाहर खींच लिया । पांच मिनिट पूरे होते न होते एक धड़ाकेका शब्द हुआ और काले निशानके बगलका एक चौखूटा पत्थर पल्लेकी तरह खुल गया । राजकुमारने पुतलीके हाथसे भाला ले लिया और तहखानेमें उतर पड़े । वहां उन्हें सीढ़ियोंका गोल चक्करदार सिलसिला दिखायी दिया । राजकुमार धड़धड़ाकर नीचे उतर गये, करीब २० डण्डा सीढ़ी खतम करनेपर उन्हें तहखानेकी फर्श मिली । फर्श-पर राजकुमार जरा ठहरे फिर ईश्वरका स्मरणकर उन्होंने अपने हाथके भालेको सीधा किया और तहखानेके बीचोंबीच अन्धकारको लक्ष्यकर इस जोरका भाला मारा कि वह पिंजरको छातीमें धंस

गया। साथही फक फक कर पिंजरके सिरसे आगकी लपटें निकलने लगीं और क्रमश: वह उसके शरीरभरमें फैल गयी। देखते देखते पिंजर जल भुनकर राखका ढेर हो गया और तहखानेके चारों कोनोंसे बड़े बड़े फन वाले चार सांप फुफकार मारते हुए बड़ी तेजीसे आगे बढ़े। दूसरा आदमी होता तो निस्सन्देह डरके मारे या तो बेहोश होकर वहीं गिरपड़ता और पागलोंकी तरह ऊपर भाग जाता। मगर हमारे राजकुमार एक साहसी और वीर पुरुष थे। वह बड़ी तेजीसे राखके ढेरकी तरफ झपटे और सांपोंके पहुंचनेके पेश्तरही उस ढेरमेंसे एक प्रकाशमय अंगूठी और तांबेका पत्तर खोज निकाला। दूसरे क्षण अंगूठी उनकी उंगलीमें थी। सांप जहां तक बढ़े थे वहीं फन उठाये ठहर गये। राजकुमारने पत्तरको चूमा और अंगूठीके प्रकाशको पत्तरके साथ लगाकर देखा तो उसमें दोनों ओर कुछ इबारत लिखी पायी। साथही पत्तरमें लिखे अक्षर आगकी तरह चमकने लगे। पत्तरकी लिखी इबारत संस्कृत भाषामें थी। राजकुमार संस्कृतके पूरे पण्डित थे उन्होंने थोड़ा मजमून पढ़ा। उसमें यह लिखा था: —

"तिलिस्मके तोड़नेवालेको चाहिये कि वह शीघ्रतासे अपनेको पुतलियोंवाली कोठरीमें पहुंचावे क्योंकि चारों सांप बहुत जल्द अपना विष उगलने लगेंगे और विषमें आग लगकर तहखानेमें ऐसा जहरीला धूंवा फैल जायगा कि तहखानेका खड़ा मनुष्य एकाएक अन्धा होकर वहीं बेहोश हो जायगा।"

राजकुमारने यहीं तक पत्तर पढ़कर जेबके हवाले किया और शीघ्रतासे सीढ़ियोंको पारकर पुतलियोंवाली कोठरीमें अपने तईं पहुंचा दिया।

कुछ देरतक राजकुमार कोठरीमें टहलते रहे इसके बाद फिर उन्होंने पत्तर देखा तो वह लिखा था:—

"अब तुमको चाहिये कि अपने हाथके भालेको दक्षिण वाली पुतलीकी नाभीके बीचोंबीच जोरसे गड़ा दो। भालेकी नोक गड़तेही पुतली वहीं लेट जायगी और उसके पीछेकी दीवारमें एक पतली सुरंग दिखायी देगी। तुम पुतलीकी पीठपरसे होते हुए बेखौफ सुरंगमें घुस जाओ। सुरंगके मुहानेपर एक बन्द दरवाजा मिलेगा, उसमें एक ऐसी लात मारो कि वह खटसे चौखट लेकर अलग हो जाय। दरवाजेके बाहर एकाएक न निकल पड़ना क्योंकि वहां एक—"

राजकुमारने यहीं तक पढ़कर पत्तर जेबके हवाले किया और भालेकी नोक दक्षिणवाली पुतलीके पेटमें गड़ा दी। साथही पुतली लम्बो-लम्ब पेटके बल लेट गयी और उसके पीछे एक छोटीसी सुरंग नजर आयी। राजकुमार पुतलीकी पीठसे होते हुए सुरंगके अन्दर घुस गये। करीब ३० कदम जानेपर काठका एक बन्द दरवाजा मिला। राजकुमारने अपनी भरपूर ताकतसे दरवाजेमें एक लात ऐसी लगायी कि उसके दोनों पल्ले अरअराकर चौखटको लिये दिये एक तरफ गिर पड़े। साथही राजकुमारकी नजर सुरंगके बाहरी हिस्से पर पड़ी और वह एकाएक खुशीके मारे उछल पड़े। उनके सामने ही एक लम्बा चौड़ा गोल कमरा था और उसकी दीवारोंमें सिलसिलेवार छोटी छोटी कई कोठड़ियां बनी थीं जिनके दरवाजे मजबूत लोहेके जङ्गलोंसे बन्द थे। उन्हींमेंकी एक कोठरीमें जो सुरङ्गके ठीक सामने पड़ती थी दरोगाकी भाञ्जी किशोरी छड़ोंका सहारा लिये खड़ी राजकुमारको अपनी हसरत भरी निगाहोंसे देख रही थी, उसकी आंखोंसे दुधारे आंसुओंकी लड़ी चल पड़ी थी और उसका पीला चेहरा सुर्खीके रङ्गमें बदल गया था।

राजकुमार इसी सुन्दरीको देखकर खुशीके मारे उछल पड़े

थे और चाहते थे कि एकही छलांगमें अपनेको किशोरीके पास पहुंचा दें कि साथही किशोरीने अपनी सुरीली आवाजमें चिल्लाकर कहा—

"प्यारे! खबरदार, अन्दर पैर न रखना वर्ना खतरेमें पड़ोगे। देखो कमरेकी छतपर क्या है।"

राजकुमारने जो छतपर निगाह दौड़ायी तो उन्हें एक सुनहरा जाल कमरेकी गोलाई भरमें टंगा दिखायी दिया, जिसके बीच बीचमें चोखे-चोखे फल वाली हजारों छूरियां लटक रहीं थीं। राजकुमार वहीं ठहर गये और पत्तर निकालकर पढ़ने लगे। यह लिखा था—

"खबरदार, इस कमरेमें बेसमझे-बूझे कभी पैर न रखना, यही खास "तिलिस्म—जालन्धर" है। कमरेमें पैर रखतेही एकाएक सुनहरा जाल ऊपर गिरेगा और उसमेंकी लगी छूरियां जिस्मके टुकड़े टुकड़े उड़ा देंगी। यहां तुम अपने हाथकी उस अंगूठीसे काम लो, जो तुम्हें इस पत्तरके साथ मिली है। जालके बीचोंबीच नीले रङ्गकी एक छूरी लटक रही है। अंगूठीको ऐसे अन्दाजसे फेंको कि वह छूरीसे लग जाय। सावधान, यह अन्तिम परीक्षा है अगर इसमें कामयाब हुए तो फिर तिलिस्म फतह है; वर्ना और कैदियोंकी तरह तुम भी तिलिस्मी कैदी समझे जाओगे और इन्हीं कोठरियोंमेंसे अपनेको किसी एक कोठरीमें कैद पाओगे।"

यहीं तक पत्तरको पढ़कर राजकुमारने जेबमें रख लिया और हाथसे अंगूठी उतारकर ईश्वरका स्मरण करते हुए निशाना ताककर ऐसा फेंका, कि अंगूठी नीली छूरीसे चिपट गयी और साथही जालमें एक बिजलीसी दौड़ गयी। जोर जोरसे कई धड़ाकेकी आवाजें हुईं और कमरेमें भयानक अन्धेरा छा गया। कमरेकी

दीवारें हिलती हुई मालूम हुईं और कमरेकी जमीनके नीचे बड़े जोरकी गड़गड़ाहटकी आवाजें सुनायी देने लगीं ।

करीब दस मिनट तक यही हालत रही और इसके बाद अन्धकार क्रमशः घटते घटते साफ हो गया । अब जो राजकुमारने चारों तरफ निगाह दौड़ायी तो उनके आश्चर्यका ठिकाना न रहा । कमरेका सुनहरा जाल लापता था, कमरेकी कुल कोठरियोंके दरवाजे खुले थे और किशोरी बेहोश पड़ी थी । फर्श साफ थी और उसके बीचोंबीच एक सुनहरी जड़ाऊ रकाबीमें चांदीका एक पत्तर, सुनहरी तालियोंका एक गुच्छा और वही तिलिस्मी अंगूठी रक्खी थी जो राजकुमारने फेंकी थी ।

राजकुमारने पत्तर निकालकर देखा यह लिखा था—

"बस अब "तिलिस्म जालन्धर" फतह हुआ । तुम्हें मैं "तिलिस्मके राजा" कहकर मुबारकबादी देता हूं । तिलिस्मी-अंगूठी, खजानेकी तालियोंका गुच्छा और चांदीका पत्तर उठा लो । इस कमरेमें बहुतसे आदमी कैद हैं उन्हें मुक्त करो और यहांका बेशुमार खजाना जिसका हाल तुम्हें चान्दीके पत्तरसे मालूम होगा अपने अधिकारमें करलो । बस अब मेरा काम समाप्त हुआ । आशीर्वाद ।

तुम्हारा हितेच्छु,—

राजा चित्रशाल-तिलिस्म-निर्मता ।

राजकुमारने पत्तरको चूमकर जेबमें रख लिया और धड़धड़ाते हुए कमरेमें जाकर अंगूठी पत्तर और तालियोंके गुच्छेको उठा लिया साथही जोर जोरसे सुरीले बाजोंकी लयदार आवाजें सुनायी देने लगीं । कमरेके एक ओरका दरवाजा खुला और पांच आदमी लक-दक बेशकीमती पोशाक पहने अन्दर आते नजर आये । इन पांचों आदमियोंमेंसे एक सबके आगे था और

उसके हाथोंमें एक सुनहरा जड़ाऊ थाल था। थालमें एक बहुमूल्य राजसी जोड़ा, कुछ जवाहिरातके जड़ाऊ गहने, एक हीरोंकी जड़ाऊ कब्जेवाली छोटी तलवार मय कमर-बन्दके, और एक जड़ाऊ जग-मगाता हुआ बादशाहोंके पहननेके योग्य सुन्दर ताज था। ताजमें बहुमूल्य हीरे जड़े हुए थे और सच्चे मोतियोंके गुच्छे लटक रहे थे। बाकीके चार आदमी अपने अपने हाथोंमें ताजे और खुशबूदार फूलोंके गजरे तथा रङ्गबिरङ्गे फूलोंके गुच्छे लिये हुए थे।

पांचों आदमियोंने राजकुमारके पास पहुंचकर अदबसे झुका झुकाकर सलामें कीं और क़ायदेसे एक ओर खड़े हो गये। अब थालवाला आदमी आगे बढ़ा और उसने राजकुमारको जोड़ा पहनाकर माथेपर ताज रख दिया, थालमेंसे केसरकी कटोरी निकालकर तिलक लगाया और बड़े बड़े मोतियोंका कंठा उनके गलेमें पहना दिया और थाल उनको नजर किया। चारों तरफसे मुबारकबादियां होने लगीं और एक अपूर्व समा बन्ध गया। अब चारों आदमियोंकी पारी आयी, चारों आगे बढ़े और उन्होंने बारी बारीसे राजकुमारको केसरका तिलक किया और फूलोंके गजरे गलेमें पहना दिये तथा रङ्गबिरंगे फूलोंके गुच्छे उनको नजर किये।

राजकुमार हक्के-बक्केसे चुपचाप उनकी कार्रवाइयां देख रहे थे और मनही मन खुश होते थे। यह पांचोंही आदमी राजकुमारके लिये अजनबी थे क्योंकि आजतक उन्होंने कभी इनकी शक्लें न देखीं थीं। राजकुमार उन लोगोंसे कुछ पूछा ही चाहते थे कि एक आदमी आगे बढ़ा, यह वही आदमी था जिसने कुंवरको ताज पहनाया था। उसके आगे बढ़तेही बाजेकी आवाजें बन्द हो गयीं और चारों तरफ़ सन्नाटा छा गया। उस आदमीने झुकाकर एक लम्बी सलाम की और यों कहने लगा:—

आदमी—"राजकुमार! मैं आपको तिलिस्मका शाहंशाह कहकर मुबारकबादी देता हूं। आजसे आप कुल तिलिस्मके मालिक हुए और तिलिस्मी-मनुष्य आपकी प्रजा। अब आप मेरे साथ आइये और यहांके बेशुमार खजानेपर अपना कब्जा कीजिये।"

राजकुमार—"महाशय! आपको इस बहुमूल्य कृपाके लिये मैं आपको हृदयसे धन्यवाद देता हूं। अब आप कृपाकर मेरे कुछ सवालोंका जवाब दीजिये जिससे मेरे दिलमें तसल्ली हो।"

आदमी—"कहिये, मैं तो आपका दास हूं फिर इस लम्बी चौड़ी भूमिका बांधनेका क्या प्रयोजन?"

राजकुमार—"इसी लिये कि आप हमारे माननीय हैं। अच्छा अब यह कहिये कि आप कौन हैं और हमारे ऐयार कहां हैं?"

आदमी—"मैं वही हूं जिसने आपको पुतलियोंवाली कोठरीमें चीठी फेंककर अपना परिचय दिया था और जिसकी वजहसे आप इतनी दूरतक कामयाब होसके हैं। आपके ऐयारोंको भी मैं "पुतलीमहल" से निकाल लाया हूं वह बहुत जल्द आपसे मिलेंगे।"

राजकुमार—"यह बात है! तो कहिये वह लोग कहां हैं? मैं उनसे जल्द मिलना चाहता हूं।"

आदमी—(जल्दीसे) "यहीं आपके सामने, मिलिये न, अब देर क्या है?"

यह कहते हुए उस आदमीने चारों ऐयारोंकी तरफ कुछ इशारा किया जिसके साथही उन लोगोंने अपने अपने चेहरोंसे शक्ल बदलनेवाली झिल्लियां खींच लीं और एकसाथ राजकुमारके पैर छू लिये। राजकुमार आश्चर्यसे उनकी सूरतें देखते रहे और जब उन्होंने पहचान लिया तो बड़ी मुहब्बतके साथ बारी बारीसे चारों ऐयारोंको गले लगा लिया।

अहा पाठक! जिन्हें हम अबतक अजनबी समझ रहे थे वह तो हमारे चिरपरिचित ऐयार हीरासिंह, दामोदरसिंह, लालसिंह और विश्वनाथसिंह ही निकले!

कुछ देर तक तो हमारे चारों ऐयार, वह अजनबी और राजकुमार आपसमें तरह तरहकी सलाहें करते रहे मगर साथही बाहरसे शोर-गुल और धड़धड़ाहटकी आवाजें सुनकर चौंक पड़े। सबने अपनी अपनी तलवारें म्यानसे खींच लीं और दरवाजेकी तरफ तेजीसे झपट पड़े। वहां जाकर इन लोगोंने देखा कि करीब सौ नकाबपोश-सिपाही नंगी तलवारें लिये तेजीके साथ इसी ओर आरहे हैं तो सबके सब घबड़ा गये और बहुत जल्द सम्हलकर आनेवाली आफतका मुकाबला करनेके लिये अपनी अपनी जगहपर डटकर खड़े होगये। नकाबपोशोंका दल दरवाजेके पास पहुंचाही था कि उनमेंसे एक नकाबपोश जो शान-शौकतसे सबका सरदार जान पड़ता था आगे बढ़कर राजकुमारसे ललकारकर कहा—

सरदार—"चन्द्रसिंह! अब तुम मय अपने साथियोंके अपनेको हमारा कैदी समझो और अगर अपनी कुशल चाहते हो तो हथियार रखकर हमारे पास आजाओ वर्ना अभी मैं अपने बहादुर सिपाहियोंको हुक्म दूंगा और वह तुम लोगोंको बड़ी बेइज्जतीके साथ बातकी बातमें कैद करलेंगे।"

राजकुमार—(मुसकुराकर) "किस लिये? हमारा क्या कुसूर है?"

सरदार—"बड़े भोले हैं मानो कुछ जानते ही नहीं। खैर, अगर तुमलोग अपनेको बेकसूर समझते हो तो हमारे महाराजके पास चलकर उसका सुबूत देना। अगर बेकसूर निकले तो छोड़ दिये जाओगे।"

हीरासिंह—(आगे बढ़कर) "अबे तू-तड़ाक किसे करता है?

अदबसे बातेंकर वर्ना जबान पकड़कर खींच लूंगा। सब शेखी हवा होजायगी।"

हीरासिंहकी कड़ी बातोंने सरदारको आग-बबूलाकर दिया और वह ताव-पेंच खाता हुआ तलवार तानकर हीरासिंहपर टूट-पड़ा हीरासिंह भी पैंतरा बदलकर मुस्तैद खड़े थे। दोनोंमें झना-झन तलवारें चलने लगीं और दोनोंही लपक-लपककर अपनी अपनी फुर्तीले हाथोंकी सफाई दिखाने लगे। दोनोंही जवान पूरे तलवरिये जान पड़ते थे और दोनोंही खूब चुस्त चालाक और फुर्तीले थे।

नकाबपोशोंका दल चुपचाप खड़ा अपने सरदारकी बहादुरी देख रहा था और राजकुमारका गरोह अपने वीरकी वीरतापर मुग्ध था। कुछ देरतक तो खूब जमकर तलवारें चलीं क्योंकि दोनोंही बराबरके जवान थे और एक दूसरेसे किसी प्रकार कम न थे; मगर हीरासिंह ऐयार बच्चा था, उसने सरदारकी दो चार वार खाली देकर उसके बदनमें तलवारकी छोटे-मोटे कई खूबसूरत जख्म लगादिये थे। सरदार अब हीरासिंहके फुर्तीले वारोंसे तंग आगया था और उसने अपना वार करना रोककर हीरासिंहके वारोंका बचावही करना शुरूकर दिया था। हीरासिंहने सरदार-को थकता जानकर अपनी तलवारकी तेजी और बढ़ादी और वह हर वारमें चाहता था कि सरदारका सर उतारलें। सरदार अपने दिलमें खूब समझ गया था कि इसपर फतह पाना तो दरकिनार-रहा, अपनी ही जान बचती नजर नहीं आती। मगर सरदारीके घमण्डने उसे अब तक अपने सिपाहियोंकी मदद लेनेसे रोक रखा था। अब जब उसने पूरी तौरसे जान लिया कि बगैर मददके जानकी खैर नहीं है तो अपने नकाबपोश सिपाहियोंको ललकारकर कहा—

"बहादुरो! देखते क्या हो? बान्धलो इन बदमाशों को।" सरदारके हुक्मकी देर थी। साथही "लेना देना" कहते हुए सब नकाबपोश राजकुमार और उनके साथियोंपर टूट पड़े। यह लोग भी जान हथेलीपर लिये लड़ने मरनेको तैयार खड़े थे। उछल उछलकर तलवारें चलाने लगे और अपनी बहादुरीका नमूना दिखाने लगे।

दसवां बयान।

दिनके दो बजेका समय है। गरमी बड़ी कड़ाकेकी पड़ रही है। गरम हवाके झपेटोंसे शरीर झुलसा जा रहा है। आदमीकी तो कौन कहे जंगली जानवर भी ऐसे समय अपने अपने स्थानोंमें दबके पड़े हैं। ठीक इसी समय हम अपने पाठकोंको राजा वीरेन्द्रसिंहकी फौजके पड़ावमें ले चलते हैं।

कृष्णगढ़की फौज सेनापति निहालसिंहकी मातहतीमें आज दो दिनोंसे अपनी सरहदपर डेरा डाले पड़ी है। फौज़का प्रत्येक सिपाही मुस्तैदीके साथ कूच करनेके लिये तैयार है, मगर देर है तो एक अजीतसिंहकी; क्योंकि सरदार अजीतसिंह अभी तक रसद और गोले बारूदकी गाड़ियां लेकर नहीं पहुंचे।

छोटे बड़े सिलसिलेवार खेमोंके बीचोंबीच एक बड़ा ही लम्बा चौड़ा बनाती खेमा खड़ा है; जिसके ऊपर कृष्णगढ़का "सूर्य"के निशान वाला बड़ा झण्डा हवामें फहरा रहा है। खेमेके दरवाज़ेपर दो सन्तरी बन्दूकोंपर सङ्गीन चढ़ाये घूम-घूमकर पहरा दे रहे हैं। खेमेके अन्दर सेनापति निहालसिंह कुछ अफसरोंके साथ बैठे युद्ध सम्बन्धी बातोंपर विचारकर रहे हैं। एक अफसर युद्ध स्थलका नक्शा दिखाकर सरदार निहालसिंहको कुछ समझा रहा है और

वह बड़े ध्यानसे नक़शेके प्रत्येक स्थानोंपर गौरकर रहे हैं। ठीक इसी समय एक सन्तरीने खेमेमें दाखिल होकर सेनापतिको सलाम की और हाथ जोड़कर बोला:—

"महाराज! एक नकाबपोश सवार आपके दर्शनोंकी आज्ञा चाहता है, अगर हुक्म हो तो हाजिर करूं?"

निहाल०—(कुछ सोचकर) "खैर आने दो।"

सन्तरी—"जो आज्ञा" कहकर बाहर चला गया। अफसरने रणभूमिके नक़शेको लपेटकर जेबके हवाले किया और साथही एक नाटे-कदका गठीला जवान चेहरेपर काला रेशमी नकाब डाले भड़कीली जङ्गी पोशाक पहने बदनपर बेशकीमत हरबे लगाये अकड़ता हुआ खेमेमें घुस आया और सेनापतिको एक सलाम रसीदकर बड़ी शानसे खड़ा हो गया।

निहाल०—(एक कुरसीकी तरफ इशारा करके) "इस कुरसीपर बैठ जाओ और अपने आनेका मतलब कह डालो।"

नकाब०—(कुरसीपर बैठते हुए) "मैं महाराज अर्जुनसिंहकी तरफसे दूत बनकर आया हूं और जानना चाहता हूं कि यह चढ़ाई किस बुनियादपर की गयी है?"

निहाल०—(गम्भीर आवाजमें) आप इस मामलेमें क्या अधिकार रखते हैं? क्या आपके पास राजा साहबकी कोई सनद है?"

नकाब०—(जेबसे एक कागज निकालकर) "देखिये यह मोहर किया हुआ सनद-नामा है। कहिये और कुछ सुबूतकी जरूरत है?"

निहाल०—"नहीं। अच्छा तो आप क्या जानना चाहते हैं? यही न कि यह चढ़ाई किस मतलबसे की गयी है? अच्छा तो सुनिये, अब मैं साफ साफ कहता हूं कि राजा अर्जुनसिंहके

खिलाफ बहुतसे ऐसे सुबूत पाये गये हैं जिससे उनको हमारे राज्यसे सरासर दुश्मनी पायी जाती है। उनमेंसे प्रधान कारण कुंवर चन्द्रसिंहको 'पुतलीमहल'में फंसा रखना ही है और इसी बुनियादपर यह चढ़ाई की गयी है।"

नकाब०—"खैर तो इसका नतीजा क्या निकलेगा ? इन थोड़ेसे बुजदिल सिपाहियोंके भरोसे आप हमारे महाराजका मुकाबला करनेके लिये तैयार हुए हैं ? पहिले बिना सोचे समझे किसी बड़े काममें हाथ डाल देनेसे पीछे कितना पछताना पड़ता है, यह आपको मालूम है ?"

निहाल०—(जरा रूखी आवाजमें) "क्या आप हमें धमकाने आये हैं ? अजी जनाब ! बुजदिली और शेरदिलीका सुबूत तो गत पांच वर्ष वाले युद्धमें ही मिल चुका है फिर इन धमकियोंसे क्या नतीजा ? इसका फैसला तो बहुत जल्द जंगके मैदानमें आपसे आप हमारी और तुम्हारी तलवारें करही लेंगी। जबानी जोश दिखलाने और छोटी बातें कहकर अपनी नीचताका परिचय देनेसे क्या फायदा ?"

नकाब०—(मनही मन जलकर) "सरदार साहब ! अब वह जमाना गया जब कि किसी खास वजहसे हमारे महाराजने आपके छोटेसे राज्यके साथ सन्धिकर अपनी उदारताका परिचय दिया था। मगर अब ख्याल रखिये, इस छेड़-छाड़से बहुत जल्द ऐसा समय आवेगा, जब कि कृष्णगढ़का कमजोर जिला मटिया-मेटकर डाला जावेगा और आपके राजाको हमारे महाराजके सामने मुंहमें तिनका दबाकर उनकी कृपाका प्रार्थी होना पड़ेगा, और........."

निहाल०—(बात काटकर जोशके साथ) "बस बस, अब आगे जबान सम्हालकर बातें करना। अब तक तुम्हें दूतके ख्यालसे माफ किया गया है, अगर फिर हमारे राजासाहबकी शानके

खिलाफ कोई लब्ज निकाला तो याद रखना तुम्हारी चुलबुलाती हुई जबान इशारा पातेही तुम्हारे मुंहसे काटकर अलगकर दी जावेगी । जो कुछ कहना चाहो जबान सम्हालकर कह डालो और अपना रास्ता लो ।"

नकाब०—(गुस्से से कांपते हुए) "ईश्वरकी सौगन्ध सरदार निहालसिंह ! तुम्हारी इन जली-भुनी बातोंने मुझे आपेसे बाहर कर दिया । क्या तुम्हें मालूम है कि तुम किससे बेहूदा बर्ताव कर रहे हो ?"

नकाबपोशकी बात सुनते ही सेनापति निहालसिंहका चेहरा मारे क्रोधके लाल हो गया और उन्होंने डपटकर नकाबपोशसे कहाः—

निहाल०—"बस अब तुम मेरे सामनेसे हट जाओ। एक मामूली दूतके साथ मैं वादाविवाद करना अच्छा नहीं समझता। जाओ और अपने राजासे कहदो कि, अगर अपनी जानकी खैर चाहते हो तो कुंवर चन्द्रसिंह और राजकुमारी गुलाबकुंवरिको खातिरके साथ हमारे हवाले कर दें और हमारे महाराजसे माफी-की दरखास्त करें ; वर्ना आजही शामतक मायापुरके किलेकी एक एक ईंट बजा दी जावेगी और अर्जुनसिंहको कैदकर महाराज वीरेन्द्रसिंहके सामने पेश किया जावेगा ।"

नकाब०—(कुरसीसे उठते हुए) "निहालसिंह ! तुम मुझसे बड़ी नीचताका बर्ताव कर रहे हो । तुम मुझे साधारण दूत ही न समझो, मेरे अधिकार तुमसे भी बड़े हैं और मैं महाराजा अर्जुन-सिंहके दरबारमें बड़ी ताकत रखता हूं ! मेरी एक एक बातें ब्रह्मा-का वाक्य होती हैं, और मेरे एक एक इशारोंपर बड़े बड़े उलट-फेर कर दिये जाते हैं । आज मेरी बड़ी बेइज्जती की गयी है और जब-तक मेरी यह (तलवारकी तरफ इशाराकर) खूनकी प्यासी तल-वार तुम लोगोंकी गर्दनोंपर......"

नकाबपोशकी बात अभी पूरी भी नहीं होने पायी थी कि मुरारीसिंह नामक एक सरदारने झपटकर नकाबपोशका गला पकड़ लिया। नकाबपोश भी मामूली आदमी न था। उसने जोरसे मुरारीसिंहको पीछे ढकेल दिया और म्यानसे तलवार खींचकर फुर्तीके साथ मुरारीसिंहपर भरपूर वार किया। अगर मुरारीसिंह जरा भी चूकता तो उसी समय उसके दो टुकड़े दिखायी देते। मगर वह बड़ा ही फुर्तीला और बहादुर था, उसने साथ ही पैंतरा बदलकर नकाबपोशके वारको खाली दिया और फौरन तलवार खींचकर लड़नेके लिये मुस्तैद हो गया। दोनोंमें तलवारें चलने लगीं और दोनों ही अपनी अपनी काट करने लगे।

नकाबपोश और मुरारीसिंहको एकाएक लड़ते देखकर सेनापति निहालसिंहने दो सरदारोंको कुछ इशारा किया। इशारा पाते ही दोनों सरदारोंने दो तरफसे दोनों लड़ाकोंको खींचकर अलग अलगकर दिया। दोनोंहीको हलके हलके जखम आये थे। नकाबपोशको सरदारोंकी दस्तन्दाजी अच्छी नहीं लगी उसने कड़ककर कहा:—

नकाब—"इसी वीरतापर बहादुरीका दम भरते हो? छीः अगर ऐसी ही नामर्दी दिखलानी थी तो क्या मुंह लेकर लड़ने आये थे।"

मुरारीसिंह इसका कुछ जवाब दिया ही चाहते थे कि सेनापति निहालसिंहने उन्हें रोककर नकाबपोशसे कहा:—

निहाल०—"तुम्हारे यहां चाहे यह दस्तूर हो, मगर मैं यह नहीं पसन्द करता कि एक मामूली दूतको अपने खेमेमें अपने किसी सरदारसे लड़ाकर उसकी जानलूं। अगर तुम्हें ऐसाही बहादुरीका घमण्ड है तो खेमेके बाहर होकर मैदानमें अपना हौसला निकाल लो।"

नकाब०—"खैर मैं बाहर इनकी (मुरारीसिंहकी तरफ इशारा कर) प्रतीक्षा करता हूं ।"

यह कहता हुआ नकाबपोश खेमेके बाहर निकल गया और मैदानमें पहुंचकर मुरारीसिंहकी प्रतीक्षा करने लगा। मुरारीसिंह भी सेनापतिसे आज्ञा ले खेमेसे बाहर निकल गये और नकाबपोशके मुकाबलेमें पहुंचकर लड़नेके लिये तैयार होगये। सेनापति गिरधारसिंह सब सरदारोंके खेमेसे बाहर होकर दोनों वीरोंका युद्ध देखने लगे।

नकाबपोश और मुरारीसिंहमें तलवारें चलने लगीं। दोनों ही वीर बराबरीके थे और तलवारके फनमें दोनों ही चुस्त-चालाक तथा फुर्तीले मालूम होते थे। कुछ देरतक दोनों वीर खूब जोशके साथ लड़ते रहे मगर अब मुरारीसिंहके वारोंका जवाब देना नकाबपोशको मुश्किल जान पड़ा। नकाबपोशने अपने दिलमें बखूबी जान लिया कि अगर कुछ देरतक मुरारीसिंहकी तलवार इसी तेजीके साथ चलती रही तो मेरी जानकी खैर नहीं। क्योंकि अब उसके हाथ भर गये थे और उसे मुरारीसिंहके वार रोकने मुश्किल जान पड़ने लगे थे। वह अपने भागनेकी फिक्र करने लगा, मगर बेइज्जतीके ख्यालने उसे लड़ाईके मैदानसे भागनेके लिये रोका। मुरारीसिंह उसके दिली मनसूबोंको जो उसके चेहरेसे प्रगट हो रहे थे ताड़ गये। उन्होंने अपनी तलवारकी तेजी कुछ और बढ़ा दी और कमरका धोखा देकर नकाबपोशके दाहिने कन्धेपर एक भरपूर वार किया। नकाबपोश अभी सम्हलने भी नहीं पाया था कि तलवार उसके कन्धेको काटती हुई दाहिना हाथ लिये-दिये अलग हो गयी। नकाबपोशका हाथ कटकर पृथ्वीपर गिर पड़ा और वह चक्कर खाकर जमीनपर बैठ गया। मुरारीसिंह चाहते थे कि बढ़कर उसका सिर धड़से अल-

न कर दें कि साथही सेनापति निहालसिंहने ललकारकर कहा—

निहाल०—"बस बस, मुरारीसिंह ! यह बात राजनीतिके विरुद्ध है। खबरदार अब एक बार भी न करना।"

मुरारी०—"जो आज्ञा, किन्तु नकाबपोशके असली रूप जाननेकी बड़ी इच्छा है। अगर आज्ञा हो तो......"

निहाल०—(बात काटकर) " हां नकाब उलटकर देख सकते हो क्योंकि......"

बात खतम होते न होते मुरारीसिंहने बढ़कर नकाबपोशकी नकाब उलट दी और साथ ही ताज्जुबके साथ सेनापतिके मुंहसे निकल गया—"हैं ! यह तो राजा अर्जुनसिंहका शाला सुन्दरसिंह है !"

सेनापतिकी बात सुनकर सब सरदारोंको बड़ा ताज्जुब हुआ और यह लोग आपसमें तरह तरहकी बातें करने लगे। इतने ही में एक तरफकी झाड़ीमेंसे कुछ खरखराहटकी आवाज सुनायी दी और साथ ही चार नकाबपोश घोड़ा दौड़ाते हुए उसमेंसे निकलकर सुन्दरसिंहके पास पहुंचे। सुन्दरसिंह अब पूरे तौरसे बेहोश हो चुका था और उसे तन बदनकी सुध न थी। सवारोंमेंसे एकने घोड़ेसे कूदकर बेहोश सुन्दरसिंहको अपने घोड़ेपर सवार कराया और देखते देखते चारों सवार जिधरसे आये थे तेजीके साथ घोड़ा दौड़ाते हुए उधर ही निकल गये। सेनापति निहालसिंहके इशारेसे किसी सरदारको हिम्मत न पड़ी कि नकाबपोशोंके काममें बाधा दे सके।

नकाबपोशोंके आंखोंकी ओट हो जानेपर सेनापति निहालसिंह मय सरदारोंके अपने खेमेकी तरफ बढ़े मगर साथही उन्हें बहुत दूरपर घोड़ेके टापोंकी आवाज सुनायी दी और कुछही देरमें एक सवारने नजदीक आकर सेनापतिको सलाम किया और एक बन्द

लिफाफा उनके हाथमें रख दिया। निहालसिंहने लिफाफेमेंसे पत्र निकालकर पढ़ा और साथही सरदारोंकी तरफ देखकर बोल उठे— "सरदार अजीतसिंह सब सामानके आ रहे हैं। आज रातहीमें यहांसे कूच करनेकी सलाह उन्होंने इस पत्रमें दी है। आप लोग अपनी अपनी मातहत फौजमें यह हुक्म सुना दें कि "सबेरे चार बजते-बजते कूच हो जायगा।" "जो आज्ञा" कहकर सरदार लोग इधर उधर फौजी कैम्पोंमें चले गये और अपने अपने मातहत सिपाहियोंको सेनापतिकी आज्ञा सुना दी।

शामके पांच बजते बजते सरदार अजीतसिंह बड़ी धूमधामके साथ एक हजार सवारोंके बीच घिरे हुई बेशुमार रसद तथा गोला बारूद इत्यादिकी गाड़ियां लिये कैम्पमें आ पहुंचे। निहालसिंहने अपने मातहत सरदारोंके साथ आगे बढ़कर सरदार अजीतसिंहसे बड़े तपाकके साथ हाथ मिलाया और साथही उनके सम्मानमें तीन तोपोंकी सलामी उतारी गयी। जङ्गी-बाजे बजने लगे और कुल फौजमें आनन्दका समा बन्ध गया।

अजीतसिंहके साथ वाले सिपाहियोंने कमरें खोलीं। उनके घोड़े सईसोंने अस्तबलमें पहुंचा दिये और रसद-इत्यादिकी गाड़ियोंपर शस्त्रधारी सिपाहियोंका कड़ा पहरा पड़ने लगा।

निहालसिंह, सरदार अजीतसिंहको अपने खेमेमें ले गये और उनके मामूली कामोंसे छुट्टी पा लेनेपर तरह तरहकी सलाहें करने लगे। रातके आठ बजे एक बड़े ही लम्बे चौड़े शामियानेके नीचे धूमधामके साथ भोजनका प्रबन्ध किया गया। उत्तम उत्तम स्वादिष्ट भोजन परोसे गये, और सेनापति निहालसिंहने सरदार अजीतसिंह तथा और बड़े बड़े अफसरोंके साथ हंसी खुशीसे भोजन किया।

एक बड़े सजे सजाये शामियानेके नीचे जलसेका इन्तजाम किया गया और बड़े बड़े नामी गवैयों तथा वीरता-पूर्ण जोश दिलानेवाले कवियोंका जमाकड़ा हुआ। भोजनोपरान्त सब सरदार जलसे वाले शामियानेमें पहुंचे और बड़े ठाट-बाटसे अपनी अपनी कुर्सियोंपर बैठ गये। सरदारोंके बैठतेही सुरीले बाजोंकी तबियत फड़का देनेवाली आवाजें आने लगीं, और गवैयोंके प्रवीण झुण्डने अपने गिटकिरीदार सुरीले गलेसे एक बड़ाही मजेदार गाना शुरू किया। चारों तरफसे वाह! वाह!! की आवाजें आने लगीं और उत्साहित होकर गवैये अपनी अपनी करामात दिखाने लगे!

चारों तरफ दूर दूरतक हरा भरा साफ मैदान चला गया था। ठंढी ठंढी हवाके मुलायम झपेटे आ रहे थे। गवैयोंकी सुरीली तेज आवाजें खूबसूरत बाजोंके साथ मिलकर दूर दूरके पेड़ोंसे टकराने लगीं। पहरेदारोंको छोड़कर प्राय: सभी सिपाही शामियानेके चारों तरफ आ डटे और अपने अपने दोस्तोंमें गवैयों-की तारीफें करने लगे। कुछ देरतक तो गाना खूब जमा मगर अब रात ज्याद: हो चली थी और कवियोंकी लड़ाई बाकी ही थी। लाचार सेनापतिका इशारा पाकर गवैयों और बजवैयोंने गाना बन्द किया और डेरा डण्डा उठा अपने अपने खेमोंका रास्ता लिया। अब कवियोंकी पारी थी। इशारा पातेही कवियोंका झुण्ड बीचमें आ डटा, और पारी पारीसे प्रत्येक कवि अपनी वीरता-पूर्ण जोशीली कविताका रस पिलाने लगा। एकसे एक कवि बढ़कर था। एक कवित्तके खतम होते न होते दूसरा कवि अपना कवित्त शुरूकर देता और उसमें बड़े बड़े युद्धोंका दृश्य तथा बड़े बड़े वीरोंकी वीरताका वर्णन करता जिससे उपस्थित सरदारगण बार बार फड़क उठते और रह रहकर अपनी कमरसे लटकती हुई तलवारोंके कब्जोंपर हाथ डाल देते। उनकी आकृतिसे जान पड़ता कि यदि

अभी किसमतका मारा कोई दुश्मन इनके सामने आ पड़े तो उसे यह लोग कच्चा ही चबा जायंगे।

अब एक नौजवान कवि खसकता हुआ बीचमें आ डटा और महाभारतका वर्णन करते हुए महारथी भीष्म-पितामह तथा प्रसिद्ध वीर अर्जुनके युद्धका वर्णन करने लगा। उसकी कविता ऐसी जोशीली और भाव-पूर्ण थी कि सब वीर मस्त हो हो कर झूमने लगे और वाह वाहकी बौछार चारों तरफसे होने लगीं। कवि बहुतही प्रसन्न हुआ और उसी जोशमें वीर-वर अर्जुनपुत्र महारथी अभिमन्युका सप्त-महारथियोंके साथ युद्ध करनेका दृश्य दिखाने लगा। उसने इस कवितामें ऐसा रूपक खड़ा किया, कि सब वीरोंके सामने अभिमन्युके युद्धकी तस्वीर घूमने लगी। अभिमन्युकी वीरतापर वाह वाह और सप्त-महारथियोंके अत्याचारपर छी: छी: की आवाजें आने लगीं। ठीक इसी समय बहुत दूरपर एक बड़ा ही प्रकाश दिखायी दिया और साथ ही गड़गड़ाता हुआ एक बड़ा गोला कैम्पके बीचोंबीच आकर फट गया! फौजमें बड़ी ही घबराहट फैल गयी। जलसा बर्खास्त हुआ; और कारण जाननेके लिये सरदार लोग इधर उधर दौड़ने लगे। अभी यह लोग पूरे तौरसे सम्हले भी न थे, कि फिर एक धड़ाकेकी आवाज़ हुई और पहलेसे दूनी आवाजके साथ एक गोला जलसे-वाले शामियानेके बीचोंबीच आकर फटा। कुशल यह हुई कि जलसा बरखास्त होगया था और शामियानेके नीचे कोई भी न था। अब कारण प्रत्यक्ष समझमें आगया कि अचानक दुश्मनोंने चढ़ाई करदी है और उनका इरादा धोखेमें कुल फौजपर गोले बरसाकर सब सिपाहियोंको तितर-बितरकर देनेका था। किन्तु सौभाग्यसे जलसेके कारण सब फौज अभी जाग रही थी और लड़ने मरनेपर मुस्तैद थी।

सेनापति निहालसिंहने चारों तरफ सरदारोंको 'दौड़ा दिया और बड़ी मुस्तैदीके साथ लड़ाईका इन्तजाम करने लगे। बिगुल बजाया गया, लाल हरी लालटेनोंसे संकेत होने लगे, शीघ्रताके साथ एक स्थानसे दूसरे स्थानपर तोपखाने हटाये जाने लगे और बातकी बातमें दुश्मनोंके आने वाले गोलोंके मुकाबलेपर कतारके साथ बड़ी बड़ी विरंजी तोपें लगा दी गयीं। सामनेका आनेवाला प्रकाश क्रमशः बढ़ता जाता था और रह-रहकर धड़ा-धड़ गोले बरस रहे थे, जिनके फटनेसे बार बार निहालसिंहकी फौजको कुछ न कुछ क्षति उठानी पड़ती थी।

दूसरा बिगुल बजा और कुल फौज हरबे-हथियारोंसे लैस दिखायी देने लगी। रणमहताबियां जल गयीं थीं जिनके जरिये उस लम्बे चौड़े कैम्पमें बखूबी रोशनी फैल गयी। इस समय सरदारोंकी मुस्तैदी और फौजी सिपाहियोंका फुर्तीलापन प्रशंसनीय था। बड़े बड़े अफसर इधरसे उधर घोड़ा दौड़ा-दौड़ाकर फौजकी परिचालना कर रहे थे। सरदार अजीतसिंहकी कोशिशसे तोपखाना एक बड़ेही उत्तम स्थानपर लगा दिया गया था जो दुश्मनोंकी आती हुई फौजपर बखूबी गोले उतार सकता था।

तीसरा बिगुल हुआ और पन्द्रह तोपोंपर एक साथ बत्ती पड़ गयी। तोपोंके भीषण-नादसे दिशाएं गूंज उठीं और कानोंके पर्दे फटने लगे। लगातार दूसरी बाढ़ दागते हुए गोलन्दाजोंने अपनी शीघ्रताका परिचय दिया। दुश्मनोंकी फौजमें, जो तेजीके साथ बड़े वेगसे आगे बढ़ रही थी एकाएक खलबली पड़ गयी और उसकी तेज चालमें एकबारगी रुकावट मालूम देने लगी। इन दोनों बाढ़ोंने दुश्मनोंको बड़ा ही नुकसान पहुंचाया। उनके सैकड़ों सिपाही मारे गये और बहुतसे जख्मी होकर छटपटाने लगे। कई अफसर भी काम आये। कुछ गोलन्दाजोंके मारे जानेसे कई तोपों-

के मुंह बन्द होगये। इसी समय सेनापति निहालसिंहके होशियार गोलन्दाजोंने निशाना ताककर एक बाढ़ और दागी। इस बार दुश्मनोंका बड़ाही नुकसान हुआ। बहुतसे सिपाही बेकाम होकर जमीनपर गिर गये और सायही कुल फौजके पैर उखड़ चले। यह हालत देख, फौजका बड़ा अफसर बहुत ही घबराया। मगर वह बुद्धिमान और अनुभवी मनुष्य था। उसने अपनी घबराहट और बेचैनीको बड़ीही खूबीसे दबाया और हिम्मत बान्धकर, घोड़ा दौड़ाता हुआ फुर्तीके साथ आगे निकल आया और लालटेन निकालकर अफसरोंको कुछ संकेत करने लगा। दो तीन बार लालटेन घुमातेही फौजका परा बीचसे फट गया और छितराकर सिपाही नये उत्साहके साथ तेजीसे पुनः आगे बढ़ने लगे। खाली तोपोंपर दूसरे गोलन्दाज मुस्तैद होगये और धड़ाधड़ तोपोंसे गोले उगालने लगे।

अब दोनों तरफसे जमकर तोपें चलने लगीं और दोनोंही तरफके गोलन्दाज निशाना ताक-ताककर गोले उतारने लगे। इस वख्त-रातके करीब १२ बज चुके थे। जो जंगल अबसे तीन घंटे पेश्तर सुनसान और डरावनी अवस्थामें जान पड़ता था वही जंगल इस समय, तोपोंकी गड़गड़ाहट, घोड़ोंकी हिनहिनाहट तथा सिपाहियोंके कोलाहलसे मौतका बाजार बन गया है।

स्वयम् सेनापति निहालसिंह घोड़ा दौड़ाते हुए इधर उधर दौड़ दौड़कर फौजका इन्तजाम कर रहे हैं। इसी समय तीन चार जासूसोंने दौड़ते और हांफते हुए आकर सरदार निहालसिंहको अदबसे सलाम किया। सलामका जवाब देते हुए सेनापतिने पूछा:—

निहाल०—"कहो क्या समाचार है ?"

एक जा०—"हुजूर ! सरदार सुन्दरसिंहको उठा लेजाने वाले नकाबपोश सवारोंका पीछा हम लोगोंने किया था। सवार लोग सरदार सुन्दरसिंहको उठाकर मारामार घोड़ा दौड़ाते हुए चार

कोस तक बराबर चले गये। वहां 'माधोपुर' नामक कसबेके पास ही राजा अर्जुनसिंहकी फौजका पड़ाव पड़ा हुआ था। सवार लोग केम्पमें घुस गये और सीधे अपने बड़े अफसरके पास पहुंचे। हमलोग भी भेष बदले उनके साथ थे। सवारोंने अफसरके सामने सरदार सुन्दरसिंहकी लाश रख दी। उस समय बहुतसे सिपाही वहां इकट्ठे हो गये थे। लाशको देखते ही अफसर मारे गुस्सेके प्राण मबूला हो गया और ताव पेंच खाता हुआ सवारोंसे बोला:—

अफसर—"यह क्या माजरा है?"

१ सवार—"हजूर! और तो हमलोगोंको कुछ नहीं मालूम सिर्फ यह जानते हैं, कि राजा वीरेन्द्रसिंहके केम्पमें सेनापतिके खेमेके बाहर मुरारीसिंह नामक एक सरदारसे इनकी लड़ाई हो गयी और उसीसे इनकी यह हालत हुई।"

अफसर—"तुमलोग कहां थे?"

२ सवार—"हुजूर! सरदार साहबके साथ हमलोग दुश्मनोंके केम्पतक गये मगर केम्पके पास पहुंचतेही इन्होंने हमलोगोंको एक झाड़ीमें छिप रहनेकी आज्ञा दी और खयम् सेनापतिके खेमेमें चले गये।" वहां इनसे उन लोगोंकी क्या क्या बातें हुईं और किस बातपर तकरार बढ़ी, यह हम लोगोंको नहीं मालूम। खेमेके बाहर मुरारीसिंहसे इनका जो युद्ध हुआ था वह हमलोगोंने बखूबी देखा था। युद्धमें कौशलसे मुरारीसिंहने इनका हाथ काटकर गिरा-दिया। सरदार साहब बेहोश होकर गिर पड़े। मुरारीसिंह चाहता था कि इनका सर धड़से अलग करदें, कि साथही सेनापतिने उनको ऐसा करनेसे रोका। ठीक उसी समय हमलोग घोड़ा दौड़ाते हुए इनके पास पहुंचे और अपने घोड़ेपर सवारकरा मारामार यहां ले आये। हमलोगोंके काममें किसीने भी रुकावट न डाली।"

अफसर—(दाँत पीसकर) "हं! दुश्मनोंकी फौजका सेनापति कौन है? क्या तुम लोगोंने उसका नाम दरियाफ्त किया था?"

१ सवार—"नहीं हुजूर! नाम नहीं दरियाफ़ किया था मगर मैं उन्हें बहुत अच्छी तरह जानता हूं। जानताही नहीं बल्कि उनकी मातहतीमें दो तीन बरसतक काम भी कर चुका हूं। उनका नाम सरदार निहालसिंह है।"

अफसर—"फौज की तादाद कितनी है?"

२ सवार—"यही कोई बारह हजारके करीब और १५ तोपें हैं।"

जासूसोंको लम्बी चौड़ी भूमिका बांधते देख सरदार निहालसिंह उनपर बड़ाही बिगड़े और डपटकर बोले:—

निहाल०—"इस भूमिकाका कुछ प्रयोजन नहीं। मुख़्तसरमें सब हाल कह डालो। मुझे ज्यादा समय नहीं है।"

दूसरा जा०—"अच्छा हुजूर! सुनिये, मैं मुख़्तसरमें सब कह डालता हूं। सवारोंसे कुल हाल सुनकर बड़े अफसरने सुन्दरसिंहको उनके खेमेमें भेजा और दो होशियार जर्राह उनका इलाज़ करनेके लिये भेज दिये। इसके बाद उन्होंने अपने मातहत सरदारोंको बुलाया और कुछ हाल समझाकर फौजको कूच करनेका हुक्म दिया। सरदारोंने फौरन उनके हुक्मकी तामीलकी और नौ बजते बजते कुल फौजने कूचकर दिया। सवारोंके रिसाले और तोपखाने बड़ी तेजीके साथ कुछ पहलेही रवाना कर दिये गये और पैदल फौज फुर्तीके साथ पीछे आ रही है। डेरा-डण्डा तथा और सामान सब वहीं है और कैम्पमें कड़ा पहरा पड़ रहा है। हमलोग फौजके कूच करतेही आपको खबर देनेके लिये दौड़े मगर पैदल कहांतक जल्द पहुंच सकते थे? फिर सदर रास्तेको छोड़कर जंगली रास्तेसे हम लोगोंको आना पड़ा और इसीसे इतनी देर हुई।"

निहाल०—"फौजका बड़ा अफसर कौन है? तोपखाने कितने हैं? सवार और पैदल फौजकी तायदाद क्या है?"

एक जा०—"फौजका बड़ा अफसर बलरामसिंह नामी एक

सरदार है और दस तोपखाने हैं। फी तोपखानेमें एक बड़ी और दो छोटी तोपें हैं। दस हजार पैदल और पांच हजार सवार हैं।"

निहाल० (कुछ सोचकर) "अच्छा अब तुम लोग जाओ और सरदार अजीतसिंहको भेज दो।"

"जो आज्ञा" कहकर जासूस लोग चले गये। लड़ाई अभीतक पहलीही चालसे हो रही थी। सरदार अजीतसिंह बड़ी होशियारीके साथ तोपखानेका इन्तज़ामकर रहे थे। इसी समय एक जासूसने पहुंचकर उनको सेनापतिका हुक्म सुनाया। अजीतसिंह अपने मातहत अफसरको कुछ समझाकर निहालसिंहके पास पहुंचे और मुस्कुराकर बोले—"कहिये क्या आज्ञा है?"

निहाल०—"सरदार साहब! सचमुच हमलोगोंने बड़ी गफलत की, जिसका नतीजा यह हुआ कि दुश्मनोंको हमारी चालका पता लग गया। उन्होंने पहलेही हमारे मुकाबलेमें अपनी फौज भेज दी और हमारे कुल मन्सूबोंपर पानी फिर गया।"

अजीत०—"बेशक इसका रंज तो मुझे भी हदसे ज्याद: है। लेकिन अब क्या किया जाय? क्या आपने दुश्मनोंकी फौजका थाह लिया है? एकाएक दुश्मनोंका चढ़ आना मुझे ताज्जुबमें डाल रहा है।"

इसपर निहालसिंहने जासूससे सुनी हुई कुल बातें सरदार अजीतसिंहको सुनादीं। कुछ देरतक अजीतसिंह सोचते रहे, फिर सेनापतिसे यों बातें करने लगे:—

अजीत०—"अगर इसी तरह कुछ देरतक तोपोंकी लड़ाई होती रही तो बहुत जल्द हमलोगोंको नीचा देखना पड़ेगा। दुश्मनोंकी तोपें गोला बरसाती हुई धीरे धीरे आगे बढ़ रही हैं और जगहजगहपर हमलोगोंको भारी नुकसान पहुंच रहा है। हमारे गोलन्दाजोंके हौसले छूटे जा रहे हैं और ऐसा जान पड़ता है, कि अगर कुछ देरतक उचित प्रबन्ध न हो सका तो हमारी तोपोंके मुंह बन्द हो

जायंगे। उनकी तोपोंकी संख्या बहुत ज्याद: है। तोपोंकी लड़ाईमें सिवाय नुकसान उठानेके और कुछ नतीजा नहीं दिखायी देता।"

ठीक इसी समय सेनापतिसे तीस कदमके फासलेपर एक बड़ा गोला गिरकर फट गया। जिससे १५-२० आदमी जखमी होकर चिल्लाने लगे। तीन चार मर गये। मगर निहालसिंह और अजीतसिंह बाल-बाल बच गये। इस घटनाके हो जानेपर दोनों सरदारोंकी घबराहट बढ़ गयी और अजीतसिंहने शीघ्रतासे कहा:—

अजीत०—"अब तो आप मुझे आज्ञा दें, कि मैं शीघ्र ही इनकी तोपोंका मुंह बन्दकर दूं। वर्ना हमलोगोंकी कुल फौज बेमौत मारी जायगी।"

निहाल०—"आप किस चालसे दुश्मनोंकी तोपोंका मुंह बन्द करना चाहते हैं? एकाएक धावा बोलकर या 'किल्ली' देकर?"

अजीत०—"दोनोंही चालसे इधर 'किल्ली' करनेके सवारोंको दौड़ाता हूं और उधर आप घोड़सवार रिसाला लेकर धावा बोल दें!"

निहाल०—(कुछ सोचकर) "आपकी दोनों ही चालें अच्छी हैं, मगर—दुश्मनोंका शुमार ज्याद: है,। धावा बोलनेपर यह तो मुझे यकीन है कि दुश्मनोंके पैर उखड़ जायंगे। मगर यह कौन जानता है। अगर उलटीही पड़ी तो सम्हलना मुश्किल हो जायगा। मेरी समझमें अगर एक चाल और खेली जाय तो बहुत ही कामयाबी होगी। आप 'किल्ली' करनेके लिये सवारोंको दौड़ाइये और मैं अपने मातहत अफसर बचासिंहको चार हजार सवारोंके साथ धावा बोलनेकी आज्ञा देता हूं इसके बाद आप तोपखाना हटवाकर पासहीकी झाड़ियोंमें लगवा दें, और मैं पैदल फौज तथा बाकीके सवारोंको लेकर पासहीके जंगलमें छिप जाता हूं। पहले तो बचासिंह सवारोंके साथ एकाएक दुश्मनोंपर जा पड़ें, और मार काट मचा दें। जब देखें कि अपने सवारोंके पैर उखड़ते हैं तो

उन्हें लड़ते हुए धीरे धीरे पीछे हटनेका इशारा करें जब दुश्मनोंकी फौज तुम्हारी तोपोंकी मारपर पहुंचे तो एक बाढ़ ऐसी मारो, कि उनकी तमाम फौज छितरा जाये। उनके सम्हलते न सम्हलते मैं अपनी कुल फौज लेकर एकाएक हमला कर दूंगा और फिर जो नतीजा निकलेगा! वह ईश्वरही जाने।"

निहालसिंहकी राय अजीतसिंहको बहुत पसन्द आयी और वह खुश होकर बोले—"अच्छा तो अब मैं 'किल्ली'के लिये सवारोंको दौड़ाता हूं आप इधरका इन्तजाम कीजिये। अब विलम्बका समय नहीं है।"

अजीतसिंह घोड़ा दौड़ाते हुए एक तरफ चलेगये। निहालसिंहने जफील बजाकर सरदार बचासिंहको बुलाया और उनसे कुछ बातें कह डालीं। बचासिंहने भी इस रायको पसन्द किया और कुछ बात-चीतकर रिसालेकी तरफ चले गये और थोड़ीही देरमें सवारोंका इन्तजाम ठीककर बाईं ओरसे धावा बोल दिया।

सरदार अजीतसिंहने १५० सवारोंका एक दस्ता 'किल्ली' देनेके लिये रवाना किया। उनमेंसे तीस सवारोंके हाथोंमें लोहेकी मोटी मोटी नोकदार कीलें थीं, और साठ सवारोंके हाथोंमें बड़े बड़े लोहेके हथौड़े, बाकी साठ सवार हाथोंमें नंगी तलवारें लिये उनकी रक्षापर थे। सवारोंका अफसर सरदार मुरारीसिंह जान हथेलीपर लिये बड़ी होशियारीसे जंगलमें घुस गया और कावा काटता हुआ बड़ी तेजीसे एकाएक दुश्मनोंके गोलंदाजोंपर आ पड़ा। किल्ली वाले सवारोंने मौका पाकर पलीतेके स्थानपर कीलें रक्खीं और हथौड़े वाले सवार धड़ाधड़ हथौड़े मारने लगे।

गोलन्दाज और तोप-रक्षक, मुरारीसिंहके वीर सवारोंके एकाएक हमलेसे घबरा गये। मगर साथही सम्हलकर बड़ी वीरताके साथ मुकाबला करने लगे। थोड़ी ही देरमें तीन चार सौ सवारोंने मुरारी-सिंहके सवारोंको चारों ओरसे घेर लिया और जी तोड़कर तलवारें

चलाने लगी । पहले हमलेमें दुश्मनोंकी सम्हलते न सम्हलते १५ तोपें किल्ली देकर बेकाम करदी गयीं थीं । मगर अब गोलन्दाज और तोपरक्षक सवार, जान लड़ाकर बाकी तोपोंकी रक्षाकर रहे थे । तोपखानेमें बड़ीही हलचल मच गयी थी और मौतका बाजार खूब गरम होरहा था ।

देखते देखते मुरारीसिंहके सौ सवार मारे गये । मगर यह मरनेसे पहलेही दुश्मनोंके ढाई तीन सौ सवार काट चुके थे । मुरारीसिंहके बचे हुए सवार भी बहुत जखमी होगये और बेशुमार दुश्मनोंसे घिरकर बेमौत मारे जाने लगे । मुरारीसिंहके बदनपर भी छोटे मोटे कई ज़खम लगे थे मगर उनके सवार अपने अफसर-को बीचमें लिये बड़ा बहादुरीसे दुश्मनोंका सामना कर रहे थे ।

अब मुरारीसिंहसे अपने सवारोंका मारा जाना देखा नहीं गया । उन्होंने जोशीली आवाजमें ललकारकर कहा—"मेरे बहादुर जवानों ! इन बाकीकी तोपोंकोभी बेकाम कर डालो और भारतके इतिहासमें सदाके लिये अपनी कीर्ति छोड़ जाओ !"

मुरारीसिंहका ललकारना था कि साथही उनके वीर सवारों-ने अपने जंगी घोड़ोंको दुश्मनोंपर रेल दिया और उन्हें कुदाते हुए तोपोंपर जापड़े । अबतो खूब डटकर दोनोंतरफसे तलवारें चलने लगीं । मगर देखते देखते इधरके सवारोंने उनकी पांच तोपें और बेकाम कर डालीं । ठीक इसी समय सरदार बचासिंहकी घुड़चढ़ी फौज तलवार खींचकर मार ! मार ! करती हुई दुश्मनों-पर टूटपड़ी और दोनों ओरसे घनघोर लड़ाई शुरू होगयी ।
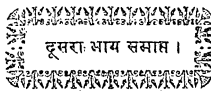
"इसके आगेका हाल जाननेके लिये तीसरा भाग देखिये ।"

आर० एल० बर्म्मन एण्ड कम्पनीका प्राचीन-

पुस्तक विभाग।

हिन्दी-भाषाके सुप्रसिद्ध औपन्यासिक

श्रीयुक्त बाबू रामलाल वर्म्मा द्वारा रचित,

अनुवादित और प्रकाशित—

इस उपन्यासमें "पुतली महल" नामक एक बड़े ही अनूठे और आश्चर्यजनक तिलिस्मका वर्णन है, जिसे हाथागढ़के राजकुमार चन्द्रसिंहने अपने हीरासिंह आदि कई ऐयारोंकी मददसे बड़ी खूबीके साथ तोड़ा है। तिलिस्मकी विचित्र बातें, कौतूहलवर्द्धक दृश्य और अपूर्व शिल्पनैपुण्य प्रभृतिका हाल पढ़कर सचमुच आप फड़क उठेंगे। साथ ही अजीब ऐयारियां, भयानक लड़ाइयां और अद्भुत प्रेमका वृत्तान्त पढ़कर आप मुग्ध हो जायेंगे। ऐयारी-कहानियोंमें यह उपन्यास अपने ढङ्गका एक दम नया है। इसी लिये इतनी जल्दी इसे दुबारा छापना पड़ा है। इस उपन्यासके तीन भाग हैं। दाम तीनों भागका सिर्फ १॥) है।

प्रेमरसका इससे अच्छा उपन्यास अबतक दूसरा नहीं छपा। उर्दूकी प्यारी बोलचालमें थियेटरके ढङ्गपर यह उपन्यास लिखा

गया है, मौके मौकेपर बेशुमार घटनायें, दिलचस्प शेरें दी गयी हैं। सच्ची मुहब्बत, विचित्र घटना, अपूर्व साहस और अनूठी सीनरीका मजा इसी उपन्यासमें मिलेगा, थियेटरके शौकीन और मनचले रसिक पाठकोंको यह उपन्यास अवश्य पढ़ना चाहिये। दाम सिर्फ १) रुपया।

योंतो सैकड़ों ही उपन्यास प्रतिमास छपा करते हैं, किन्तु जो मजा, दिलचस्पी और फुर्तीलापन, ऐयारी ढंगके उपन्यास पढ़नेसे आता है, वैसा दूसरेसे नहीं। महेन्द्र-कुमार ऐयारी और तिलिस्मी ढङ्गका मशहूर उपन्यास है, इसकी लिखावट, घटनायें और ऐयारी तिलिस्मी ढङ्गमें बड़ाही रङ्गीलापन आगया है, एकबार इस पुस्तकको हाथमें उठा लेनेपर छोड़नेकी इच्छा नहीं होती। इसीसे इतनी जल्दी इस उपन्यासको दूसरी बार छापनेकी नौबत आई है। यह उपन्यास बड़े बड़े ६ हिस्सोंमें समाप्त हुआ है। ६ हिस्सोंका दाम सिर्फ ३।≈)

यह भी ऐयारी और तिलिस्मी ढङ्गका एक अनूठा उपन्यास है और अभी हालहीमें छपकर निकला है। इसकी घटनायें इतनी रोचक, आश्चर्य्यजनक और कौतूहलवर्द्धक हैं, कि छपते ही छपते हजारों कापियां हाथों हाथ बिक गयीं। ऐयारी, तिलिस्म, लड़ाई, प्रेम आदि घटनायें इस उपन्यासमें बड़े अनूठे ढङ्गसे लिखी गयी हैं। छपाई सफाई और कागज आदि सभी मनको मोहनेवाले हैं। दाम २ भागोंका सिर्फ १) रुपया।

नकली रानी

यह एक फड़कता हुआ जासूसी उपन्यास है। इसमें एक डाकू-स्त्रीकी वीरता, बुद्धिमानी, चालाकी, दिलेरी और उसकी खूबसूरतीका वर्णन है। एक चालाक जासूसने किस प्रकार आफतमें फंस दो दो गुम खूनोंका पता लगाया है, किस प्रकार उसे डाकुओंके गरोह और बस्लेट दल (जलके डाकुओंका गरोह) से लड़ना पड़ा है और किस प्रकार असामी बारबार उसके हाथसे निकल भागी और फिर किस प्रकार उसने सबको गिरफ्तार कर सजा दिलायी; यह सब बातें पढ़ने हीसे जान पड़ेंगी। दाम सिर्फ ।॥) आना।
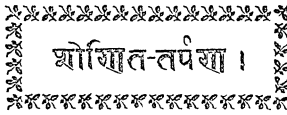
पाठक! नाम देखकर डरनेकी जरूरत नहीं, सच मुच यह एक ऐसा ही विभीषिकामय उपन्यास है, जिसका नाम वास्तवमें "शोणित-तर्पण" ही उपयुक्त है। भारतवर्षके सन् १८५७ ई० वाले "सिपाही-विद्रोह"का हाल आपने सुना होगा, यह उपन्यास उसी बलवेकी भयङ्कर घटनाओंको सामने रखकर लिखा गया है। हमलोग हिन्दीभाषाभाषी सिर्फ "सिपाही विद्रोह" या सन् ५७ के बलवेका नाम सुनकर चौंक उठते हैं, पर वास्तवमें, उस बलवेमें क्या हुआ था, बलवा क्यों हुआ था, कहांसे शुरू हुआ, कहां कहां लड़ाइयां हुईं, कैसे शान्त हुआ, यह बातें बहुत कम आदमी

जानते हैं। इसी अभावको हिन्दी-साहित्यसे दूर करनेके लिये यह पुस्तक प्रकाशित की गयी है। इसमें प्रधान विद्रोही नाना-राव, तांतियाटोपी, फ्रेञ्च डाकू 'रावर्ट सैवेयर' आदिकी साजिशोंका खाका बड़ी ख़ूबीके साथ खींचा गया है। निरीह अंगरेज बालक-बालिकाओंकी हत्या किस निर्दयतासे की गयी थी, निरपराध अंगरेजोंका रक्त किस संगदिलीसे बहाया गया था और लखवेमें क्या क्या हुआ था? इस उपन्यासमें उसका पूरा पूरा चित्र खींचकर पाठकोंके सामने रख दिया गया है। यदि आपको उपन्यास पढ़नेका कुछ भी शौक हो तो आप इसे जरूर पढ़िये। दाम ३०० पृष्ठकी बड़ी सचित्र पुस्तकका बेजिल्द १।) जिल्ददार १॥) रुपया।

अमीर अली ठग

पाठक! आपने ठगोंका हाल शायद सुना होगा, 'इष्ट इण्डिया कम्पनी'के राजत्वकालमें इन ठगोंका बड़ाही दौर दौरा था, ठगोंके बड़े बड़े गरोह राजसी ठाठबाठसे दौरा करते फिरते थे और मुसाफिरोंको धोखा दे अपने गरोहमें ला रूमालकी झटकेसे फांसी देकर मार डालते थे। मुसाफिरोंके लिये वह समय बड़ा ही भीषण था। डाकुओंके हाथसे तो मुसाफिर किसी तरह बच भी सकते थे, परन्तु ठगोंसे जान बचाकर निकल भागना मुश्किल ही नहीं बल्कि गैर मुमकिन था। इन्हीं ठगोंके 'अमीरअली' नामक एक सर्दारने कम्पनी बहादुरसे मिलकर हजारों ठगोंको फांसी दिलवायी। यह उपन्यास बड़ाही मजेदार है और इसमें कई तस्वीरें भी लगायी गयी हैं, जिनसे आप ठगोंका रूप, रङ्ग और उनका मुसाफिरोंको बहका लाकर फांसी आदि देनेका सजीव

चित्र अपनी आंखोंके सामने अङ्कित कर सकेंगे। दाम सिर्फ ॥) आना।

पञ्जावकेशरी

पञ्जावके भूतपूर्व सिखशिरोमणि भारतगौरव महाराज रणजीत सिंहकी यह एक सचित्र जीवनी है। महाराज रणजीतसिंहके पुरखोंसे लेकर महाराजा साहबके जन्म, राजप्रतिष्ठा और प्रसिद्ध प्रसिद्ध लड़ाई आदिका इसमें पूरा विवरण दिया गया है। सिख सम्प्रदायके प्रतिष्ठाता श्रीगुरुनानक साहबका जन्म वृत्तान्त और सिखोंके अभ्युदय आदिका संक्षिप्त हाल भी इसमें लिखा गया है। साथ ही महाराजा रणजीत सिंह, उनके दरबार और ग्रन्थकार आदिके बड़े बड़े ३ चित्र भी इस पुस्तकमें दिये गये हैं। इतना सब होनेपर भी पुस्तकका मूल्य केवल ।) आना है।

घटनाचक्र।
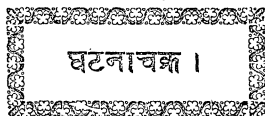
इस उपन्यासका नाम ही कहे देता है, कि यह घटनाका समुद्र, आश्चर्य्यका खजाना, कौतुकका भाण्डार और विचित्रताका तिलिस्म है। इस ढंगका जासूसी उपन्यास हिन्दीमें अबतक नहीं छपा। हम जोर देकर कहते हैं, कि इस उपन्यासको पढ़कर आप दङ्ग रह जायेंगे और इसकी कई एक घटनापर दांतों उंगली दबायेंगे। लार्ड पेमब्रोकको सहृदयता, लेडी क्लिउपेट्राकी सुन्दरता, मेरीकी सुशीलता, लार्ड एलेनकी दयालुता, सुप्रसिद्ध भारतीय

जासूस कृष्णजी रघुपन्त और करीमका अद्भुत बुद्धि-कौशल; भारतीय हिन्दू रमणी यमुनाका सतीत्व रक्षण, विलियमकी कुटिलता, रिचार्डका भयानक षड़यन्त्र, आदिका वर्णन पढ़कर आप विस्मित, चकित, स्तम्भित और विमोहित हो जायेंगे। दाम बेजिल्द १॥) जिल्ददार २) रुपया।

ऐयारी और तिलिस्मी ढङ्गके उपन्यास तो बहुत छपे हैं मगर एक ही भागमें कोई भी उपन्यास समाप्त नहीं हुआ। यह उपन्यास बड़ा ही दिलचस्प और अनूठा है। इसमें "माया-महल" नामक तिलिस्मको पिथौरागढ़के राजकुमारने बड़ी बहादुरीके साथ तोड़ा है। ऐयारी और लड़ाईकी भी बहार है। पहाड़ों तथा जङ्गलोंके भी अच्छे २ सीन दिखाये गये हैं, साथ ही इसकी बड़ी बड़ी ४ तस्वीरें लगाकर इस उपन्यासकी सुन्दरता दूनी कर दी गई है। छपाई सफाई और कागजकी चिकनाई देखने योग्य है। इसीसे इतनी जल्दी पहिली बारकी १००० कापियां हाथोंहाथ बिक गईं और दूसरी बार फिर छपानी पड़ीं। दाम भी बहुत ही कम याने सिर्फ ॥) है।

जासूसी ढंगका यह एक अनूठा उपन्यास है, जिसमें जाल, खून, चोरी, जुआ, चोरी, इश्क और मुहब्बतका बड़ाही सुन्दर

खाका खींचा गया है, खासकर एक औरतकी जासूसी, चालाकी और मर्द्‌मीका वर्णन पढ़कर तबीयत फड़क उठती है। यदि आपको उपन्यास पढ़नेका कुछ भी शौक हो तो आप इसे अवश्य पढ़ें। दाम ॥✓)

ऐतिहासिक सुप्रसिद्ध उपन्यास।

बङ्गसाहित्य-सम्राट बाबू बङ्किमचन्द्र चटर्जी महोदयके सुप्रसिद्ध उपन्यास राजसिंहका यह सुन्दर अनुवाद है। बङ्किम बाबूके लिखे हुए कुल उपन्यासोंका यह शिरोभूषण है। सुप्रसिद्ध 'वीर-भारत' पत्रमें जब यह क्रमशः छप रहा था, तब इसका बड़ा सम्मान हुआ था। उस पत्रके पाठकोंने इसे पुस्तकाकार छपवानेका वारंवार अनुरोध किया था। राजकुमारी चञ्चलका लड़कपन और धर्म्मदृढ़ता उदयपुरके क्षत्रियकुलभूषण भारत-गौरव महाराणा राजसिंहका आश्रितवात्सल्य और वीरत्व, माणिकलालकी चालाकी और प्रभुभक्ति, राजपूतकन्या जोधपुरीका जातीय जोश, औरङ्गजेब का चरित्रचाञ्चल्य. मुसलमानोंसे राजपूतोंका भीषण युद्ध और जेबुन्निसा प्रभृति मुगलराज-कन्याओंका कुत्सितचरित्र प्रभृति इस पुस्तकके पढ़नेसे हृदयमें कभी वीरता, कभी करुणा और कभी क्रोध उत्पन्न होता है। हम जोर देकर कहते हैं, कि ऐसा सुन्दर ऐतिहासिक उपन्यास हिन्दी भाषामें अबतक नहीं छपा था। २०० पृष्टकी पुस्तकका दाम सिर्फ १) एक रुपया।

गोवर्द्धन प्रेस कलकत्ता।

Only cover printed at the Hitchintak Press, Ramghat, Benares City.

मूल्य ॥) आ०

॥ श्रः ॥

या

गुलाबकुँवरी।

तीसरा भाग।

एक ऐयारी और तिलिस्मी ढंगका मनोहर उपन्यास

"उपन्यास-सागर" "दारोगा-दफ्तर" तथा
"बड़ाबाजार गजट" द्वारा लिखित
और प्रकाशित

प्रिण्टर श्रीमिहिरचन्द्र घोष—
नं० २५।ए मछुआबाजार ष्ट्रीट, "न्यू-सरस्वती प्रेस,"
कलकत्ता।

द्वितीयवार १०००] सं० १९७० वि० [मूल्य ॥)

या

गुलाबकुँवरि।

तीसरा भाग।

पहला बयान

सुबहका सुहावना समय है। पानीवाले बादलोंकी मोटी तहें नीले आस्मानके विशाल वक्षपर अपना दखल जमाये हुई हैं। भद्रा नदीके दोनों किनारोंपर बड़े बड़े ऊंचे पहाड़ अपने गरूरमें भरे हुये दूर दूर तक चले गये हैं जिनकी वजहसे नदीका वह स्थान बड़ी ही डरावनी अवस्थामें दिखाई दे रहा है। दूर दूरसे बहनेवाले चमकीले पानीके खूबसूरत झरने पहाड़के ऊंचे ऊंचे स्थानोंसे हड़हड़ाते हुये बड़े वेगसे नदीमें गिर रहे हैं। कहीं कहीं पर जंगली जानवरोंके झुण्ड पहाड़से उतर उतर कर नदीके किनारे किनारे विचरण करते हुये बड़े ही भले जान पड़ते हैं। पेड़ोंपर बैठी हुई खूबसूरत चिड़ियायें अपनी सुरीली तानोंमें जगदीश्वरका स्मरण कर रही हैं। पहाड़की ऊंची ऊंची चोटियों-पर मोरोंके झुण्ड पंख फैलाये बड़ी ही मस्तानी चालसे टहल रहे हैं। ठीक इसी समय हरे रंगका एक बड़ा ही खूबसूरत बजरा तेजी-

के साथ हमारी तरफ आता हुआ दिखाई दे रहा है। पाठक! जरा ठहरिये, मुझे शुबहा होता है। जिस रास्तेपर रात दिन बड़े बड़े खूंखार जंगली जानवरोंकी गुजर रहती है, जिस रास्तेपर चलनेसे चोर और डाकुओंके भयसे बड़े बड़े वीरोंका साहस छूट जाता है, उसी रास्तेसे एक तुच्छ बजरेका सफर करना कुछ मामूली बात नहीं है। खैर, जरा ठहरिये सब भेद आप ही खुला जाता है। जरा बजरेको नजदीक तो आने दीजिये। वह देखिये, मालूम हो गया; बजरा किसी मामूली आदमीका नहीं जान पड़ता क्योंकि इसकी छतपर हरबे हथियारसे लैस पन्द्रह सिपाहियोंका दल डटा हुआ है. और बारह नौजवान मल्लाह बड़ी फुर्तीके साथ डांड़े चला रहे हैं। जान पड़ता है इसपर कोई बड़ा अमीर आदमी सफर कर रहा है। बाहरसे तो बजरा बड़ा ही मजबूत और खूबसूरत दिखाई दे रहा है, मगर अन्दरका रहस्य जाननेकी बड़ी ही इच्छा हो रही है। अच्छा तो फिर हर्ज ही क्या है। आइये पाठक! आपको तो कहीं रोक टोक है ही नहीं, फिर डरते क्यों हैं? जब बड़े बड़े किलोंके अन्दर और राजसी जनानखानोंके भीतर घुस जानेमें भी नहीं डरते तो इस छोटेसे बजरेमें घुसनेसे क्यों आगा पीछा करते हैं? मेरे पीछे पीछे चले आइये। यह देखिये बजरा नजदीक आगया। एक ही छलांगमें बजरेपर पहुंचिये तब तो कौसत, नहीं तो नदीमें गोते खाइयेगा।

जैसा हमने समझ रक्खा था असलमें बजरा वैसा मामूली नहीं है। अगर बड़े बड़े बजरोंके बराबर नहीं तो उनसे ज्याद: छोटा भी नहीं है। बजरा छोटी छोटी तीन कोठरियोंमें विभक्त है। पहली कोठरीमें नौकरों चाकरोंका सामान है। दूसरी कोठरी खूब सजी हुई है जिसमें मखमली गद्दी तकियोंके सहारे एक बड़ा ही खूबसूरत नौजवान अपने पासके बैठे दो मुसाहबोंसे हँस हँसकर इधर उधर-

की बातें कर रहा है। जवानका रंग गोरा, बदन छरहरा, कद मझोला, और चेहरा हंसमुख है। जवानकी रेखें अभी फूट रही हैं, उमर अन्दाजन २१ वा २२ वर्षकी होगी। यह जवान देवीपुरके राजा शेरसिंहके ज्येष्ठपुत्र युवराज मदनसिंह हैं। इनके पासकी बैठे दोनों मुसाहबोंमें से एक इनके मन्त्रीपुत्र सरदार नकुलसिंह और दूसरे हमारे पूर्व परिचित कृष्णगढ़के ऐयार भूपसिंह हैं। सुनिये अब तीनों युवकोंमें इस तरह बातें होने लगीं।

मदन०—"खैर उन सब बातोंको जाने दो। अब यह कहो, कि कुंवर चन्द्रसिंहकी हम किस प्रकार मदद कर सकते हैं?"

भूपसिंह,—"उनके लिये आप चिन्ता न कीजिये, क्योंकि एक तो वह स्वयं ही वीर पुरुष हैं, दूसरे उस्ताद हीरासिंह उनके साथ हैं, तीसरे हमारे तीन साथी, विश्वनाथसिंह, दामोदरसिंह और लालसिंह भी उनकी मददके लिये तिलिस्ममें पहुंच गये हैं।"

नकुल०—"हां यह तो मैंने भी सुना है। उन लोगोंने "पुतलीमहल"में खासी नव्वाबी मचा रक्खी है। मायापुरमें इस बातकी बड़ी धूम है।

मदन०—"मुझे तो बेचारी गुलाबकुंवरिकी बड़ी चिन्ता है। वह बेचारी कुंवर चन्द्रसिंहके वियोगमें रात दिन रोते रोते आधी होगई है, यदि मुझसे हो सकी तो मैं जान देकर भी उसका दुःख छुड़ानेको तैयार हूं। मुझे तो वह बेचारी सगे भाइयोंसे भी बढ़कर मानती है।"

भूप०—"कुंवरसाहब! अगर सच पूछिये तो आप हीकी बदौलत कल राजकुमारीकी जान बची। अगर आप ठीक वक्तपर महलमें पहुंचकर बज्जात अर्जुनसिंहके काममें बाधा न देते तो दोनों राजकुमारियोंकी जानें जा चुकी थीं।"

मदन०—"असलमें तो मेरे तमंचेने काम किया। अगर एक

जहमेको भी देर हो जाती तो मायादेवीका खातमा हो था। मगर ईश्वर बेकुसूरोंकी हमेशा मदद किया करते हैं। लेकिन भूपसिंह यह सब तुम्हारी ही कृपाका फल है। अगर तुम मेरी मदद न करते तो क्या मेरा वहां तक पहुंचना किसी तरह सम्भव था ?"

भूप०—"यह आपकी कृपा है, वर्ना मैं किस लायक हूं। मेरा जन्म तो आप लोगोंकी ताबेदारी करनेके लिये ही हुआ है। क्या कुंवर चन्द्रसिंह और आपमें कुछ फर्क है ?"

मङ्गल०—"खैर वह तो जो हुआ सो अच्छा ही हुआ, लेकिन आप लोगोंने यह कौनसी बुद्धिमानीका काम किया, कि अर्जुनसिंहको छोड़ दिया ? अगर उसे कैद कर लाते तो सब गोलमाल मिट जाता।"

भूप०—"हमें तो राजकुमारी (मायादेवी) की खातिर मंजूर थी। क्या सुचरित्रा बालिकाओंसे अपने पिताकी दुर्गति देखी जाती है ? अगर अर्जुनसिंहको कैद कर लाते तो मायादेवीको कितना दुःख होता और हमलोगोंको उनसे कितना लज्जित होना पड़ता ?"

मदन—"लेकिन भूपसिंह ! ताज्जुबकी बात है, कि मालती और श्यामाका पता न लगा। मुझे उन दोनोंके न छुड़ानेका बड़ा अफसोस है। सारा महल रत्ती रत्ती छान डाला गया मगर वह तो गुलरका फूल होगई।"

भूप०—"अजी किशोरी और ललिताको छुड़ा लाये यही बड़ा काम किया। अगर मालती और श्यामा उस घरमें होतीं तो मिलही जातीं। मगर वह वहां रक्खी ही नहीं गई थीं। अच्छा क्या हर्ज है, वह ऐयार बच्चियां हैं कुछ करहीके आवेंगी। मुझे अफसोस सिर्फ यही है, कि एक शिकार मारा हुआ हाथसे निकल गया।"

मदन०—"वह क्या ? मैं भी कुछ सुनूं।"

भूप०—"अर्जुनसिंहके एक ऐयार भैरोसिंहको मैंने कैद करके

एक नालेमें छिपा दिया था वह वहांसे गायब है। रातको मैं आपसे एक घण्टेकी छुट्टी लेकर वहीं गया था। मगर वह सरदूद हवा हो गया और साथही मेरे एक आसामीको भी उड़ा लेगया।"

नकुल०—"आसामी कौन ?"

भूप०—"अजी! सेठ मिठ्ठनलाल जौहरीको भी मैंने वहीं छिपा रक्खा था, लेकिन वह (भैरोसिंह) छोकरा बड़ा ही काफिर निकला। खैर फिर सही, जाता कहां है, बदला लेकर ही छोड़ूंगा।"

इसी समय तीसरी कोठरीका रेशमी परदा हिला और साथ ही केसर उसे हटाती हुई बाहर आकर बोली, "दोनों राजकुमारियोंका इरादा है, कि बजरा पास ही कहीं अच्छी जगह देखकर लगवा दिया जाय तो सब लोग मामूली कामोंसे छुट्टी पालें।"

मदन०—(भूपसिंह से) ठीक तो कहती हैं। नहाने धोनेसे रात भरकी खुमारी भी मिट जायगी। मेरी तबियत तो घबड़ासी गई है। दोनों किनारोंपर जंगल भी जरा साफ है मल्लाहोंको हुक्म दो, कि कोई अच्छा स्थान देखकर बजरा लगादें।"

उसी समय एक मल्लाहको जो शायद सब मल्लाहोंका सरदार था, बुलाकर राजकुमारका हुक्म सुना दिया गया और थोड़ी ही देरमें नदीके दाहिने किनारेपर एक साफ जगह देखकर बजरा लगा दिया गया। गुलाबकुंवरि और मायादेवी चेहरोंपर रेशमी नकाब डाले नावपरसे उतरीं, उनकी हिफाजतके लिये केसर और ललिता हाथोंमें खंजर लिये साथ चलीं। कुंवर मदनसिंह, नकुलसिंह और भूपसिंह भी साथ ही उतर पड़े।

यह जगह बड़ीही रमणीक थी। कुछ दूर तक बालूकी ऊंची नीची जमीन चली गई थी। इसके बाद छोटी छोटी खूबसूरत पहाड़ियां सिलसिलेवार खिंची हुई थीं। बादल चारों तरफ घिरे हुये थे और महीन महीन झींसी गिर रही थी।

करीब आध घण्टेमें सब लोग मामूली कामोंसे निपटकर नाव-पर सवार हो गये। आदमियोंने सन्ध्या पूजाका इन्तजाम बजरेकी छतपर कर रक्खा था। राजकुमार, नकुलसिंह और रूपसिंह ने बहुत जल्द सन्ध्या पूजासे छुट्टी पा ली। इस अवसरमें साथके सिपाही भी मामूली कामोंसे छुट्टी पाकर लैस हो गये और ठीक समयपर बजरा खोल दिया गया।

यहां पर मैं पाठकोंकी तसल्लीके लिये कुछ बातें कहकर इस बयानको सीधे रास्ते पर ला देना मुनासिब समझता हूं, क्योंकि अब तक यह बयान उलझन हीमें फंसा रहकर पाठकोंके मनमें तरह तरहकी बातें पैदा कर रहा है।

पाठकोंको याद होगा, कि दूसरे हिस्से के सातवें बयानमें राजा अर्जुनसिंहके मायादेवीपर तलवार खींचकर दौड़नेपर कमरेका दरवाजा जोरसे टूट गया था और साथ ही किसीने तमञ्चेका फ़ैर कर उसको जमीनपर गिरा दिया था।

देवीपूरके युवराज कुंवर मदनसिंह कुछ दिनोंसे मायादेवी पर आशिक हो गये थे और उन्होंने अपने पिताको चोरी चोरी राजा अर्जुनसिंहको अपने आदमियोंकी मार्फत मायादेवीसे विवाह कर देनेके विषयमें कई पत्र भेजे थे, मगर घमण्डी अर्जुन-सिंहने बड़ी बेपरवाहीके साथ कुंवरमदनसिंहके प्रस्तावको अस्वीकार कर दिया था और उनके आदमियोंको बड़ी बेइज्जतीके साथ दरबारसे निकाल दिया था। कुंवर मदनसिंहको यह बात बहुत बुरी मालूम हुई और उन्होंने अपने पितासे हवाखोरीका बहाना कर कुछ दिनोंकी छुट्टी हासिल करली और कुछ आदमियों-के साथ अपने मित्र नकुलसिंहको साथ लेकर इसी बजरेपर मायापूरकी ओर कूंच कर दिया था। आज कई दिन हुए कुंवर मदनसिंह भेष बदले मायापूरके, राजमहलोंके इर्दगिर्द मायादेवी-

को बातमें फिर रहे थे, कि अचानक इनसे भूपसिंहकी मुलाकात होगई। भूपसिंह भी गुलाबकुँवरि तथा उसकी सखियोंकी टोहमें लगे हुये थे। बात खुलनेपर भूपसिंहने कुंवर मदनसिंहको मायादेवीसे मिला देनेका वादा किया। कई दिनोंतक कुंवर मदनसिंह, नकुलसिंह और भूपसिंह अपनी घातमें फिरते रहे। एक दिन मौका पाकर भेष बदले हुये तीनों मनुष्य किलेमें घुस गये और कमन्द लगाकर अर्जुनसिंहके महलपर चढ़ गये। बहुत खोज ढूंढ करनेपर इन लोगोंको पता लगा, कि अर्जुनसिंह इस समय अपने खास कमरेमें गुलाबकुँवरिके साथ अत्याचार करनेपर आमादः है। कमरेके दरवाजेके पास पहुंचनेपर एकाएक इन लोगोंसे नकली मालती तथा श्यामाकी छेड़छाड़ हो पड़ी। उन लोगोंके शोर गुल मचानेके पेश्तर ही भूपसिंह और नकुलसिंहने कमन्दें मारकर दोनोंके फंसा लिया और जबर्दस्त बेहोशी उनके नाकमें ठूंस दी। नकली केसर तथा ललिता किसी कामसे गई हुई थीं। तीनों आदमी दरवाजेकी तरफ बढ़े। अन्दरसे अर्जुनसिंह और गुलाबकुँवरिका वादाविवाद सुनकर वहीं ठिठक गये और दरवाजेके एक सूराखसे अन्दरकी घटना देखने लगे।

इसी अवसरमें मायादेवीने परदेके अन्दरसे निकलकर अर्जुनसिंहके काममें बाधा दी। पिता पुत्रीमें कहासुनी हो गई और अर्जुनसिंह तलवार खींचकर मायादेवीकी तरफ झपटा। कुंवर मदनसिंहसे न रहा गया और उन्होंने अपनी भरपूर ताकतसे दरवाजेपर एक लात मारी। दरवाजा अरअराकर टूट गया और साथ ही कुँवर मदनसिंहके तमञ्चेसे फैर हुआ। गोली उसके कन्धेमें लगी और वह जमीनपर लम्बा चौड़ा हो गया। तीनों आदमी अपने चेहरेकी नकाबें उलटकर अन्दर घुसे।

मायादेवी कुँवर मदनसिंहको देखते ही उनपर जी जानसे

आशिक होगई। और लज्जासे घूंघट काढ़कर एक किनारे खड़ी होगई। गुलावकुंवरि सन्नाटेकी हालतमें स्वप्नके समान यह दृश्य देख रही थी। मदनसिंहको पहचानते ही खुश होगई और "भइया! भइया!" कहती हुई आगे बढ़ी।

यहां पर हम पाठकोंसे यह भी कह देना मुनासिब समझते हैं, कि राजा शेरसिंह और राजा देवसिंह दूरके रिश्तेमें भाई भाई थे और दोनोंमें बड़ी दोस्ती थी। गुलावकुंवरि महीनों देवीपुरमें जाकर रहा करती थी और कुंवर मदनसिंह तथा इनके छोटे भाई कुंवर रणविजयसिंहको "भइया" कहकर पुकारा करती थी और यह दोनों भी गुलावकुंवरिको अपनी छोटी बहिन ही समझते थे। अस्तु।

कुंवर मदनसिंहने बड़ी मुहब्बतसे गुलावकुंवरिका हाथ पकड़कर उसे तसल्ली दी। गुलावकुंवरिने मुख्तसरमें मायादेवीसे कुंवर मदनसिंहका परिचय करा दिया। मायादेवी तो पहले ही इनके ऊपर न्योछावर हो चुकी थी अब परिचय पानेपर वाकी कसर भी जाती रही।

थोड़ी देर तक वहांसे निकल भागनेकी सलाहें होती रहीं। मायादेवीने कहा, कि मैं किलेके एक चोर रास्तेसे बहुत जल्द सबको वाहर कर सकती हूं। इसपर सब लोग बड़े ही खुश हुए और नकावें डालकर महलसे बाहर निकले और अपनेको छिपाते, पहरेदारोंसे बचाते, किलेके पिछवाड़े एक चोर दरवाजेके पास पहुँचे। मदनसिंह और मायादेवीका प्रेम गुलावकुंवरि ताड़ गई थी। उसने मायादेवीसे अपने साथ निकल भागनेपर जोर दिया। पहले तो मायादेवीने इस वातसे इनकार किया मगर फिर कुंवर मदनसिंहकी मुहब्बत तथा पिताके अत्याचारपर ख्यालकर उसने वहांसे निकल भागना ही मुनासिब समझा और बहुत जल्द चोर दरवाजा खोलकर सबके साथ किलेसे बाहर हो गई।

वह किलेका पिछवाड़ा था और वहां उस समय बहुत ही सन्नाटा था। इसी समय गुलाबकुंवरिको अपनी सखियोंकी याद आई और उसने सबसे साफ-साफ कह दिया, कि बगैर मालती, श्यामा, ललिता और केसरके मैं यहांसे नहीं जा सकती। मायादेवी-ने कहा, कि मैं केसर और ललिताको तो निकाल ला सकती हूं मगर मालती और श्यामाका पता मुझे नहीं मालूम। अगर आप लोगोंमेंसे एक आदमी मेरे साथ चले तो मैं उन दोनोंको छुड़ा सकती हूं।

सबने इस रायको पसन्द किया और भूपसिंह मायादेवीके साथ जानेपर तैयार हो गये। मायादेवी भूपसिंहको साथ लेकर चोर दरवाजेमें घुस गई। कुंवर मदनसिंह, नकुलसिंह और गुलाब-कुंवरि पासहीके एक निराले स्थानपर बैठकर उनका इन्तजार करने लगे।

यहांपर गुलाबकुंवरि और मदनसिंहसे इधर उधरकी बहुत सी बातें हुईं। मगर हम उनका लिखना व्यर्थ समय नष्ट करना समझते हैं, क्योंकि उन बातोंका सिलसिला प्रायः वही था, जो हमारे पाठक इस उपन्याससें समयपर पढ़ चुके हैं।

करीब पौन घण्टेके बाद, मायादेवी और भूपसिंह, केसर और ललिताके साथ चोर दरवाजेसे निकलकर, मदनसिंह वगैरह-के पास आये। गुलाबकुंवरि अपनी दोनों सखियोंसे बड़ी मुहब्बत-के साथ मिली। अब देरी करनेका समय नहीं था, क्योंकि रात ज्यादः जा चुकी थी। सब लोग तेजीसे भद्रा नदीकी ओर बढ़े। नदी यहांसे करीब कोसभरके फासलेपर थी। थोड़ी ही दूर जाने-पर यह लोग एकाएक ठिठक गये। साथ ही नकुलसिंहने जोरसे सीटी बजाई। सीटीकी आवाज खतम होते न होते जङ्गलमें कुछ खड़खड़ाहट सुनाई दी और पन्द्रह जवान हरबे हथियारसे लैस चार

कहारोंके साथ एक पालकी लिये पेड़ोंके झुरमुटसे बाहर निकल आये। कुंवर मदनसिंहका इशारा पाकर गुलाबकुंवरि और मायादेवी पालकीपर सवार हो गईं। केसर और ललिताने पालकीके साथ साथ पैदल चलना स्वीकार किया और हथियारबन्द सिपाहियोंसे घिरकर पालकी नदीकी तरफ रवाना हुई।

रातके तीन बजे यह लोग भद्रा नदीके किनारे पहुंचे। बजरा पहलेहीसे तैयार खड़ा था। सब लोग सवार होगये और बड़ी तेजीके साथ बजरा देवीपुरकी ओर रवाना हुआ। यह सब कार्रवाई (जलयात्रा) खासकर इसी लिये की गई थी, कि किसीको कानोकान खबर न हो। अगर खुश्की रास्तेसे जाते तो बहुत जल्द रास्ते हीमें गिरफ्तार कर लिये जाते। अस्तु।

* * * * *

हम ऊपर लिख आये हैं, कि सब लोगोंके मामूली कामोंसे छुट्टी पा लेनेपर बजरा खोल दिया गया और पुनः तेजीके साथ देवीपुरकी ओर जाने लगा। इस समय दिनके करीब नौ बज चुके थे, मगर सूर्यदेवका कहीं नाम निशान भी न था। झींसी पूर्ववत गिर रही थी और ठण्ढी-ठण्ढी हवा अपनी मुलायम चालसे चलती हुई बड़ा ही आनन्द दे रही थी।

अभी नदीके किनारेसे नाव खुलकर पूरे एक माइलपर भी न गई होगी, कि पीछेसे बहुत आदमियोंसे भरी हुई एक खुली नाव बड़ी तेजीके साथ आती हुई दिखाई दी जिसपर बीस मल्लाह अपनी पूरी ताकतसे डांड़े चला रहे थे। बजरेके मल्लाहोंकी निगाह उस नावपर पड़ गई, साथ ही उन्होंने चिल्लाकर कहा,—"कुंवर साहब! दुश्मनकी नइया कपारपर आय पहुंचल।"

मल्लाहोंकी चिल्लाहट सुनतेही नावके सब मनुष्य चौंक पड़े। कुंवर मदनसिंह, सरदार सिंह और भूपसिंह अपनी अपनी तलवारें

खींचकर फुर्तीसे बजरेके बाहर निकल आये और बजरेके सिपाही भी कमर कसकर हरबे हथियारसे लैस हो लड़ने मारनेपर मुस्तैद हो गये।

कुंवर मदनसिंहने अपनी दूरबीनसे देखा, कि तकरीबन पचास सिपाही नावपर सवार हैं और डांड़े चलानेवाले मल्लाहों-को कमरसे भी तलवारें कसी हुई हैं। मदनसिंहके मल्लाह भी हरबे हथियारसे लैस थे। नाव खूब तेजीके साथ चलाई जाने लगी। मगर दुश्मनोंकी नाव इस नावसे बहुत हलकी, नोकदार और तेज चलनेवाली थी, और खेनेवाले मल्लाह भी ज्यादः थे। अस्तु बात की बातमें नाव बजरेके गिर्द पर आ पहुंची और उसमेंसे एक रोबीले जवानने जो शायद सबका सरदार था बड़ी तेज आवाज-से ललकार कर कहा,—"मेरे बहादुरो! राजा अर्जुनसिंहके चोरों-को हमलोग पागये। नाव और तेज करो और भागती हुई दुश्मनों-की नावको गिरफ्तार कर लो।"

सरदारकी आवाज पूरी होते न होते नाव बजरेके बराबरमें पहुंच गई। दुश्मनोंके सिपाही तलवारें खींचकर बजरेपर झपट पड़े। इधरके जवान भी मुस्तैद थे। दोनों ओरसे तेजीके साथ तलवारें चलने लगीं और दोनों ही ओरके जवान बेकाम हो होकर नाव और नदीमें धड़ाधड़ गिरने लगे। इस समय कुंवर मदनसिंह, नकुलसिंह और रूपसिंहकी वीरता देखने ही योग्य थी। यह लोग उछल २ कर तलवारें मारते और हर वारमें एक दो दुश्मनोंको बेकामकर नदीमें गिरा देते थे।

दोनों तरफके मल्लाहोंमें भी कसकर तलवारें चल रही थीं और मौतका बाजार खूब गर्म था। नदीका जल खूनसे लाल हो रहा था और बेसिर की लाशें बहावपर तेजीके साथ बही जा रही थीं। दुश्मनोंका शुमार बहुत ज्यादः था। मदनसिंहके बारह सिपाही और पांच मल्लाह मारे गये और दुश्मनोंके बीस सिपाही तथा नौ

सम्राह काम आये। अब दुश्मनोंने बड़े जोशके साथ बजरेपर हमला किया। कुंवर मदनसिंह और उनके साथी नकुलसिंह तथा भूपसिंह बाकी तीनों सिपाहियोंके साथ जी तोड़कर उनका मुकाबला करने लगे। मगर दुश्मनोंके हमलेको सम्हालना बड़ा ही मुश्किल था। हर बार दुश्मनोंके सिपाही बजरेके किसी न किसी स्थानपर कब्जा कर लेते थे और पुनः इधरके वीरोंकी तलवारें उन्हें पीछे हटा देती थीं। लेकिन एकपर दो बहुत होते हैं। यहां तो एकपर सात सात थे। कहां तक सामना हो सकता था? भूपसिंहसे न रहा गया और उन्होंने गुस्सेमें आकर अपने बटुएसे एक ऐयारीका गोला निकाला और बड़े जोरसे दुश्मनोंकी नावपर पटक दिया। गोला गिरतेही बड़े जोरसे फटा। गहरा और काला धूवां चारों तरफ छा गया। और जब धूवां कुछ कम हुआ तो इन्हें दुश्मनोंकी नाव सब सिपाहियोंके बड़ी तेजीके साथ चक्कर खाती हुई नदीमें डूबती दिखाई दी।

दूसरा बयान।

रात भर घनघोर लड़ाई होती रही और दोनों तरफकी तोपें एक दूसरेपर भयानक आग बरसाती रहीं। अर्जुनसिंहके सेनापति खड़गबहादुरसिंहकी फौजने बड़े जोर शोरके साथ कई बार देवगढ़पर हमला किया मगर हर बार उसे भारी नुकसानके साथ पीछे हटना पड़ा *।

सुबह हो गया था और पूर्वकी अन्तिम सीमासे लाल लाल तपे हुए सोनेके रंगका बड़ा गोला जिसको लोग सूरजके नामसे पुकारते हैं, धीरे धीरे आपरकी ओर चढ़ रहा था। उसकी गुलाबस

---

* देखो दूसरा हिस्सा अठवां बयान।

मुलायम सुनहरी किरणें हरे हरे पेड़ों और छोटी छोटी पहाड़ियों-पर पड़कर एक बड़ाही मजेदार प्राकृतिक दृश्य दिखा रही थीं। ऐसे ही समयमें खड्गबहादुरसिंह अपने मातहत अफसरोंके साथ घोड़ेपर चढ़ा बड़ी उदासीके साथ बातें कर रहा था और रह रहकर उसके हाथकी दूरवीन उसकी आंखोंसे लग लगकर किले की ओर दूर दूरका दृश्य देख आती थी।

कुछ देर तक इसी तरह बात चीत करनेपर खड्गबहादुरसिंह-ने एक सवारको बुलाया और उसके हाथमें अपनी अंगूठी रखकर उसके कानमें कुछ कह दिया, जिसके साथ ही वह सलाम कर एक तरफ घोड़ा फेंकता हुआ चला गया। सवारके जानेके बाद ही दाहिनी तरफसे एक आवाज हुई "टांय" और साथ ही हरे हरे जंगली पौधोंको रौंदता हुआ वही रातवाला नकाबपोश घोड़ा दौड़ाता हुआ सेनापतिके पास आ जंगी सलाम कर खड़ा हो गया।

सेना०—"रात की बात ?"

नकाब०—"इन्द्रदेव मारे गये।"

सेना०—"बड़ा नुकसान उठाना पड़ा। हमारी सब चालें निष्फल हुईं। कहो तुमने क्या किया ? इसी समय मौका है।"

नकाब०—"सब ठीक है. सिर्फ हुक्मकी देर है।"

सेना०—"कुमक आते ही मजबूत मोरचा बांधकर एकाएक धावा बोल दिया जायगा। जिस समय बाढ़ मारती हुई हमारी फौज किलेसे पचास गजके फासलेपर पहुंच जाय ठीक उसी समय हाथकी सफाई दिखानी चाहिये अगर तुम्हारा तीर निशनेपर बैठ गया तो अपने वादेके मुताबिक राजा साहबसे सिफारिशकर तुम्हे बहुत ऊंचा पद फौजमें दिला दिया जायगा।"

नका०—"आपकी कृपा चाहिये। मैं तो गुलाम हूं। अच्छा सलाम।"

सेना०—"शाबास। खूब होशियार रहना।"

"जो आज्ञा" कहता हुआ नकाबपोश घोड़ा दौड़ाता जंगलमें घुसकर आँखोंसे गायब होगया। सेनापतिके साथ वाले मातहत अफसर इन दोनोंकी बातें बड़े आश्चर्यसे सुन रहे थे, मगर इनकी समझमें कुछ भी नहीं आया, कि इन लोगोंमें क्या बातें हुईं।

सवारके चले जानेपर खड्गबहादुरसिंहने अपने अफसरोंसे सलाह कर तोपखाने एक स्थानसे दूसरे स्थानपर लगवाये और बड़ी ही मजबूत मोरचाबन्दी कर नये जोश और नई उमंगके साथ किलेकी तोपोंपर गोले उतारने लगे। एकाएक दुश्मनोंका फुर्तीलापन और तोपोंकी भयानक गोलन्दाजी देखकर कुछ देरके लिये महाराज देवसिंह और सेनापति जंगबहादुरसिंह बहुत ही घबड़ाये, क्योंकि सामने आते हुये गोलोंकी भयानक मारने किलेकी तोपोंके बहुतसे गोलन्दाजोंको बेकाम कर डाला था और कई तोपोंके मुंह एकबारगी ही बन्द हो गये थे। मगर अब महाराज और सेनापतिने अपनेको सम्हाला और घायल तथा चिल्लाते हुये सिपाहियोंको ढाढ़स देकर इधर उधरके स्थानोंकी तोपें शीघ्रताके साथ सामनेकी दीवारपर लगवाईं। खाली तोपोंपर नये गोलन्दाज मुकर्रर किये गये और बड़े जोर शोरके साथ दुश्मनोंकी तोपोंका जवाब दिया जाने लगा। अब क्या था उधरसे अगर एक गोला आकर किलेकी दीवारसे टकराता तो इधरसे दो गोले उसके जवाबमें पहुंचकर उनके तोपखानेकी खबर लेते। उधरसे दस गोले आते तो इधरसे बीस ही गोले आगे बढ़कर उनकी खातिर करते।

अब सुबहके नौ बज चुके थे। साफ और लम्बे चौड़े आसमानपर अंगारेके समान तपनेवाले सूर्यदेवका रथ तेजीके साथ आगेकी ओर बढ़ रहा था। किलेके गोलन्दाजोंने बड़ी ही दिलेरीके साथ गोले बरसाकर खड्गबहादुरसिंहकी तोपोंके मुंह फेर दिये।

दुश्मनोंकी फौजें तितर बितर होगईं और जान
सिपाही इधर उधर बगलें झांकने लगे।

एक तो रात भरकी थकावट दूसरे साफ और बेसायेके मैदान-
की कड़ी धूप। तिसपर जलते बलते गोलोंसे बार बार कुछ न कुछ
सिपाहियोंका बेमौत मारा जाना, भला पञ्चतत्वका बना हुआ शरीर
कब बरदाश्त कर सकता था ? आखिर जान सब हीको प्यारी होती
है। फौजी सिपाही भी जानदार आदमी ही थे कुछ कलके बने
फौलादी पुतले तो थे ही नहीं, जो खड़े रह सकते। भागनेका
मौका ताकने लगे।

खड्गबहादुरसिंहने फौजका रुख बदलता देख सफेद निशान
दिखाकर लड़ाई बन्द की। दोनों ओरके गोलन्दाजोंने तोपोंसे
हाथ खींच लिये। सिपाहियोंकी बन्दूकें कन्धोंपर गईं। घोड़ोंकी
पीठ खाली की गई। जवानोंकी पेटियां खुलीं और वह लोग साये-
दार पेड़ोंके नीचे विश्राम करने लगे।

किलेके सिपाहियोंने भी कमरें खोलीं। टूटे हुए स्थानोंकी
शीघ्रतासे मरम्मत की जाने लगी। घायल सिपाही अस्पतालमें
पहुंचाये गये और बेजानकी लाशोंका नियमानुसार संस्कार कर
दिया गया। यह सब इन्तज़ाम कर महाराज देवसिंह,
सेनापति और जङ्गबहादुरसिंह सब सरदारोंके अपने अपने महलों-
में मामूली कामोंसे छुट्टी पानेके लिये चले गये।

इधर खड्गबहादुरसिंहने जो अपनी फौजके घायलों और मुर्दों-
की संख्या मिलाई तो उनके होश उड़ गये। कलेजा थामकर रह
गया। उसकी उम्मीदोंपर पाला पड़ गया और वह तरह-तरहकी
फिक्रोंमें पड़कर मतवालासा दिखाई देने लगा। उसकी फौजके
करीब पांच सौ सिपाही मारे गये थे और नौ सौ सख्त घायल हो
गये थे। मामूली कामोंसे छुट्टी पा लेने पर खड्गबहादुरसिंह अपने

खेमेमें चला गया और फिर उसी उधेड़बुनमें मशगुल हुआ।

ठीक १ बजे कुमककी फौज अपने दलबलके साथ कैम्पमें दाखिल हुई। उसके अफसर बड़े तपाकसे अपने सेनापतिके साथ उनके खेमेमें मिले। मगर सेनापतिको सुस्त और उदास देखकर बड़े ही परेशान हुए और उनके मुंहसे लड़ाईका हाल सुनकर अफसोस करने लगे।

तीन बजेके समय फिर लड़ाईका डंका बजा। दोनों तरफ धूमधामके साथ तैयारियां होने लगीं। तोपखाने नये नये स्थानोंपर लगाये गये और चार बजते बजते बड़े जोर शोरके साथ लड़ाई शुरू होगई। दो घण्टे तक बड़ी तेजीके साथ गोले गोलीकी वर्षा होती रही। इसी समय खड्गबहादुरसिंहने एक चाल खेली, यानि अपनी कुल फौजके दो टुकड़े कर डाले, और एक टुकड़ेके तीन हिस्से कर तीन अफसरोंकी मातहतीमें किलेके तीनों तरफ धावा बोल दिया और एक टुकड़ेकी लगाम अपने हाथमेंले तोपोंकी बाढ़ मारते हुए उस किलेके सामनेकी ओर बढ़ाया। फौज गोलोंके सायेमें किलेपर गोलियाँ बरसाती हुई शीघ्रतासे आगे बढ़ी। दो तोपखाने किलेके सदर फाटक पर गोले उतारते हुए फौजके पीछे पीछे किलेकी ओर बढ़ने लगे।

राजा देवसिंह दूरबीनसे एक बुर्जीपर खड़े सब कैफियत देख रहे थे। दुश्मनोंकी इस चालने उनके दिलमें बड़ी बेचैनी डाल दी। कारण, कि एक तो उनकी फ़ौज दुश्मनोंके मुकाबिलेमें बहुत कम थी। दूसरे किलेका दाहिना और पिछला हिस्सा बहुत कमजोर पड़ता था। तीसरे जो कुछ फौज थी वह सब किलेके सामनेके हिस्सेपर लड़ रही थी। और हिस्सोंपर सिर्फ मामूली सिपाहह उनकी रक्षा कर रहे थे। महाराज देवसिंहने सेनापतिसे सलाह लेकर फुर्तीके साथ दोनों तरफकी दीवारोंपर चुनिन्दे-चुनिन्दे

सिपाही भेज दिये जो सुरङ्गैदोंके साथ दीवारों की रक्षा करने लगे। खड्गबहादुरसिंहने किलेसे पचास गजके फासलेपर पहुंचकर एक बड़ा ही मजबूत मोरचा बांधा। पीछे वाले तोपखानेने कुछ ऐसी बाढ़ें मारीं, कि किलेके सामनेकी अधिकांश तोपोंके मुंह बन्द होगये। और सामनेकी दीवारपर एक प्रकारका सन्नाटा दिखाई देने लगा। अर्जुनसिंहकी फौजका दिल दूना हो गया। खड्गबहादुरसिंहने अपनी फौजमेंसे चुनिन्दे-चुनिन्दे तीन हजार सवार चुनकर एकाएक धावा बोल दिया। इनका धावा रोकनेकी ताकत देवसिंहकी फौजमें न थी। सवारोंने खन्दकमें घोड़े डाल दिये और तैर कर उसपार हो रहे। इधरकी तोपोंके मुंह भी बन्द किये गये और सीढ़ियां फेंक फेंक कर सैकड़ों सिपाही दीवारों पर चढ़ गये। इसी समय एक और गुल खिला। महाराज देवसिंहकी फौज दीवारकी आड़में छिपी हुई थी। वह पलक झपकते दुश्मनोंके सिपाहियोंपर टूट पड़ी। दीवार परकी सब सिपाही कुछही देरमें काट कर खन्दकमें फेंक दिये गये और जो सिपाही दीवारपर चढ़ रहे थे, उनपर गोली, तीर, बरछे और कड़ाबीनोंकी मार पड़ने लगी। जलती हुई लकड़ियां और उबलते हुए तेलकी पिचकारियाँ उनपर छोड़ी जाने लगीं। खन्दकमें पैरते हुए सिपाहियोंपर किलेकी दीवारपरसे ताक ताककर कुछ ऐसी गोलियां मारी गईं, कि उनकी बेजानकी लाशें मगर और घड़ियालोंकी शक्लमें तैरती दिखाई देने लगीं। थोड़ी ही देरमें दीवार और खाईमें दुश्मनोंका एक भी सिपाही ऐसा न रहा जो सिर उठाता। दुश्मनोंकी फौज बार बार किलेपर झपट पड़नेके लिये आगे बढ़ती मगर खन्दकके पास आते-आते किलेपरसे वह मार पड़ती, कि उनके छक्के छूट जाते।

किलेके दाहिने बायें और पिछले हिस्से में भी इस समय धम-

घोर-संग्राम हो रहा था। दोनों ओरके सिपाही जान लड़ाकर युद्ध कर रहे थे। किले वाले सिपाहियोंकी संख्या कम होने पर भी उनका साहस प्रशंसनीय था। वह इस बहादुरीसे दुश्मनोंका मुकाबिला कर रहे थे, कि दुश्मनोंके मुंहसे भी रह रहकर "शावाश" का शब्द निकल पड़ता था। कई बार दुश्मनोंने किलेकी दीवारों पर कब्जा कर लिया मगर अन्तमें उन्हें सैकड़ों जवानोंको कटवाकर बड़े नुकसानके साथ लौटना पड़ा। सहकारी सेनापति सरदार रणजीतसिंहका इन्तजाम काबिल तारीफ था और सच पूछिये तो उन्हींके तर्कीबोंने दुश्मनोंके दांत खट्टे कर दिये थे।

सन्ध्या हुई और सूर्य अस्त हुए। चारों तरफ हलका अन्धेरा छा गया और क्रमशः बढ़कर गहरे और काले अन्धकारकी शक्लमें बदल गया। दोनों तरफकी फौजोंमें रंग-रङ्गवत्तियाँ जला ली गईं और मौतके बाजारका भाव धीरे धीरे बढ़ता ही गया।

रातके ठीक आठ बजे खड्गबहादुरसिंहकी फौजमें एकाएक बिगुल बजाया गया और लाल हरी लालटेनोंसे कुछ संकेत किये गये, जिसके साथ ही आगेकी सब फौज शीघ्रतासे पीछे हट गई। फौजके पीछे लम्बी कतारमें पन्द्रह तोपें सजी सजाई तैयार थीं। सिपाहियोंके पीछे हटते ही सब पर एक साथ बत्ती रख दी गई। आह! बड़ी ही भयानक आवाज उन तोपोंसे हुई। जमीन हिल गई, दिशायें गूंज उठीं, कानोंके परदे फट गये और पृथ्वीसे आकाश तक किले और फौजके बीचमें गहरे तथा काले धूवेंकी एक मोटी दीवार खिंच गई। किले वाले बिलकुल बेखबर थे। महाराज देवसिंहके सैकड़ों सिपाही तथा कई अफसर मारे गये और बेशुमार जख्मियोंकी चिल्लाहटसे कलेजा टुकड़े टुकड़े होगया। अभी किले वाले पूरे तौरसे सम्हले भी न थे कि दुश्मनोंने एक बाढ़ और मारी। इस बार भी दो तीन सौ आदमी हत तथा आहत हुए।

महाराज देवसिंहके पासही एक गोला गिरा जिससे उनका घोड़ा सख्त जख्मी हो गया मगर वह बाल बाल बच गये। सेनापति जङ्गबहादुरसिंह फाटक पर तोपखानेका इन्तजाम कर रहे थे। उनके पैरमें गोलेका एक टुकड़ा घुस गया जिससे वह घायल होकर छटपटाने लगे और बेहोश होकर वहीं गिर पड़े। सिपाहियोंने शीघ्रताके साथ उन्हें उठाकर अस्पतालमें पहुंचा दिया और दो नामी वैद्य उनका इलाज करने लगे।

महाराज देवसिंह सेनापतिका हाल सुन बड़ा ही अफसोस करने लगे और सहकारी सेनापति रणजीतसिंहको किलेकी रक्षाका भार सौंपकर सेनापतिको देखने चले गये। इस बीचमें किलेके गोलन्दाजोंने भी मुस्तैद होकर तोपोंकी बाढ़ मारी। दुश्मन पहलेहीसे होशियार थे, उनका विशेष नुकसान नहीं हुआ। अब दोनों तरफसे धड़ाधड़ तोपें चल रही थीं। किले वाले गोलन्दाज किटकिटाये हुए थे इससे उनके फैर बड़ी फुर्तीके साथ हो रहे थे। मगर इससे दुश्मनोंका विशेष नुकसान न हुआ। दोनों तरफकी तोपें बराबर एक दूसरे पर गोले बर्साती रहीं।

रातके बारह बज गये मगर लड़ाई खतम न हुई। खड्गबहादुरसिंहने अपने दिलमें पक्का इरादा कर लिया था कि आज चाहे जो हो लेकिन बगैर किला फतह किये लड़ाई न बन्द करूंगा।

एक बजनेमें अभी कुछ मिनिट बाकी है, कि इसी समय किलेके पिछले हिस्से में एक बड़ी ही भयङ्कर आवाज हुई मानों सैकड़ों तोपों पर एक साथ बत्ती रख दी गई हो या सैकड़ों बिजलियां कड़कड़ा कर एक साथ किलेपर गिर पड़ी हों।

कुछ ही देरमें मालूम हुआ कि किलेके पिछले हिस्से की दीवार मय सिपाहियोंके उड़गई है और उस स्थानपर दुश्मनोंने कब्जा कर लिया है। इस खबरने किले भरमें बिजलीकी तरह दौड़कर

मौतका सा सन्नाटा डाल दिया और सबके चेहरों पर हवाइयां उड़ने लगीं। महाराज देवसिंहके चेहरे पर भी उदासी छागई और डर मारे घबराहटके पागलोंकी तरह मालूम देने लगे। रणजीत-सिंह फौरन एक हजार सिपाहियोंको लेकर घटनास्थल पर पहुंचे और बड़ी वीरतासे बढ़ते हुए दुश्मनोंको रोककर मुकाबिला करने लगे। इधर मौका पाकर खड्गबहादुरसिंहने अपनी कुल फौजके साथ धावा बोल दिया। किले वालोंके ध्यान बटे हुए थे और अधिकांश सिपाही पिछले हिस्से की तरफ लड़ रहे थे। थोड़ेसे जवान दुश्मनोंका धावा रोक न सके। दुश्मनोंके सिपाही सीढ़ियां लगा लगाकर दीवारों पर चढ़ने लगे और दीवार परके सिपाही भी तोड़कर उनका मुकाबिला करने लगे। इसी समय एक धड़ाके की आवाजके साथ किलेका फाटक खुल गया और वही नकाबपोश जो दो मर्तबः खड्गबहादुरसिंहसे मिल चुका था पन्द्रह सुर्ख नकाबपोशोंके साथ महाराज अर्जुनसिंहका पचरंगा निशान लिये खड़ा दिखाई दिया।

फाटक खुलते ही—धड़धड़ाकर बड़े वेगसे सब फौज किलेमें घुस पड़ी और देखते-देखते राजा अर्जुनसिंहका ऊंचा झण्डा किलेके फाटक पर फहराने लगा।

तीसरा बयान।

पाठक भूले न होंगे, जब पुतलीमहलके अन्दर, तिलिस्म आलन्धरके दरवाजेपर, राजकुमार चन्द्रसिंह, या, अपने चारों ऐयारों और मददगार अजनबीके साथ, सरदारके ललकारने पर उसके नकाबपोश सिपाहियों द्वारा घेर लिये गये थे

और इसके साथ ही दोनों तरफसे झनाझन तलवारें चलने लगी थीं * ।

नकाबपोशोंके बीचमें घिर जाने पर राजकुमार तथा उनके साथियोंने बहुत देर तक उनका मुकाबिला किया। इस अरसेमें नकाबपोशोंकी बहुत हानि हुई। उनके दलके करीब पचास सिपाही हमारे वीरों द्वारा काटकर फेंक दिये गये। मगर हमारे बहादुरोंके बदन पर भी बहुतसे जख्म लगे थे, जिनसे बराबर खून जारी था और मिनिट मिनिट पर उनकी आंखोंके आगे चक्कर आ रहे थे। लेकिन फिर भी वह डटकर तलवारें चलानेसे बाज नहीं आते थे। इन बहादुरोंमें हमारे राजकुमारका नम्बर सबसे बढ़कर रहा, क्योंकि एक अकेले उन्होंने पचीस नकाबपोशोंको यमदूतोंके हवाले किया था।

अब नकाबपोश सरदारने अपने सिपाहियोंकी दुर्दशा देखकर उनको फिर बढ़ावा दिया और बड़े तपाकके साथ स्वयं तलवार खींचकर लड़ाईके मैदानमें कूद पड़ा। उसके सिपाही अपने सरदारको आगे बढ़कर स्वयं लड़ते देख बड़े जोशमें आगये और चारों तरफसे "मार-मार" करते हुए राजकुमारके गरोहपर टूट पड़े। अब तो राजकुमार या उनके साथियोंको नकाबपोशोंका मुकाबिला करना भारी पड़गया, क्योंकि बदनसे ज्यादः खून निकल जानेकी वजह इन लोगोंमें बहुत कमजोरी आगई थी और तलवारें बहुत सुस्तीके साथ अपना काम कर रही थीं। नकाबपोशोंका दल तेजीके साथ तलवारें चलाता हुआ आगे बढ़रहा था और राजकुमारका गरोह अपना बचाव करता हुआ धीरे-धीरे पीछे हट रहा था। मुमकिन था, कि दो चार मिनिटमें उनके हाथोंसे तलवारें गिर पड़ें और नकाबपोशों द्वारा उनके कीमती सिर धड़से अलग कर दिये

* देखो दूसरा हिस्सा नवां बयान।

जावें, कि इसी समय सहसा हीरासिंहने अपनी ऐयारी भाषामें ललकारकर अपने शागिर्दोंको कुछ इशारा किया जिसके साथ ही चार गोले धड़ाधड़ जमीनपर पटक दिये गये। गोलोंके जमीनपर गिरतेही बड़े जोरकी धड़ाधड़ चार आवाजें हुई मानों चार बिजलियां कड़कड़ाकर एक साथ जमीनपर गिर पड़ी हों। इसके बाद ही एक काला और जहरीला धूआं जमीनसे उठकर पलक झपकते आस्मान तक छागया और चारों तरफसे चिल्लाहटकी आवाजें आने लगीं। करीब पन्द्रह मिनिटमें धूआं जब कुछ साफ़ होगया तो एक अजीब तमाशा नजर आया। सब नकाबपोश सिपाहिये अपने सरदारके बेहोश पड़े थे और इधर हमारे राजकुमार तथा अजनबी महाशय भी जमीन सूंघ रहे थे। इन दोनोंके बदनपर बहुत जख़्म लगे थे जिनसे अब तक बराबर ख़ून जारी था। एक तरफ हमारे चारों ऐयार सिर मुंह ढंके काठके पुतलोंकी तरह अजीब शक्लमें खड़े थे। धूआं बिलकुल साफ होजानेपर हीरासिंहने अपने मुंहपरसे कपड़ा हटाकर तीनों ऐयारोंको आवाज दी,—"अरे भाई! अब तो मुंह खोलो ज्यादा परदानशीनी करनेसे काम नहीं चलेगा। हिजड़ोंमें शुमार होजायेगा।"

लालसिंह—"उस्ताद! बातें न बनाइये। कम्बख़्त ऐसा धूआं आंखोंमें घुसा है, कि सारी मर्दानगी हवा होगई। मारे कड़वाहटके सांसभी नहीं घूंटा जाता। न जाने कितनी कड़ी बेहोशी आपने गोलोंमें भरी थी। ओहो! बदबू भी ऐसी है कि नाक सड़ा जाता है। राम राम राम राम।"

दामोदर०—"थू थू थू थू! इतनी खुशबू? आपने तो उस्ताद कारावेके कारावे इत्र इसमें खर्च डाले होंगे?"

विश्वनाथ०—"चूल्हेमें गई खुशबू। यहां मगज़ भन्नाया आरहा है, तुम्हें हरियाली ही सूझ रही है।"

हीरासिंह—"हां इनलोगों को दिल्लगी ही सूझती है। मेरे तो हजारों रुपये वर्बाद होगये मगर इन लोगोंको जरा तर्स नहीं आया। वाहरे जमाना! यह तो नहीं कहेंगे, कि सबको जान बचाली। उलटे बोली आवाजें छोड़ने लगे? अगर यह गोले पहलेहीसे तुम लोगोंको न दे रखता तो एककी भी जान नहीं बचती। और फिर मेरी नेकी तो देखो, कि एकको भी बेहोश नहीं होने दिया। अगर तुम लोगोंके नाकमें इसके तोड़की दवा न लगा दिये होता तो क्या इस तरह खड़े रहते?"

विश्व०—"हां हां उस्ताद! आपकी क्या बात है। आखिर तो उस्ताद ही न ठहरे, मगर इतना किया तो क्या एहसान किया? अब किसी तरह इस वदवूसे जान बचाइये तो तारीफ है।"

हीरा०—(सब की नाकमें एक इत्र लगाकर)"लो यह तीन हजार रुपये तोलेकी रूह मैंने खास अपने वास्ते कन्नौजसे फरमाइस देकर मंगवाई है। कहो ऐसी रूह कभी ख्वाबमें भी लगाई थी?"

लाल०—"अरे वाह उस्ताद! क्यों न हो। आखिर तो उस्ताद ही न ठहरे? सारी बला दूर भाग गई। वेशक यह एक नायाव चीज है। भई अपनी शादीमें तो मैं भी इस रूहका एक भभका मंगवाऊंगा और अपने दोस्तोंको सिरसे पैर तक तर कर दूंगा।"

दामोदर०—"तुम भी निरे बेवकूफ ही रहे। सेर दो सेर कहते तो भला वाजिब भी था। बहुत होता लाख दो लाख रुपये-का हो जाता। कहने लगे तो क्या? एक भभका! जानते भी हो, कि एक भभकेमें कितना होता है? कमसे कम एक मन। कहांसे खरीदोगे? उतने रुपये भी तो चाहिये। कहीं चोरी करोगे या डाका मारोगे?"

विश्वना०—"जो उस्तादके मुंहसे निकला वही ब्रह्मवाक्य हो गया। बारह बरस दिल्लीमें रहे किसीने पूछा क्या करते रहे?

कहां भाड़ झोंकते रहे। जन्म भर ऐयारी करते बीता मल्काकी बास तक न पाई। अरे मरदे आदमी! तीन हजार रुपये तोलेकी कहुं कभी सुनी भी है, कि हां में हां मिलाने लग गये? ज्याद:से ज्याद: पचास नहीं सौ, सो भी अव्वल नम्बर की हो तौ।"

दामोदर०—"अरे यार! तुम भी निरे बछियाके ताऊ ही रहे। मैं तो मज़ाक करता था तुमने सचही मान लिया। किसी तरह भी छुटकारा नहीं। इधर बोलूं तो भी बुरा उधर बोलूं तो भी बुरा।"

हीरा०—"अच्छा अब बहुत दिल्लगी हो चुकी। काम की तरफ भी ध्यान देना चाहिये। कुछ ख्याल भी है; हमारे राजकुमार और वह अजनबी महाशय किस हालतमें पड़े हैं?"

हीरासिंह की बात पर तीनों ऐयार एकाएक चौंक पड़े और साथही राजकुमार तथा अजनबीकी तरफ झपटे। दमोदरसिंहने कुमारको उठाकर गोदमें लिटा लिया और हीरासिंहने अपने बटुवे में से एक मलहम निकालकर कुमारके सब जख्मोंपर लगा दिया जिससे बातकी बातमें खूनका बहना बन्द हो गया और जख्मों के मुंह धीरे धीरे सिकुड़कर छोटे हो गये। इसके बाद हीरासिंहने दो तीन दवाइयां उन जख्मोंमें और लगादीं और लखलखा सुंघाकर उन्हें होशमें ले आये। आंखें खुलते ही राजकुमारकी निगाह बेहोश नकाबपोशोंपर पड़ी और उन्होंने ताज्जुबमें आकर हीरासिंहसे पूछा,—यह क्या माजरा है जो यह सबके सब जमीन पर पड़े नाक रगड़ रहे हैं?"

इसपर हीरासिंहने शुरूसे आखिर तक सब बातें सुना दीं, जिसे सुन कुमार बहुत खुश हुए और चट अपने गलेका कीमती हार उतारकर हीरासिंहके गलेमें पहना दिया और उनकी बड़ी तारीफ की। यह देख दामोदरसिंह, लालसिंह और विश्वनाथसिंहके मुंहमें भी पानी भर आया और तीनों हाथ बांधकर कुमारके सामने खड़े

हो गयें। इसपर राजकुमारको बड़ी हँसी आई और उन्होंने तीनों ऐयारोंको भी कई एक कीमती चीजें देकर खुश कर दिया।

यहां पर एक बात कहना हम भूल गये थे। वह यह है कि जिस समय हीरासिंह और दामोदरसिंह कुमारको होशमें लानेकी कोशिशमें लगे थे उसी समय लालसिंह और विश्वनाथसिंह भी अजनबी महाशयको होशमें लानेकी फिक्र कर रहे थे। अतएव दोनोंही एक साथ होशमें आये थे और नकाबपोशोंकी हालत देखकर ताज्जुब करने लगे थे।

इनाम इकराम बँट चुकने पर राजकुमार, उनके चारों ऐयार और अजनबी एक जगह बैठ गये और आगेकी कार्रवाईपर सलाहें करने लगे।

राजकु०—"हां तो अजनबी महाशय! क्योंकि, मैं अब तक आपका नाम नहीं जानता। मैं आपको किस नामसे याद किया करूं? उस समय एकाएक दुश्मनोंके चढ़ आनेसे मैं आपका नाम नहीं पूछ सका।"

अजनबी—"श्रीमान्! अगर मुझे तिलिस्मके बाहर होने तक इसी नामसे पुकारा करें तो बेहतर होगा। कई एक कारण ऐसे आ पड़े हैं जिनसे मैं अपना नाम बतानेमें अभी असमर्थ हूं। मेरा नाम बहुत ही भयानक रहस्योंसे भरा है।"

राजकु०—"खैर तो मैं इसमें जिद्द नहीं कर सकता। अच्छा तो अब सबके पहले क्या करना उचित है?"

अजनबी—"सबसे पेश्तर हम लोगोंको चाहिये, कि अपनेको तिलिस्म जालन्धर वाले गोल कमरेमें शीघ्रता पूर्वक पहुंचावें और वहांके कैदियोंको छुड़ाकर अपना मददगार बनावें। इसके बाद खजाने वाली कोठरियोंको अपने कब्जेमें लावें। उनमेंसे हम लोगोंको बहुतसे तिलिस्मी हरबे हथियार दस्तयाब होंगे, जो वक्त पर बड़ी

मदद पहुंचावेंगे। क्योंकि दारोगा पुतलीमहलको अपने नकाब-पोशोंकी दुर्दशाका समाचार मिल गया होगा और अब वह बहुत जल्द दूसरी आफत लाता होगा। इस बार वह तिलिस्मी कायदेके मुताबिक तिलिस्मी तोहफोंसे काम लेगा। अगर हम लोग पहले-होसे मुस्तैद न हो जायंगे तो किसीकी भी जान नहीं बचेगी।"

अजनबीकी बातें सबको पसन्द आईं। सब लोग फुर्तीके साथ तिलिस्म जालन्धर वाले गोल कमरेमें घुस गये। किशोरी अब तक बेहोश पड़ी थी। राजकुमारके इशारे पर हीरासिंह उसको होशमें लानेकी कोशिश करने लगे और अजनबी, राजकुमार तथा तीनों ऐयार उन कोठरियोंकी तरफ बढ़े जो तिलिस्म टूटते ही धड़ाधड़ खुल गई थीं। किशोरी वाली कोठरीके अलावा इन कोठरियोंकी तायदाद बारह थी। राजकुमार सब अपने सथियोंके एक कोठरीमें घुसे। भीतर जाते ही उनकी निगाह दुबले पतले नौ आदमियों पर पड़ी, जो बड़ी बुरी हालतमें बेहोश पड़े अपनी जिन्दगीके आखिरी दिन बड़ी मुसीबतके साथ काट रहे थे। उनके बदन सूख कर लकड़ी हो गये थे और सिर तथा दाढ़ीके बाल इतने बढ़ गये थे कि उनके चेहरेका ज्यादः हिस्सा उनसे ढक गया था। हाथों पैरोंके नाखून इतने बढ़ गये थे, कि जंगली जानवरोंका धोखा होता था। कोठरी-में बड़ी ही बदबू थी कारण यह था, कि प्रत्येक कोठरीमें एक एक पायखाना बना था जो सिर्फ महीनवें दिन साफ किया जाता था। प्रत्येक कोठरीकी लम्बाई चौड़ाई बीस हाथकी थी। प्रत्येक कोठरीकी छतपर एक छोटासा मोखा बना था जिसके जरिये कैदियोंको रोज खाना पहुंचाया जाता था।

राजकुमारसे वहां न ठहरा गया। कैदियोंकी हालत देखकर उनकी आंखोंसे आंसू बहने लगे और कोठरीकी कड़ी बदबूने उनका मगज़ भन्ना दिया। राजकुमार शीघ्रतासे कोठरीके बाहर हो गये

और अपने ऐयारोंको कैदियोंके बाहर निकालनेका हुक्म दिया। हुक्मके साथ ही ऐयार लोग हाथों-हाथ कैदियोंको बाहर लाकर फर्शपर लिटाने लगे। राजकुमार और अजनबी दूसरी कोठरीमें घुसे। उसमें भी उन्होंने नौ कैदियोंको उसी हालतमें पाया जिस तरह पहली कोठरीके कैदी थे। बारी बारीसे राजकुमार और अजनबी ग्यारह कोठरियोंमें घुसे और उन सभीमें नौ नौ कैदियोंको बेहोश पड़े पाया। बारहवीं कोठरीमें घुसने पर उन्हें सिर्फ एक ही कैदी नजर आया जो बनिस्बत और कैदियोंके मोटा ताजा तथा खूबसूरत था और इसके सिर और दाढ़ीके बाल भी ऐसे नहीं बढ़े थे जो इसके चेहरे को ढंक देते। यह कैदी भी और कैदियोंकी तरह बेहोश पड़ा था।

अजनबी उसे देखते ही चौंक पड़े। उनके मुंहसे एक चीख निकल पड़ी और उन्होंने दौड़कर कैदीको अपनी छातीसे लगा लिया। यह हालत देखकर राजकुमार बहुत ही घबड़ाये और अजनबीके पास जाकर पूछने लगे,—"क्यों महाशय! यह कौन हैं? क्या आप इन्हें पहचानते हैं?"

अजनबी—(रोते हुए) "राजकुमार! यह नौजवान मेरे दिली दोस्त और मायापुरके प्रधान सेनापति नरेन्द्रसिंह हैं। आज साल भरका जमाना हुआ, कि यह अपने कुछ सिपाहियोंके साथ शिकार खेलने गये और फिर न लौटे। राज्यमें मशहूर किया गया कि उन्हें शेर उठा ले गया। मगर आज मैं अपने प्यारे दोस्तको इस तिलिस्मी कैदखानेमें कैद पाता हूं। अब मेरी समझमें आया कि यह दुष्ट अर्जुनसिंहकी करतूत थी। मायापुरकी प्रजा और राज्यकी कुल फौज उन्हें जी से ज्यादः चाहती थी। यह बड़े उदार, धार्मिक और वीर पुरुष हैं।"

राजकुमार—"हां हां मैंने नरेन्द्रसिंहका नाम सुना है। यह

इस लोगोंकी लड़ाईके बाद सेनापति बनाये गये थे। अच्छा तो इनके कैद करनेका कोई खास सबब भी तो होगा?"

अजनबी—"असली भेद क्या है यह मुझे नहीं मालूम। वह इन्हींकी जबानी मालूम होगा। अब पहिले इनको होशमें लाना चाहिये।

राजकुमारने हीरासिंहको आवाज दी। हीरासिंहके आने पर नरेन्द्रसिंहको होशमें लानेका हुक्म दिया। हीरासिंह और अजनबी दोनों नरेन्द्रसिंहको उठाकर बाहर लाये। लखलखा सुंघाते ही नरेन्द्रसिंहने आंखें खोल दीं और अपने चारों तरफ कई आदमियों-को खड़े देख चौंचक्के होकर सबकी शकल देखने लगे। यह देख हीरासिंहने नरेन्द्रसिंहसे कहा:—

हीरा०—"महाशय! अब आप किसी बातकी फिक्र न करें। हम लोग आपके दुश्मन नहीं बल्कि दोस्त हैं। (राजकुमार की तरफ इशारा कर) यह कमलगढ़के राजकुमार कुंवर चन्द्रसिंह हैं और इन्होंने तिलिस्म तोड़कर आप तथा और कैदियोंको छुड़ाया है। हम लोग इनके दास हैं और (अजनबीकी तरफ इशारा कर) यह महाशय हमलोगोंके मददगार।"

राजकुमारका नाम सुनते ही नरेन्द्रसिंह उठ बैठे और बड़े प्रेमके साथ उनका पैर छूनेके लिये आगे बढ़े। मगर हमारे राज-कुमारने उन्हें बीच हीमें रोका और बड़ी मोहब्बतके साथ छातीसे लगा लिया। नरेन्द्रसिंह यह हालत देख गद्गद होगये और यों कहने लगे:—

नरेन्द्र०—"श्रीमानने मेरे ऊपर बड़ी ही कृपा की जो इस कालकोठरीसे मेरा उद्धार कर सदाके लिये अपना जरखरीद गुलाम बना लिया। मैं इस योग्य नहीं था, किन्तु आपने मुझे हृदयसे लगाकर बड़ा ही भाग्यशाली बना दिया। अगर श्रीमान

इतना कष्ट उठाकर यहांका तिलिस्म न तोड़ते तो हमलोग इसी जगह तड़प तड़पकर अपनी जान दे देते। मैं नहीं जानता कि मैं किन शब्दोंमें श्रीमान्‌को धन्यवाद दूं।"

राजकु०—"धन्यवाद देनेकी कुछ जरूरत नहीं है। मैंने सिर्फ अपना कर्तव्य पालन किया है। मुझे आपको देखकर बड़ी ही प्रसन्नता हुई है जिसे मैं प्रगट करनेमें असमर्थ हूं।"

इस बीचमें किशोरी भी पूरे तौरसे होशमें आ चुकी थी तथा और कैदी जिनकी तायदाद १०८ थी ऐयारों द्वारा होशमें लाये जा रहे थे। किशोरी नरेन्द्रसिंहको देखते ही "प्यारे चाचा!" कहती हुई उनकी तरफ झपटी और पास आकर रोते रोते उनके पैर छू लिये। नरेन्द्रसिंहने उसके सिर पर हाथ फेर कर बड़ी मुहब्बतके साथ पूछा:—

नरेन्द्र०—"किशोरी! अच्छी तो है बेटी? तेरी चाची तो अच्छी है न? प्यारा सुरेन्द्र तो मजेमें है न? रोती क्यों है बेटी? बोलती क्यों नहीं। जान पड़ता है तू बड़ी तकलीफमें है। तेरा मुंह क्यों इतना सूख गया है बेटी? जल्दी बोल मेरा कलेजा उछला पड़ता है।"

किशोरी—(रोते रोते) "चाची और भाई सुरेन्द्रका क्या हाल बताऊं चाचा! जबसे सुना गया, कि तुम्हारे दुश्मनोंको शेर उठा ले गया तबसे उनकी हालत बहुत खराब थी। भाई सुरेन्द्र भी एकाएक बहुत बीमार होगया था, मगर फिर ईश्वरकी कृपासे महीने भर बाद अच्छा हो गया और चाची जो बीमार पड़ीं तो उनकी हालत दिन पर दिन खराब ही होती गई। इधर मैं भी तीन महीनेसे पुतलीमहलके बाहर नहीं गई मगर मामाकी जबानी कभी कभी सुन लिया करती थी, कि अब वह कुछ अच्छी हैं। इधरका हाल मुझे नहीं मालूम, क्योंकि इसी बीचमें मैं भी इसी तिलिस्ममें कैद कर दी गई थी।"

यह सुनते ही नरेन्द्रसिंहका मुंह गुस्से से लाल होगया और उन्होंने दांत पीसकर कहा:—

नरेन्द्र०—"ऐं क्या कहा ? मुझे शेरका शिकार मशहूर किया गया है ? हरामजादोंने यहां तक मुझे नेस्तनाबूद कर डाला और किशोरी ! तुम किस कुसूरमें कैद कर दी गई थी बेटी ?"

किशो०—(जरा आंखें नीची कर) "एक बेकुसूरकी मदद करनेके कुसूरमें जिसको इतिहास पुतलीमहल तिलिस्मके तोड़ने वाला कहकर परिचय देता है।"

राजकुमार—(जरा आगे बढ़कर) "और वह अपराधी मैं ही हूं महाशय ! मेरी ही मदद करनेके अपराधमें यह बेचारी भोली भाला लड़की हथकड़ी बेड़ीसे जकड़कर खूनियों और डाकुओंकी तरह इस तिलिस्ममें कैद कर दी गई थी। इस सुन्दरीकी तकली-फोंका एहसान जिन्दगी भर मेरे सर पर कायम रहेगा।"

किशोरीने शरमाकर आँखें नीची करलीं और नरेन्द्रसिंहने जोशके साथ कहा,—"श्रीमान ! आप ही की बदौलत हमलोगोंने इस मौतके मुकामसे छुटकारा पाया है। यह लड़की आपकी दासी है। इसकी तकलीफोंका मूल्य हमारी तलवारें दुश्मनोंकी गर्दनोंसे वसूल कर लेंगी। अब आप देर न करें। आगेका काम देखें। हमलोग जी जानसे आपकी सेवा करनेपर मुस्तैद हैं। मायापुरकी बेशुमार फौज इस दासकी शक्ल देखते ही आपके लिये खून बहाने पर तैयार हो जावेगी।"

राजकु०—"क्यों न हो वीरवर। तुमसे ऐसी ही आशा है। महाराज टिकेन्द्रसिंहका वंश हमेशः तुम्हारे ही ऐसे वीरोंके बाहु-बलसे रक्षित होता आया है और भविष्यमें भी ऐसी ही आशा रखता है। (अजनबी से) हां तो महाशय। अब विलम्बका समय नहीं है, आगेकी कार्रवाई देखिये।"

अजनबी—"मैं प्रस्तुत हूं आप पत्तर देखिये।"

राजकुमारने जेबसे चांदीका पत्तर निकाल कर देखा। उसमें लिखा था,—"तिलिस्म तोड़नेवालेको चाहिये कि वह तिलिस्म जालन्धर वाले गोल कमरेके बीचों बीच फर्श पर जो भूरा पत्थर लगा है उसमें पत्तरको छुलादे।" राजकुमारने यहीं तक पत्तर पढ़कर भूरे पत्थरको खोजना शुरू किया। कमरेकी कुल जमीन धूल गरदा पड़ जानेके सबब मैली होकर भूरे रंगमें बदल गई थी। राजकुमारने फर्श की लम्बाई चौड़ाई नापकर बीचों बीच जो पत्तर लगाया तो साथ ही वहांका एक गज भर लम्बा चौड़ा पत्थर पल्ले-की तरह एक हलकी आवाजके साथ खुलगया और नीचे एक गोल सीढ़ियोंका सिलसिला दिखाई दिया। राजकुमार शीघ्रतासे उसमें उतर पड़े। अभी उनका पैर पहिली ही सीढ़ीपर पड़ा था, कि साथ ही तेजीके साथ सीढ़ी नीचे जाने लगी। यह देख अजनबीने ललकार कर कहा,—"राजकुमार! पत्तर जल्दी देखो।"

राजकुमार अब एक पुर्सा नीचे जा चुके थे। उन्होंने ऊपरके आते हुए उजेलेमें पत्तरको शीघ्रतासे पढ़ा। यह लिखा था:—"सावधान! नीचे तलवारों व बर्छियोंका बड़ा भारी गार है। सीढ़ीके फर्शके बराबर पहुंचतेही उस परसे कूदकर अलग हो जाना। वहां दाहिने हाथके पास ही एक काला देव दिखाई देगा। उसके पेट पर जोरसे एक लात मारना" अब आगे पत्तर नहीं पढ़ा गया क्योंकि वहां भयानक अन्धेरा था। राजकुमार आँखें गड़ाकर फर्शको देखने लगे। सीढ़ी तेजीके साथ बराबर नीचे जा रही थी। फर्शके बराबर पहुंचते ही राजकुमार उस परसे कूदकर अलग हो गये। सीढ़ी फिर उसी तेजीके साथ नीचे जाने लगी। राजकुमारने देवको हाथसे टोकर उसके पेटमें एक लात जोरसे मारी जिसके साथ ही एक बड़े धड़ाके की आवाज हुई और बड़ी

तिजोरीके साथ सीढ़ी ऊपर जाकर अपने ठिकाने लगगई और एकाएक वहां उजेला फैल गया। राजकुमारने पत्थर देखा। यह लिखा था:—"सीढ़ीके ऊपर पहुंचते ही तुम तिजोरीके साथ देवके दोनों हाथ खंजरसे काट डालो और अपनेको गोल कमरेमें पहुंचाओ" राजकुमारने शीघ्रतासे देवके हाथों पर खंजरोंका वार किया। हाथ न जाने किस धातुके बने थे, कि खञ्जरको पहिली वारमें ही कटकर अलग हो गये और उनमेंसे आतशबाजीकी तरह आग की चिनगारियां निकलने लगीं। राजकुमारने अब वहां ठहरना मुनासिब न समझा और शीघ्रताके साथ सीढ़ियां ते करते हुए अपनेको गोल कमरेमें पहुंचाया। यहां अजनबी, ऐयार, किशोरी और नरेन्द्रसिंह बड़ी घबराहटके साथ होनेवाली घटना पर अफसोस कर रहे थे। राजकुमारको देखते ही खुशीके मारे उछल पड़े और उनके सही सलामत लौट आने पर मुबारकबादी देने लगे।

बाकी कैदी भी पूरे तौरसे होशमें आ चुके थे और हसरत भरी निगाहोंसे अपने छुड़ानेवालोंको देख रहे थे। राजकुमारको देखते ही उनलोगोंने उन्हें हृदयसे धन्यवाद दिया मगर अब तक उन लोगोंमें इतनी शक्ति न आई थी कि उठकर उनकी अभ्यर्थना कर सकें। राजकुमारने उनलोगोंको बहुत दिलासा दिया और उनकी दशा पर बहुत अफसोस जाहिर किया। उन कैदियोंमें प्रायः सभी लोग उच्च घरानेके संभ्रान्त और प्रतिष्ठित मनुष्य थे और प्रायः सभी मायापुरके राजदरबारसे कुछ न कुछ सम्बन्ध जरूर रखते थे। कुछ सरदार थे, कुछ मायापुरके रईसोंके लड़के थे और कुछ राजाके रिश्तेदारोंमेंसे थे। यह सभी लोग राजकोपमें पड़कर गुप्त भावसे तिलिस्ममें कैद कर दिये गये थे जिनकी खबर उनके रिश्तेदारोंको मुतलक न थी।

अजनबीने राजकुमारको फिर पत्तर देखनेके लिये इशारा किया। राजकुमारने पत्तर देखा। उसमें सिर्फ इतना ही लिखा था—

"बस अब खजानेका तिलिस्म टूट गया। आप बेखटके अपने साथियों सहित तहखानेमें उतर जायें और अपने पासकी तालियोंसे खजानेकी कोठरियां खोलकर उन्हें अपने अधिकारमें करलें।

आपका दास,

कोषाध्यक्ष—भीमदेव।"

राजकुमारने पत्तर पढ़कर जेबमें रख लिया और ऐयारोंको मशालें जलानेका हुक्म दिया। ऐयारों मशालें जलाई गईं। गोल कमरेका दर्वाजा बन्द कर दिया गया और लालसिंह तथा दामोदर-सिंहको कैदियोंकी रक्षाके लिये छोड़कर राजकुमार, अजनबी, नरेन्द्रसिंह, किशोरी और दोनों ऐयार तहखानेमें उतरे। आगे आगे दोनों ऐयार मशालें लिये चल रहे थे।

तहखानेकी गोल सीढ़ियोंका चक्करदार सिलसिला तय कर यह लोग फर्शपर पहुँचे। यह एक पतली और लम्बी सुरंग थी जिसकी बाईं तरफ सिलसिलेवार पीतलके खूबसूरत दरवाजोंकी आठ कोठरियां बनी थीं जिनमें चांदीके बड़े ही मजबूत ताले बन्द थे।

राजकुमारने तालियोंका गुच्छा निकालकर पहली कोठरीके तालेके जोड़की ताली निकाली और बातकी बातमें ताला खोलकर अलग कर दिया। मशालकी रोशनी भीतर पहुंचते ही इन लोगोंकी निगाहोंके सामने एक चमकीली बिजली दौड़ गई। कोठरी बेशकीमत व चमकीले हरबे हथियारोंसे भरी थी। राजकुमार मय अपने साथियोंके भीतर घुसे और कोठरीकी हर एक चीजें गौरके साथ देखने लगे।

यह कोठरी नौ हाथ लम्बी और ठीक इतनी ही चौड़ी थी। कोठरीकी दीवारें, छत और फर्श हरे रंगकी कीमती मखमलसे मढ़ी थी और उनपर कलाबत्तू तथा सलमे सितारेके बेल बूटे बड़ी ही कारीगरीके साथ बनाये गये थे। कोठरीकी दीवारोंपर चांदीकी खूंटियोंसे बड़े ही कीमती और चमकीले हरबे हथियार लटक रहे थे, जो देखनेवालोंकी आंखोंमें रह रहकर चकाचौंध पैदा कर देते थे। कोठरीकी फर्शपर चारों तरफ करीनेसे बड़े बड़े नक्काशीदार सन्दलके सन्दूक रखे हुए थे जिनकी सोंधी महक रह रहकर हमारे नवयुवकोंकी तबियत मस्त कर देती थी। सन्दूकोंकी कटावदार नक्काशी देखकर पुराने जमानेके निपुण कारीगरोंकी नायाब कारीगरी आँखोंके सामने घूम जाती थी और रह रहकर वाह वाहके शब्द मुंहसे निकल पड़ते थे।

राजकुमारने कोठरीके एक सिरेसे सन्दूकोंका देखना आरम्भ किया। पहला सन्दूक खोला गया। उसमें मखमलके म्यानोंसे ढंकी हुई जड़ाऊ कब्जे वाली तलवारोंका ढेर था और उनके ऊपर एक सोनेका पत्तर रखा था जिसपर लिखा था—"एक सौ बीस तलवारें खास आपके फौजी अफसरोंके लिये।" दूसरा सन्दूक खोला गया उसमें नीले मखमलके कारचोबी काम किये म्यानोंमें सुनहले जड़ाऊ कब्जे वाले बहुतसे खंजर भरे थे और एक सोनेके पत्तर पर लिखा था—"तीन सौ खंजर विषसे बुझे हुए।" तीसरा सन्दूक खोला गया उसमें जवाहरातके मूठ वाली लाल मखमलके म्यानोंसे मढ़ी बड़ी ही खूबसूरत कटारें भरी थीं और एक सुनहले पत्तर पर लिखा था—"पांच सौ कटारें आपकी रानियोंकी लौंडियोंके लिये।" चौथा सन्दूक खोला गया उसमें ढेरके ढेर हाथी दांतकी मूठ वाले तमंचे दिखाई दिये। पत्तरकी लिखावटसे मालूम हुआ—"दो सौ पचास तमंचे"। राजकुमार और उनके साथी इन

तमञ्चोंको देखकर बड़े ही खुश हुए, क्यों कि उस जमानेमें तमञ्चोंका प्रचार बहुत कम था और इनका मिलना कठिन ही नहीं बल्कि एक प्रकारसे असम्भव सा हो उठा था कारण, कि उनके बनानेवाले कारीगरोंका कहीं नाम निशान भी न रह गया था। पांचवां सन्दूक खोला गया उसमें उन तमञ्चोंको नापके देशुमार टोटे भरे थे। छठां सन्दूक खोलनेपर तमञ्चोंके जोड़की गोलियोंका ढेर दिखाई दिया। सातवें सन्दूकके खोलनेपर फौलादी जिरह बख़्तरके बारह जोड़ दिखाई दिये और एक पत्तर पर लिखा था—"तिलिस्मी जिरह बख़्तर।" आठवां सन्दूक बर्छोंके विषैले फलोंसे पूर्ण मिला। नौवें सन्दूकसे बड़ीही ख़ूबसूरत छोटी छोटी गैंड़ेकी ढालें निकलीं। अब सिर्फ एक आखिरी सन्दूक बच गया था। राजकुमार मय अपने साथियोंके बड़ी हसरतके साथ उनकी तरफ बढ़े। सन्दूकके ढक्कनेपर निगाह पड़ते ही राजकुमार ठहर गये और उन्होंने उसके ऊपर जड़े हुए तांबेके पत्तरपर निगाह डाली। पत्तरपर बड़े मोटे मोटे चमकीले अक्षरोंमें लिखा था:—

"सावधान! इस सन्दूकमें तिलिस्मी हथियार भरे हैं। पहिले आप इस सन्दूकको नीचे वाली दराजसे इसके जोड़के दस्ताने निकाल कर पहन लीजिये तब सन्दूक खोलनेका साहस कीजिये, वर्ना खाली हाथ लगानेसे उसी वक्त बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ियेगा।"

राजकुमारने सन्दूकके नीचे निगाह की। वहां उन्हें एक चाँदीकी छोटी सी ख़ूबसूरत मूठ दिखाई दी। राजकुमारने मूठ पकड़कर ओरसे खींच ली जिसके साथ ही एक पतली सी दराज बाहर निकल आई। दराजमें एक छोटा सा मखमलसे मढ़ा ख़ूबसूरत बक्स रक्खा था। बक्सके खोलने पर उसमेंसे बीस जोड़ी चमकीले चमड़ेके दस्तानोंको निकल पड़ीं। राजकुमारने छः जोड़ी

दस्ताने निकाल कर अपने हाथसे अजनबी, नरेन्द्रसिंह, हीरासिंह और विश्वनाथसिंहको पहिना दिये और एक जोड़ी किशोरीको दे दिये तथा एक जोड़ी स्वयम् पहन लिये। इसके बाद उन्होंने सन्दुक खोला। सन्दूकके अन्दर चमड़ेसे मढ़ा एक छोटा सन्दूक और मिला। उसके खोलनेपर हीरे तथा पन्नेकी जड़ाऊ मूठकी बीस खञ्जर तथा चमड़ेके बने छोटे छोटे बीस डब्बे दिखाई दिये। राजकुमारने बड़ी फुर्तीके साथ एक डब्बा खोल डाला। डब्बेमें नागिनकी तरह लपटी हुई एक चमचमाती तलवार दिखाई दी, जिसका कब्जा किसी कीमती चमड़ेसे मढ़ा गया था। राजकुमारने कब्जा पकड़ कर तलवार खींची। तलवारके बाहर निकलते ही एक हरी बिजली कोठरीमें दौड़ गई और सबकी आँखोंमें चकाचौंध लग गई। राजकुमार और उनके साथी आश्चर्यमें आगये। सबने बारी बारीसे तलवार देखी। किशोरीके हाथमें तलवार पड़ते ही सहसा उसके मुंहसे निकल पड़ा—"ठीक इसी किस्मकी एक तलवार मेरे मामाके पास भी है और अगर मेरी निगाहें धोखा नहीं खातीं तो मैं जोरके साथ कह सकती हूं. कि इसी ढंगकी एक तलवार तिलिस्मी शैतानके पास भी है. जिसकी चमकसे हमलोग हंस वाली कोठरीमें बेहोशीकी हालतमें काठके पुतलोंकी तरह खड़े रह गये थे * हां अगर इसमें और उसमें कुछ फर्क है तो वह सिर्फ एक चमककी रंगतका। उसकी चमक सुनहली थी और इसकी हरी। कब्जा दबाते ही यह अपना अनूठापन दिखाती है"। यह कह कर किशोरीने धीरेसे कब्जा दबा दिया। कब्जे पर दाब पड़ते ही फिर वैसेही बिजली चमक गई और सब लोग "वाह वाह" करने लगे।

हीरा०—"हां, यह तलवार तो ठीक उसी ढंगकी मालूम

* देखो दूसरा हिस्सा—पांचवां बयान।

पड़ती है। सिर्फ चमकको रंगतमें फर्क है। मुमकिन है, कि इन डब्बोंमें उसी रङ्गकी सुनहली चमक वाली भी कोई तलवार निकल पड़े।"

यह कहते हुए हीरासिंहने एक डब्बे से दूसरी तलवार निकालकर उसका कब्जा दबाया। इससे सुर्ख बिजली पैदा हुई। राजकुमारने तीसरी तलवार निकाल कर देखी। इससे पीली बिजली निकली। अब किशोरीने एक डिब्बा खोलकर तलवार निकाली। उसका कब्जा दबातेही ठीक उसी किस्म की सुनहली बिजली कोठरीमें फैल गई जिस किस्मकी शैतानकी तलवारसे पैदा हुई थी। अब सबको पूरा विश्वास हो गया कि शैतान वाली तलवार और यह तलवारें एकही रंग ढंग तथा एक ही ताकत रखती हैं।

राजकुमार—"हीरासिंह! मेरी निगाहोंमें तो यह जिरह बख्तर भी शैतानके उस जिरहबख्तरसे मिलते जुलते और वैसीही ताकत रखते हैं। जरा पहन कर देखो तो सही, कि मेरा खयाल कहां तक दुरुस्त है।"

हीरासिंहने जिरहबख्तरका एक जोड़ निकाल कर पहना और उसे जोरसे हिला दिया। जिरहबख्तरके हिलते ही उसमें से आगकी भी चिनगारियां पैदा होने लगीं और सबने एक स्वरसे कहा "हां हां बेशक. ऐसाही जिरहबख्तर उस शैतानके बदन पर भी था।"

विश्वनाथ०—"तब तो वह शैतान असली शैतान भी न था।"

हीरासिंह—"बेशक वह शैतान धोखेबाज और बेईमान था।"

अजनबी—"वह शैतान और कोई नहीं खास इस तिलिस्मका राजा अर्जुनसिंह ही होगा। वह दारोगासे भी ज्याद: इस तिलिस्मके हालातोंसे वाकिफ है। उसने अपने किलेवाले महलसे नीचे ही नीचे पहाड़ कटवाकर एक बहुत बड़ी सुरङ्ग पुतलीमहलसे

मिलादी है जिसमें दो सवार वखूबी घोड़ा दौड़ाते हुए आध घण्टे-में पुतलीमहलके अन्दर अपनेको पहुंचा सकते हैं। उस सुरङ्गमें उसने कल पुरजे लगाकर ऐसे ऐसे दरवाजे तैयार कराये हैं, कि वक्त पर वह उन्हींके जरिये जिस तिलिस्मी कोठरीमें चाहे दाखिल हो सकता है। उसके पास तिलिस्मी हरबे हथियारोंकी भी कमी नहीं हैं।"

किशोरी—"हां इस बात की भनक तो कुछ कुछ मेरे कानमें भी पड़ी थी। मगर मैं उसे अब तक गप्प ही समझती थी।"

राजकु०—"खैर तो अब आप लोग इन जिरहबख़्तरोंमेंसे एक एक जोड़ पहन लें और एक एक तिलिस्मी तलवार अपने पास रख लें फिर आगेकी कार्रवाई देखें। समय बहुत ज्यादः हो गया है।"

विम्ब०—"जरा इन तिलिस्मी खञ्जरोंका तो मुलाहिजा कीजिये, कि इसमें क्या कला भरी है।"

हीरा०—"हां यह तो हम लोग भूल ही गये थे।"

"तो फिर देख ही न लो" कहते हुए राजकुमारने सन्दूककी तरफ हाथ बढ़ाकर एक खञ्जर उठा लिया और उलट पुलट कर उसका कब्जा दबाने लगी। मगर कुछ नतीजा न निकला। खञ्जर जैसेका तैसाही बना रहा। यह देख अजनबीने राजकुमारके हाथसे खञ्जर ले लिया और कब्जेके नीचे लगे एक कांटेको जोरसे दबा दिया। कांटा दबाते ही एक धड़ाकेकी आवाज हुई और खञ्जर कब्जेसे निकल कर सामने खड़े हीरासिंहके बदन पर लगा। कुशल हुई, कि हीरासिंह तिलिस्मी जिरहबख़्तर पहने थे वर्ना इसी वक़्त उनकी जानका खातमा था। तिसपर भी खञ्जरका कुछ हिस्सा जिरह बख़्तरमें धंस गया था।

खञ्जरका चमत्कार देखतेही सब लोग दंग रह गये और हीरा-

सिंहको यहीं सलामत पाकर ईश्वरको धन्यवाद देने लगे। अजनबीने आगे बढ़कर खञ्जरको खींच लिया और उसे फलमें खोंसकर राजकुमारके हाथमें दे दिया। राजकुमार उस खञ्जरको बहुत तारीफ करने लगे और बोले:—

राजकुमार—"खञ्जर तो बेशक नायाब और काबिल तारीफ है मगर एक बातका इसमें बड़ा भारी ऐब है।"

अजनबी—"वह क्या ?"

राजकुमार—"यह कि सिर्फ एक बारका काम मजेमें दे सकता है और फिर अगर फल न मिला तो बेकाम है।"

अजनबी—"तो हमलोग इसके जोड़के दस बीस फल बनवा कर अपने पास रखेंगे और एकके खो जानेपर दूसरेसे काम लेंगे। फलमें तो कुछ कारीगरी नहीं है ? कारीगरी तो जो कुछ है इसकी मूठमें है।"

हीरा०—"हां तो इसमें हर्ज ही क्या है ? युद्धके समय तीरोंके तरकस ना रखकर फलोंके ही तरकस पीठपर बांधा करेंगे।"

नरेन्द्र०—"वाह वाह! आपने भी इसकी खूब कदर की, गोया तीर कमानं ही मुकर्रर कर लिया। अजी जनाब! यह चीजें समय पर काम लेने की हैं, न कि रोज रोज साग पात काटने की।"

हीरा०—(मुसकुराकर) "हां साहब क्यों नहीं। आपके लिये तो आदमी साग ही पात हैं। अगर मैं भी किसी फौजका सेनापति होता तो यही समझ लेता। मगर अभी तो मैं आदमीको आदमी ही समझता हूं।"

इसपर बड़ी हंसी हुई और कुछ देर तक इसी किस्मका आपस में हंसी मजाक होता रहा। इसके बाद एक एक जोड़ जिरह-बख्तर राजकुमार, अजनबी, नरेन्द्रसिंह और विश्वनाथसिंहने पहन लिया। हीरासिंह पहले ही से पहने हुए थे। एक एक तिलिस्मी

तलवार सबने अपनी अपनी कमरसे लपेट ली और एक एक तिलिस्मी खञ्जर कमरमें खोंस लिया। किशोरीको भी एक खञ्जर तथा एक तलवार दी गई। किशोरीके अलावे और पांचों आदमियोंने तमञ्चेकी एक एक जोड़ी चुनकर अपने बदनपर लगा ली और थोड़ी गोली तथा टोटे जेबमें भर लिये। इसके बाद उस कोठरीका दरवाजा बन्द कर ताला लगा दिया गया और सब लोग दूसरी कोठरीकी तरफ बढे। ठीक इसी समय ऊपरसे बड़े शोरगुल तथा चिल्लाहटकी आवाजें सुनाई दीं और सब लोग बड़े गौरके साथ कान लगा कर आहट लेने लगे। शोर गुल क्रमशः बढ़ता ही गया और मार काट की आवाजें बखूबी सुनाई देने लगी। अब इन-लोगोंसे न रहा गया और सबके सब शीघ्रताके साथ ऊपर की तरफ झपटे। सीढ़ियें तय कर सब लोग ऊपरकी सीढ़ी पर पहुंचे। यहांका दरवाजा बन्द था। बहुत जोर लगाया गया मगर नहीं खुला। राजकुमारको एक बात याद आई और उन्होंने जल्दीसे चांदीका पत्तर जेबसे निकालकर दरवाजेमें छुला दिया। साथ ही दरवाजा खुल गया और इनलोगोंने जो सिर निकालकर देखा तो सैकड़ों सिपाही कमरेमें भरे दिखाई दिये जिनके बीचमें घिरे हुए हमारे दोनों ऐयार लालसिंह और दामोदरसिंह खूनसे लथपथ हो तलवारें चला रहे थे और कैदियोंके झुण्ड पर पचास सिपाही नंगी तलवारें लिये पहरा दे रहे थे। कुछ सिपाहियोंकी निगाह इन लोगोंपर पड़ गई और साथ ही लेना लेना' कहते हुए बहुतसे सिपाही हमारे वीरोंपर टूट पड़े।

चौथा बयान।

दोनों ओरकी फौजें आपुसमें गुथकर एक दूसरे पर बड़े जोरसे हमला कर रही थीं। दुश्मनोंकी फौज तादादमें बच्चासिंहके सवारोंसे तिगुनी चौगुनी होने पर भी बच्चासिंहके एकाएक हमलेसे घबड़ा गई थी और उसके पैर क्रमशः पीछे ही हटते जाते थे। एकाएक आ जानेवाली आफतने उसके होश फाकता कर दिये थे मगर तो भी वह लड़नेसे बाज नहीं आती थी।

फौजका बड़ा अफसर बलरामसिंह बड़ी बेचैनीके साथ दूर-बीनसे इस लड़ाईकी कैफियत देख रहा था मगर उसकी अक्ल चकरा गई थी और ऐसे कठिन समयमें उसकी कुछ भी मदद न कर सका। उसकी आँखोंके सामने उसके बेशुमार सिपाही गाजर मूलीकी तरह काटे जा रहे थे मगर वह भौचक्का होकर सिवाय देखनेके उनकी कुछ भी मदद न कर सकता था।

बच्चासिंहके चुनिन्दे सवार बड़ी बहादुरीके साथ दुश्मनोंको काटते हुए उनको पीछे हटानेकी कोशिश कर रहे थे और प्रत्येक क्षणमें अपनी तलवारोंसे सैकड़ों सिपाहियोंको काटते हुए आगे बढ़ते जाते थे। अगर इसी तरह एक घण्टेका उन्हें मौका दिया जाता तो मुमकिन था, कि वह दुश्मनोंके अधिकांश सिपाही काट कर फेंक देते और मैदान उन्हींके हाथ रहता। मगर ऐसा नहीं हुआ। बलरामसिंहने अपनी बेचैनीको बहुत जल्द दूर किया और अपने मातहत सरदारोंको इकट्ठा कर जल्दी जल्दी उनसे कुछ परामर्श किया और अपनी बची हुई कुल फौजको लेकर बच्चासिंह-

से सवारोंपर चढ़ दौड़ा। स्वयम् अपने सरदारको लड़ते देख बलरामसिंहकी फौजमें दूना जोश बढ़ गया और वह नये उत्साह तथा नई उमङ्गके साथ जी तोड़कर लड़ने लगी। अब तो बच्चा-सिंहके सवारोंमें भी बड़ी घबराहट फैल गई और क्रमशः उनके पैर आगेकी बनिस्वत पीछे पड़ने लगे। जान पड़ता था, कि कुछ ही देरमें कुल सवार या तो काट ही डाले जायेंगे या दुश्मनोंकी फौजसे घिरकर बहुत जल्द कैद हो जायेंगे। क्योंकि, दुश्मनोंकी फौजका शुमार बहुत बढ़ गया था और उनके दो चार हमलोंमें बच्चासिंहके आठ नौ सौ सवार कटकर गिर पड़े थे तथा बहुतसे जख्मी होकर छटपटा रहे थे। यह कैफियत देख बच्चासिंहने अपनी फौजको हरे रङ्गकी लालटेनसे कुछ इशारा किया जिसके साथ ही दो हजार सवार बड़ी वीरताके साथ दुश्मनोंका मुकाबिला करने लगे और बाकीके सवारोंने बड़ी फुर्तीसे अपने जख्मी सिपाहियोंको घोड़ोंपर लाद लिया। इसके बाद ही बच्चासिंहने नीली रोशनीसे कुछ सङ्केत किया जिसका मतलब समझकर इनके सवार लड़ते हुए धीरे धीरे पीछे हटने लगे। अब तो बलराम-सिंहकी फौजमें और भी जोश चढ़ आया क्योंकि एक तो बच्चा-सिंहके सवारोंकी संख्या बहुत कम यानि सिर्फ दो हजार थी। दूसरे वह क्रमशः पीछे ही हटते जारहे थे। बलरामसिंहकी फौज तलवारें चलाती हुई इनके सिर पर चढ़ी आ रही थी और यह लोग बराबर पीछे हो हटते जा रहे थे। बहादुरी थी तो सिर्फ इन दो हजार सवारोंकी, जो दुश्मनोंकी पचगुनी छगुनी फौजका अबतक मुकाबिला किये ही जा रहे थे और पीठ न दिखाते थे।

बच्चासिंहके सवार लड़ते हुए बहुत पीछे हट आये थे। मगर अब रास्ता जरा तंग था क्योंकि दोनों तरफ गुञ्जान झाड़ियें लगी हुई थीं और उन्हींके बीचसे होकर फौजके गुजरनेकी राह थी।

यहां पर बख्तासिंहके सवारोंने अपना पग बांधा और वह लोग छोटी पंक्तियोंसें होकर पीछे हटने लगे। बलरामसिंहकी फौजको भी वैसाही करना पड़ा और उनकी घुड़सवार तथा पैदल फौज सिकुड़कर दुश्मनोंको मारती हुई तेजीसे आगे बढ़ने लगी। यह तंग रास्ता दोनों तरफकी घनी झाड़ियोंसे घिरा हुआ बहुत दूर तक चला गया था और आगे जाकर निहालसिंहके कैम्पसे मिलकर खतम हो गया था।

अब दोनों ओरकी लड़ती हुई फौज ठीक इस रास्तेके बीचों-बीच पहुंच गई। यहांपर बख्तासिंहने अपने सवारोंको लाल रोशनी दिखाकर कुछ विशेष इशारा किया। इशारा पातेही उनके सवार तेजीसे पीछेकी ओर भागे। साथ ही बख्तासिंहने अपने पाससे एक छोटासा बिगुल निकालकर बजाया जिसकी आवाज दूर दूर तक गूंज गई। सहसा इसी समय दोनों तरफकी झाड़ियोंके पीछेसे निहालसिंहकी तोपोंने एक भयानक बाढ़ दागी जिसका परिणाम दुश्मनोंके लिये बड़ा ही बुरा हुआ। उनकी फौजके सबसे आगेका हिस्सा जिसमें तीन हजार सवार, दो हजार पैदल सिपाही तथा बहुतसे अफसर थे एक बारगी उड़ गया और पिछले हिस्से का भी बड़ा भारी नुकसान हुआ। एकाएक बलरामसिंहकी फौजके पैर उखड़ गये और वह सिरपर पैर रखकर बड़ी तेजीके साथ पीछेकी ओर भागी।

ठीक इसी समय सेनापति निहालसिंहने बहुतसे सवार तथा पैदल सिपाहियोंके साथ जो पहिलेहीसे झाड़ियोंमें छिपे अपनी घातमें लगे थे भागती हुई फौज पर हमला कर दिया और उनको घेरकर गाजर-मूलीकी तरह काटने लगे। बलरामसिंहकी फौजके जी छूट गये। उसके बुद्धिमान अफसरसे अपनी फौजका यों बेमौत मारा जाना देखा नहीं गया और उसने अमानकी चादर

दिखाई। इशारा पाते ही लड़ाई बन्द कर दी गई। दुश्मनोंका एक अफसर घोड़ा दौड़ाता हुआ सफेद झण्डो लिये निहालसिंहके पास आया और जंगी सलामकर बड़ी नम्रतासे बोला:—

अफसर—"महाशय! अब इथा बेकुसूर सिपाहियोंका खून बहाना है। हम लोग हार गये और विजय-लक्ष्मी आपलोंके साथ रही।"

निहाल०—"कुछ जरूरत नहीं। मैं भी इन बेचारे बेकुसूर सिपाहियोंका खून बहाना अच्छा नहीं समझता। आप लोग हरवे हथियार रखदें और अपनेको हमारे महाराजका कैदी समझें।"

अफसर—"जो आज्ञा।"

यह कहकर अफसर घोड़ा दौड़ाता हुआ अपनी फौजमें चला गया और उसने अपनी कुल फौजको हरवे हथियार रख देनेका हुक्म दिया। फौजी सिपाहियोंने बेउज्र हरवे हथियार रख दिये। इसके बाद फिर वही अफसर घोड़ा दौड़ाता हुआ निहालसिंहके पास आया और अपनी तलवारको उनके हाथमें देकर बोला:—

अफसर—"लीजिये अब हमलोग आपके कैदी हैं। हमारी और हमारे सिपाहियोंकी किस्मतोंका फैसला आपकी इच्छा पर निर्भर है।"

निहाल०—(तलवार लेकर) "महाशय! आप निसाखातिर रहिये। आपने वीरोचित ही कार्य्य किया है। अब यह कहिये कि आपके सेनापति बलरामसिंह कहां हैं? मुझे उनसे मिलकर सिर्फ यही पूछना है कि उन्होंने यह अनियमित काम किस लिये किया था, याने रातके समय एकाएक चढ़ दौड़ना और गोले बरसाना कहां लिखा है?"

अफसर—"सेनापतिका कहीं पता नहीं है। शायद वह निकल भागे। एकाएक रातके समय चढ़ाई कर देना जंगी कायदेके खिलाफ होनेपर भी हमलोग उनकी आज्ञाके आधीन थे!"

निहाल०—"इसी से तो मैंने आपसे यह प्रश्न नहीं किया। आप लोगोंका फर्ज है, कि अपने अफसरकी आज्ञाका पालन करें। खास कर उसकी धोखेबाजी ही ने मुझे भी इस किस्मकी चाल खेलने पर बाध्य किया। मुझे बहुत अफसोस है, कि बेचारे बेकुसूर सिपाही बड़ी बेरहमीके साथ मारे गये। मगर मैं लाचार था। पहिले यह चाल आप ही की तरफसे शुरू हुई है।"

अफसरने कुछ जवाब नहीं दिया। वह चुपचाप सिर नीचा किये खड़ा रहा। इस समय सरदार अजीतसिंह, सरदार बखासिंह, सरदार मुरारीसिंह और बाकीके अफसर निहालसिंहके पास आ गये थे और उनकी आज्ञाकी प्रतीक्षा कर रहे थे। सेनापतिने अपने मातहत सरदारोंकी तरफ देखकर कहा:—

निहाल०—"सरदार अजीतसिंह! आप एक हजार सिपाहियों के साथ बहुत जल्द बलरामसिंहके कैम्पपर कब्जा करलें। और आप सरदार बखासिंह! इनके कुल तोपखानोंको अपने तोपखानोंमें शामिल करलें। (मुरारीसिंह से) और आप महाशय! इन सिपाहियों तथा इनके अफसरोंको इज्जतके साथ ले जाकर अपने पहरेमें रक्खें और पूरे तौरसे इनलोगोंके आरामका इन्तजाम करदें।"

"जो आज्ञा" कहकर तीनों सरदार अपने अपने काममें लगे। अजीतसिंह एक हजार फौजके साथ बलरामसिंहके कैम्पकी तरफ रवाना हुये। बखासिंह कुछ सिपाहियोंको लेकर दुश्मनोंके तोपखानोंकी तरफ बढ़े और मुरारीसिंह कैदी सिपाहियों तथा उनके अफसरोंको जिनकी संख्या ५००० थी अपनी फौजके कड़े पहरेमें लेकर अपने कैम्पमें चले गये।

अब सवेरा पूरी तौरसे हो गया था। रातके भयानक अन्धकारको भेदकर सूर्य्यदेवका रथ पूरबकी तरफसे धीरे धीरे आगेकी तरफ बढ़ रहा था। जंगली जानवर जो रात भर मनुष्योंके को-

साहल तथा तोपोंकी गड़गड़ाहटसे भागकर इधर उधर झाड़ियों-में मारे मारे फिर रहे थे अब अपने अपने घोंसलोंकी तरफ बढ़ते हुये दिखाई देते थे। रात भरकी भयानक लड़ाई तथा खून खराबी-से जंगलो मैदान लाशोंसे पट गया था और चारों तरफ खून ही खून दिखाई देता था। चारोंतरफसे भागे हुये घोड़ोंकी हिनहिना-हटकी आवाजें आ रही थीं। चील, कौवे और गिद्धोंके झुण्ड झपट झपट कर मरे हुये मुरदोंकी लाशोंको नोच नोचकर खा रहे थे।

दोनों तरफके मुरदों तथा घायलोंकी संख्या मिलानेसे मालूम हुआ, कि दुश्मनोंके आठ हजार सिपाही मारे गये तथा दो हजार जख्मी हुये और अपनी तरफके पन्द्रह सौ वीर मरे तथा चार सौ जख्मी हुये।

सेनापतिने दोनों तरफके जख्मियोंको फौजी औषधालयमें भिजवा दिया तथा मुरदोंको शास्त्रोक्त नियमानुसार जला देनेका हुक्म दिया। दुश्मनोंकी फौजके बारह सौ मुसलमान सिपाही मारे गये थे; उन्हें कई एक बड़े बड़े गड्ढे खुदवाकर गड़वा दिया। इन सब कामोंके बाद सेनापति दलबल सहित अपने कैम्पमें पहुंचे। उनके कैम्पमें दाखिल होते ही ग्यारह तोपें उनकी सलामीमें दागी गईं और खुशीके बाजे जोर जोरसे बजने लगे।

सेनापतिने अपने खेमेमें जाकर सबके पहिले एक चिट्ठी अपने हाथसे महाराजकी जीतकी खुशीमें लिखी जिसमें उन्होंने इस लड़ाईका सच्चा सच्चा हाल मुखतसरमें वर्णन किया था। चिट्ठी एक मखमली जरदोजी कामके लिफाफेमें बन्द की गई। उसपर सेना-पतिने अपनी सील मुहर कर दी और एक अफसर तथा चार सवारोंको उसे हरगगढ़ ले जानेका हुक्म दिया। उस चिट्ठीमें उन्होंने महाराजसे कुछ फौजकी मदद भी मांगी थी और दो ही एक दिन-के अन्दर मायापुरपर चढ़ाई करनेकी खवाहिश जाहिर की थी।

अब सब सिपाहियोंने कमरें खोलीं और नित्यके मामूली कामोंमें मशगुल हुये। दुश्मनोंके कैदी सिपाहियोंको भी कड़े पह-रेमें मामूली कामोंसे छुट्टी पा लेनेका हुक्म दिया गया।

पाठक! अब इनलोगोंको अपने अपने कामोंमें लगने दीजिये! इधर आइये; हम आपको एक मजेदार तमाशा दिखावें।

निहालसिंहके कैम्पसे दो कोसके फासले पर एक भयानक जंगलमें घिरे हुये पहाड़ी नालेके पास हम दो मनुष्योंको एक साफ चट्टान पर बैठे बड़ी बेसब्रीके साथ बातें करते पा रहे हैं। उनकी थोड़ीही दूर पर एक जख्मी घोड़ा लम्बी बाग डोरके साथ पेड़से बन्धा धीरे धीरे जंगली घास चर रहा है। दोनों मनुष्योंके कपड़े खूनसे लथपथ हैं और दोनोंहीके चेहरे किसी गहरी चिन्तासे सुस्त जान पड़ते हैं। इन दोनोंमें एक तो मोटा ताजा ४० वर्षका गठीला जवान है दूसरा पच्चीस वर्षका चुस्त चालाक तथा फुर्तीला पट्ठा। पाठक! चालीस वर्ष वालेको तो मैं पहचान गया। वह राजा अर्जुनसिंहकी फौजका बड़ा अफसर खास बलरामसिंह है। मगर दूसरे नौजवानको मैं नहीं जानता। शायद वहभी उसी फौजका कोई सरदार हो। अच्छा देखा जायगा। अब सुनिये बलरामसिंह कुछ कहा चाहता है। उसकी जबानी सब हाल मालूम हो जायगा।

बल०—"भाई बेनीसिंह! सचमुच हम लोगोंके साथ बहुत बड़ी धोखेबाजी खेली गई है। ईश्वरकी सौगन्ध मैं इस बेईमानीका बदला निहालसिंहसे जरूर लूंगा। जब तक मैं उस मरदूदका सिर न उतार लूंगा मेरे कलेजेमें ठंढक न पड़ेगी।"

बेनी०—"सरदार साहब! अब पछतानेसे क्या फायदा? चलिये हमलोग मायापूरमें चलकर एक दूसरी फौज लावें और वीरताके साथ निहालसिंहको नीचा दिखावें। महाराज हमलोगों

को जरूर सहायता देंगे और सेनापतिके पदपर आपहीको बहाल रक्खेंगे।"

बल०—"तुम्हारा कहना ठीक है, मगर मैं जब तक निहाल-सिंहका सर न उतार लूंगा महाराजको अपना मुंह न दिखाऊंगा। मेरे कलेजेमें जो भयानक आग धधक रही है उसे मैं निहालसिंहके खूनसे बुझाऊंगा और तब महाराजसे मुलाकात करूंगा। क्या ईश्वर मेरी मनोकामना पूरी न करेंगे?"

बेनी०—"आप तो फूंकसे पहाड़ उड़ाना चाहते हैं। भला यह तो कहिये, कि पहिले धोखेबाजी किसने की? आपने या निहालसिंह ने?"

बल०—"मैंने क्या धोखेबाजी की?"

बेनी०—"यही, कि रातोरात अचानक जलसेके समय दुश्मनों पर चढ़ाई कर गोले बरसाये। क्या आपको ऐसा करना मुनासिब था? जंगी कायदेके यह बिलकुल वखिलाफ है।"

बल०—"नहीं कभी नहीं। दुश्मनोंको किसी प्रकार हो "नीचा दिखाना ही राजनीतिका धर्म है और अच्छे अच्छे युद्धोंमें ऐसा ही किया गया है।"

बेनी०—"तो फिर निहालसिंहका इसमें क्या कुसूर है? उसने भी जैसे होसका आपको नीचा दिखाया। अब आप भी कोई नई चाल खेलिये और उनसे अपना बदला चुका लीजिये।"

बल०—"हां—यही तो मैं भी चाहता हूं। अच्छा बेनीसिंह! तुमने भी तो ऐयारी सीखी थी? वह किस दिन काम आवेगी? अगर इस समय तुम मुझे निहालसिंहका सिर लादो तो मैं तुम्हारा बहुत ही एहसान मानूंगा और महाराजसे शिफारिस कर तुम्हें बहुत बड़ा ओहदा दिला दूंगा।"

बेनीसिंह कुछ कहा ही चाहता था कि इसी समय सहसा पश्चो

की खड़खड़ाहट सुनाई दी। दोनों मनुष्य चौकन्ने होकर चारों तरफ देखने लगे। कुछ ही देरमें उन्हें कुछ दूरसे एक बड़ी ही खूबसूरत नौजवान स्त्री अपने दाहिने हाथमें ताजे और खुशबूदार फूलोंसे भरा चंगेर लिये इधर ही आती दिखाई दी। इस स्त्रीकी उम्र करीब १५ या १६ सालकी थी। स्त्रीके बदनपर मामूली और साफ कपड़े पड़े हुए थे मगर अपनी खूबसूरतीके आगे वह सैकड़ों स्त्रियोंको मात करती थी। बलरामसिंह और बेनीसिंह उसपर लट्टू हो गये और टकटकी लगाकर उसीकी ओर देखने लगे। कुछही देरमें स्त्री पेड़ोंके झुरमुटसे चक्कर लगाती, अठलाती और मचलाती धीरे-धीरे इन लोगोंके पास पहुंची। स्त्रीकी निगाह इन दोनोंपर पड़ते ही एकाएक वह चौंक पड़ी और कुछ दूर पर एक पेड़के सहारे खड़ी होकर भयभीत चेहरेसे इन लोगोंको देखने लगी। स्त्रीको भयभीत तथा सहमी हुई देखकर बलरामसिंहने कहा,—"क्यों सुन्दरी! तुम कौन हो और हमलोगोंको देखकर इतनी भयभीत क्यों होती हो?"

स्त्री—(सुरीली आवाजमें धीरेसे) "आप लोग कौन हैं और कहांसे आये हैं? आप लोगोंके कपड़े खूनसे तराबोर दिखाई देते हैं। मुझे आप लोगोंसे बहुत भय मालूम होता है।"

बल०—"सुन्दरी! हम लोग आफतके मारे एक मुसाफिर हैं। सौदागरीका कुछ सामान लेकर व्यौपारकी ख्वाहिशसे सफर कर रहे थे, कि रास्तेमें डाकुओंसे सामना होगया। डाकुओंका गरोह बहुत बड़ा था और हमलोग सिर्फ पांच आदमी थे। डाकुओंको अपना माल असबाब लूटते देखकर हमलोगोंने उन्हें रोका। इसी पर लड़ाई हो गई। हमारे बाकीके तीनों आदमी मारे गये और हमलोग भी बहुत जख्मी होकर गिर पड़े। डाकू हम लोगोंको मुरदा समझकर सब माल असबाब लूट ले गये और हमलोगोंको

इसी हालतमें छोड़ गये। जब हमलोगोंको होश आया तो बहुत पछताये मगर क्या हो सकता था? लाचार अपनी किस्मतको कोसते और डाकुओंको बद्दुवायें देते एक तरफको चल पड़े और रास्ता भूलकर इस जङ्गलमें आ निकले। अब तुम कहो कि कौन हो और इस खुङ्खार जङ्गलमें क्यों घूम रही हो?"

स्त्री—(बड़े अफसोसके साथ मुंह बनाकर) "ओह! तुम लोगों पर मुझे बहुत रहम आता है। बेचारे बेकुसूर मुसाफिर बेमौत मारे गये और एक बलासे निकलकर दूसरी बलामें फँस गये।"

बल०—(चौंककर) "हैं! यह क्या? एक बलासे निकलकर दूसरी बलामें फँस गये! इसके क्या मानी? क्या यहां भी हमलोगों पर कुछ आफत आनेवाली है?

बेनी०—(भयभीत स्वरसे) "क्या यहां भी डाकुओंके गरोहसे सामना पड़नेवाला है।"

स्त्री—(रंजके साथ) "हां कुछ ऐसी ही बात है। मेरा बाप यहांका एक प्रसिद्ध डाकू है और यह जंगल उसीके कब्जेमें है। शायद आपलोगोंने जालिमसिंहका नाम कभी सुना होगा।"

जालिमसिंहका नाम सुनते ही दोनों मनुष्य चौंक पड़े और भयभीत दृष्टिसे एक दूसरेको देखने लगे। पाठक! सचमुच उस इलाकेमें जालिमसिंह एक बड़ा ही भयानक डाकू था और दूर-दूर तक उसका नाम मशहूर हो गया था। मायापूर, देवीपूर, देवगढ़ और छागगढ़की रैयायें उससे बहुत तंग आ गई थी और इन राज्योंके बहुत कोशिश करने पर भी वह अब तक गिरिफ्तार नहीं हो सका था। कुछ देर तक तो दोनों मनुष्य आपुसमें सैन मटक्के करते रहे इसके बाद बलरामसिंहने जरा कड़ा जी कर स्त्रीसे फिर कहा:—

बल०—"सुन्दरी ! तब तो हमलोग बेमौत मारे गये। क्या तुम हम गमज़दों पर कुछ भी रहम नहीं कर सकती ? अगर तुम हमारी जरासी भी मदद करोगी तो हम दोनों यहांसे साफ निकल जायेंगे और जन्म भर तुम्हारा एहसान मानेंगे।"

स्त्री—"अच्छा मुझसे किस किस्मकी मदद चाहते हो ?"

बल०—"सिर्फ यही कि डाकुओंके हाथसे बचाती हुई इस जङ्गलके बाहर निकाल दो।"

स्त्री—"जङ्गलसे निकलकर कहां जाओगे ?"

बल०—"जिधर ईश्वर ले जाय। इरादा तो मायापुरहीकी तरफका रखते हैं।"

स्त्री—"इसके एवज़में मुझे क्या मिलेगा ?"

बल०—"नेकनामी और दुवायें। इसके अलावा हमलोगोंके पास और रक्खा ही क्या है जो तुम्हारी नजर करें।"

स्त्री—"इसकी मैं परवाह नहीं रखती और न मुझे तुमसे कुछ मालमताकी ही ख्वाहिश है। मैं सिर्फ एक बात चाहती हूं।"

बल०—(शीघ्रतासे) "वह क्या ?"

स्त्री—(जरा मुसकुराकर) "अगर मुझे भी अपने साथले चलनेका वादा करो तो मैं तुम्हें बहुत सा माल भी दूं और यहांसे बेदाग निकाल भी ले चलूं।"

बल०—(बड़ी खुशीके साथ) "हैं ! क्या सचमुच तुम भी हमलोगोंके साथ निकल चलनेका इरादा रखती हो ? तब तो बड़ी खुशीकी बात है। मैं तुम्हें बड़ी खातिरसे रक्खूंगा और ताजिन्दगी तुम्हारा गुलाम बना रहूंगा।"

बेनी०—(ज़रा नज़ाकतके साथ आँखोंका इशारा कर) "अजी मैं तुम्हें अपने घर ले चलूंगा और अपनी स्त्री बनाकर जन्म भर तावेदारी किया करूंगा। मैं अभी कुंवारा ही हूं और मेरी उम्र भी अभी बहुत थोड़ी...।"

बल०— (बेनीसिंहकी तरफ घूर कर) "बड़े बेअदब हो जी। जबान सम्हालकर नहीं बोलते? खबरदार जो हमारी बातोंमें जराभी दखल दिया।"

बेनी०—(जरा कड़ाईसे) "मैंने क्या बेअदबी की? कुछ तुम्हारी जमा तो मारही नहीं ली जो इतनी आँखें दिखाते हो।"

बल०—"देखो बेनीसिंह! मुझसे न उलझो। तुम्हें न जानें किस ख्यालसे छोड़े देता हूं अगर दूसरा कोई होता तो…।"

बेनी०—(बात काटकर) "तो पीसकर पी जाते, क्यों? मानो खेतकी मूली ही समझ लिया है। दूसरोंमें जान नहीं है क्या?"

बल०—(तलवार निकालकर) "अच्छा अब चुप रहो वर्ना अभी काटकर फेंक दूंगा। ज्यादे बातें न करो।"

बेनी०—(तलवार निकालकर) "क्या मेरे पास तलवार नहीं है? या मेरे बदनमें जान नहीं है। अगर ऐसा ही इरादा है तो आओ निपट लें। अभी जौहर खुलेजाते हैं।"

बल०—"अबे छोकरे क्यों बेफायदे टिर्र टिर्र करता है! क्या तुझे अपनी जान भारी पड़ी है? एकही वारमें तो तेरा वारा न्यारा है। अब भी सम्हल जा।"

बेनी०—"अजी होशकी दवा करो। अगर ज्यादा ताव रखते हो तो आजाओ सामने। क्या खड़े खड़े बहादुरी बघार रहे हो?"

बेनीसिंहकी बात पर बलरामसिंहको बड़ा गुस्सा चढ़ आया और वह तलवार तान कर बेनीसिंह पर झपटा। बेनीसिंह भी पहिले हीसे मुस्तैद था पैंतरा बदलकर लड़ने लगा। स्त्री इन दोनोंकी लड़ाई देखकर मनही मन बहुत खुशी हुई और जरा मुसकराती आगे बढ़कर दोनों लड़ाकोंके पास जाकर धीरेसे बोली,—"यह क्या गजब करते हो? इस जङ्गलके चारो तरफ डाकू भरे हैं। अगर कोई सुन लेगा तो गजब ही हो जायगा और तुम दोनोंकी जानें

मुसीबतमें जायेंगी। अगर ऐसा ही है तो जङ्गलके बाहर निकालकर निपट लेना।"

स्त्रीकी बातपर दोनो डर गये और उन्होने अपनी अपनी तलवारें म्यानमें करलीं। इसके बाद उस औरतने अपने चङ्गेरमें-से दो खुशबूदार फूल निकालकर दोनोको दिये और मुसकुराती हुई बोली:—

स्त्री—"लीजिये इनसे जरा अपना मिजाज दुरुस्त कीजिये मैं अभी आती हूं और आपलोगोंको जङ्गलसे बाहर निकाल ले चलती हूं।"

दोनो मनुष्य स्त्रीके हाथसे बड़ी मुहब्बतके साथ फूल लेकर सूंघने लगे और स्त्री पेड़ोंके एक झुरमुटमें जाकर गायब होगई। फूलोंकी तेज और मीठी मीठी खुशबू कुछ ऐसी मजेदार थी, कि दोनोंकी तबियत मस्त होगई और नशे कीसी हालतमें दोनों झूमने लगे। अभी पांच मिनिट भी न गुजरे होंगे कि दोनोहीके होश हवास हवा हो गये और दोनोही बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़े। इनके गिरते ही एक तरफसे आवाज आई "वह मारा!" और साथही पेड़ोके झुरमुटसे वही स्त्री जो फूल दे गई थी अपने साथ एक मोटे ताजे और काले कलूटे आदमीको लिये निकलती दिखाई दी।

दोनो बेहोश मनुष्योंके पास आकर उन्होंने उनकी कमरसे कमरबन्द खोले और उनकी तलवारें अलग कर लीं। इसके बाद एक चादरमें दोनोंको बांधा और उस कलूटे आदमीको गट्ठर उठानेका इशारा किया। हुक्म पातेही उसने गट्ठरको बड़ी आसानीके साथ पीठपर लाद लिया और देखते-देखते दोनो स्त्री पुरुष जङ्गली पेड़ोंके बीचमें जाकर निगाहोंसे गायब होगये।

पांचवां बयान ।

देखते देखते नाव "भद्रा" नदीके विशाल कायमें विलीन होगई और दुश्मनोंका एक सिपाही भी जीता न बचा। दो तीन होशियार मल्लाह जो नाव डूबनेके पेश्तर ही कूदकर अलग होगये थे बड़ी तकलीफके साथ नदीमें हाथ पैर मारते दिखाई दिये। कुंवर मदनसिंहसे उनकी यह हालत देखी नहीं गई और उन्होंने मल्लाहोंको उनके बचानेका हुक्म दिया। साथही बजरा खेकर उनके पास पहुंचाया गया और तीनो मल्लाह बातकी बातमें नावपर खींच लिये गये। मल्लाहोंकी हालतें बड़ी खराब थीं। उनके बदनमें बहुतसे गहरे जख्म लगे थे और ज्याद: पानी पी जानेकी वजह उनके पेट फूल गये थे।

राजकुमारके हुक्मसे तीन मल्लाह उनकी सेवा सुश्रूषामें लगे और बाकी चार मल्लाह डाँड़े चलाने लगे। भूपसिंहने दुश्मनोंके मल्लाहोंके जख्मोंमें मरहम लगाकर पट्टियें बांधदीं और उलटे टांग कर उनके पेटका पानी निकाल दिया। अब तीनों मल्लाहोंको कुछ कुछ चेतन्यता आई मगर कमजोरीके सबब अबतक वह लोग बिल्कुल बेकाम थे। मल्लाहोंने अपने सूखे कपड़े निकालकर उनको पहिना दिये और तीनोंको गरमागरम हलुवा खिलाकर अपने बिस्तरे पर सुला दिया।

इसके बाद सातो मल्लाह मिलकर बड़ी तेजीके साथ नाव खेने लगे। यद्यपि इन मल्लाहोंके बदन पर भी छोटे मोटे बहुतसे जख्म लगे थे मगर उनको कुछ भी परवाह न कर यह लोग अपने मालिकके काममें पूरे मुस्तैद थे। राजकुमार, नकुलसिंह और बाकीके तीनों सिपाही भी बहुत जख्मी हो गये थे, लेकिन ऐयार

भूपसिंह अपनी चालाकी और पैंतरेबाजीसे साफ साफ बच गये थे। अपने हाथके सहारेसे भूपसिंह कुंवर मदनसिंह और सरदार नकुलसिंहको बजरेकी छतपरसे नीचे उतर लाये और केशर तथा ललिताको उनकी खिदमतमें छोड़कर फिर ऊपर पहुंचे और तीनो सिपाहियोंके जख्म धोकर एक ऐसा मरहम लगा दिया, कि थोड़ीही देरमें उनकी पीड़ा बन्द होगई और वह लोग आरामसे वहीं लेटकर आपसमें इधर उधरकी बातें करने लगे। भूपसिंह सिपाहियोंको अच्छी अवस्थामें पाकर नीचे आये और कुंवर मदनसिंह तथा नकुलसिंहकी देख-रेख करने लगे।

इस बीचमें केसर तथा ललिताने दोनोंके जख्म धोकर साफ कर डाले थे और मरहमकी पट्टियां तैयार कर रही थीं। भूपसिंह ने उन्हें पट्टियां तैयार करनेसे रोककर कहा:—

"मेरे पास एक बहुत बढ़िया मरहम है जिससे इनके जख्म दो तीन घण्टेके अन्दर ही अन्दर भरजावेंगे तुम लोग अन्दर जाकर थोड़ासा बादामका हलुवा तैयार करलो, क्योंकि एक तो अब सुबह-के दस ग्यारह बज गये हैं और इन लोगोंने कुछ जलपान भी नहीं किया। दोनों बेचारी राजकुमारियें भी अब तक भूखी ही हैं। दूसरे बदामके हलुवेसे इनलोगोंके बदनमें भी कुछ ताकत आजावेगी जो ज्याद: खून निकल जानेकी वजहसे बहुत कमजोर होगये हैं।"

गुलाबकुंवरिने परदेकी आड़मेंसे आवाज दी,—"नहीं हम लोगोंके खाने पीनेकी कुछ भी परवाह न करो। पहिले राजकुमार तथा नकुलसिंहके आरामका बन्दोबस्त करलो।"

मदन०—(धीमी आवाजमें) "नहीं बहिन! हमलोगोंकी कुछ चिन्ता न करो। हमलोग बहुत मजेमें हैं। सिर्फ जरा सी कम-जोरी आगई है सो दो चार घण्टेके अन्दरही दूर हो जायगी।"

भूप०—"कुंवर साहब! आप एक दो घण्टेके लिये किसीसे

बातचीत करनेकी कोशिश न करें क्योंकि जख्म मेंसे खून निकल-नेका खटका है (गुलाबकुंवरिसे) और आप दोनो राजकुमारियाँ मेरे ऊपर भरोसा कर इन लोगोंका ख्याल थोड़ी देरके लिये अपने दिलसे निकालदें और थोड़ा सा जल पीकर आराम करें। मैं सब बन्दोबस्त ठीककर लूंगा।"

गुलाबकुंवरि चुप हो रही। केसर और ललिता भीतर जाकर हलुवा पकानेकी फिक्रमें लगी। भूपसिंहने अपने बटुवेसे एक छोटी सी शीशी निकालकर उसमेंका तेल राजकुमार तथा नकुल-सिंहके जखमोंपर लगा दिया और एक खूबसूरत डिब्बी निकाल कर मलहमकी थोड़ी सी पट्टियां तैयार कीं और दोनों वीरोंके जखमोंपर बांध दीं। पट्टियां बंधते ही जख्मों की, जलन और पीड़ा दूर होकर ठंढक पड़ गई और वह लोग आँखें बन्दकर तकियेके सहारे लेट गये।

थोड़ी ही देरमें केसर और ललिताने गरमागरम हलुवा तैयार कर सोनेकी रकाबियोंमें रख भूपसिंहके हवाले किया। भूप-सिंहने हलुवेमें एक दवा मिलाकर राजकुमार और नकुलसिंहको उठाकर खिला दिया। हलुवा खाते ही दोनों जवानोंके बदनमें पहिलेहीकी तरह ताकत आगई और वह लोग तकियोंके सहारे बैठकर आपुसमें तरह तरहकी बातें करने लगे। उनको अच्छी हालतमें देखकर गुलाबकुंवरि और मायादेवीने भी कुछ जलपान किया। इसके बाद केसर, ललिता और भूपसिंहने भी कुछ मेवे निकालकर खाये और ठंढा जलपीकर अपनी भूखको मिटाया। सिपाहियों तथा मल्लाहोंको भी कुछ भोजन करा दिया गया।

अब दिनके तीन बज गये थे। आस्मान् बादलोंसे बिल्कुल साफ हो गया था और सूर्य्यदेवका शीघ्रगामी रथ अपना अन्तिम

रास्ता बड़ी तेजीके साथ तमाम कर रहा था। नाव बड़ी तेजीके साथ चलाई जा रही थी और अपने पीछे बड़े बड़े पहाड़ों, जङ्गलों तथा गांवोंको छोड़ती हुई देवीपूरकी सरहदमें पहुंच गई थी। यहांसे देवीपूरका किला और पक्का घाट सिर्फ दो कोसके फासले पर रह गया था। अनुमान होता था कि पांच बजते बजते बजरा देवीपूरके पक्के घाट पर लग जायेगा।

राजकुमार और नकुलसिंह अब बहुत मजेमें थे। उनको अनुमान भी नहीं होता था, कि कभी हमारे बदनमें जख्म लगे थे या नहीं। हां जख्मों की पट्टियों पर जब उन लोगोंका ध्यान पड़ जाता था तो सवेरे वाली भयङ्कर दुर्घटनाका चित्र उनकी आंखोंके सामने एक बार घूम जाता था। बजरेके जखमी मल्लाहों तथा सिपाहियोंकी भी यही हालत थी और वह लोग आपसमें रहरह कर भूपसिंहके अजीब साहसकी तारीफ सच्चे दिलसे कर देते थे और उन्हें लाखों दुवायें देते थे। भूपसिंह बजरेकी छतपर खड़े दूरबीनसे चारों तरफका प्राकृतिक दृश्य देख देख कर मन ही मन खुश हो रहे थे। इसी समय कुंवर मदनसिंहने उन्हें आवाज दी। जिसके साथ ही भूपसिंहने नीचे उतर कर बड़े अदबसे कहा,—"कहिये क्या आज्ञा है?"

मदन०—"छतपर क्या कर रहे थे?"

भूप०—"कुछ नहीं प्रकृतिकी विचित्रता देख देखकर जी बहला रहा था।"

नकुल०—"यार बड़े रङ्गीले आदमी हो।"

मदन०—"नहीं तो क्या? कुंवर चन्द्रसिंहके साथी हैं या किसी दूसरेके? भई चन्द्रसिंह भी बड़े रङ्गीले आदमी हैं। मिलनसारी तो उनमें कूटकूट कर भरी गई है। शिकारके भी पूरे शौकीन हैं। शेरका शिकार तो ऐसा समझते हैं मानो वह कोइ चीज ही

नहीं है। मैं दो महीने तक बराबर उनके पास रहा लेकिन कोई दिन ही ऐसा नहीं गया जिसमें एक आध शिकार न मारा गया हो। उनकी मिलन सारी, नेक चलनी और तबियतदारी देखकर तो जीही नहीं चाहता था, कि इनके पाससे कभी अलग हों। लेकिन क्या करूं पिताजी की आज्ञा भी शिरोधार्य्य थी। उनकी दूसरे तीसरे बराबर एक चिट्ठी महाराज वीरेन्द्रसिंहके पास पहुंचती थी कि "मदन को जल्द भेज दो। जी घबरा रहा है।" उधर कुंवर चन्द्रसिंह मेरे जानेका नाम सुनते ही बेहाल हो जाते थे और आँखोंसे आंसू बहाने लगते थे। उनकी मोहब्बत मुझे भी उनसे अलग नहीं होने देती थी। मगर मैं लाचार था। महाराज वीरेन्द्रसिंहका इरादा भी मुझे भेजनेका नहीं था। मगर पिताजी-की खत तथा संदेसे उन्हें मेरे विदा करनेके लिये लाचार करते थे। अस्तु मैं कुंवर चन्द्रसिंहसे सिर्फ १५ दिनकी छुट्टी लेकर बिदा हुआ। बड़ी मुश्किलसे उन्होंने मुझे इजाजत दी। मगर सख्त ताकीद कर दी थी कि पन्द्रह दिनके अन्दर ही जहां तक हो सके चले आना। जब मैं उनलोगोंसे बिदा होने लगा तो महाराज और कुमारकी माता दुर्गादेवी जो कि मुझे बहुत चाहती थीं आंसू बहाने लगीं और उन्होने आशीर्वाद देकर मुझे बिदा किया। मगर उन्होने भी जल्दी लौट आनेका मुझसे वादा करा लिया था। कुंवर चन्द्रसिंह अपने रमने तक मुझे पहुंचाने आये और बिदा करती समय गलेसे लग कर खूब रोये। लाचार मैं कलेजे पर पत्थर रखकर उनसे अलग हुआ और अपने सिपाहियोंके साथ देवीपूरका रास्ता लिया। राज्यमें जाने पर भला माता पिता कब छोड़ते थे? पन्द्रह दिनके अन्दर ही कुंवर चन्द्रसिंहकी चिट्ठियोंका तांता लग गया। पिता जीसे छुट्टी मांगता था तो वह यही जवाब देते थे, कि "अभी दो महीने रहकर आये हो तबियत नहीं भरी। जरा और

सब्र करो। एक महीने बाद आना।" लाचार इसी तरह दो महीने गुजर गये। इसी बीचमें एकाएक एक दिन महाराज वीरेन्द्रसिंहकी चिट्ठी मिली जिसमें उन्होंने कुमारके गायब होनेका पूरा पूरा हाल लिखा था। समाचार पाते ही मेरे पिता अवाक् रहगये। मैं बागमें (नकुलसिंहकी तरफ इशारा कर) इनके साथ सैर कर रहा था, कि इसी समय मेरे छोटे भाई रणविजयसिंहने पहुंच कर यह समाचार सुनाया। समाचार पाते ही मेरे होश हवाश फाख्ता हो गये और मुझे तनोबदनकी सुध न रही। जब होश हुआ तो मैंने अपनेको अपने खास कमरेमें मसहरी पर सोये पाया। मन ही मन कुंवर चन्द्रसिंहकी बातें याद कर कर जी हाथसे निकला जाता था। लाचार एक दिन दो दिन करते महीनों बीत गये। धीरे धीरे दुःख भी कम होता गया, मगर अबभी जब उनकी याद आती है तो जी बेहाल हो जाता है। कुमारकी शक्ल आँखोंके सामने नाचने लगती है..............."

इतना कहते कहते कुंवर मदनसिंहका गला भर आया और वह फूट फूट कर रोने लगे। भूपसिंह और नकुलसिंहकी आँखोंसे भी दुधारे आँसू बहने लगे। उधर गुलाबकुंवरि जो परदेकी आड़में बैठी अपने प्यारेकी कहानी बड़ी दिलचस्पीके साथ सुन रही थी और आंसुओंसे अपने कीमती कपड़े तर कर रही थी अब एकाएक सिसक सिसक कर रोने लगी और कुछ ही देरमें कुमारकी सुधमें बेसुध होकर जमीन पर गिर पड़ी।

गुलाबकुंवरिकी यह हालत देख, मायादेवी केसर और ललिता घबड़ा उठीं और कुमारीको होशमें लानेकी तर्कीब करने लगीं। कुंवर मदनसिंह, नकुलसिंह तथा भूपसिंह भी तीनों औरतोंकी घबराई हुई आवाजें सुन चौंक पड़े और मदनसिंहने केसरको ओरसे आवाज देकर पूछा,—"केसर! क्या माजरा है? कुशल तो है?"

केसरने परदेकी आड़ होमेंसे जवाब दिया,—"जी हां श्रीमान्! कुशल तो है मगर राजकुमारी गुलाबकुंवरिको कुछ बेहोशी आ गई है। हम लोग उनको होशमें लानेकी फिक्र कर रही हैं।"

दोनो बुद्धिमान मनुष्य राजकुमारीको बेहोशीका कारण समझ गये और उठ कर भीतर जाने लगे। भूपसिंहने दोनोंको रोक कर कहा "आप यहीं आराम कीजिये मैं अभी राजकुमारीको होशमें लाता हूं। आपके जरा भी मेहनत करनेसे फिर कमजोरी आ जायेगी। मुमकिन है कि जख्मोंसे खून भी निकलने लगे।"

यह कह भूपसिंह परदा हटा कर अन्दर दाखिल हुए। इधर केसर और ललिता अपने तेज लखलखेसे कुमारीको होशमें ले आई थीं और तरह तरहके दिलासे दे रही थीं। भूपसिंह राजकुमारीको होशमें आये देख उलटे पैरों लौट आये और कुमारसे बोले,—"कुछ चिन्ताकी बात नहीं है, कुमारी किसी दिली सदमेसे बेहोश हो गई थीं मगर अब होशमें हैं।"

सदन०—"अच्छी बात है। अब हमलोग इस किस्मकी बातें ही न करेंगे जिस किसीके दिल पर कुछ चोट पहुंचे। (बजरेकी खिड़कीसे सामनेके किनारेकी तरफ देख कर) ओह! हमलोग तो अपने राज्यमें पहुंच गये। यह देखो सामनेके हाथीघाट पर हमारे हाथी नहलाये जा रहे हैं।"

नकुल०—(चौंककर) वाह! तब तो हमलोगोंका बजरा बहुत जल्द पहुंचा।"

भूप० "बहाव भी तो इधर ही का है। मायापूरसे देवीपूर दूर ही कितना है? सिर्फ पच्चीस कोसका फासला पड़ता है। अगर रास्तेमें दुश्मनोंका सामना न पड़ जाता, तो ग्यारह बजेके पेश्तर ही हम लोगोंका बजरा देवीपूरके पक्के घाट पर लग गया होता।"

मदन०—(कुछ सोचकर) "खैर तो अब मल्लाहोंको हुक्म दो, कि झण्डी दिखाकर घाटके मल्लाहोंको होशियार करदें।"

भूपसिंहने बजरेके बाहर निकलकर मल्लाहोंको झण्डी दिखलाने-का इशारा किया। साथ ही एक मल्लाह जो बहुत ही होशियार मालूम होता था। दो लाल पीली झण्डियां लेकर बजरेकी छतपर चढ़ गया और उन्हें किसी खास तरीकेसे हिलाने लगा। यहांसे पक्का घाट करीब एक माइलके फासले पर था। मगर तौभी वहांका दृश्य साफ साफ नजर आता था। घाटपर राजासाहबकी बहुतसी नावें बंधी हुई दिखाई दे रही थीं। घुड़दौड़, चरखे, मोरपंखी तथा शिकारी नावोंकी भी कमी नहीं थी। तरह तरहके रङ्ग बिरङ्गे बड़े बड़े बजरे घाटकी शोभा बढ़ा रहे थे। तीन चार बड़ी बड़ी जङ्गी नावें भी बन्धी हुई थीं जिनपर महाराज शेरसिंहके सिंह-वाहिनी (दुर्गा)के निशान वाले भारी झण्डे हवामें फहरा रहे थे।

बजरे परसे झण्डी हिलते देखकर ही घाटके मल्लाहोंने राज-कुमारके आनेका समाचार पा लिया। साथ ही एक मल्लाह जङ्गी नावके सबसे ऊंचे मस्तूल पर चढ़ गया और हरी झण्डी हिलाने लगा। कुछ मल्लाहोंने दौड़कर किलेमें खबर दी। घाट परकी छोटी छोटी नावें हटाकर अलग की गईं और एक बहुत बड़ी साफ सुथरी जगह राजकुमारके बजरेके लिये कर दी गई।

बजरेके घाटपर लगते ही किले परसे इक्कीस तोपोंकी सलामी उतारी गई जिसके साथ ही साथ, राजकुमारके आनेकी चर्चा शहर भरमें फैल गई। राजकुमारने अभी जमीन पर पैर भी न रक्खा था, कि सामनेसे सौ सवारोंके साथ बहुतसे सरदारोंको साथ लिये कुंवर रणविजयसिंह आते दिखाई पड़े। राजकुमार, नकुलसिंह और भूपसिंह मय तीनों सिपाहियोंके नावपरसे उतर पड़े। कुंवर रण-विजयसिंह भाईको देखते ही घोड़े परसे कूद पड़े और दौड़कर

बड़े प्रेमके साथ राजकुमारके चरण छू लिये। राजकुमारने बड़ी मोहब्बतके साथ रणविजयसिंहको उठाकर गलेसे लगा लिया।

कुछ देरके बाद दोनों भाई अलग हुए। अब सरदारोंने आगे बढ़कर राजकुमारका स्वागत किया। कुंवर रणविजयसिंहकी नजर राजकुमार, नकुलसिंह तथा तीनों सिपाहियोंके जख्मोंकी पट्टियों पर पड़ गई और साथ ही उन्होंने चौंककर मदनसिंहसे पूछा,—"भइया! यह क्या माजरा है? यह पट्टियें कैसी बंधी हुई हैं? कुशल तो है? और साथके सिपाही क्या हुये?"

मदन०—"साथके सिपाही सुरपुर गये। बाकीका हाल किलेमें चलकर कहूंगा। तुम दो जनानी सवारियोंका इन्तजाम कर दो हमारे साथ गुलाबकुंवरि, उसकी दो सखियें तथा एक और राजकुमारी आई हैं।"

रण०—(और भी परेशान होकर) "कौन गुलाबकुंवरि? महाराज देवसिंहकी कन्या? हमारी प्यारी बहिन गुलाबकुंवरि?"

मदन०—"हां। वही गुलाबकुंवरि।"

रण०—"और दूसरी राजकुमारी?"

मदन०—"उनका परिचय तुम गुलाबकुंवरिसे पाओगे।"

रण०—"बहुत अच्छा। अब आप लोग किलेमें तशरीफ ले चलें। महाराज तथा माता जी आपसे मिलनेके लिये बहुत उत्सुक हैं। मैं भी दोनों राजकुमारियोंको लेकर कुछ ही देरमें आपकी सेवामें उपस्थित होता हूं।"

यह कहकर कुंवर रणविजयसिंहने एक जमादारको अपने पास बुलाया और उसे कुछ समझाकर बिदा किया। कसेकसाए तीन घोड़े हाजिर किये गये जिसपर राजकुमार, नकुलसिंह और भूपसिंह सवार होकर किलेकी तरफ चल पड़े। पचास सिपाहियोंका एक दस्ता राजकुमारके पीछे-पीछे चला और कई

सरदार घोड़ा दौड़ाकर उनके अगल बगल हो गये। पचास सवार और कुछ सरदार वहीं खड़े रह गये।"

राजकुमारके चले जानेपर कुंवर रणविजयसिंह बजरेके अन्दर गये। वहां गुलाबकुंवरि इनके इन्तजारमें बैठी थीं। राजकुमारको देखते ही मायादेवीने एक लम्बा घूंघट काढ़ लिया और खिड़की-की तरफ मुंहकर बैठ गई। कुंवर रणविजयसिंहने गुलाबकुंवरिको देखते ही पूछा,—"बहिन! कुशल तो है? तुम बहुत दुबली दिखाई देती हो। मालूम होता है बदमाश अर्जुनसिंहने तुम्हे बहुत तकलीफें दी हैं! यह तुम्हारे साथ कौन सी राजकुमारी आई हैं?"

गुला०-कुशल कोसों दूर है। आप लोगोंने तो जान बूझकर मुझे भुला दिया था। खैर वह बातें पीछे होंगी। यह तुम्हारी भौजाई राजकुमारी मायादेवी हैं।"

रण०—(चौंककर) "हैं! मायादेवी कौन? राजा अर्जुनसिंह-की पुत्री मायादेवी? क्या इनकी शादी हो गई है? जिन सौभाग्य शाली पुरुषसे इनकी शादी हुई है वह क्या किसी खास रिश्तेमें हमारे भाई लगते हैं?"

गुला०—(मुसकुराकर) "हां वही मायादेवी। राजा अर्जुन-सिंहकी पुत्री। इनकी शादी अभी हुई नहीं, होने वाली है और वह सौभाग्यशाली पुरुष तुम्हारे सगे भाई कुंवर मदनसिंह ही हैं।"

रण०—(खुश होकर) "अच्छा यह बात है! तो क्या भइया शिकारके बहाने मायापूर पधारे थे! खैर तो भौजाई साहब प्रणाम करता हूं कुसूर माफ करना। लेकिन यह क्या? तुम मुझसे घूंघट क्यों काढ़े हो? मैं तो तुम्हारा छोटा देवर हूं फिर मुझसे पर्दा करनेकी क्या ज़रूरत?"

मायादेवी शर्माकर और भी कोनेमें खिसक गई। गुलाबकुंवरि-ने मुसकुराते हुए जवाब दिया:—

गुला०—"घूंघट अभी नहीं खुल सकता। मुंह दिखाईके लिये बड़ी रकमकी जरूरत है। तुम मुफ्त होमें अपना मतलब निकालना चाहते हो। भला यह कैसे हो सकता है?"

रण०—(हंसते हंसते) "तुम क्यों बीचमें टांग अड़ा रही हो। वह बेचारी तो कुछ बोलती ही नहीं और तुम नाहक मुझे परेशान करती हो। वह मेरी भौजाई हैं अगर बिना मुंह दिखाई ही लिये जरा मुंह दिखा देंगी तो उनका क्या बिगड़ जायगा?"

गुला०—"हां तुम होशियार हो और वह बेवकूफ। जाओ नहीं मुंह दिखाती। तुम्हारी भौजाई हैं तो क्या मेरी भौजाई नहीं हैं? आजकल तुम बहुत बातें बनाना सीख गये हो। लाओ कुछ बोहनी कराओ तो अभी मुंह दिखलवाये देती हूं।"

रण०(एक बहुत कीमती हीरेकी अंगूठी गुलाबकुंवरिके हाथमें देकर) "अच्छा अब तो मुंह दिखलाओ।"

गुला०—(अंगूठी मायादेवीके हाथमें देकर मुसकुराते हुए) "खैर यह तो हुई मुंह दिखलाई। अब मेरा मेहनताना?"

रण०—(हंसकर) "क्यों मुझे बना रही हो। क्या कपड़े उतरवा लोगी। मैं ऐसा बेवकूफ नहीं हूं।"

इसी समय बजरेके बाहरसे आवाज आई "कुंवर साहब! पालकियें तैयार हैं।"

रण०—(गुलाबकुंवरिसे) "खैर अब महलमें चलो वहीं मुंह देख लूंगा। सवारियें तैयार हैं।"

यह कहकर कुंवर रणविजयसिंह बजरेके बाहर चले गये। वहां कीमखाबके परदोंसे ढकी दो पालकियें तैयार खड़ी थीं। उनमेंसे एक पालकी बहुत ही कीमती सामानोंसे सजाई गई थी और दूसरी मामूली सामानोंसे। बजरेसे पालकी तक परदेका इन्तजाम हो गया। गुलाबकुंवरि तथा मायादेवी उसी बढ़िया काम

की पालकी पर सवार होगईं और कमल तथा ललिता दूसरी पालकी पर बैठ गईं। दोनों पालकियां कीमती पोशाकें पहने हुये आठ आठ कहारों ने उठालीं। पचास सवार कतार बांधकर पालकीके आगे पीछे हो गये। कुंवर रणविजयसिंह और बाकीके सरदार घोड़ा दौड़ाकर सवारोंके आगे होगये और इस धूम-धामके साथ राजकुमारियोंकी सवारी वहांसे चलकर किलेके फाटकको पार करती हुई राजमहलकी जनानी डेवढ़ीपर लग गई।

कुंवर मदनसिंह अपने मित्र सरदार नकुलसिंह तथा भूपसिंहके साथ सब सरदारोंको अपने साथ लिये किलेमें दाखिल हुए और सीधे महाराज शेरसिंहके दरबारमें पहुंचे।

सन्ध्या होगई थी और हलका अन्धकार धीरे धीरे चारों तरफ फैल रहा था। दरबारके कमरेमें बड़ी तेज रोशनी हो रही थी। महाराज शेरसिंह एक बहुत ऊंचे जड़ाऊ सुनहले सिंहासनपर बैठे हुये किसी गहरी चिन्तामें निमग्न थे। पास ही एक ऊंची कुरसीपर सरदार नकुलसिंहके पिता मन्त्री बुद्धिसिंह बैठे एक पत्र पढ़कर महाराजको सुना रहे थे। चारों तरफ बड़े बड़े सरदार कीमती कुरसियोंपर सहारा लगाये बड़े आग्रहके साथ पत्रकी इबारत सुन रहे थे। सोने सोंटेपर आसा हाथमें लिये हुये बहुतसे चोबदार अदबसे सिर झुकाये खड़े थे।

इसी समय कुंवर मदनसिंह सब अपने साथियोंके दरबारमें दाखिल हुये और दौड़कर अपने पिताके चरण छू लिये। महाराज शेरसिंहने उनको बड़ी मुहब्बतके साथ अपनी छातीसे लगा लिया। इसके बाद कुंवर मदनसिंह मन्त्री बुद्धिसिंहको प्रणाम कर महाराजके दाहिने बगलकी एक खाली कुरसीपर बैठ गये जो खास इन्हींके लिये दरबारमें हमेशः रक्खी रहती थी। अब सरदार नकुलसिंहकी पारी थी। वह भी आगे बढ़े और महाराज

शेरसिंह तथा अपने पिताके चरण छूकर कुंवर मदनसिंहके बगलमें बैठ गये। भूपसिंह भी महाराज तथा मन्त्रिवरको प्रणाम कर अदबसे एक तरफ खड़े हो गये। अब सरदारोंमें एक प्रकारका हलका सन्नाटा छागया और सबलोग आपुसमें एक दूसरेकी तरफ देखने लगे कुछ देरके बाद महाराज शेरसिंहने सन्नाटेको तोड़ते हुये कुंवर मदनसिंहको लक्ष करके कहा :—

"मदन! क्या तुम्हें महाराज देवसिंहकी विपत्तिका भी कुछ हाल मालूम है? अच्छा हुआ, कि तुम इस समय यहां पहुँच गये। देखो आज दोपहरके समय मुझे उनका एक पत्र मिला है जिसमें वह लिखते हैं कि,—'मेरा किला शत्रुओंने घेर लिया है। हमलोग अबतक बराबर शत्रुओंका मुकाबिलाकर रहे हैं मगर उनकी फौजकी तायदाद बहुत ज्याद: है। अस्तु आपसे सहायताकी प्रार्थना है। कुंवर मदनसिंहको कुछ फौजके साथ जल्द भेजिये।' बस यही उनके पत्रका मुख्तसर है तुम्हें उचित है, कि जहांतक जल्द हो सके अपनी कुल फौज लेकर उनकी मददके लिये रवाना हो जाओ।"

मदन०—(खड़े होकर हाथ जोड़े हुये) "जो आज्ञा। मैं कल सवेरे ही यहांसे अपनी फौजके साथ कूच करूंगा। उनकी लड़की गुलाबकुंवरिको तो मैं अपने साथ यहां लेता आया हूं (दबी ज़बानसे) अर्जुनसिंहकी कन्या मायादेवी भी उसके साथ है।"

महाराज—"गुलाबकुंवरिको तो अर्जुनसिंहके ऐयार चुरा ले गये थे। वह तुम्हारे हाथ कहांसे लगी और मायादेवीको कैसे लाये? क्या तुम लोग मायापुर गये थे?"

मदन०—"जी हां। मुझे अब आज्ञा दीजिये कि मैं अपनी माताके दर्शनकर आऊं क्योंकि वह मेरी प्रतिक्षाकर रही होगी। बाकीका हाल (भूपसिंहकी तरफ दिखाकर) यह आपसे कहेंगे।"

महाराज—"अच्छा तुम जाओ (ःपसिंहसे तुम कहां भूपसिंह ! तुम्हारे महाराजने तो मायापुर पर चढ़ाईकी है न ? उसका क्या नतीजा निकला ?"

भूप०—(हाथ जोड़कर) "श्रीमान् ! मैं तो आज एक महीनेसे कुंवरसाहबकी खोजमें निकला हुआ हूं। मुझे कृष्णगढ़के कुछ भी समाचार विदित नहीं हैं।"

महा०—"आठ सात दिन हुये महाराज वीरेन्द्रसिंहका एक पत्र मुझे मिला था जिसमें उन्होंने लिखा था, कि हमारी फौज मायापूरकी सरहद तक पहुंच चुकी है। इसके बादका कुछ भी समाचार मुझे नहीं मिला। चन्द्रसिंहका हाल तो सब ही को मालूम हो गया है, कि वह "पुतलीमहल"में कैद हैं फिर फजूल इधर उधर खोजनेसे क्या फायदा ? और कोई काम देखते।"

भूप०—"श्रीमान् ! मैं मायापूरमें अब तक अपनी घातमें लगा हुआ फिर रहा था। मेरा इरादा अर्जुनसिंहको कैद करनेका था। इस बीचमें कुंवर मदनसिंहजीसे मुलाकात हो गई। दो तीन दिन पहिले मैंने सुना था कि राजकुमारी गुलाबकुंवरि भी ऐयारों द्वारा कैदकर यहां लाई गई हैं और उनकी दो ऐयार: केशर और ललिता भी उनके साथ ही कैद होकर आई हैं। दो ऐयार: मालती और श्यामा मेरे समने ही कैद हो चली थीं। मुझे उनके छुड़ानेकी भी फिक्र थी। मैंने अपना इरादा कुंवरसाहबसे जाहिर किया और उन्होंने जी जानसे मेरी मदद की।"

यह कहकर भूपसिंहने शुरूसे कुंवर मदनसिंहका मिलना, ठीक वक्तपर अर्जुनसिंहको जख्मीकर दोनों राजकुमारियोंका उद्धार करना, केसर और ललिताको छुड़ाना, नावपर चढ़कर वहांसे भागना, रास्तेमें दुश्मनोंसे लड़ाई होना, दुश्मनोंकी नावका डूब जाना, इत्यादि सब बातें मुख्तसरमें कह डालीं। महाराज

यह हाल सुनकर बड़े खुश हुए। इसके बाद सबकी और महाराज-से और भी कुछ बातें हुईं और दरबार बर्खास्त किया गया।

छठवां बयान।

जिस समय कुंवर मदनसिंह, नकुलसिंह और अनूपसिंह गुलाबकुंवरि, मायादेवी और ललिताको लेकर मायापुर-के किलेसे निकल भागे थे उसके आध घण्टे बाद नकली मालती और ज्वाला वहां पहुंचीं। दालानमें पैर रखते ही उन्हें दो शख्स जमीनपर बेहोश पड़े दिखाई दीं। दोनोंका माथा ठनका। उनमेंसे एकने कांपते हुये हाथोंसे मोमबत्ती निकालकर जलाई और दोनों ही बेहोश शख्सोंकी तरफ बढ़ीं। शख्सोंके चेहरे-पर रोशनी पड़ते ही दोनों चौंक पड़ीं और आपही मालतीके मुंहसे निकल गया,—"देवीसिंह! बड़ा धोखा हुआ। मुरारीलाल और मोतीसिंह दोनों ही बेहोश पड़े हैं।"

देवीसिंह—धोखा बेशक हुआ। मगर बटुकनाथ! इन लोगों-को होशमें लानेके पेश्तर हमलोगोंको महाराजकी खबर लेनी चाहिये।"

देवीसिंहकी राय बटुकनाथको पसन्द आई। स्त्री वेष धारी दोनों ऐयार औरतोंके साथ कई बड़े दालान पार करते हुए महा-राजके कमरेकी तरफ बढ़े। कमरेके पास पहुंचते ही कमरेका दरवाजा खुला देख दोनोंका चेहरा पीला पड़ गया। कमरेमें इस समय पूरा अन्धकार छाया हुआ था। बटुकनाथ रोशनी लिये दौड़कर कमरेके अन्दर घुस गया। मोमबत्तीकी धुंधली रोशनीमें उसने महाराजको फर्शपर बेहोश पड़े पाया। उसका खून सूख गया और चिल्लाकर कहा,—"देवीसिंह! जल्दी आना। यहां सत्यानाश होगया!"

देवीसिंह बटुकनाथकी आवाज सुनतेही कमरेमें दाखिल हुआ और महाराजकी सूरत देखते ही चौंक पड़ा। उसने घबड़ाई हुई आवाजमें चिल्लाकर कहा,—"यह क्या माजरा है? अभी तो हमलोग महाराजको अच्छी हालतमें छोड़ गये थे।"

बटुक०—"माजरा क्या है? सब खेल मिट्टी होगया। दुश्मनोंके ऐयार महाराजको बेहोश कर गुलाबकुंवरिको उड़ा ले गये।"

देवी०—"अच्छा अब महाराजको होशमें लाकर सब हाल दरियाफ़ करना चाहिये।"

बटुकनाथ शीघ्रतासे महाराजके पास घुटने टेककर बैठ गया और उनके नाकपर हाथ रखकर सांसकी आहट लेने लगा। इसी बीचमें देवीसिंहकी निगाह जमीनको लाल-लाल बहती हुई कुछ चीजपर पड़ी जो महाराजकी गर्दनके नीचेसे निकल रही थी। देवीसिंहने जल्दीसे बैठकर महाराजकी गर्दन उठाली और चिल्लाकर कहा,—"खून हुआ खून! महाराजका कोई खून कर गया।"

खूनका नाम सुनतेही बटुकनाथके पैर तलेकी मिट्टी निकल गई। दोनोंने शीघ्रतासे महाराजको उठाकर दीवारके सहारे बैठा दिया। देखा उनके दाहिने कन्धेसे खून निकल रहा है। जांच करने पर मालूम हुआ, कि, गोलीसे महाराज घायल किये गये हैं। दोनों ऐयारोंने बटुवेसे औजार निकालकर बड़ी मुश्किलसे गोली निकाली और घावको अच्छी तरह धोकर भलीभांति मल्हम पट्टी कर दी। इसके बाद महाराज लखलखा सुंघाकर होशमें लाये गये मगर कमजोरीके सबब होशमें आनेपर भी उनमें कुछ बोलनेकी शक्ति न रही। कुछ देरके बाद महाराजने हाथके इशारेसे कुछ कहा जिसका मतलब समझकर दोनों ऐयारोंने महाराजको हाथका सहारा देकर उठाया और पासहीके एक मखमली पलंग पर लिटा दिया। कुछ देरके बाद महाराजने करवट बदल कर धीरे धीरे कहा:—

महाराज—"गुलाबकुंवरि कहां गई? माया कहां है? वह दुष्ट कौन थे जिन्होंने मुझपर निशाना…आह, बड़ा दर्द होता है।"

बटुक०—"श्रीमान्! माजरा क्या है? हम लोगोंकी समझमें तो कुछ भी नहीं आता। गुलाबकुंवरिका कहीं पता नहीं है। मायादेवीका आपने क्यों नाम लिया। वह बेचारी तो अपने महलमें आराम कर रही होगी।"

महाराज—"नहीं, नहीं। दोनों हीको दुश्मन उड़ा ले गये। सख्त धोखा दिया गया। तुम लोग कहां मर गये थे? मुरारीलाल और मोतीसिंह कहां चल दिये?"

बटुक०—(हाथ जोड़कर) "श्रीमान्! मुरारीलाल और मोतीसिंह बाहरकी दालानमें बेहोश पड़े हैं। हम लोग उन दोनोंको पहरे पर तैनात कर दूसरे कामके लिये चलेगये थे।"

महाराज—"तुमलोग बड़े नालायक हो। खैर बहुत जल्द कोतवालको हाजिर करो।"

"जो हुक्म" कहकर बटुकनाथ कमरेसे बाहर निकल गया। मगर देवीसिंह महाराजके सामनेही हाथ जोड़कर खड़ा रहा। कुछ देरके बाद महाराजने देवीसिंहको सम्बोधन करके कहा:—

महाराज—"देखो देवीसिंह! इतने पहरे चौकीके रहते, इतने ऐयारोंको आँखोंमें धूल झोंककर, दुश्मन तुम्हारे महाराजको जख्मीकर गुलाब और मायाको उड़ा ले जांय यह कितने शर्मकी बात है? अगर वह लोग मेरा कामही तमाम कर जाते तो इस समय तुम लोग क्या कर सकते थे?"

देवी०—"श्रीमान्! सचमुच हम लोगोंके डूब मरनेकी बात है, मगर सच पूछा जाय तो हम लोग मुरारीलाल तथा मोतीसिंहके भरोसेपर मारे गये। श्रीमान्! इसमें हम लोगोंका बिल्कुल कुसूर नहीं है। अगर है तो सिर्फ इतना कि हमलोगोंने इन दोनो पर भरोसा किया।"

महाराज०—"खैर उन दोनों नमकहरामोंको होशमें लाकर जरा दरियाफ़ तो करो, कि वह लोग कौन तथा कितने आदमी थे।"

"बहुत अच्छा" कहकर देवीसिंह कमरेसे बाहर निकला और मुरारीलाल तथा मोतीसिंहको होशमें लानेकी कोशिश करने लगा। लखलखेकी कड़ी खुशबूके नाकमें पहुंचते ही वह दोनों एक एक छींक मारकर उठ बैठे और भौचक्कोंकी तरह चारों तरफ देखने लगे देवीसिंहने उनकी वह हालत देख धीरेसे पास जाकर कहा:—

देवी०—"क्यों कुछ मालूम भी है? महाराजका कोई खून करके गुलाबकुंवरि और मायादेवीको उड़ा ले गया।"

देवीसिंहकी बात पर दोनों चौंक पड़े और साथही मुरारीलाल-ने घबड़ाई हुई आवाजमें पूछा,-"तो क्या महाराज मरगये?"

देवी०—"चुप बेवकूफ। कहीं कोई सुन लेगा तो बड़ी आफत लावेगा। महाराजकी शानमें ऐसी खराब बात?"

मोती०—"तो कहो भी क्या हुआ?"

देवी०—"हुआ क्या। महाराजको किसीने गोली मारदी।"

मुरारी०—(जल्दीसे) "तब? तब?"

देवी०—"तब क्या? महाराज गोली लगतेही बेहोश होकर ज़मीन पर गिर पड़े और मौका पाकर दुश्मन दोनों कुमारियोंको उड़ा ले गये।"

मोती०—दोनों कुमारियें कौन?"

देवी०—"गुलाबकुंवरि और मायादेवी।"

मुरा०—"मायादेवीको कैसे? क्या उसके महलसे?"

देवी०—"यह नहीं कह सकता। शायद यहींसे।"

मोती०—"मायादेवी यहां कैसे आई?"

देवी०-"मालूम नहीं। महाराजसे पूछने पर पता लग सकताहै?"

मुरा०—"महाराजकी हालत कैसी है? महाराज कहां हैं।"

देवी०—"महाराज इसी पास ही वाले कमरेमें पलंगपर लेटे हैं। अब उनकी हालत अच्छी है। हमलोगोंने उनके जख्ममें-से गोली निकालकर मरहम पट्टीकर दी है।"

मोती०—"तुमलोग कौन? क्या और कोई ऐयार भी तुम्हारे साथ था?"

देवी०—"हां। मैं और बटुकनाथ। बटुकनाथको महाराजने कोतवालके हाजिर करनेका हुक्म दिया है और तुमलोगोंपर भी महाराज बहुत नाराज हैं। अब तुमलोग महाराजके सामने चल-कर आजकी घटनाका पूरा हाल उनसे कह डालो।"

देवीसिंहके बहुत समझानेपर मुरारीलाल और मोतीसिंह दोनो शक्ल बनाये हाथ बांधे महाराजके पास पहुंचे। महाराज इस समय बहुत मजेमें थे और तकियेका सहारा लगाये पलंगपर बैठे कोतवालका इन्तजारकर रहे थे। मोतीसिंह और मुरारी-लालको देखते ही महाराजको गुस्सा चढ़ आया और उन्होंने डपटकर कहा,—"क्यों बे नमकहरामों! तुम लोग अबतक कहाँ थे?"

मुरारी०—(हाथ जोड़कर रोते हुये) "श्रीमान्! हमलोग बाहरके दालानमें पहरा दे रहे थे, कि सहसा किसीने हमपर कमन्दें फेंकीं। हमलोग अभी अच्छी तरह सम्हलने भी नहीं पाये थे कि एकाएक दुश्मन हमपर टूट पड़े। बेहोशीकी बुकनी जबर्दस्ती नाकमें ठूंस दी और बातकी बातमें हमलोग बेकाबकर दिये गये। श्रीमान्! हमलोग बिलकुल बेकुसूर हैं। हमारा कुसूर कुछ भी नहीं है।"

महाराज०-"क्या अन्धे होकर पहरा देते थे? दुश्मन घरमें घुस आये और तुम लोगोंको मुतलक खबर नहीं?"

मोती०—(हाथ जोड़कर) "महाराज! अगर सच पूछिये

तो हम लोग (देवीसिंहकी तरफ इशारा कर) इनके और बटुक-नाथके धोखे मारे गये। हम लोगोंने यही समझा था, कि यह लोग कमन्दें मारकर दिल्लगी कर रहे हैं।"

महाराज कुछ कहा ही चाहते थे, कि ठीक इसी समय शहर कोतवाल हैदरअलीको साथ लिये बटुकनाथ कमरेमें दाखिल हुआ। कोतवालने महाराजको देखते ही झुक झुक कर तीन सलामें रसीद कीं और हाथ बांधकर बोला:—

कोतवाल—"हुजूरने इस वक्त इस गुलामको किस लिये याद फर्माया है ? खैरियत तो है ?"

महाराज—"तुम इस समय कहां थे ? क्या बटुकनाथने तुम-से अबतक कुछ भी नहीं कहा ?"

कोतवाल—"हुजूर मैं अभी गश्तसे लौटकर मकान पर पहुंचा ही था, कि बटुकनाथने आपका हुक्म सुनाया। खबर पाते ही सीधा आपकी खिदमतमें हाजिर हुआ हूं। कहिये इस गुलामको क्या हुक्म होता है ?"

इसपर महाराजने कोतवालसे सब बातें कह डालीं। कोत-वालने हैरानीके साथ सब हाल सुनकर बड़ा ताज्जुब किया। महाराज बोले:—

महाराज—"कोतवाल ! अब तुम्हारा क्या इरादा है ? दुश्मनों-को गिरिफ्तार कर सकते हो या नहीं ? जल्द बोलो समय बहुत कम है।"

कोतवाल—"हुजूर ! ताबेदार अभी दुश्मनोंको गिरिफ्तार करनेकी कोशिशमें जाता है। हुक्मकी देर है।"

महाराज—"अच्छा जाओ और सबेरा होते होते दुश्मनोंको पकड़कर दरबारमें हाजिर करो। याद रहे कि दुश्मनोंके गिरिफ्-तार करनेसे तरक्की और नामवरी दोनों हासिल हो सकती है।"

लम्बी सलामके बाद कोतवाल कमरेसे बाहर निकला। ठीक इसी समय बाहरसे शोर गुलकी आवाज सुनाई दी। सब लोग चौंक पड़े। कोतवाल ठहर गया। महाराजके इशारेसे बटुकनाथ दौड़ता हुआ बाहर गया और कुछ ही देरमें आकर बोला,—लीजिये केसर और ललिता भी गायब हैं।"

खबर मामूली नहीं थी। कोतवालने अब वहां ज्याद: देर तक ठहरना मुनासिब न समझा और पुर्तीके साथ महलसे निकल कोतवालीमें दाखिल हुआ। वहां पहुंचकर उसने चारों तरफ बहुतसे सवार दौड़ा दिये और ५० सिपाहियोंके एक दस्तेको नाव द्वारा भद्रा नदीमें गश्त करनेका हुक्म दिया।

पाठक! कुछ समझे? इन्हीं सिपाहियोंके दलने नाव पर सवार होकर हमारे बहादुरोंका पीछा किया था और लड़ाईमें एक प्रकारसे विजयी होनेपर भी भूपसिंहकी चालाकीसे नाव डूबने पर उसीके साथ साथ अपनी बेशकीमत जानें गंवाई थीं।

सातवां बयान।

दुश्मनोंके निशान (झण्डे) को देखकर राजा देवसिंहके सिपाहियोंके दिल टूट गये। उनके पैर एकाएक उखड़ गये। दुश्मनोंने बड़ी तेजीके साथ आगे बढ़कर राजा देवसिंहको मय उनके सरदारोंके घेर लिया। वह समय बड़ा ही कठिन था। ऐसे समयमें बड़े बड़े जवांमर्दोंके हौसले छूट जाते हैं। मगर वाहरे देवसिंह! उन्होंने इस समय बड़ी दिलेरीसे काम लिया। अपनी भागती हुई फौजको ललकार कर कहा:—

"बहादुरो! अब पीठ दिखाना नामर्दोंका काम है। चारों तरफ दुश्मन भरे हुये हैं, भागकर सिवाय कैद होने या बेमौत

मरनेके और कुछ नतीजा नहीं निकलेगा। क्षत्रियोंके नाममें यह कलंक मौतसे बढ़कर होगा। सावधान! आओ हम लोग मिलकर एक बार इन नामर्दों और धोखेबाजोंका मुकाबिला करें। या तो किला इन लोगोंसे छीन ही लेंगे या बहादुरीके साथ जान गंवाकर अपनी निष्कलंक-अटलकीर्त्ति संसारमें सदाके लिये छोड़ जायंगे। देखो! हमारे दोनों हाथ लड्डू हैं। अगर जीतेंगे तो दुश्मनोंसे अपना किला छीन लेंगे और मर गये तो उस स्वर्गका सुख सदाके लिये भोगेंगे, जहां जानेसे फिर मनुष्यको किसी बातकी तकलीफ नहीं रहती। देखो, देखो आंखें खोलकर देखो! वह स्वर्गकी अप्सरायें आकाशमें जयमाल लिये खड़ी तुम्हारी बाट-जोह रही हैं! ऐसा मौका फिर न मिलेगा! आओ कमर कसकर दूने उत्साहके साथ अपने राजाका साथ दो जो तुम्हें अपनी जानसे भी बढ़कर प्यार करता है। कायरोंकी तरह बगलें झांकना बहादुरीके नाममें बट्टा लगाता है!"

महाराज देवसिंहके इन व्यंग और वीरता-पूर्ण वाक्योंमें न जाने क्या जादू भरा था, कि जिसे सुनकर उनकी भागती हुई फौजके पैर एकाएक रुक गये और उसने बड़े तपाकके साथ अपने राजाको बीचमें लेकर असीम साहससे दुश्मनोंका मुकाबिला करना शुरू किया। दुश्मनोंके पैर जहां तक बढ़े थे वहीं ठहर गये क्योंकि अपनी कीमती जानोंको हथेली पर लिये राजा देवसिंहके सिपाहियोंको एकाएक कैद कर लेना अब मामूली काम न था। दोनों तरफसे जमकर तलवारें चलने लगीं। घमासान लड़ाईका भयानक सीन आंखोंके सामने नाचने लगा और देखते देखते मौतके बाजारका दर दूना चौगुना बढ़ गया। पाठक! राजा देवसिंहके इन मुट्ठीभर सिपाहियोंकी वीरता इस समय देखने ही लायक थी। उनका एक एक वीर दुश्मनोंके दस दस सिपा-

हियों पर भारी मालूम पड़ता था और दुश्मनोंके सिपाही धड़ाधड़ गाजर मूलीकी तरह काटे जा रहे थे।

खड़गबहादुरसिंहने अपनी फौजकी यह हालत देख उसे लल-कारकर कहा,—"बहादुरो! क्या देखते हो? बांध लो इन बदमाशों को। इन थोड़ेसे नामर्दोंको कैद कर लेना क्या बड़ी बात है? किला तुम लोगोंके हाथ आही गया है अब नाहक परेशान होकर क्यों जानें गंवा रहे हो?"

इस समय खड़गबहादुरसिंहकी बाकी फौज भी किलेमें घुस आई थी। उसने अपने अफसरकी जोशीली बातों पर जोशमें आकर एक बार बड़ी तेजीके साथ हमला किया। इस भयानक हमलेको राजा देवसिंहके सिपाही सम्हाल न सके मगर पीछे हटना नामर्दी और बुजदिली समझकर बड़ी वीरताके साथ अपनी जान गंवाने लगे। इसी समय एक सवारने घोड़ा दौड़ाते हुए आकर सहकारी सेनापति सरदार रणजीतसिंहके सब अपने सिपाहियोंके साथ कैद हो जानेकी खबरदी साथही पिछले हिस्सेके जीते हुए दुश्मनोंके सिपाहियोंने भी देवसिंह पर हमला किया जिसका सम्हालना उन्हें मुश्किल पड़ गया और बातकी बातमें राजा देवसिंह सब अपने वीर सिपाहियोंके कैद कर लिये गये। दुश्मनोंकी फौजमें खुशीके बाजे बजने लगे और किलेके प्रत्येक स्थान पर दुश्मनोंने अधिकार कर लिया। शस्त्रालय और कोषागारके पहरेदारोंके लाख सर पटकने पर भी दुश्मनोंने उनको कैद कर अपना कब्जा कर लिया। अब चारों तरफ दुश्मन ही दुश्मन दिखाई पड़ने लगे और उनमें खुशीकी किलकारियाँ उड़ने लगीं।

वह समय प्रातःकालका था। सूर्य्यदेवका बड़ा और सुनहला गोला पूरबकी तरफसे लाली लिये हुए धीरे धीरे ऊपरकी ओर उठ रहा था। सुवर्णको भी मात करनेवाली सुनहली किरणें किलेके

ऊंचे ऊंचे स्थानों पर पड़कर बड़ाही अनोखा दृश्य दिखा रही थीं। किलेमें इस समय बड़ा ही शोर गुल मचा हुआ था। जीतकी खुशीमें दुश्मनोंके सिपाही मतवालोंकी तरह चारों तरफके बेशकीमत सामान लूट रहे थे। बढ़ते बढ़ते यह लूट अब देवगढ़के शहरमें भी पहुंच गई थी। शहरकी लम्बी चौड़ी बस्ती किलेके दाहिने हिस्से से शुरू होकर बहुत दूर तक फैली हुई थी। इस लूटसे देवगढ़की प्रजामें बड़ी ही खलबली पड़गई। जान हथेली पर लिये समस्त प्रजा अपने जानोमालकी रक्षा कर रही थी मगर जीतकी खुशीमें उन्मत्त सिपाही पशुओंके समान उनसे बड़ा ही बुरा वर्ताव करते थे। नगर भरमें बड़ा भयानक गदर मचा हुआ था। प्रजा मण्डलीके नौजवान दल बांधकर नाके नाके पर हरबे हथियारोंसे सजे बड़ी बहादुरीसे लुटेरे सिपाहियोंका मुकाबिला कर रहे थे। देवगढ़की वीर स्त्रियां अपने अपने कोठे पर चढ़कर लुटेरों पर ईंट, पत्थर, जलती हुई लकड़ियें, उबलते हुए तेल और खौलते हुए पानीकी वर्षा कर रही थीं।

अब सुबहके आठ बज गये थे। राजा देवसिंहके दरबार वाले बड़े कमरेमें ऊंचे और गङ्गाजमुनी कामके जड़ाऊ सिंहासन पर सेनापति खड़गबहादुरसिंह बड़े रोबसे अकड़ा हुआ बैठा था। पास ही की कीमती कुरसियों पर उसके बड़े बड़े सरदार बैठे मूछों पर ताव दे रहे थे। सामने ही एक बड़े भारी कठघरेमें हथकड़ियों बेड़ियोंसे जकड़े हुए राजा देवसिंह, सरदार रणजीत-सिंह, सेनापति जंगबहादुरसिंह, तथा बड़े बड़े सरदार सर झुकाये बैठे थे। राजा देवसिंहका चेहरा मारे गुस्सेके लाल हो रहा था। सेनापति जङ्गबहादुरसिंह अपने पैरके जख्मकी पीड़ा-से व्याकुल होकर छटपटा रहे थे। सरदार रणजीतसिंह सर झुकाये किसी गहरी चिन्तामें निमग्न दिखाई पड़ते थे। बाकीके

सरदार भी उदासीके साथ सर झुकाये बैठे थे। दरबारमें इस समय मौतका सा सन्नाटा छाया हुआ था। किसीके मुंहसे कोई शब्द नहीं निकला था। हां दुश्मनोंके सरदार झुक झुक कर आपसमें कुछ कानाफूसी जरूर कर रहे थे।

करीब आध घण्टे तक इसी तरहका सन्नाटा छाया रहा। अब एकाएक सेनापति खड्गबहादुरसिंहने उस भयानक सन्नाटेको तोड़ते हुए बड़े घमण्डके साथ राजा देवसिंहको लक्ष्य करके कहा:—

"राजा देवसिंह! आज तुम हमारे कैदी हो। तुम्हारी वह शेखी, वह शान, वह तपाक, वह मर्दूमी और वह वीरता आज धूलमें मिल गई है। आज तुम्हारा भविष्य हमारे महाराजकी इच्छा पर निर्भर है। मूर्खताके साथ राजा वीरेन्द्रसिंहके भरोसे पर तुमने हमारे राजा साहबको जो बेअदबीका खत लिखा था यह उसीका बदला तुम्हें हाथोंहाथ मिल गया। अगर तुम खुशीके साथ गुलाबकुंवरिकी शादी हमारे महाराजसे कर देते तो तुम्हें आज यह दिन देखना नसीब न होता। आखिर इस शेखीका नतीजा क्या निकला? गुलाबकुंवरि भी तुम्हारे हाथसे निकल गई और यह बेइज्जती भी सहनी पड़ी। अपना राज, पाट, ऐशो-आराम गंवाकर तुम दर दरके भिखारी बन गये। फजूल शेखीमें आकर तुमने हजारों आदमियोंका खून अपने सर पर लिया। क्या तुम्हें हमारे महाराजकी ताकत का कुछ भी ख्याल न था? कहो अब तुम्हारी वह वीरता कहां गई? तुम्हें अपनी फौजकी बहादुरी पर बहुत घमण्ड था। तुम्हें अपने किलेकी मजबूती पर भरोसा था। तुम्हें राजा वीरेन्द्रसिंहके मददकी बहुत आशा थी। कहो तुम्हारी वह आशा, वह घमण्ड और वह शेखी अब कहां गई? क्या तुम्हें यह नहीं मालूम था, कि कृष्णगढ़ हमारा करद

राज्य है ? राजा वीरेन्द्रसिंह तो खुद अपने लड़केके कैद हो जाने पर मारे अफ़सोसके मुर्दा हो रहा है। वह बेचारा भला तुम्हारी क्या मदद कर सकता था ? आज नहीं तो और दस दिनमें उसका राज्य भी हम लोगोंके कब्जे में आ जायगा। कहो अब तुम्हारा क्या इरादा है ?"

खड्गबहादुरसिंहकी घमण्ड और बेअदबीसे भी कड़वी बातें सुनकर राजा देवसिंह और उनके साथियोंके बदनमें आग सी लग गई। मारे गुस्सेके उनके शरीर कांपने लगे, चेहरा लाल हो गया और आंखोंमेंसे चिनगारियां छूटने लगीं। राजा देवसिंह तो खूनका घूंट पीकर रह गये मगर सहकारी सेनापति सरदार रणजीतसिंहसे न रहा गया। उन्होंने गरजकर बड़े जोशके साथ कहा:—

खड्गबहादुरसिंह ! जबान सम्हालकर बातें करो। तुम एक भद्दे आदमी होकर हमारे महाराजकी शानमें ऐसे वाहियात कलाम कहते अच्छे नहीं मालूम पड़ते। माना कि हम लोग तुम्हारे कैदी हैं, मगर हमारा जातीय खून अबतक भी हमारे जिस्ममें खोल रहा है। तुम्हारी वाहियात और घमण्डसे भरी बातें तुम्हें नालायक और कमीना साबित कर रही हैं। भले आदमियोंके एक भी निशान तुममें नजर नहीं आते। मेरे ही नहीं वरन् अपने साथी सरदारोंके ख्यालमें भी तुम एक नीच प्रकृतिके मनुष्य मालूम पड़ते हो। सावधान ! अगर इस बार तुम्हारी जुबानसे एक भी सख्त कलाम निकला तो तुम्हारे हकमें अच्छा न होगा।"

खड्गबहादुरसिंह रणजीतसिंहकी बात सुनकर आग बबूला होगया। उसका शरीर कांपने लगा और वह तलवार खींचकर तेजीके साथ कठघरेकी तरफ झपटा। अभी आधी दूर तक भी न पहुंचा होगा कि एक तरफसे बेहोशीका झुमझुमा आकर

उसके नाकपर तड़से बैठा। साथ ही वह चकराया और ज़मीन पर गिरकर बेहोश हो गया।

यह बातें कुछ इतनी फुर्तीके साथ हुईं कि किसीकी समझ में कुछ भी न आया। दरबारके सभी मनुष्य भौचक्कोंकी तरह आश्चर्यसे चारों तरफ देखने लगे, मगर कहीं किसीका पता न लगा। ठीक इसी समय दरबारके बाहरसे बड़े जोरके कोलाहल-की आवाजें आने लगीं। धीरे धीरे कोलाहल बढ़ता ही गया और कुछ ही देरमें दरबारके अन्दर चार आदमियोंने प्रवेश किया जिन्हें देखते ही सब दरबारी घबराहटके साथ एकाएक उठे और तीन तीन सलामें कर अदबसे हाथ बांधकर खड़े होगये।

पाठक! कुछ समझे? यह चारों आदमी कौन थे जिनको देखकर दरबारियोंने उनका इतना सम्मान किया? सुनिये। इनमें-से एक तो स्वयं महाराज अर्जुनसिंह थे, दूसरे सरदार बलरामसिंह (जो अभी निहालसिंहसे हारकर भागे थे) तीसरे सुन्दरसिंह (महाराजके साले) और चौथे दीवान हरनामसिंह थे।

महाराजके इस समय एकाएक पहुंच जानेसे दरबारका प्रत्येक आदमी आश्चर्यमें डूबा हुआ था। मगर किसीका हौसला नहीं पड़ता था कि आगे बढ़कर उनसे कुछ पूछे। महाराज दरबारियों-की दिली मनशा ताड़ गये और गम्भीर आवाजमें बोले,—"तुमलोग मेरे एकाएक यहां आजानेसे ताज्जुबमें मालूम पड़ते हो। ठीक है और असलमें बात भी ऐसीही है। मेरी उस फौजने जो कि बलरामसिंह की मातहतीमें कृष्णगढ़की फौजका मुकाबिला करने आई थी कल शामको कृष्णगढ़का किला फतह कर लिया। मैं भी छिपे तौरसे कृष्णगढ़में आया हुआ था। इस समय कृष्णगढ़ हमारे कब्जेमें है। राजा वीरेन्द्रसिंह मय सरदारोंके कैद करके मायापूर भेज दिये गये। मैं तुम लोगोंका पता लगाने (अपने सरदारों

की तरफ इशारा कर) इन लोगोंके साथ इस तरफ आया। यहां आनेपर तुम लोगोंकी जीत सुन कर बहुत खुशी हासिल हुई। अब दो दो शहर हमारे हाथमें हैं। मगर राजा देवसिंहका इसमें कुछ दोष नहीं है। उन्होंने वीरेन्द्रसिंहके भड़कानेसे ही हमारा मुकाबिला किया था। अस्तु अब मैं उनको क्षमा करता हूं। मगर जीता हुआ किला नहीं छोड़ सकता (कुछ सिपाहियोंकी तरफ इशारा कर) तुम लोग राजा देवसिंह तथा उनके सरदारोंकी हथकड़ी बेड़ी खोल दो। यह लोग एक घण्टेके अन्दर इस किलेसे निकलकर जहां चाहें चले जावें। इनके लिये इतनीही सजा काफी है।"

महाराजकी बातें सुनकर दरबारियोंको खुशी और ताज्जुब दोनोंही हुआ। मगर किसीका हौसला कुछ पूछनेका न पड़ा! सिपाहियोंने शीघ्रताके साथ राजा देवसिंह और उनके सरदारोंकी हथकड़ी बेड़ी खोल दीं और सबको राजा अर्जुनसिंहके सामने ले आये। अर्जुनसिंह उनके साथ बड़ी इज्जतके साथ पेश आये। और उनको किला छोड़कर चले जानेकी आज्ञा दी। साथ ही महाराज अर्जुनसिंहका इशारा पाकर दीवान हरनामसिंहने एक बन्द लिफाफा उनके (देवसिंहके) हाथमें रख दिया। राजा देवसिंह सब अपने साथियोंके दरबारके बाहर निकल गये—और किलेका फाटक पारकर सामनेके मैदानमें पहुंचे। वहां उन्होंने लिफाफा खोल डाला। उसमें एक पत्र था। देवसिंहने पत्र पढ़ा, लिखा था:—

"श्रीमान् १०८ महाराजा देवसिंह!

आप किलेके सामने वाले मैदानमें पहुंचकर अपनेको सब सरदारोंके दाहिने तरफवाले सालके जंगलमें पहुंचाइये। वहां आप को बहुतसे कसे कसाये घोड़े तैयार मिलेंगे। उनपर सवार होकर आप सीधे दक्खिनकी तरफ चले जाइये। साढ़े तीन कोस चलनेके

आदमी—"राजकुमार ! मैं आपको तिलिस्मका बादशाह कह-कर मुबारकबादी देता हूं । आजसे आप कुल तिलिस्मके मालिक हुए और तिलिस्मी-मनुष्य आपकी प्रजा । अब आप मेरे साथ आइये और यहांके बेशुमार खज़ानेपर अपना कब्ज़ा कीजिये ।"

राजकुमार—"महाशय ! आपकी इस बहुमूल्य कृपाके लिये मैं आपको हृदयसे धन्यवाद देता हूं । अब आप कृपाकर मेरे कुछ सवालोंका जवाब दीजिये जिससे मेरे दिलमें तसल्ली हो ।"

आदमी—"कहिये, मैं तो आपका दास हूं फिर इस लम्बी चौड़ी भूमिका बांधनेका क्या प्रयोजन ?"

राजकुमार—"इसी लिये कि आप हमारे माननीय हैं । अच्छा अब यह कहिये कि आप कौन हैं और हमारे ऐयार कहां हैं ?"

आदमी—"मैं वही हूं जिसने आपको पुतलियोंवाली कोठरी-में चीठी फेंककर अपना परिचय दिया था और जिसकी वजहसे आप इतनी दूरतक कामयाब होसके हैं । आपके ऐयारोंको भी मैं "पुतलीमहल" से निकाल लाया हूं वह बहुत जल्द आपसे मिलेंगे ।"

राजकुमार—"यह बात है ! तो कहिये वह लोग कहां हैं ? मैं उनसे जल्द मिलना चाहता हूं ।"

आदमी—(जल्दीसे) "यहीं आपके सामने, मिलिये न, अब देर क्या है ?"

यह कहते हुए उस आदमीने चारों ऐयारोंकी तरफ कुछ इशारा किया जिसके साथही उन लोगोंने अपने अपने चेहरोंसे शक्ल बद-लनेवाली झिल्लियां खींच लीं और एकसाथ राजकुमारके पैर छू लिये । राजकुमार आश्चर्यसे उनकी सूरतें देखते रहे और जब उन्होंने पहचान लिया तो बड़ी मुहब्बतके साथ बारी बारीसे चारों ऐयारोंको गले लगा लिया ।

पड़ावके बाहर निकले। महाराजके पास पहुंचकर दोनों कुमारोंने उनके चरण छू लिये। महाराजने जल्दीसे घोड़ेसे उतरकर बड़े प्रेमके साथ दोनों कुमारोंको छातीसे लगा लिया। इसके बाद बारी बारीसे सब सरदारोंने उनके पैर छुये और बड़ी खातिरसे उन्हें पड़ावमें ले आये। पड़ावमें दाखिल होतेही दनादन तोपें छूटने लगीं और जोर जोरसे मारू बाजे बजने लगे। कुल फौजने तैयार होकर बड़े कायदेके साथ महाराजको सलामी उतारी और इसके बाद महाराज एक बड़े भारी सजे सजाये शामियानेमें उतारे गये, जो उनके लिये पहिले हीसे तैयार किया गया था।

अब दिनके ३ बज गये थे। गर्मी बड़ी तेजीके साथ पड़ रही थी। गरम गरम लू सारे शरीरको झुलसाये देती थी। रह रहकर तेज और गर्म हवाके झपेटे शामियानोंको हिला देते थे। महाराज और उनके साथियोंने शामियानेमें पहुंचकर तीन घण्टेतक खूब आराम किया इसके बाद शामके ६ बजे उन लोगोंने मामूली कामोंसे निपटकर सन्ध्या पूजासे छुटी पाली। भोजनका प्रबन्ध बड़ी धूमधामके साथ किया गया था। रातको आठ बजे महाराज तथा कुंवर मदनसिंहके सब साथी सरदारोंने खूब आनन्दके साथ भोजन किया। रातके १० बजे बड़े ठाठ-बाटके साथ एक दरबार लगाया गया जिसमें देवगढ़ तथा देवीपुरके बड़े बड़े सरदार शरीक हुए। महाराज देवसिंहके लिये एक बहुत उमदः जड़ाऊकामकी मखमली कुरसी चांदीकी चौकी पर एक तरफ रखी गई थी और उसके अगल बगल कतारके साथ बहुतसी बेशकीमत कुरसियां लगी थीं। दरबारके पूरे तौरसे लगजाने पर महाराज देवसिंह दोनों कुमारोंके साथ दरबारमें दाखिल हुए। नकीब बोलने लगे और सब सरदारोंने कुर्सियों परसे उठकर बड़े अदबके साथ उनका स्वागत किया। महाराज आगे बढ़कर उसी कीमती कुरसी पर बैठ गये

उनके अगल बगलकी कुरसियों पर दोनों कुमारोंने अपना आसन जमाया। इसके बाद बड़े २ कवियोंने महाराजकी तारीफमें कुछ कवित्त पढ़े। यह सब काम हो जानेपर कुंवर मदनसिंहने उठकर यों कहना शुरू किया:—

"सरदारगण और मेरे बहादुर सिपाहियो! यह कहनेकी जरूरत नहीं है, कि आप लोग यहां किस लिये आये हैं अब कहना सिर्फ इतना ही है, कि हमारी फौजको सुबहके तीन बजते बजते छिपे तौर पर यहांसे कूच करना चाहिये। सुबह होते न होते देवगढ़का किला दुश्मनोंके हाथसे छीन लेना हमारा पहला काम होगा। बहुत दिनों बाद ऐसा मौका हाथ लगा है जिसमें कि हम लोगोंको अपनी बहादुरी दिखानेका अवसर नसीब होगा। अभी दुश्मन गफलतमें हैं देर होनेहीसे यह अच्छा मौका हमारे हाथसे निकल जा सकता है। आप लोग अभीसे मुस्तैद होकर अपनी फौजकी तैयारी करें। समय बहुत ही थोड़ा है। हमें जहांतक खबर लगी है अभी दुश्मनोंने जनाने महल पर धावा नहीं किया; अगर जरा भी देर की जावेगी तो मुमकिन है, कि दुश्मन रनिवास पर धावा कर देंगे और बेचारी भोली भाली औरतोंको मुफ्तमें अपनी जानें गँवानी पड़ेंगी।"

यह कहकर कुंवर मदनसिंह अपनी कुर्सी पर बैठ गये। सब सरदारोंने कुंवर साहबकी रायको पसन्द किया। इसी समय सहसा दरबारके बाहरसे कुछ शोर गुल सुनाई दिया और झनाझन तलवारें चलनेकी आवाज आने लगी। कारण जाननेके लिये बहुतसे आदमी बाहरकी तरफ दौड़े। देखते क्या हैं कि दो नकाबपोश आपसमें तलवारें चला रहे हैं और उनके सामने ही एक बहुत बड़ा गट्ठर जमीन पर रक्खा है। एक नकाबपोश अपने चेहरे पर लाल नकाब डाले है और दूसरा काली। भीड़ देखते ही काला नकाबपोश

एक तरफको भागा। लाल नकाबपोश ने उसका पीछा किया। साथ ही काले नकाबपोश पर पेड़ोंके झुरमुटमेंसे निकलकर किसीने कमन्द मारी। काला नकाबपोश घूमकर जमीन पर आरहा। उसके गिरते ही उस आदमीने दौड़कर उसी कमन्दसे उसकी मुसकें कस दीं। लाल नकाबपोश तथा दरबारके बहुतसे सिपाही वहां पहुंच गये थे। कुछ मसालची हाथमें बड़ी बड़ी मसालें लिये उनके साथ थे। कमन्द मारनेवाला भीड़ देखते ही वहांसे भागा और पेड़ोंकी आड़में घुसकर गायब होगया। सब लोग आश्चर्यमें मुंह ताकते ही रह गये। लाल नकाबपोशने इसकी कुछ भी पर्वाह न की और शीघ्रताके साथ काले नकाबपोशकी नकाब उलट दी। मसालकी रोशनी चेहरेपर पड़ते ही लाल नकाबपोशने एक कहकहा लगाकर आपही आप कहा, "क्यों बचाजी! आपही आन फंसे।" भीड़के किसी आदमीने उसकी बातोंका कुछ भी मतलब न समझा। लाल नकाबपोशने उसकी गठरी बांधी और एक सिपाहीको उसे दरबारमें ले चलनेका हुक्म दिया। सिपाहीने हुक्म पातेही गट्ठर उठा लिया और दरबारकी तरफ ले चला। नकाबपोशने अपने पहलेके स्थान पर जहां काले नकाबपोशसे तलवारें चली थीं, आकर वह बड़ा गट्ठर पीठपर लादा और सबके साथही साथ दरबारमें दाखिल हुआ। दरबारके बीचोंबीच दोनों गट्ठर रखकर उसने राजा देवसिंहसे कहा,—श्रीमान्! आपके लिये इन गट्ठरोंमें एक बहुत ही उमदः तोहफा लाया हूं। अगर कुछ इनाम मिले तो नजर करूं?"

महाराज—(मुसकुराकर) "पहले तुम अपना नाम बताओ, और पीछे तोहफा दिखलाकर इनामकी बात ठहराओ।"

लाल नकाब०—(नकाब पीछे उलटकर) "मैं आपका गुलाम गुलाबसिंह हूं। इन दोनों गट्ठरोंमें खड्गबहादुरसिंह और ऐयार बांकेलाल हैं।"

यह कहकर गुलाबसिंहने जल्दसे एक गट्ठर खोल डाला जिसमें बहुत सी घोड़ेकी लीद तथा कुछ लकड़ियां भरी थीं। यह हालत देखकर गुलाबसिंह भौचक्का सा चारों तरफ देखने लगा। साथही महाराज सहित दरबारके सभी मनुष्य खिलखिलाकर हंस पड़े। महाराजने हंसते कहा:—

"गुलाब! खूब तोहफा लाये! बाद मुद्दतके तुमने एक ऐयारी भी की मगर उसमें भी कामयाब न हुये।"

गुलाबसिंहने शर्माकर आंखें नीची करलीं। महाराजने फिर कहा,—"खैर पहले यह तो बतावो कि तुम इतने दिनोंसे थे कहां? दुश्मनोंने हमारा किला भी फतहकर लिया और हम लोगोंको इतनी बेइज्जती भी सहनी पड़ी मगर तुम्हारी कोई ऐयारी हमारा मदद न कर सकी। तुम्हारी शागिर्दनियां मालती और श्यामाका भी कहीं पता नहीं है। कैसर और ललिता गुलाबकुंवरिके साथही दागसे गुम हो गई हैं।"

गुलाब०—"श्रीमान् मैं इतने दिनोंसे आपहीके काममें लगा हुआ था मगर मेरी बदकिस्मती मुझसे आपकी कुछ भी सेवा न करा सकी। मैं बड़ा अभागा हूं। खैर अब कल लड़ाईके समय फिर अपनी तकदीर आजमाऊंगा।"

गुलाबसिंहकी बात खतम होते ही एक तरफसे दो सफेद नकाबपोश और भूपसिंह एक एक गट्ठर अपनी पीठपर लादे दरबारमें दाखिल हुये और गट्ठरोंको जमीनपर रख सलामकर अदबसे खड़े हो गये। महाराजने अकचकाकर भूपसिंहसे पूछा, "तुम यहां कैसे पहुंचे भूपसिंह! और इन गट्ठरोंमें क्या है? तथा तुम्हारे साथी यह दोनों नकाबपोश कौन हैं? सुना है तुम्हारे महाराजकी भी मेरी ही जैसी हालत हुई है।"

भूपसिंह—(हाथ जोड़कर) "श्रीमान्! मैं कुछ दिनोंसे कुंवर

मदनसिंह जी की तावेदारीकर रहा हूं। मुझे अपने महाराजका कुछ भी हाल नहीं मालूम। मगर यह मैं जरूर कह सकता हूं कि महाराज बहुत मजेमें हैं और उनके विषयमें आपने जो बातें सुनी हैं वह सरासर झूठ और बनावटी हैं। यह हमारे साथी नकाब-पोश आपके दास हैं। और इन तीनों गठ्ठरोंमें आपके बागी असामी बन्धे हैं जिनको बेईमानीसे आपको इतना कष्ट उठाना पड़ा है।"

महाराज—"मेरे बागी आसामी? खैर पहले तुम इन गठ्ठरों-को खोल डालो मेरी समझमें कुछ नहीं आता।"

हुक्म पाते ही भूपसिंह तथा दोनों नकाबपोशोंने अपने अपने गठ्ठर खोल डाले। महाराजने दोनों कुमारोंके साथ गठ्ठरोंके पास जाकर जो कुछ देखा उसीसे वह अवाक् रह गये और साथ ही उनके मुंहसे धीमी आवाजमें निकल गया,—"मेरा नालायक साला हरदेवसिंह! और यह कमीना देवगढ़का पुराना कोतवाल मटरूसिंह जिसे मैंने अपने राज्यसे निकाल दिया था। और यह तीसरे महाशय कौन हैं? इन्हें मैं नहीं पहचानता।"

गुलाब—श्रीमान्! यह राजा अर्जुनसिंहका ऐयार हरीसिंह जो बांकेलालके साथही हमारे किलेमें कैद हो गया था (विशेष हरदेवसिंहको दिखाकर) इन्हीं महाशयको कृपासे हरीसिंह और बांकेलाल कैदखानेसे निकलकर छिपे तौरसे हमलोगोंको भारी नुकसान पहुंचा रहे थे। हरदेवसिंह तथा मटरूसिंह अपने कुछ साथियों सहित भेष बदलकर इन लोगोंको पूरी पूरी मदद पहुंचा रहे थे। यह देखिये मैंने बांकेलालको कैदकर रक्खा है।"

यह कहकर गुलाबसिंहने दूसरा गठ्ठर जो काले नकाबपोशका था खोल डाला। बांकेलालको पहचानकर सब लोग बहुत खुश हुये। इसके बाद महाराजने दोनों सफेद नकाबपोशोंको नकाबें उलटनेका हुक्म दिया। हुक्म पाते ही दोनों नकाबपोश नकाब

पीछे उलट हाथ जोड़कर घुटनोंके बल बैठ गये। अहा पाठक! यह तो वही हमारी पूर्व परिचिता गुलाबकुंवरिकी प्यारी सखियां केसर तथा ललिता थीं। महाराज इन दोनोंको देखकर बड़े खुश हुये और गुलाबसिंहकी तरफ देखकर बोलेः—

"अच्छा हरदेवसिंह और मटरूसिंहका सबसे बड़ा कुसुर क्या है। साबितकर सकते हो?"

गुलाब०—"श्रीमान्! सुनिये। हरदेवसिंह......"

कुंवर सदन०—(बात काटकर महाराजसे) "श्रीमान्! इस समय बहुत रात गई और काम अधिक हैं। कहीं दुश्मन सावधान हो जायंगे तो बड़ी मुश्किल पड़ेगी और फिर किला फतह करना भारी हो जायगा। इन लोगोंके विरुद्ध सुबूत बहुत हैं। वह सब इन लोगोंके मुकद्दमे वाले दिन पेश किये जायंगे।"

महाराज (कुछ सोचकर) "खैर यह तो बता दो कि मुझे छोड़ते समय अर्जुनसिंहने जो यह कहा था, कि रूपगढ़ फतह हो गया और राजा वीरेन्द्रसिंह कैद करके मायापूर भेज दिये गये हैं यह कहां तक सच है?"

कुंवर सदन०—"वह सब बनावटी बातें थीं। असलमें आप लोगोंको छुड़ानेके लिये एक भारी ऐयारी खेली गई थी। गुलाबसिंह ही राजा अर्जुनसिंह बने थे और भूपसिंह, केसर तथा ललिता उनके साथी सुन्दरसिंह, बलरामसिंह और दीवान हरनामसिंह थे। बल्कि महाराज वीरेन्द्रसिंहके वीर सेनापति सर्दार निहालसिंहने राजा अर्जुनसिंहकी फौजको हराकर उनके बहुतसे सरदारों तथा सिपाहियोंको कैदकर लिया है। और अब वह हमलोगोंकी मदद-के लिये इधर आ रहे हैं। शायद सुबह होते यहां पहुंच जावें।"

महाराज देवसिंह कुंवर मदनसिंहकी बातें सुनकर बहुत ही प्रसन्न हुए और गुलाबसिंह, भूपसिंह, केसर तथा ललिताकी बहुत

प्रशंसा करने लगे। इसके बाद कुंवर मदनसिंहने अपने सिपाहियों-को बांकेलाल, हरीसिंह, हरदेवसिंह तथा मटरूसिंहको कैद करनेका हुक्म दिया। हुक्म पाते ही सिपाहियोंने इनलोगोंको बड़ी सावधानीसे एक मजबूत खेमेमें कैदकर दिया और उसपर कड़ा पहरा पड़ने लगा। अब रातके दो बज गये थे इस लिये दरबार बर्खास्त किया गया और सब लोग फौजकी तैयारीमें लगे।

आठवां बयान।

इस समय "लेना लेना" कहते हुये बहुतसे सिपाही कुंवर चन्द्रसिंह, भजनदी, नरेन्द्रसिंह, हीरासिंह, विश्वनाथ-सिंह और किशोरीपर टूट पड़े तो हमारे वीरोंने शीघ्रताके साथ तहखानेसे निकलकर तिलस्मी तलवारोंसे काम लिया। खटका दबाते ही लाल, हरी, पीली और सुनहली बिज-लियां कमरे भरमें चमकने लगीं जिससे कि बातकी बातमें दुश्मनों-के सिपाहियोंकी आंखें बन्द हो गईं और वह लोग जहांतक बढ़े थे वहीं काठके पुतलोंकी तरह खड़े हो गये। इससे बढ़कर अच्छा मौका और क्या हो सकता था? राजकुमार तथा उनके साथियों-ने तिलस्मी तलवार घुमा घुमाकर बातकी बातमें सबको बेहोशकर दिया। दमोदरसिंह और लालसिंह जो लड़ते लड़ते थक गये थे, राजकुमार वगैरहको देखते ही खुशीके मारे उछल पड़े और दौड़कर राजकुमारके चरणोंपर गिर पड़े। राजकुमारने उन्हें बड़ी मुहब्बतके साथ उठाकर बहुत शाबासी दी।

तिलिस्मी कैदी जो कमजोरीके कारण इस भयानक घटनाके

बेहोश होगये थे वह अब एक एक कर होशमें लाये गये। इसी समय एक धड़ाकेकी आवाज हुई और लोहेका एक तिलिस्मी पुतला जमीनसे निकलकर दोनों हाथोंसे तलवार घुमाता हुआ राजकुमारकी तरफ बड़ी तेजीके साथ बढ़ा। राजकुमार और उनके साथियोंने तिलिस्मी तलवार चमका चमकाकर हरचन्द उसे रोकना चाहा मगर कुछ नतीजा हासिल न हुआ। जब वह जानदार इन्सान होता तब तो तिलिस्मी तलवार उसपर अपना असर जमाती? वह तो तिलिस्मी पुतला था। बातकी बातमें राजकुमारके सर पर पहुंच गया। राजकुमार यह हालत देखकर बड़ी होशियारीके साथ उसका चक्कर काटने लगे। पुतला भी उसी भांति चारों तरफ घूम घूमकर राजकुमार पर हमला करने लगा। सहसा राजकुमारको कुछ याद आया और उन्होंने जल्दीसे तिलिस्मी खंजर निकालकर खटका दबा दिया। निशाना ठीक लगा। खंजरका फल खंजरसे निकलकर पुतलेके कलेजेमें घुस गया और पुतला धड़ामसे मुंहके बल जमीन पर गिर पड़ा। पुतलेके गिरते ही उसके कलेजे वाले उस छेदसे जिसमें खंजर धंसा था बड़े जोरके साथ आतिशबाजीकी तरह आगका फौवारह छूटने लगा और देखते देखते पुतला जल भुनकर खाक हो गया। राजकुमारको उसकी जली हुई खाकमें कुछ चमकीली चीज दिखाई दी। उन्होंने जल्दीसे आगे बढ़कर तलवारकी नोकसे उसे खींच लिया। वह एक सोनेका कितावनुमा छोटा सा बक्स था जिस पर कुछ खूबसूरत हरूफ हीरोंके नगोंसे बने हुये थे। राजकुमारने बक्स उठाकर कुछ गौरसे पढ़ा उसमें लिखा था। "तिलिस्म नाशक ग्रन्थ"।

राजकुमारने बड़ी खुशी खुशी बक्स खोल डाला। उसके अन्दर सुनहली जिल्दसे बन्धा हुआ "तिलिस्म नाशक ग्रन्थ" रक्खा

था। राजकुमारने अपने साथियोंको ग्रन्थके दर्शन कराये। उनके साथियोंने ग्रन्थ देखकर बड़ी प्रसन्नता प्रगट की और राजकुमारको इस सफलताके लिये मुबारकबादी दी।

सबकी सलाहसे राजकुमारने ग्रन्थको प्रणाम करके खोला यह भोजपत्रके बड़े ही साफ पत्तोंसे बनाया गया था जिसपर बहुत चमकीले हरफोंमें इबारत लिखी थी। राजकुमारने पढ़ा, यह लिखा था, "तिलिस्म नाशकको चाहिये कि अब वह तिलिस्म जालन्धर वाले कमरेसे सब अपने साथियोंके निकलकर सामने वाले मैदानमें अपना डेरा जमाये। यहां मामूली कामोंसे निपट-कर भोजनोपरान्त आगेकी कार्रवाई देखे, क्योंकि फिर तिलिस्ममें घुसकर दो तीन दीन तक छुट्टी पाना मुश्किल है। भोजनका प्रबन्ध आपका एक विशेष साथी बड़ी उत्तमताके साथ कर देगा।"

राजकुमारने यहांतक पढ़कर ग्रन्थको हिफाजतके साथ अपने पास रख लिया। इसके बाद वह सब अपने साथियों तथा कैदियोंके बेधड़क उस कमरेके बाहर होगये। पासही एक छोटासा पक्का तालाव चमकीले और साफ पानीसे लबालब भरा था। सबने इसी तालाबके किनारे अपना डेरा जमाया। तालाबके दाहिने तरफ वाले जंगली मैदानमें इन लोगोंने मामूली कामोंसे फुर्सत पाली। इसके बाद तालावके साफ पानीमें नहाकर सबने अपनी अपनी हरारत मिटाई और उसीके पक्के घाट पर सन्ध्या पूजा की। अब जो देखते हैं तो अजनबी और किशोरीका कहीं पता नहीं है। सब लोग बड़े ही हैरान हुये। अपनी अपनी धुनमें इन लोगोंको किसीका भी ख्याल न था। चारों तरफ अजनवी तथा किशोरीकी खोज होने लगी। मगर कुछ नतीजा हासिल न हुआ। लाचार अफसोसके साथ सब लोग वहीं बैठ गये। करीब

एक घण्टेके बाद अजनबी और किशोरी दूरसे आते हुये दिखाई दिये जिनके पीछे पीछे १२ खिदमतगार भड़कीली पोशाकें पहने अपने सिरपर बड़े बड़े थाल लिये आते दिखाई दिये। इन्हें देखते ही सब लोग खुशीके मारे उछल पड़े। अजनबीके पास आनेपर राजकुमारने मीठे स्वरसे पूछा—

राजकुमार -"कहां चले गये थे महाशय? हमलोग आपके लिये बड़ी फिक्रमें थे।"

अजनबी—"श्रीमान्! मैं भोजनका प्रबन्ध करने गया था। यह भोजन हाजिर है। खा पीकर हमलोग फिर अपने कामोंमें लगेंगे।"

राजकुमार—"क्या "तिलिस्म नाशक ग्रन्थ"में आपही पर इशारा किया गया है?"

अजनबी—(मुसकराकर) "हो सकता है।"

इसके बाद भोजनके थाल नौकरोंने साफ जगह देखकर रख दिये और दौड़कर एक तरफ चले गये। कुछ देर बाद वही नौकर अपने सिरों पर बड़े बड़े टोकरे लिये हाजिर हुये जिनमें बहुतसे गिलास, लोटे तथा थालियां भरी थीं। इनमें कुछ सामान चांदी सोनेका भी था। अजनबी, किशोरी, विश्वनाथसिंह और हीरासिंह फुर्तीके साथ भोजन परोसनेका इन्तजाम करने लगे। इधर नौकरोंने एक साफ सुथरे मैदानको झाड़बुहार तथा धोकर ठीक कर दिया। भोजन परोसा गया और कैदियों सहित सब आदमी करीनेसे बैठाये गये। राजकुमारको सोनेके बर्तनोंमें तथा उनके साथियों और नरेन्द्रसिंहको चांदीके बर्तनोंमें भोजन परोसा गया। इसके बाद अजनबीने सबको लक्ष्य कर कहा, "महाशयो! आज आप लोग मेरे मेहमान हैं। मैं बड़ी प्रसन्नताके साथ आप-

लोगोंकी तावेदारी करने पर तैयार हूं छपाकर किसी बातका विचार किये बिना भोजन आरम्भ कीजिये।"

अजनबीको हृदयसे धन्यवाद देकर सबने भोजन करना आरम्भ किया। भोजन गरमागरम और बड़ाही स्वादिष्ट था। तरह २ की मिठाइयां, अचार, मुरब्बे वगैरह परोसे गये थे, जिनका मिलना इस भयानक स्थानमें कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव था। सभी लोग भूखके मारे बेताब थे। राजकुमार और उनके साथियोंने तो कई दिनोंसे थोड़ा मेवा खाकर गुजर कर ली थी मगर वह बेचारे किस्मतके मारे कैदी कई दिनोंसे फाके कर रहे थे। अस्तु। सबने खूब आनन्दसे मनमाना भोजन किया। इसके बाद अजनबी, हीरासिंह, विश्वनाथसिंह और किशोरीने भी भोजनसे छुट्टी पाई। अब सब लोग घाट किनारे एक सायेदार पेड़की नीचे बैठकर तरह तरहकी बातें करने लगे। बचा हुआ सामान और जूठे बर्तन उठाकर खिदमतगार जिधरसे आये थे उधर ही चले गये।

यह समय शामके चार बजेका था। सूरज पश्चिमकी तरफ ढल चुका था और उसकी कमजोर किरणें आस पासके दरख्तोंपर पड़कर क़ुदरती खूबीका नमूना दिखा रही थीं। ठीक इसी समय एकाएक एक तरफसे जंगी बाजोंकी आवाजें बड़ी तेजीके साथ आने लगीं। कुछ देरमें सामनेसे दो सौ सवारोंका एक बड़ा रिसाला आता हुआ दिखाई दिया जिसके आगे आगे राजकुमारके पिता राजा वीरेन्द्रसिंह और महाराज देवसिंह एक एक मुश्की घोड़े पर सवार जंगी पोशाकें पहने बड़ी शानके साथ घोड़ा कुदाते चले आ रहे थे। राजकुमार तथा उनके साथी इनलोगोंको एकाएक यहां देखकर बड़े ताज्जुबमें आगये और तरह तरहके खयाल करने लगे। अब वह लोग बहुत नजदीक आगये थे। इधर

राजकुमार और उधर उनके पिताकी निगाह एक दूसरे पर पड़ी। मोहब्बतने जोश खाया और राजकुमार बड़ी तेजीके साथ अपने पिताकी तरफ बढ़े। अभी राजकुमार आधी दूर भी न पहुंचे होंगे, कि एक नकाबपोश पागलोंकी तरह नंगी तलवार चमकाता हुआ एक तरफसे निकला और "दगा! फरेब!! धोखेबाजी!!!" कहता हुआ राजकुमारका रास्ता काटकर फुर्तीके साथ एक झाड़ीमें घुसकर गायब हो गया। राजकुमार वहीं ठिठक गये और बड़े गौरके साथ अपने पिताकी चाल देखने लगे।

॥ तीसरा भाग समाप्त ॥

"आगेका हाल जाननेके लिये चौथा भाग देखिये।"

लण्डन-रहस्यमें

विलायतका सच्चा चरित्र कूट-कूट कर भरा गया है। इसमें विलायतके अमीर-गरीब, राजा-रङ्क, लार्ड-लेडी और छोटे-बड़ोंके गुप्त रहस्योंका खाका, अत्याचार, अविचार, व्यभिचार, सतीत्वनाश, लड़ाई-झगड़ा, मार-काट, खून-खराबी, धर-पकड़, चोरी-डकैती, छल-कपट, जाल-जुआचोरी आशिकी माशूकी, पुण्य पाप, गर्भपात, भ्रूणहत्या आदि सब कुछ है। करुणा, हास्य, वीर, वीभत्स आदि नवो रसोंका वर्णन भलीभांति किया गया है। यदि आप विलायत-वासियोंके रहन-सहन रंग-ढंग, चाल-चलन और आचार-विचारका सच्चा फोटो देखना चाहते हैं तो चटपट पत्र लिखकर लण्डन-रहस्यके ग्राहक हो जाइये। हम जोर देकर कहते हैं, कि यदि आपको यह उपन्यास पसन्द न होगा, तो हम आपको इसका पूरा दाम वापिस कर देंगे। "लण्डन-रहस्य" कितनेही भागोंमें समाप्त होगा। आप पहले सिर्फ एक भाग मंगाकर पढ़िये यदि पसन्द आवे तो आगेके भाग मंगाइये और नापसन्द हो तो अपने पैसे वापस लीजिये। बड़े-बड़े १२० पृष्ठोंमें बढ़िया एण्टिक कागजपर हर महीने इस उपन्यासका १ भाग छपेगा। हरएक भागमें तीन-चार सुन्दर-सुन्दर रंगीन तस्वीरें रहेंगी। अभीसे ग्राहक होनेवालोंसे हरएक भागका दाम सिर्फ ।⁄) और फुटकर खरीदनेसे ॥) लगेगा। नाम लिखानेवाले ग्राहकोंको ॥) आना पेशगी देना होगा, यह ॥) आना उनका अमानतमें जमा रहेगा और साल अखीरमें मुजरे दिया जायेगा। हर महीने १ भाग उनको सेवामें (।⁄) दाम और ⁄) वी० पी० खर्च) कुल ॥) के वी० पी० से भेज दिया जायेगा। फुटकर खरीदने वालोंसे ॥⁄) में वी० पी० खर्चके लिया जायेगा।

नाम लिखानेकी अवधि।

"लण्डन-रहस्य"का पहला भाग धड़ाधड़ छपरहा है, उसके छपकर समाप्त होनेके पहलेही उम्मेदवारोंको ॥) भेजकर अपना नाम "लण्डन-रहस्य"के ग्राहक रजिष्टरमें दर्ज कराना चाहिये। पहले भागके छप जानेके बाद नाम लिखानेसे प्रत्येक भागका दाम ॥) के हिसाबसे लिया जायेगा। आशा है, १ महीनेके अन्दरकी पहला भाग छपकर अपने ग्राहकोंके पास पहुंच जायेगा। जल्दी कीजिये नहीं तो पीछे पछताना पड़ेगा।

सचित्र ऐतिहासिक उपन्यास।

वास्तवमें यह उपन्यास बड़ा ही अपूर्व है। पाठक इसे पढ़कर केवल मनोरंजन ही प्राप्त न करेंगे वरण शिक्षा भी लाभ करेंगे। गुलशनकी तस्वीर देखकर इस्कन्दर खांका गुलशनपर मोहित होना, चाहे जैसे हो उसे अपने हाथ करनेकी प्रतिज्ञा करना, अकबरशाह द्वारा गुलशनके स्वामी सोहानीको कैद कर लानेके लिये इस्कन्दरका ईदलगढ़ जाना, ईदलगढ़की सरायमें उतरना, सरायके मालिक शेख जी और उसकी स्त्रीकी सहायतासे छिपेतौरसे ईदलगढ़के किलेमें घुसना, अचानचक गुलशनसे मुलाकात होना, उसकी सुन्दरतापर लट्टू होना, उसका आतिथ्य स्वीकार करना, उसके धोखेमें आकर कैद होना, गुलशन और सोहानीका किलेसे निकल भागना, राहमें सोहानीकी मृत्यु होना, इस्कन्दरका उन दोनोंको ढूंढ़ निकालना और अकबर शाहके पास ले जाना, सोहानीको राजोचित सम्मानसे समाधिस्थ करना, अकबरसे गुलशनके सत्यघटनाका वर्णन करनेपर इस्कन्दर खांको कारागारका दण्ड मिलना, गुलशनका इस्कन्दर खांको कारागारसे चुपचाप निकाल

देना, इस्कान्दरका मालवा जाना, मालवाधिपति बाजबहादुरकी प्राणरक्षा करना और उनका प्रेमभाजन बनना, बाजबहादुरके अन्तः-पुरकी रक्षाका भार पाना, इस्कान्दरका सोना मसजिद देखने जाना, राहमें शत्रुओंद्वारा आहत होना, बाजबहादुरकी कन्या रूबियाका आहत इस्कान्दरको उठवा लाना और सेवा शुश्रुषा करना, इस्का-न्दरके सौन्दर्यपर रूबियाका विमुग्ध होना, इस्कान्दरका छिपकर रूबियाको देखना, उससे विदा होकर ईदलगढ़ जाना, किलेके नजर बागमें बैठ रङ्गमहलकी खिड़कीमें रूबियाको देखकर आश्चर्यसे 'रूबिया, रूबिया' बोल उठना, दूसरे दिन रातमें एक बांदीके जरिये इस्कान्दरका रूबियाके महलमें जाना, प्रेमकी परीक्षा देना, रूबियाका सोना मसजिदमें जाना, बाजबहादुरकी आज्ञासे रूबियाके भावी पतिको खातिरके साथ लानेके लिये इस्कान्दरका जाना, सोना मसजिदमें रूबियासे मिलना, खुद बाजबहादुर द्वारा पकड़े जाना, गुलशनका हठात् वहां पहुंचकर इस्कान्दरकी प्राणरक्षा करना, इस्कान्दरका कैद होना, गुलशनका फिर उन्हें छुड़ाना, रूबि-याका बीमार होना, साधु शाहजलालकी दवासे रूबियाका मरना और दफन किया जाना, साधु शाहजलालका उसे कब्रसे निकाल-कर फिर जिलाना, रूबियाके भावी पति अहमद नगरके सुलतानका उसे उड़ा ले जाना, रूबियाका सुलतानको छुरा मारना, इस्कान्दरका रूबियाके पास पहुंचना और उसे ले चलना, राहमें बाजबहादुर द्वारा गिरफ्तार होना और प्राणदण्डकी आज्ञा पाना, गुलशनका इस्कान्दर फिर खांको बचाना और दोनोंका विवाह कराना आदि बातें बड़े ही सुन्दर ढङ्गसे वर्णन की गई हैं, पाठक एकबार इस उप-न्यासको पढ़कर फड़क उठेंगे। हाफटोनकी सुन्दर सुन्दर ६-७ रंगीन तस्वीरें लगाकर इस उपन्यासमें जान डाल दी गयी है। दाम बेजिल्द १।।) सुवर्ण जिल्ददार १।।।)।

जासूसी-चक्कर

सचित्र जासूसी उपन्यास।

सचमुच यह उपन्यास घटनाका खजाना, रहस्यका भण्डार और दिलचस्पीका रंगीन समुद्र है। इस उपन्यासने अपने नामकी सार्थकता कायम रखते हुए बम्बईके बड़े बड़े बादलमें टिगली लगानेवाले जासूसोंको अपने चक्करमें डालकर एक खासा "जासूसी-चक्कर" बना दिया है। बम्बईके एक चोरी और खूनके मामलेको लेकर कीर्तिकर, दादा भास्कर और लालू भाई नामक आफतका पर काला, करनेवाले तीनों नामी जासूस किस उधेड़ बुनके चक्करमें पड़ खुदही "घन-चक्कर" बन गये थे, पाठक उसे पढ़ हैरान परेशान होकर दातों उंगली काटने लगेंगे। पारसी स्त्री पुरुषोंके रहस्य-जनक अनूठे हाल पढ़कर आपको दंग होना पड़ेगा। रतन और कमलाके सुन्दर चित्र देखकर आपका मन हाथसे निकल जायगा। पर्जरजी नामक एक खूनी, बदमाश और जालसाज मनुष्यकी चालाकी, दिलेरी और सीनेजोरीका तमाशा देखकर आप अवाक रह जायंगे। डिटेक्टिव कमिश्नर कीर्तिकरकी बुद्धिमत्ता, दूर-दर्शिता और बहादुरीके आगे आपका मुंह प्रशंसाका फौव्वारा बन जायगा और अकल चकरा जायगी। बङ्ग-साहित्यके सुप्रसिद्ध जासूसी उपन्यासकार श्रीयुत बाबू पांचकौड़ीदेके मायावी, मनो-रमा, नीलवसना सुन्दरी, जीवनमृत रहस्य और चक्करदार चोरी आदि उपन्यासोंकी विचित्रता आपसे छिपी नहीं है। इस उप-न्यासको पांचकौड़ी बाबूने इन सबसे उत्तम बनानेकी कोशिश की है। इसे पढ़कर आप उनके दूसरे उपन्यासोंको भूल जायंगे। साथही सुन्दर और मनमुग्धकर ६ तस्वीरें लगाकर इस उपन्यासकी रौनक दूनी चौगुनी बना दी गयी है। दाम सिर्फ १।)

विना उस्तादके अङ्गरेजी सिखानेवाली

अंगरेजी भारतवर्षकी राजभाषा है, इसके सिवाय दुनिया भरमें इस भाषाका सबसे अधिक मान-सम्मान है। वर्त्तमान कालमें विना अंगरेजी पढ़े मनुष्यको अपनी यथार्थ उन्नति करनेमें बड़ी कठिनाईयां झेलनी पड़ती हैं और सैकड़ों रुपया महीना खर्च्च देनेपर भी मन-मुताबिक मनुष्य नहीं मिलता। इन्हीं सब कठिनाईयोंको दूर करने और आनन फाननमें अंगरेजी लिखना, पढ़ना, बोलना आदि सिखानेके लिये हमने बड़े परिश्रम और बहुत खर्च व्ययसे यह "हिन्दी-अंगरेजी-शिक्षा" नामक पुस्तक तय्यार कराई है। इसकी उपयोगिता देख मुफस्सिलके कितने ही स्कूल मास्टरोंने अपने बालक विद्यार्थियोंको इसके द्वारा शिक्षा देनी प्रारम्भ कर दी है।

इस पुस्तककी सहायतासे आप एक वर्षमें हिसाब, किताब, तार, चिट्ठी, लिखना, पढ़ना और लोगोंसे बोलना समझना सीख सकते हैं। इस पुस्तकके बारेमें अधिक न कहकर इतना ही कह देना काफी है, कि बड़े बड़े प्रोफेसरों, हेड मास्टरों, वकील और बारिष्टरोंने इसे प्रशंसापत्र दिये हैं, जिन्हें शीघ्र ही हम प्रकाशित करनेवाले हैं। दाम बेजिल्द ॥) आना, कपड़ेकी सुनहरी जिल्द बन्धी ॥=) आना। डाक महसूल =)।

विशेष हाल जाननेके लिये पुस्तकोंका बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मंगा लो।

आर, एल, वर्म्मनकी बनाई सच्चा गुण दिखानेवाली पेटेण्ट दवाइयां।

शरीरमें विजलीकी तरह ताकत पहुंचानेवाली दवाओंसे यह गोलियां तैयार की गई हैं। शिलाजीत, गोल्ड (सोना) स्त्राक्ट डेमियना, स्टिकनियां, फेरीकार्ब सैक्रोटेड, जाफरान और कस्तूरी इत्यादि बहुतसी कीमती दवाओंका इन गोलियोंमें मेल है।

धातुपुष्टकी गोलियोंसे—

सिर्फ पन्द्रह दिन सेवन करनेसे नीचे लिखी कुल बीमारियां दूर होकर नया और पुष्ट वीर्य्य पैदा होता है और फिर किसी तरहकी शिकायत नहीं रहती है।

स्वप्नदोष, धातुका पतलापन, धातुक्षीणता, बदनकी सुस्ती, आलस्य, इन्द्रियोंकी शिथिलता, चेहरेपर पीलापन छा जाना, आंखोंकी रोशनी तथा स्मरण शक्तिका कम होजाना, स्त्रीसे घृणा, शीघ्र शीघ्र वीर्य्यपात होना, थोड़ा चलनेसे थक जाना, भोजनका हजम न होना, भोजनके बाद गलेका जलना, खट्टे डकार आना, सिरका दर्द करना, लिखने पढ़नेसे सिरका घूमना, आंखोंके आगे अन्धेरा छा जाना, नामर्दी, होलदिल, हाथों पैरोंका कांपना, चित्तका उदास रहना और नई जवानीमें बुढ़ापेकी हालत इत्यादि हरेक बीमारियां दूर हो जाती हैं।

१५ दिनकी खुराक ३० गोलीका बक्स दाम २।) पैकिंग डाक खर्च वगैरह सब माफ। दो बक्सका सिर्फ ४) रुपया।

यह तैल नाना प्रकारके रोगोंपर सिर्फ मालिश करनेसे ही फायदा पहुंचाता है, अगर इसे कोई बेफायदा साबित कर दे तो १००) रुपया इनाम देंगे। गठिया वाई तथा नीचे लिखे मर्जोंकी इससे बढ़कर दूसरी दवा अबतक ईजाद नहीं हुई। इसकी सुबूतमें हमारे पास बड़े बड़े डाक्टरों हकीमोंके सार्टिफिकेट मौजूद हैं।

गठिया वाई, कमरका दर्द, हाथों पैरोंका जकड़ जाना, कानसे सवाद जाना, सिरका दर्द, अधकपारी गले तथा पैरोंका फूल आना, फोतेमें पानी उतरना, पातेकी गुठलियोंका बढ़ आना और दर्द करना, हाथों पैरोंका फूल जाना, बादी और वातका दर्द, प्लेगकी गिल्टी, कौड़ी उछल आना, घुटनोंके जोड़में दर्द होना, पेटमें शूल उठना, कलेजे या और किसी स्थानमें दर्द होना, फोड़ा, फुन्सी, घाव, चोट, नासूर, खुजली, खसरा, सूजन, जहरबाद आदि भयानकसे भयानक रोग सिर्फ २-३ दिनके लगानेसे आराम होते हैं।

दाम छोटी शीशी एक औन्स १) बड़ी शीशी दो औन्स २) डाकखर्च ।) बड़ीका ।=) तीन शीशी लेनेसे डाक खर्च माफ।

मेलेरिया क्योर

हिन्दुस्थान, मेलेरिया जूड़ी बुखारका घर होगया है, कोई शहर, कोई गांव, कोई मुहल्ला, यहांतक कि कोई घर ऐसा नहीं बचा, जहां यह न हो। भारतवासी इस भयानक रोगसे तंग

आगये हैं और अपने सैकड़ों बन्धु-बान्धवों, तथा बाल बच्चोंको खो चुके हैं।

हमारी इस दवाकी सिर्फ तीन ही खुराक पीनेसे बुखार दूर होजाता है और तीन दिनके सेवनसे जड़से आराम हो जाता है। इसी दवाको ७ दिन सेवन करनेसे तिल्ली (पिलही) भी जड़से छूट जाती है। दाम २ औन्सकी छोटी शीशी ॥) बड़ी ४ औन्स ११/) आना, पोष्टेज ।/) बड़ीका ।=) दवा खानेका नियम हर एक शीशीके साथ रहता है;

हैजेसे बचो! हैजेसे बचो!! हैजेसे बचो!!!

हैजेकी एकमात्र अमूल्य दवा—

कैसाही जोर हैजा हो दस्त पर दस्त, के पर के आती हो इसके पिलाते ही दस्त व के बन्द हो जावेगी, ऐंठन मिट जावेगी बदनकी ठंढक दूर होगी, हाथ और पैरोंमें गर्मी आवेगी और एक ही दो दिनमें रोगी पूर्ववत् भला चंगा मालूम होने लगेगा।

हैजेकी और दवाओंकी बनिस्बत जिसमें अफीम वगैरह नशीली वस्तुओंका प्रयोग रहता है "अर्ककपूर" सबसे उत्तम दवा है। अगर कोई हैजेके हकमें शर्तिया फायदा पहुंचानेवाली दवा है तो वह "अर्ककपूर" ही है। हैजेकी फसलमें रोज दो तीन बूंद खानेसे फिर हैजेका डर नहीं रहता, कारण, कि यह हैजेके विषको दूर कर देता है।

हैजा आदमीको दिन, दुपहर, रात, बिरात, देश, परदेश न जाने किस वक्त कहां हो जावे, इससे हरेक गृहस्थ वा मुसाफिरको

हमारे बनाये "अर्क कपूर"की एक दो शीशी अपने पास अवश्य रखनी चाहिये। दाम एक शीशी ।) डाकखर्च एकसे ४ शीशी तक ।=) आना। एक दर्जन लेनेसे ३) रु० डाकखर्च माफ।

खून साफ करनेकी मशहूर दवा।

शरीरमें असली चीज खूनही है. खूनहीसे मांस, मेधा, मज्जा और वीर्य्य (धातु) बनता है, मांस पेशी गठीली और मजबूत होती है तथा सब इन्द्रियां बराबर अपना अपना काम किया करती हैं। और जहां खून खराब हुआ, कि साथ ही नये खूनकी पैदाइश बन्द होजाती है, सब इन्द्रियां अपना अपना काम छोड़ देती हैं, इसीसे ताकत घट जाती है, धातु खराब हो जाती है और नया वीर्य्य बन्द हो जाता है। शरीर दुबला और कमजोर हो जाता है। दाद, खाज और फोड़ा फुंसी तथा लाल लाल चकत्ते शरीरमें निकलने लगते हैं और कुछही दिनोंमें मनुष्य बिलकुल बेकाम हो जाता है। इससे खूनकी हिफाजत रखना मनुष्यका पहला काम है। खून तीन तरहसे खराब हो जाता है—(१) पारा या पारा मिली दवा खानेसे—(२)—पिता माताके दोषसे—(३) —आतशक गर्मीसे।

हमारे इस फ्रेण्ड्स् सारसा प्यारिलाकी एक दो शीशी पीनेहीसे गन्दा खून साफ हो जाता है और साथ ही नया खून दिन दिन बढ़ने लगता है। शरीरकी कुल बीमारियां दूर होजाती हैं और कुछ ही दिनोंमें मनुष्य एक मजबूत और ताकतवर जवान बन जाता है। मूल्य १॥=) शीशी। पैकिंग और डाकखर्च ।=) दो शीशीका डाकखर्च ॥=) आना।

छूटनेकी कभी आशा नहीं थी। क्लैकटानिक पीनेमें स्वादिष्ट—रंगमें कुछ सुर्खी लिये काला, जायकेमें मीठा और गुणमें अमृत है।

क्लैकटानिकके गुण।

क्लैकटानिक पीनेसे चित्त प्रसन्न होता है। आलस्य दूर होकर बदनमें फुर्त्ती आती है। नये नये खयाल पैदा होते हैं। रोजगारकी नयी नयी तर्कीबें सूझने लगती हैं। भूली हुई बातें याद आती हैं। लिखने पढ़नेमें मन लगता है। नयी नयी उमंगे दिलमें पैदा होने लगती हैं। क्लैकटानिक हड्डियोंको मोटी और मजबूत बनाता है, मांस बढ़ाता है। कलेजा पुष्ट करता है। नौजवानोंका खून रग-रगमें दौड़ने लगता है, नया वीर्य्य पैदा होता है। क्लैकटानिक सिपाहीयाना ढंगके आदमियोंको बहुत फायदा पहुंचाता है, भूख प्यासकी कुछ भी परवा नहीं रहती, कड़ीसे कड़ी धूप, गर्मसे गर्म लू शरीरमें कुछ भी असर नहीं कर सकती। हैजे, प्लेग, शीतला और सब प्रकारके बुखारका खौफ जाता रहता है। शरीर दिनपर दिन मजबूत होता है। क्लैकटानिक औरत, मर्द, बूढ़े, बच्चे सभीको खूब लाभ पहुंचाता है।

क्लैकटानिक अमृत है—

गर्भवती स्त्रीके लिये क्लैकटानिक बहुत गुणकारी है। गर्भजात बच्चेको बहुत लाभ पहुंचाता है, बच्चा दिनपर दिन पुष्ट और ताकतवर होता रहता है। स्त्रीको गर्भकी यन्त्रणा कुछ भी नहीं सताती। पूरे दिनोंपर बहुतही खूब सूरत हृष्टपुष्ट बालक पैदा होता है। बालक पैदा होनेके पांच दिन बाद स्त्रीको फिरसे क्लैकटानिकका सेवन कराना चाहिये। इससे स्त्रीका फेफड़ा हरा होगा, प्रसूत वगैरहका असर न होगा, बहुत जल्द स्त्री ताकतवर हो जायगी। बच्चेके लिये दूध भी पुष्टकारी उत्पन्न होगा। गर्भवती

स्त्रीको व्लैकटानिक जरूर पिलाओ क्योंकि गर्भके बालक पर ही हमारा भविष्य निर्भर करता है ।

व्लैकटानिकके लाभ ।

व्लैकटानिक पहलवान, घुड़सवार, फुटबौल, क्रिकेट आदिके खिलाड़ियोंको बहुत लाभ पहुंचाता है। लेक्चरर, एडिटर, मास्टर, विद्यार्थी, उपदेशक और गवैयों आदिके दीमाग तथा गले में ताकत देता है। गाने बजानेवालोंका गला तेज, सुरीला और लयदार होता है। इसलिये इन सब लोगोंको व्लैकटानिक जरूर पीना चाहिये। व्लैकटानिकके गुण अनेक हैं।

व्लैकटानिक नशीली वस्तुओंका दुश्मन है। शराब, अफीम, गांजा, भांग, चण्डू, मदक, कोकीन इत्यादि सब नशे इसके सेवनसे बिना तकलीफके छूट जाते हैं। दाम बड़ो शीशी २ औंस १।।) पोष्टेज ।/) छोटी शीशी १ औन्स ।।/) पोष्टेज ।/) आना।

यह बड़ी मशहूर, खुशबूदार और फायदेमन्द तेल है जिसको कलकत्तावासी अमीर और रईस नित्य सेवन करते हैं और जिसके मुकाबिले दूसरे तेलोंको तुच्छ और निकम्मा समझते हैं।

यह तेल सात फूलोंके सतसे बनाया जाता है और अच्छे अच्छे इत्र भी इसकी खुशबूके सामने मात होजाते हैं। एकबार सिरमें लगातेही इसकी खुशबू हवामें फैलकर आसपासके लोगोंको ताज्जुबमें डाल देती है। कभी बेला, कभी चम्पा, कभी गुलाब,

कभी केवड़ा तथा कभी जुही और चमेलीकी खुशबू हवामें बदला करती है। इस तेलकी खुशबू बहुत देरतक ठहरती है।

सिर्फ खुशबूही नहीं, इस तेलके सेवनसे बाल काले, चिकने, मुलायम, लम्बे और घूंघरवाले होजाते हैं। आंखोंकी रोशनी तेज होती है, सिरके सब रोग दूर होते हैं। सिरका दर्द मस्तककी कमजोरी और घूमना दूर होजाता है। इस तेलके प्रतिदिन सेवन करनेसे बाल जिन्दगी भर काले बने रहते हैं।

साथही इस तेलकी शीशीकी खूब सूरती भी गजब की है। एक बड़ीही खूब सूरत परी, अपने लम्बे लम्बे बालोंको फैलाये हाथमें शीशी लिये इस तेलका गुण बता रही है। शीशीके बक्सपर भी एक परीकी रङ्गीन तस्वीर है। इतना सब होने पर भी दाम १ शीशीका ॥) पोष्टेज ।) एक दर्जन लेनेसे ८) पोष्टेज माफ।

तन्दुरुस्तीका बीमा।

एक तन्दुरुस्ती हजार नियामत।

यह तो हरएक आदमी जानता है, कि पाचन शक्ति वह चीज है, जो कायम रहनेसे पत्थरको भी हजम कर देती है और बिगड़ जानेसे धानके लावेको भी नहीं पचा सकती। पाचन शक्तिका दुरुस्त रखना हरएक आदमीका पहला काम है, क्योंकि इसके बिगड़ जानेसे सैकड़ों प्रकारके रोग घुनकी तरह धीरे धीरे शरीरमें घुस जाते हैं और हमेशाके लिये आदमी रोगी और निकम्मा हो जाता है। इसीलिये:—

नमक सुलेमानी—

बहुतसी जड़ी बूटियोंसे तैयार किया गया है जो निम्नलिखित रोगोंपर बहुतही फायदा पहुंचाता है। इसके सेवनसे भूख बढ़ती है, भोजन पचता है, नया खून पैदा होता है, कमजोरी और सुस्ती दूर होती है, कब्जीयत, शूल खट्टी खट्टी डकारोंका आना, पेट दर्द, पेंचिश, बादीका दर्द, संग्रहणी, फोड़ा फुन्सी, खुजली, बवासीर, हैजा और प्लेगको भी दूर कर देता है। एक शीशी हर गृहस्थके घर रहनेसे सैकड़ों रुपया डाक्टर हकीमोंके घर जानेसे बचता है। दाम बड़ी शीशी ॥) छोटी शीशी ।) डाकखर्च ।/) एक दर्जन छोटी शीशी लेनेसे डाकखर्च माफ।

दादनाशक मलहम

हिन्दुस्थानमें दाद या दिनाय रोग ऐसा फैल गया है, कि औरत मर्द, बूढ़ा, बच्चा सब इस जालिम और बेशर्म रोगसे तङ्ग आगये हैं। दाद एक प्रकारका "लाल कोढ़" है यह हरएक आदमीको जान रखना चाहिए। इससे दादके शुरू होतेही हमारा बनाया दादनाशक मलहम जरूर इस्तेमाल करना चाहिये।

कैसाही पुराना दाद होगा, यह दवा दो दिनमें उसे जड़से खो देगी। तिसपर तारीफ यह, कि न तो लगेगी और न बदबू ही करेगी, बल्कि लगाते ही ठण्डक पड़ जायगी।

दाम एक डिब्बीका ।) पोष्टेज १ से ४ डिब्बी तक ।/) एक दर्जन लेनेसे ३) पोष्टेज वगैरह सब माफ।

नं० ४०।१।२ अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

चित्र अपनी आंखोंके सामने अङ्कित कर सकेंगे। दाम सिर्फ ॥) आना।

पञ्जाबके भूतपूर्व सिखशिरोमणि भारतगौरव महाराज रणजीत सिंहकी यह एक सचित्र जीवनी है। महाराज रणजीतसिंहके पुरखोंसे लेकर महाराजा साहबके जन्म, राजप्रतिष्ठा और प्रसिद्ध प्रसिद्ध लड़ाई आदिका इसमें पूरा विवरण दिया गया है। सिख सम्प्रदायके प्रतिष्ठाता श्रीगुरुनानक साहबका जन्म वृत्तान्त और सिखोंके अभ्युदय आदिका संक्षिप्त हाल भी इसमें लिखा गया है। साथ ही महाराजा रणजीत सिंह, उनके दरबार और ग्रन्थकार आदिके बड़े बड़े ३ चित्र भी इस पुस्तकमें दिये गये हैं। इतना सब होनेपर भी पुस्तकका मूल्य केवल ।) आना है।

घटनाचक्र।

इस उपन्यासका नाम ही कहे देता है, कि यह घटनाका समुद्र, आश्चर्य्यका खजाना, कौतुकका भाण्डार और ...नाका तिलिस्म है। इस ढंगका ज...सी उपन्यास हिन्दीमें छपा। हम जोर देकर ...ते हैं, कि इस उपन्यास आप दङ्ग रह जायेंगे और ...की कई एक घटनापर द दबायेंगे। लार्ड पेमर...की वहृदयता, लेडी क्लिउपे... रता, मेरीकी सुशील... ...ड एलेनकी दयालुता, सुप्रसि...

जासूस कृष्णजी रघुपन्त और करीमका अद्भुत बुद्धि-कौशल; भारतीय हिन्दू रमणी यमुनाका सतीत्व-रक्षण, विलियमकी कुटिलता, रिचार्डका भयानक षड़यन्त्र, आदिका वर्णन पढ़कर आप विस्मित, चकित, स्तम्भित और विमोहित हो जायेंगे। दाम बेजिल्द १॥) जिल्ददार २) रुपया।

ऐयारी और तिलिस्मी ढङ्गके उपन्यास तो बहुत छपे हैं मगर एक ही भागमें कोई भी उपन्यास समाप्त नहीं हुआ। यह उपन्यास बड़ा ही दिलचस्प और अनूठा है। इसमें "माया-महल"-नामक तिलिस्मको पिथौरागढ़के राजकुमारने बड़ी बहादुरीके साथ तोड़ा है। ऐयारी और लड़ाईकी भी बहार है। पहाड़ों तथा जङ्गलोंके भी अच्छे २ सीन दिखाये गये हैं, साथ ही इसके बड़ी बड़ी ४ तस्वीरें लगाकर इस उपन्यासकी सुन्दरता दूनी कर दी गई है। छपाई सफाई और कागजकी चिकनाई देखने योग्य है। इसीसे इतनी जल्दी पहिली बारकी १००० कापियां हाथोंहाथ बिक गईं और दूसरी बार फिर छपानी पड़ीं। दाम भी बहुत ही कम यानी सिर्फ ॥) है।

जाता है
) पोष्टेज
वि
संयुक्त ब
मिलनेके

खूनी औरत।

ढंगका यह एक अनूठा उपन्यास है, जिसमें जाल, जुआ, चोरी, दूरक और मुहब्बतका बड़ाही सुन्दर